जैसे श्रीविष्णुनें पूंछरहे विनताके पुत्र, गरुड़को कहा तैसे तुम्हारेको संदे[illegible]

विराजरहे श्रीहरिको नम्र होय, गरुड़जी [illegible] नरोत्तम । देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥ सीतारामस्य पौत्रेण शिवदासात्मजेन च । सेही [illegible] ज्ञानबोधिका ॥ अथ गरुडपुराणस्य ज्ञानबोधिकाभाषाटीकाप्रारंभः ॥ ग्रंथके आदिमें मंगलाचरण करना उत्तम है, कारण मंगलाचरणसे ग्रंथ निर्विघ्न समाप्त होता है, इसीसे भगवानका वृक्षरूप बर्णन करते हैं— मधुनामा दैत्यके सूदन नाश करनेवाले भगवान् पादपस्वरूप अर्थात् वृक्ष सो सबसेभी अधिक वर्त्तते हैं; जैसे वृक्ष पावोंसे जलको पान करते हैं, तैसे मधुसूदन भगवान्भी चरणोंसे सब जग[illegible]की पालना करते हैं; इसवास्ते भगवानको पादप ये नाम कहा है. कैसा वो भगवान्रूपी वृक्ष है ? जीवमात्रको द्वेषरहित जो धर्म नाम अमृतरूप जो भगवद्धर्म वोही दृढ़ बँधा हुवा है मूल जिसका, जैसा दृढ़मूलवृक्ष अपने स्थानमें निश्चल स्थिर रहता है, तैसे भगवान्भी भगवद्धर्मीके हृदयमें

॥ श्रीर्जयति ॥ ॥ धर्मदृढबद्धमूलोवेदस्कंधःपुराणशाखाढ्यः ॥ क्रतुकुसुमोमोक्षफलोमधुसूदनपादपोजयति ॥ १ ॥

निश्चल स्थिर रहते हैं. फेर कैसा मधुसूदनरूप वृक्ष है ? वेदही हैं स्कंध अर्थात् डालें जिसके, अष्टादश पुराण हैं शाखा जिसके, जैसे वृक्ष विस्तारवान् स्कंध और शाखाकरके दूर हो तौभी समीपजैसा दीखे है, तैसे यह भगवान्भी वेदपुराणोंसे प्रकृतिपुरुषसे परे हैं, तथापि समीप प्राप्त होते हैं. जैसे वृक्ष डाला और शाखावोंकरके समीप प्राप्त हुयेको बहुत फल देते हैं, तैसे भगवान्रूप वृक्षभी वेदपुराणोंकरके श्रोतावक्तावोंको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, फल देते हैं. जैसे वृक्षकी शाखा स्कंधसे निकल उनमें लगी हुई हैं तैसे पुराणभी वेदसे प्रगट हो, वेदमें मिले हुये हैं. सो इतिहासपुराणभी पांचवां वेद कहा है. फेर कैसा भगवान्रूप वृक्ष है ? यज्ञही हैं पुष्प जिसके और मोक्षही है फल जिसके, जैसे वृक्षके पुष्प प्रगट होनेके सा-

थही फलप्राप्ति होती है, तैसे यज्ञादिक अनुष्ठानोंसे शुद्ध अंतःकरणके बाद मोक्षफलका लाभ होता है. यहां यह अभिप्राय है कि–मोक्षदाता भगवान-से दूसरा नहीं है ॥ १ ॥ नैमिषारण्य देवतोंके क्षेत्रमें एकसमयमें (८८०००) अट्ठासी हजार शौनकादिक ऋषि स्वर्गप्राप्तिके अर्थ हजार वर्षका नेम कर, यज्ञप्रारंभ करते भये ॥ २ ॥ वोह शौनकादिक मुनि एकसमयमें प्रातःकाल अग्निहोत्र करके, विराजमान होरहे सूतजीको सत्कारकर, आदरसे

नैमिषेऽनिमिषक्षेत्रेऋषयःशौनकादयः ॥ सत्रंस्वर्गायलोकायसहस्रसममासत ॥ २ ॥ तएकदातुमुनयःप्रातर्हुतहुताग्नयः ॥
सत्कृतंसूतमासीनंपप्रच्छुरिदमादरात् ॥ ३ ॥ ॥ ऋषयऊचुः ॥ ॥ कथितोभवतासम्यग्देवमार्गःसुखप्रदः ॥ इदानीं
श्रोतुमिच्छामोयममार्गंभयप्रदम् ॥ ४ ॥ तथासंसारदुःखानितत्क्लेशक्षयसाधनम् ॥ ऐहिकामुष्मिकान्क्लेशान्यथावद्वक्तुमर्हसि
॥ ५ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ शृणुध्वंभोविवक्ष्यामियममार्गंसुदुर्गमम् ॥ सुखदंपुण्यशीलानांपापिनांदुःखदायकम् ॥ ६ ॥

यह प्रश्न पूंछते भये ॥ ३ ॥ ऋषि बोलेकि–हे सूत ! तुमने भलेप्रकार सुखदेनेवाला देवमार्ग कहा. अब भयदेनेवाला यममार्गश्रवण करनेकी इच्छा करते हैं ॥४॥ तैसे संसारका दुःख और उन दुःखोंके क्षयका साधन तथा इस लोक और परलोकका दुःख इन्होंको यथार्थ कहो ॥५॥ अब सूतजी कहते हैं हे मुनियो ! श्रवण करो. अतिदुर्गम यममार्ग कहताहूँ. कैसा यममार्ग है ? कि–पुण्यशील पुरुषोंको सुखदेनेवाला पापियोंको दुःखदायक ॥६॥

... सो कहावै (स्वर्गाय) अर्थात् नारायण सोई जो स्वभक्तोंको निवासस्थान, लोक तिसकी प्राप्तिके लिये; क्योंकि

जैसे श्रीविष्णुनें पूंछरहे विनताके पुत्र, गरुड़को कहा तैसे तुम्हारेको संदेह दूरहोनेको कहता हूं ॥ ७ ॥ कोई समयमें वैकुंठमें आनंदसे विराजरहे श्रीहरिको नम्र होय, गरुड़जी पूंछते भये ॥८॥ गरुड़जी बोले कि– हे देव! आपने मेरेको बहुतप्रकारका भक्तिमार्ग कहा है. तैसेही भक्तोंकी उत्तम गतिभी कही है ॥९॥ अब भयकारी यममार्गश्रवणकी इच्छा करता हूं. आपकी भक्तिबिमुखनको तहां गमन सुना है ॥१०॥

यथाश्रीविष्णुनाप्रोक्तंवैनतेयायपृच्छते ॥ तथैवकथयिष्यामिसंदेहच्छेदनायवः ॥ ७ ॥ कदाचित्सुखमासीनंवैकुंठेश्रीहरिंगुरुं ॥ विनयावनतोभूत्वापप्रच्छविनतासुतः ॥ ८ ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ भक्तिमार्गोबहुविधःकथितोभवतामम ॥ तथाचकथितादेवभक्तानांगतिरुत्तमा ॥ ९ ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामियममार्गंभयंकरम् ॥ त्वद्भक्तिविमुखानांचतत्रैवगमनंश्रुतम् ॥ १० ॥ सुगमंभगवन्नामजिह्वाचवशवर्तिनी ॥ तथापिनरकंयांतिधिग्धिगस्तुनराधमान् ॥ ११ ॥ अतोमेभगवन्ब्रूहिपापिनांयागतिर्भवेत् ॥ यममार्गस्यदुःखानियथातेप्राप्नुवंतिवै ॥ १२ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ वक्ष्येऽहंशृणुपक्षींद्रयममार्गंचयेनये ॥ नरकेपापिनोयांतिशृण्वतामपिभीतिदम् ॥ १३ ॥ ॥ ॥

देखो! कि– भगवन्नामभी सुगम है. जिव्हाभी अपने बस है तथापि जो नरकोंमें जाते हैं उन नीच मनुष्योंको धिक्कार है ॥ ११ ॥ हे भगवन्! इसीसे मेरेको जो पापियोंकी गति है सो कहो. जैसे वह पापी यममार्गके दुःखोंको भोगते हैं, सो कहो ॥ १२ ॥ श्रीभगवान् कहते हैं–हे गरुड़! मैं यममार्ग कहता हूं सो सुनों. जिस मार्गसे नरकमें पापी जाते हैं. कैसा यममार्ग है? कि– सुननेवालोंकोभी भय देता है ॥ १३ ॥

हे गरुड़! जो पापी, मूर्ख, दयाधर्मसे रहित और दुष्टोंकी संगति करते हैं. तथा सत्शास्त्र और सत्संगतिसे बिमुख हैं ॥ १४ ॥ और हम बड़े हैं ऐसे मानेहैं, हम बड़े धनी हैं, मानी हैं, इस प्रकारके मदसे संयुक्त हैं, आसुरभावमें प्राप्त हैं और दैवी संपदासे रहित हैं ॥ १५ ॥ अनेक कामोंमें चित्तको भ्रमा रहे हैं, मोहजालमें आच्छादित हैं और कामभोगोंमे आसक्त हैं. तिह्नोंका अपवित्र नरकमें पतन होताहै ॥ १६ ॥

येहिपापरतास्तार्क्ष्यदयाधर्मविवर्जिताः ॥ दुष्टसंगाश्चसच्छास्त्रसत्संगतिपराङ्मुखाः ॥ १४ ॥ आत्मसंभाविताःस्तब्धाधन
मानमदान्विताः ॥ आसुरंभावमापन्नादैवीसंपद्विवर्जिताः ॥ १५ ॥ अनेकचित्तविभ्रांतामोहजालसमावृताः ॥ प्रसक्ताः
कामभोगेषुपतंतिनरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥ येनराज्ञानशीलाश्चतेयांतिपरमांगतिं ॥ पापशीलानरायांतिदुःखेनयमयातनां
॥ १७ ॥ पापिनामैहिकंदुःखंयथाभवतितच्छृणु ॥ ततस्तेमरणंप्राप्ययथागच्छंतियातनाः ॥ १८ ॥ सुकृतंदुष्कृतंवापिभु
क्त्वापूर्वंयथार्जितं ॥ कर्मयोगात्तदातस्यकश्चिद्व्याधिःप्रजायते ॥ १९ ॥ ॥ ॥

जो ज्ञानशील पुरुष हैं वै परमगतिको प्राप्त होते हैं. जो पापशील मनुष्य हैं वे दुःखसे यमयातनामें जाते हैं ॥ १७ ॥ अब पापियोंको इस लोकमें जो दुःख होता है सो सुनो. इस लोकको दुःख भोग, मरकर, जैसे नरकोंमें जातेहैं सो सुनो ॥ १८ ॥ पुण्य वा पाप जैसा पूर्व करा हो तैसा भोगनेके बाद कर्मयोगसे उनके अंतमें कोई व्याधि होती है ॥ १९ ॥ ॥ ॥ ॥

तहां अनुक्रमसे पातकी इन सोलह पुरोंको उल्लंघन करके, धर्मराजके पुरमें जाता है ॥ ५८ ॥ पुरोंके नाम-सौम्यपुर १, सौरिपुर २, नगेंद्रभवन ३, गंधर्वपुर ४, शैलागम ५, क्रौंचपुर ६, क्रूरपुर ७, विचित्रभवन ८, बह्वापद ९, दुःखद १०, नानाक्रंदपुर ११, सुतप्तभवन १२, रौद्रपुर १३, पयोवर्षण १४, शीताढ्य १५, बहुभीति १६ इन सोलह पुरोंके अगाड़ी धार्मिकलोगोंको लभ्य धर्मराजका भवन और पापीलोगोंको लभ्य यमयातनारूप यमपुर है ॥ ५९ ॥ यमदूतोंकी पाशोंसें बँधाहुवा पापी हाहा !! ऐसा रुदन करता अपना घर त्यागकर, यमपुरमें

अतीत्यक्रमशोमार्गेपुराणीमानिषोडश ॥ प्रयातिधर्मराजस्यभवनंपातकीजनः ॥ ५८ ॥ सौम्यंसौरिपुरंनगेंद्रभवनंगंधर्वं शैलागमौक्रौंचंक्रूरपुरंविचित्रभवनंबह्वापदंदुःखदं ॥ नानाक्रंदपुरंसुतप्तभवनंरौद्रंपयोवर्षणंशीताढ्यंबहुभीतिधर्मभवनंयाम्यं पुरंचाग्रतः ॥ ५९ ॥ याम्यपाशैर्धृतःपापीहाहेतिप्ररुदन्पथि ॥ स्वगृहंतुपरित्यज्यपुरंयाम्यमनुव्रजेत् ॥ ६० ॥ इतिश्रीसारोद्धारेगरुडपुराणेपापिनामैहिकामुष्मिकदुःखनिरूपणंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ कीदृशोयमलोकस्य पंथाभवतिदुःखदः ॥ यत्रयांतियथापापास्तन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

जाता है ॥ ६० ॥ इति श्रीसारोद्धारगरुडपुराणस्य ज्ञानबोधिनीभाषाटीकायां पापिनां ऐहिकामुष्मिकदोषनिरूपणं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ इस लोक और परलोकके दुःख संक्षेपसे सुनकर, गरुड़जी अब विस्तारसे सुननेको फेर पूछते हैं. गरुड़जी बोले कि– हे केशव! यमलोकको मार्ग कैसा है? क्या दुःख देता है? और उस मार्गमें पापी कैसे जाते हैं? सो कहो ॥ १ ॥ ॥ ॥

अब भगवान् कहते हैं कि– हे गरुड़! महान् दुःख देनेवाला यममार्ग मैं तुम्हारेको क॰..। हूं. तुम मेरे भक्त हो तोभी सुनकर, कंपायमान
होवोगे ॥ २ ॥ तिसमार्गमें कहीं वृक्षोंकी छाया नहीं है जिसमें मनुष्य विश्राम लेवै तथा अन्नादिक नहीं हैं जिस्से भूखेका प्राण बचै ॥३॥
कहीं जलभी नहीं दीखता कि– अत्यंत प्यासा प्राणी जिसको पीवै. हे गरुड़! उस मार्गमें बारह १२ सूर्य तपते हैं, जैसै महाप्रलयमें तपैं ॥४॥

॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ यममार्गंमहद्दुःखप्रदंतेकथयाम्यहम् ॥ ममभक्तोऽपितच्छ्रुत्वात्वंभविष्यसिकंपितः ॥ २ ॥ वृक्ष
च्छायानतत्रास्तियत्रविश्रमतेनरः ॥ यस्मिन्मार्गेनचान्नाद्यंयेनप्राणान्समुद्धरेत् ॥ ३ ॥ नजलंदृश्यतेक्कापितृषितोऽतीवयःपिबेत् ॥
तपंतेद्वादशादित्याःप्रलयांतेयथाखग ॥ ४ ॥ तस्मिन्गच्छतिपापात्माशीतवातेनपीडितः ॥ कंटकैर्विध्यतेक्कापिक्कचित्सर्पैर्महावि
षैः ॥ ५ ॥ सिंहैर्व्याघ्रैःश्वभिर्घोरैर्भक्ष्यतेक्कापिपापकृत् ॥ वृश्चिकैर्दंशतेक्कापिक्कचिद्दह्यतिवह्निना ॥ ६ ॥ ततःक्कचिन्महाघोरमसिप
त्रवनंमहत् ॥ योजनानांसहस्रेद्वेविस्तारायामतः स्मृतम् ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥

ऐसे मार्गमें पापी जाता है. शीतसे तथा वायुसे दुःखित हुवा कहीं कांटोंसे बिंध जाता है, कहीं महाजहरी सर्पोंसे खाया जाता है, ॥ ५ ॥
कहीं पापी सिंह, व्याघ्र और घोर कुत्तोंसे खाया जाता है, कहीं बिच्छू खाते हैं, कहीं अग्निसे दग्ध होता है ॥ ६ ॥ तहां कोई ठिकाने म-
हाघोर तलवारजैसे पत्तोंवाला महान् दो हजारयोजन चौड़ा और लंबा वन आता है ॥ ७ ॥ ॥ ॥

तब अंगुष्ठप्रमाण जीव हा! हा!! शब्द करते, शरीरसे निकल, उसीदम अपने शरीरको देखरहे जीवको यमदूत पकड़ते हैं ॥३२॥ उस जीवको नरक भोगनेवाले देहको प्राप्त करा, पाशसे गलेमें बांधकर, बलसे बड़े लंबे मार्गके प्रति यमदूत लेजाते हैं. जैसे चोरको राजदूत लेजाय ॥ ३३ ॥ रस्तेमें चलतेहुवेको दूत डराते हैं तथा नरकोंको तीव्र भय वारंवार कहते हैं ॥३४॥ हे दुष्ट जीव! शीघ्र चल. उभी तुझको यमराजके स्थानमें

अंगुष्ठमात्रःपुरुषोहाहाकुर्वन्कलेवरात् ॥ तदैवगृह्यतेदूतैर्याम्यैःपश्यन्स्वकंगृहम् ॥ ३२ ॥ यातनादेहआवृत्यपाशैर्बद्ध्वागलेब
लात् ॥ नयतोदीर्घमध्वानंदंड्यंराजभटायथा ॥ ३३ ॥ तस्यैवंनीयमानस्यदूताःसंतर्जयंतिच ॥ प्रवदंतिभयंतीव्रंनरका
णांपुनःपुनः ॥ ३४ ॥ शीघ्रंप्रचलदुष्टात्मन्यास्यसित्वंयमालयं ॥ कुंभीपाकादिनरकांस्त्वांनयावोऽद्यमाचिरम् ॥ ३५ ॥
एवंवाचस्तदाशृण्वन्बंधूनांरुदितंतथा ॥ उच्चैर्हाहेतिविलपंस्ताड्यतेयमकिंकरैः ॥ ३६ ॥ तयोर्निर्भिन्नहृदयस्तर्जनैर्जातवे
पथुः ॥ पथिश्वभिर्भक्ष्यमाणआर्तोऽघंस्वमनुस्मरन् ॥ ३७ ॥ ॥ ॥ ॥

लेजाते हैं तहां कुंभीपाकआदि नरकोंमें अभी डालेंगे. देर मत जान ॥ ३५ ॥ ऐसे भयंकर यमदूतोंकी वाणी सुनकर, पीछेसे बंधुवोंको रोदन सुनके, उच्चस्वरसे हा! हा!! ऐसे विलाप करताहुवा यमदूतोंसे ताड़नाको प्राप्त होताहै ॥३६॥ यमदूतोंकी तर्जनासे फूटा है हृदय तथा प्रगट भया है कंप जिसके और मार्गमें कुत्ते खाय रहे हैं ऐसा प्राणी दुःखीहुवा अपने पापको स्मरण करता हैं ॥ ३७ ॥

फेर क्षुधातृषासे संयुक्तहुवा, मार्गमें सूर्यके घामके दावानलजैसे गरमपवनसे तपी भई बालूमें अतितपायमानहुवा, पीठपरसे चाबुकसे ताड़नाको प्राप्त हुवा, शक्ति नहीं है तोभी नहीं कहीं आश्रम और जल ऐसे मार्गमें चलता है ॥ ३८ ॥ तहां तहां पड़ता हुवा मूर्छामें प्राप्त हुवा फेर उठकर, अंधकारमार्गसे यमराजके स्थानको जाता है ॥ ३९ ॥ तहां ९९००० हजार योजन यमके मार्गमें अधिक पापीको दो मुहूर्तसे सामान्य पापीको तीन मुहूर्तसे ले जाते हैं. फेर वहाँ वहाँ घोर नरकयातना उसको दूत दिखाते हैं ॥ ४० ॥ एक मुहूर्तमें वेगसे भयंकर य-

क्षुत्तृट्परीतोऽर्कदवानलानिलैःसंतप्यमानःपथितप्तवालुके ॥ कृच्छ्रेणपृष्ठेकशयाचताडितश्चलत्यशक्तोऽपिनिराश्रमोदके
॥ ३८ ॥ तत्रतत्रपतञ्छ्रांतोमूर्च्छितःपुनरुत्थितः ॥ यथापापीयसानीतस्तमसायमसादनम् ॥ ३९ ॥ त्रिभिर्मुहूर्तैर्द्वा
भ्यांवानीयतेतत्रमानवः ॥ प्रदर्शयंतिदूतास्ताघोरानरकयातनाः ॥ ४० ॥ मुहूर्तमात्रात्त्वरितंयमंवीक्ष्यभयंपुमान् ॥
यमाज्ञयासमंदूतैःपुनरायातिखेचरः ॥ ४१ ॥ आगम्यवासनाबद्धोदेहमिच्छन्यमानुगैः ॥ धृतःपाशेनरुदतिक्षुत्तृड्भ्यां
परिपीडितः ॥ ४२ ॥ भुंक्तेपिंडंसुतैर्दत्तंदानंचातुरकालिकं ॥ तथापिनास्तिकस्तार्क्ष्यतृप्तिंयातिनपातकी ॥ ४३ ॥

मको देख, पुरुष यमकी आज्ञासे फेर दूतोंसहित आकाशमार्गसे पीछा आता है ॥ ४१ ॥ पीछा आकर, अपने घरकी वासनासे बँधा यमदूतोंसे पाशकरके बँधा मुख, तृषासे पीड़ित हुवा रोता है ॥ ४२ ॥ तहां अंतमें पुत्रोंसे दिये पिंडोंको खाता है और अंतसमयमें मृत्युस्थान-आदि चार स्थानोंमें किया दान मिलता है. तोभी हे गरुड़! नास्तिकवादी पापी पुरुष तृप्त नहीं होता है ॥ ४३ ॥

पापी पुरुषोंको दान, श्राद्ध जलांजलि नहीं प्राप्त होताहै इसके लिये पिंडदान खानेवालेभी क्षुधासे व्याकुल हुवे जाते हैं ॥ ४४ ॥ वह पिंडदानोंसे रहित प्रेतरूप होते हैं, पीछे कल्पपर्यंत निर्जनबनमें बहुत दुःखितहुवे भ्रमते हैं ॥ ४५ ॥ कर्म बिगर भोगे कोटिशतवर्षोंसेंभी क्षीण नहीं होता. कर्मोंसे प्राप्तहुई यमयातना भोगेविना मनुष्यजन्म नहीं मिलता ॥ ४६ ॥ हे गरुड़! इसीसे पुत्र दशोंदिनोंमें पिंडदान देतारहे.

पापिनांनोपतिष्ठंतिदानंश्राद्धंजलांजलिः ॥ अतःक्षुद्व्याकुलायांतिपिंडदानभुजोऽपिते ॥ ४४ ॥ भवंतिप्रेतरूपास्तेपिंडदानविवर्जिताः ॥ आकल्पंनिर्जनारण्येभ्रमंतिबहुदुःखिताः ॥ ४५ ॥ नाभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि ॥ अभुक्त्वायातनांजंतुर्मानुष्यंलभतेनहि ॥ ४६ ॥ अतोदद्यात्सुतःपिंडान्दिनेषुदशसुद्विज ॥ प्रत्यहंतेविभज्यंतेचतुर्भागैःखगोत्तम ॥ ४७ ॥ भागद्वयंतुदेहस्यपुष्टिदंभूतपंचके ॥ तृतीयंयमदूतानांचतुर्थंसोपजीवति ॥ ४८ ॥ अहोरात्रैश्चनवभिःप्रेतःपिंडमवाप्नुयात् ॥ जंतुर्निष्पन्नदेहश्चदशमेबलमाप्नुयात् ॥ ४९ ॥ ॥ ॥

उन पिंडोंके नित्यप्रति चारभाग होते हैं ॥ ४७ ॥ उनमेंसे दो भाग तो पंचभूतोंसे हुए शरीरको पुष्टि देते हैं. तीसरा यमदूतोंको प्राप्त होता है. और चौथा भाग वोह प्राणी खाता है ॥ ४८ ॥ नव दिनोंके पिंडोंसे प्रेत पिंडज शरीरको प्राप्त होता है. प्राप्तहुवा है देह ऐसा जो जीव सो दशवें दिन बलको प्राप्त होता है ॥ ४९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हे गरुड़! पूर्वदेहदग्धहुवा तोभी फेर पिंडसे एकहाथप्रमाण देह उत्पन्न होता है जिससे पुरुष यममार्गमें पुण्य, पाप भोगता है ॥ ५० ॥ प्रथमदिनके पिंडसे मस्तक होता है, दूसरे दिनके पिंडसे ग्रीवा और स्कंध होते हैं, तीसरेसे हृदय होता है, ॥ ५१ ॥ चौथेसे पीठ होती है, पंचमसे नाभि होती है, षष्ठमसे कटि और गुदा होती है, सप्तमदिनके पिंडसे जंघा होती हैं, ॥ ५२ ॥ अष्टम और नवमसे जानु और पग होते हैं, दशमदिनमें क्षुधा तृषा होती है ॥ ५३ ॥ पिंडोंसे हुवे देहको प्राप्त हो, क्षुधातृषासे पीड़ित हुवा प्रेत एकादशाह और द्वादशाह

दग्धेदेहेपुनर्देहःपिंडैरुत्पद्यतेखग ॥ हस्तमात्रःपुमान्येनपथिभुंक्तेशुभाशुभम् ॥ ५० ॥ प्रथमेऽहनियःपिंडस्तेनमूर्धाप्रजायते ॥ ग्रीवा
स्कंधौद्वितीयेनतृतीयाद्धृदयंभवेत् ॥ ५१ ॥ चतुर्थेनभवेत्पृष्ठंपंचमान्नाभिरेवच ॥ षष्ठेनचकटीगुह्यंसप्तमात्सक्थिनीभवेत् ॥ ५२ ॥ जानुपा
दौतथाद्वाभ्यांदशमेऽह्निक्षुधातृषा ॥ ५३ ॥ पिंडजंदेहमाश्रित्यक्षुधाविष्टस्तृषार्दितः ॥ एकादशंद्वादशंचप्रेतोभुंक्तेदिनद्वयं ॥ ५४ ॥ त्रयो
दशेऽहनिप्रेतोयन्त्रितोयमकिंकरैः ॥ तस्मिन्मार्गेव्रजत्येकोगृहीतइवमर्कटः ॥ ५५ ॥ षडशीतिसहस्राणियोजनानांप्रमाणतः ॥ यममार्ग
स्यविस्तारोविनावैतरणींखग ॥ ५६ ॥ अहन्यहनिवैप्रेतोयोजनानांशतद्वयं ॥ चत्वारिंशत्तथासप्तदिवारात्रेणगच्छति ॥ ५७ ॥ ॥

खाता है ॥ ५४ ॥ त्रयोदशवें दिन प्रेत यमदूतोंसे पकड़ाहुवा उसी मार्गमें अकेला जाता है. जैसे पाशसे गलेमें बँधाहुवा बंदर जाय तैसे ॥ ५५ ॥ हे गरुड़! उस यमके मार्गका बिस्तार वैतरणी नदीविना ८६००० हजार योजन है ॥ ५६ ॥ सो एकएक दिनमें प्रेत दोदोसौ योजन चलता तौ सप्तचत्वारिंश अर्थात् सैंतालीस ४७ दिन और रात्रिसे यमलोकको पहुँचता है ॥ ५७ ॥ ॥

उसमें काग, घुघुवा, सिकरा, गीध, मधुमक्षी, डांस ए घोर जीव भरेहैं. उस वनमें दावानलसहित वनके पत्तोंसे पापियोंका अंग छिन्न भिन्न होता है ॥ ८ ॥ और उस मार्गमें कहीं अंधकूपमें पड़ता है, कहीं विकट पर्वतसे पड़ता है, कहीं छूरेकी धारजैसी धारपर तथा लोहके शूलोंउपर चलता है, ॥ ९ ॥ कहीं भयंकर अँधेरेमें पड़ता है, कहीं जलमें पड़ता है, कहीं जोंकोंसे युक्त कीचड़में पड़ता है; कहीं बहोत् गरम तपाये हुये कीचड़में पड़ता है, ॥ १० ॥ कहीं तांबेके पात्रके नीचे अग्नि जलरही ऊपर बहुत गरम बालूमें चलता है, कहीं महान् धुँवां निकलते अंगा-

काकोलूकवटगृध्रसरघादंशसंकुलम् ॥ सदावाग्निचतत्पत्रैश्छिन्नभिन्नःप्रजायते ॥ ८ ॥ क्वचित्पतत्यंधकूपेविकटात्पर्वतात्क्वचित् ॥ गच्छतेक्षुरधारासुशंकूनामुपरिक्वचित् ॥ ९ ॥ स्खलत्यंधेतमस्युग्रेजलेनिपततिक्वचित् ॥ क्वचित्पंकेजलौकाढ्येक्वचित्संतप्तकर्दमे ॥ १० ॥ संतप्तवालुकाकीर्णेध्मातताम्रमयेक्वचित् ॥ क्वचिदंगारराशौचमहाधूमाकुलेक्वचित् ॥ ११ ॥ क्वचिदंगारवृष्टिश्चशिलावृष्टिःसवज्रका ॥ रक्तवृष्टिःशस्त्रवृष्टिःक्वचिदुष्णांबुवर्षणम् ॥ १२ ॥ क्षारकर्दमवृष्टिश्चमहानिम्नानिचक्वचित् ॥ वप्रप्ररोहणंक्वापिकंदरेषुप्रवेशनं ॥ १३ ॥ गाढांधकारस्तत्रास्तिदुःखारोहशिलाःक्वचित् ॥ पूयशोणितपूर्णाश्चविष्ठापूर्णाह्रदाःक्वचित् ॥ १४ ॥ ॥

रोंपर चलता है, ॥ ११ ॥ कहीं पापीके ऊपर अंगारवृष्टि होती है, कहीं शिलावृष्टि और वज्रवृष्टि होती है, कहीं रक्तवृष्टि तथा शस्त्रवृष्टि होती है, कहीं गरम पानीकी वर्षा होती है, ॥ १२ ॥ कहीं क्षारकीचड़की वर्षा होती है, कहीं महा खड्डेमें पड़ता है, कहीं गुफावोंमें पैठता है, ॥ १३ ॥ कहीं प्रबल अंधकार आता है, कहीं दुःखसे चढ़नेमें आवै ऐसी शिला आती है, कहीं पीब लोहीके भरे सरोवर आते हैं, कहीं बिष्ठासे भरे सरोवर

आते हैं ॥ १४ ॥ तहां मार्गमें घोर वैतरणी नदी बहती है वह देखीभई दुःखदेवे उसका तो क्या परंतु उसकी बातभी भय करती है ॥१५॥ वह सौ योजन चौड़ी हैं, पीब लोही बहती है, हाड़ोंके समूहोंसें तट बँधा भया है, दुःखसे जानेमें आती है, मांस और लोहीका कीचड़ है, ॥ १६ ॥ अगाध है, पापियोंसें दुस्तर है, केशशिवालोंसे दुर्गम है, बड़े ग्राहोंसें युक्त है, घोर सैकड़ों पक्षियोंसे भरी है ॥ १७ ॥ ऐसी बैतरणी आये पापीको देख, ज्वाला और धूमसे ब्याकुल हुई, हे गरुड़! औटीजाती है. जैसे प्रबल अग्निसें कटाहमें घृत होय तैसे॥ १८ ॥ और घोर कृमि-

मार्गमध्यवहात्युग्राघोरावैतरणीनदी ॥ साद्दष्टादुःखदाकिंवायस्यावार्ताभयावहा ॥ १५ ॥ शतयोजनविस्तीर्णापूयशोणितवा
हिनी ॥ अस्थिवृंदतटादुर्गामांसशोणितकर्दमा ॥ १६ ॥ अगाधादुस्तरापापैःकेशशैवालदुर्गमा ॥ महाग्राहसमाकीर्णाघोरपक्षिश
तैर्वृता ॥ १७ ॥ आगतंपापिनंदृष्ट्वाज्वालाधूमसमाकुला ॥ क्वथतेसानदीतार्क्ष्यकटाहांतर्घृतंयथा ॥ १८ ॥ कृमिभिःसंकुलाघोरैःसू
चीवक्त्रैःसमंततः ॥ वज्रतुंडैर्महागृध्रैर्वायसैःपरिवारिता ॥ १९ ॥ शिशुमारैश्चमकरैर्जलौकामत्स्यकच्छपैः ॥ अन्यैर्जलस्थजीवैश्चपू
रितामांसभेदकैः ॥ २० ॥ पतितास्तत्प्रवाहेचक्रंदंतिबहुपापिनः ॥ हाभ्रातःपुत्रताततिप्रलपंतिमुहुर्मुहुः ॥ २१ ॥ ॥

योंसे भरी है, कैसे कृमि हैं? कि-शुईजैसा जिनका मुख और वज्रजैसी तुंड ऐसे बड़े बड़े गीध और कागोंसे भरी है, ॥ १९ ॥ शिशुमार, मगर, जोंक, सर्प, मच्छी, कच्छप इन्होंसे और जलस्थजीवोंसे और मांस तोडनेवाले जीवोंसे पूर्ण ॥ २० ॥ ऐसी वैतरणीके प्रवाहमें पड़े बहोत पापी पुकारते हैं. हाभ्रातः! हापुत्र! हापितः! ऐसे वारंवार विलाप करते हैं ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥

उसमें भूंखे प्यासे पापी लोहीको पीते हैं. वह नदी रुधिरका पूर बहती, बहोतसा फेना छोंड़ती है ॥ २२ ॥ महाघोर अत्यंत गर्जना करती, दुःखसे देखनेयोग्य और भय देती है. सो हे गरुड़! उसके देखनेसे पापी अचेत होजाते हैं॥ २३ ॥ बहोत बिच्छुवोंसे व्याप्त है, काले सर्पोंसे संयुक्त है, तिसके मध्यमें पड़ेहुवे पापियोंका कोई रक्षक नहीं है, ॥ २४ ॥ सैकड़ों हजारों भ्रमरजालोंमें हजारोंवार पातालमें जाते हैं. वे पापी क्षणमात्र पातालमें रहकर, क्षणसे फिर ऊपर आते हैं । २५ ॥ सो हे गरुड़! पापियोंके गिरनेके लियेही वह नदी रची गई है. उसका

क्षुधितास्तृषिताःपापाःपिबंतिकिलशोणितं ॥ सासरिद्रुधिरपूरंवहंतीफेनितंबहु ॥ २२ ॥ महाघोरातिगर्जंतीदुर्निरीक्ष्याभयावहा ॥ तस्यादर्शनमात्रेणपापाःस्युर्गतचेतनाः ॥ २३ ॥ [illegible]वृश्चिकसंकीर्णासेविताकृष्णपन्नगैः ॥ तन्मध्येपतितानांचत्राताकोऽपिनविद्यते ॥ २४ ॥ आवर्तशतसाहस्रैःपातालेयांतिपापिनः ॥ क्षणंतिष्ठंतिपातालेक्षणादुपरिवर्तिनः ॥ २५ ॥ पापिनांपतनायैवनिर्मिता सानदीखग ॥ नपारंदृश्यतेतस्यदुस्तराबहुदुःखदा ॥ २६ ॥ एवंबहुविधक्लेशेयममार्गेऽतिदुःखदे ॥ क्रोशंतश्चरुदंतश्चदुःखितायांति पापिनः ॥ २७ ॥ पाशेनयंत्रिताःकेचित्कृष्यमाणास्तथांकुशैः ॥ शस्त्राग्रैःपृष्ठतःप्रोतैर्नीयमानाश्चपापिनः ॥ २८ ॥ ॥

पार दीखता नहीं. बड़े दुःखसे तिरनेमें आती है. बहोत दुःख देती है ॥ २६ ॥ ऐसे बहोत प्रकारके क्लेश जिसमें ऐसे अति दुःखदेनेवाले यमभार्गमें पुकार करते रोते भये दुःखी पापी जाते हैं ॥ २७ ॥ कोई पाशसे बँधेभये, कोई अंकुशसे खींचे भये, पीठमें हथियारोंकी [illegible] चुभरहीं ऐसें पापियोंको दूत लेजाते हैं ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कोई नाशिकापाशसे बँधेभये तथा कर्णपाशसे बँधेभये, कोई कालपाशसे बंधेभये जाते हैं. तितने एकोंका काग चोंचोंसे खींचते हैं ॥ २९ ॥ कितेक ग्रीवा अर्थात् गला, भुजा, पाद, पीठ इन्होंमें शांकल वा जंजीरसे बँधे जाते हैं, कितेक लोहाके, भारके समूहको बहते मार्गमें जाते हैं ॥ ३० ॥ और महाघोर यमदूतोंसे मुद्गरकरके ताड़नाको प्राप्तभये मुखसे लोहीको वमन करते फेर उसकोही खाते हैं ॥ ३१ ॥ और जीव अपने कियेभये कर्मोंको शोच करते, ग्लानिको प्राप्त होते हैं. ऐसे अत्यंत दुःखित हुये यममंदिरमें जाते हैं ॥ ३२ ॥ तहां मार्गमें मन्दबुद्धिवा-

नासाग्रपाशकृष्टाश्चकर्णपाशैस्तथापरे ॥ कालपाशैःकृष्यमाणाःकाकैःकृष्यास्तथापरे ॥ २९ ॥ ग्रीवाबाहुषुपादेषुबद्धाःपृष्ठेचशृंखलैः ॥
अयोभारचयंकेचिद्वहंतःपथियांतिये ॥ ३० ॥ यमदूतैर्महाघोरैस्ताड्यमानाश्चमुद्गरैः ॥ वमंतोरुधिरंवक्त्रात्तदेवाश्नंतितेपुनः ॥ ३१ ॥
शोचंतेस्वानिकर्माणिग्लानिंगच्छंतिजंतवः ॥ अतीवदुःखसंपन्नाःप्रयांतियममंदिरं ॥ ३२ ॥ तथाचसव्रजन्मार्गेपुत्रपौत्रइतिब्रुवन् ॥
हाहेतिप्ररुदन्नित्यमनुतप्यतिमंदधीः ॥ ३३ ॥ महतापुण्ययोगेनमानुषंजन्मलभ्यते ॥ तत्प्राप्यनकृतोधर्मःकीदृशंहिमयाकृतं ॥ ३४ ॥
मयानदत्तंनहुतंहुताशनेतपोनतप्तंत्रिदशानपूजिताः ॥ नतीर्थसेवाविहिताविधानतोदेहिन्कचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतं ॥ ३५ ॥

ले पुरुष हे पुत्र! हे पौत्र! ऐसे बोलते हाहा!! ऐसे रोतेहुये, नित्य तपायमान होते हैं ॥ ३३ ॥ विचारता है कि—महान् पुण्यके प्रभावसे मनुष्यजन्म प्राप्त होताहै उसको मिलनेपरभी धर्मसेवन नहीं करा. अहो! मैंनें कैसा अन्याय किया है ॥ ३४ ॥ मैंनें दान नहीं दिया अग्निमें हवन नहीं किया, तपभी नहीं किया, देवतोंकी पूजा नहीं करी, विधिसे तीर्थसेवा नहीं करी सो हे जीव! जो कुछ तुम कराहोता तौ इन दुःखोंको

तिरते ॥ ३५ ॥ अहो! मैनै विप्रमंडलीभी पूजी नहीं, श्रीगंगासेवनभी किया नहीं, सत्पुरुषोंकी टहलभी नहीं करी, कभीभी परोपकार नहीं किया, सो हे जीव! कुछ तुमने उत्तम संचय किया होता तौ उनके प्रभावसे इन दुःखोंको तिरते ॥ ३६ ॥ देखो! मैंने मनुष्य वा पशुपक्षी-के वास्ते निर्जल देशमें जल[illegible] सरोवरभी नहीं [illegible]या, अहो! गौ ब्राह्मणोंकी जीविकाके लिये कुछ न किया. सो हे जीव! कुछ किया हो तो तुम इन दुःखसमुद्रोंको तिरो ॥ ३७ ॥ नित्य दानभी नहीं किया, गौको एक दिन तृप्तजितना तृणादिकभी दिया नहीं और स्नान, सं-

नपूजिताविप्रगणाःसुरापगानचाश्रिताःसत्पुरुषा[illegible]सेविताः ॥ परोपकारानकृताःकदाचनदेहिन्कचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ३६ ॥
जलाश्रयोनैवकृतोहिनिर्जलेमनुष्यहेतोःपशुपक्षिहेतवे ॥ गोविप्रवृत्त्यर्थमकारिनाण्वपिदेहिन्कचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ३७ ॥
ननित्यदानंनगवाह्निकंकृतंनवेदशास्त्रार्थवचःप्रमाणितम् ॥ श्रुतंपुराणंनचपूजितोज्ञोदेहिन्कचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ३८ ॥ भ
र्तुर्मयानैवकृतंहितंवचःपतिव्रतंनैवकदापिपालितम् ॥ नगौरवंक्वापिकृतंगुरूचितंदेहिन्कचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ३९ ॥ ॥

ध्या, जप, होमादि नित्यकर्म नहीं किये वेदशास्त्रका वाक्यभी प्रमाण नहीं माना, पुराण सुनके, वक्ताकी पूजा नहीं करी. सो हे जीव! कुछ तुमने कियाहो तौ दुःखसमुद्रको तिरो ॥ ३८ ॥ ऐसे मार्गमें पुरुष विलाप करते हैं. अब स्त्रीका विलाप कहते हैं—मैंनें पतिका हितकारी वाक्यभी नहीं किया, पतिव्रताका धर्मभी कभी नहीं पाला, सासु श्वसुरआदि बड़ोंकी चरणसेवादि कभी नहीं किया. सो हे जीव! तुमने कुछ किया हो तो तौ दुःखसमुद्रको तिरो ॥ ३९ ॥ ॥ ॥ ॥

यह स्त्रीको धर्म है ऐसे मान कभी पतिसेवाभी नहीं करी, पति मरेबाद पतिकी चितामें प्रवेशभी नहीं किया, विधवा होकर, तपसेवन नहीं
किया. सो हे जीव! कुछ तुमने किया होतो दुःखसमुद्रको तिरो ॥ ४० ॥ मासोपवाससे मैनें शरीरभी नहीं सुखाया वा चांद्रायण व्रतादिक
बड़े विस्तारका नियमभी धारण नहीं किया. देखो! स्त्रीका शरीर बहोत दुःखोंको पात्र मेरे पूर्वकिये कुकर्मोंसे प्राप्त हुवा ॥ ४१ ॥ ऐसा
पुरुष और स्त्री बहुतसा विलाप करते पूर्वजन्मका कर्म स्मरण करते मनुष्यजन्म हमारा कहांहै? ऐसे पुकारते जाते हैं ॥ ४२ ॥ सत्रह दि-

नधर्मबुद्ध्यापतिरेवसेवितोवह्निप्रवेशोनकृतोमृतेपतौ ॥ वैधव्यमासाद्यतपोनसेवितंदेहिन्कचिन्निस्तरयत्त्वयाकृतम् ॥ ४० ॥ मासो
पवासैर्नविशोषितंमयाचांद्रायणैर्वानियमैःसविस्तरैः ॥ नारीशरीरंबहुदुःखभाजनंलब्धंमयापूर्वकृतैर्विकर्मभिः ॥ ४१ ॥ एवंविल
प्यबहुशोसंस्मरन्पूर्वदैहिकम् ॥ मानुषत्वंममकुतइतिक्रोशन्प्रसर्पति ॥ ४२ ॥ दशसप्तदिनान्येकोवायुवेगेनगच्छति ॥ अष्टादशेदि
नेतार्क्ष्यप्रेतःसौम्यपुरंव्रजेत् ॥ ४३ ॥ तस्मिन्पुरवरेरम्येप्रेतानांचगणोमहान् ॥ पुष्पभद्रानदीतत्रन्यग्रोधःप्रियदर्शनः ॥ ४४ ॥ पुरे
तत्रसविश्रामंप्राप्यतेयमकिंकरैः ॥ दारपुत्रादिकंसौख्यंस्मरतेतत्रदुःखितः ॥ ४५ ॥ ॥ ॥

नतौ अकेले वायुजैसे वेगसे चलता है. अठरहवें दिन हे गरुड़! प्रेत सौम्यपुर जाता है ॥ ४३ ॥ उस रमणीक पुरमें बड़ा प्रेतोंका गण
रहता है. तहां पुष्पभद्रा नाम नदी है. और सुंदर है दर्शन जिसको ऐसा वट है ॥ ४४ ॥ तिस पुरमें वोह प्रेत विश्राम लेता है. वहां स्त्री
पुत्रादिकोंको सुख स्मरण करता, दुःखी होता है ॥ ४५ ॥ ॥ ॥ ॥

जब धन भृत्यजनोंको और सब कुटुंबको शोच हैं तब वहांके दूत ऐसे कहते हैं ॥ ४६ ॥ अरे मूर्खो! वोह धन कहां है? वे पुत्र कहां है? वह स्त्री कहां है? वोह मित्र कहां बंधु कहां हैं? अपने कर्मोंका संबंध भोगताहुवा बहोतकाल इसमार्गमें जायगा ॥ ४७ ॥ अरे हे परलोकपांथ तुम क्या नहीं जानते हौ? कि—राहगीरोंको एक रस्ताका खर्चेही बल है दूसरा नहीं. यदि जानते हवौ तो खर्चेके अर्थ यत्न क्यों नहीं करते. अर्थात् दान धर्मादि क्यों नहीं करते. क्योंकि जिस मार्गमें कुछ बेंचनेखरीदनेका ब्यापार नहीं है ऐसे मार्गसे जाना

धनानिभृत्यमात्राणिसर्वंशोचतिवैयदा ॥ तदाप्रेतांस्तुतत्रत्याःकिंकराश्चेदमब्रुवन् ॥ ४६ ॥ क्वधनंक्वसुताजायाक्वसुहृत्क्वचबांधवाः ॥ स्वकर्मोपार्जितंभोक्तामूढयाहिचिरंपथि ॥ ४७ ॥ जानासिसंबलबलंबलमध्वगानांनोसंबलाययतसेपरलोकपांथ ॥ गंतव्यमस्तितवनिश्चितमेवतेनमार्गेणयत्रभवतिक्रयविक्रयोहि ॥ ४८ ॥ आबालख्यातमार्गोऽयंनैवमर्त्यश्रुतस्त्वया ॥ पुराणसंभवंवाक्यंकिंद्विजेभ्योऽपिनश्रुतम् ॥ ४९ ॥ एवमुक्तस्ततोदूतैस्ताड्यमानश्चमुद्गरैः ॥ निपतन्नुत्पतन्धावन्पाशैराकृष्यतेबलात् ॥ ५० ॥ अत्रदत्तंसुतैःपौत्रैःस्नेहाद्वाकृपयाथवा ॥ मासिकंपिंडमश्नातिततःसौरिपुरंव्रजेत् ॥ ५१ ॥ ॥ ॥

तुम्हें जरूर पड़ैगा ॥ ४८ ॥ बालकसे लेकर, वृद्धतक सब जानते हैं. ऐसा यह मार्ग तुमनें नहीं सुना वा पुराण गा रहे ऐसे ब्राह्मणोंका वाक्य नहीं सुना ॥ ४९ ॥ ऐसे दूतोंसे कहा गया, मुद्गरोंसें ताड़ित हुवा पड़ता है. फेर उठकर, डरसे भागता है, भागते हुवेको पाशोंसे बांधकर, फेर बलसे खींचते हैं ॥ ५० ॥ यहां पुत्र और नातियोंकरके स्नेहसे वा दयासे दियेभये मासिक पिंडका भोजन करके, पीछे सौ-

रिपुरमें जाता है ॥ ५१ ॥ तहां जंगम नाम राजा कालरूप धारण करनेवाला है. उसको देख, भयसे डराहुवा प्राणी विश्राम लेनेको बुद्धि करता है ॥ ५२ ॥ अन्नसहित जल उस पुरमें जाकर, त्रिपाक्षिक श्राद्धमें दिया खाता है. पीछे उस पुरको प्राणी उल्लंघन करता है ॥ ५३ ॥ फेर प्रेत नगेंद्रभवनमें वेगसे जाता है, वहाँ भयंकर वनोंको देखकर, दुःखी हुत्रा पुकार करता है ॥ ५४ ॥ निर्दय यमदूतोंसे खींचा भय

तत्रनाम्नास्तिराजावैजंगमःकालरूपधृक् ॥ तद्दृष्ट्वाभयभीतोऽसौविश्रामेकुरुतेमतिम् ॥ ५२ ॥ उदकंचान्नसंयुक्तंभुंक्तेतत्रपुरेगतः ॥ त्रैपाक्षिकेवैयद्दत्तंसतत्पुरमतिक्रमेत् ॥ ५३ ॥ ततोनगेंद्रभवनंप्रेतोयातित्वरान्वितः ॥ वनानितत्ररौद्राणिदृष्ट्वाक्रंदतिदुःखितः ॥ ५४ ॥ निर्घृणैःकृष्यमाणस्तुरुदतेचपुनःपुनः ॥ मासद्वयावसानेतुतत्पुरंव्यथितोव्रजेत् ॥ ५५ ॥ भुक्त्वापिंडंजलंवस्त्रंदत्तंयद्बांधवैरिह ॥ कृष्यमाणःपुनःपाशैर्नीयतेऽग्रेचकिंकरैः ॥ ५६ ॥ मासेतृतीयेसंप्राप्तेप्राप्यगंधर्वपत्तनम् ॥ तृतीयमासिकंपिंडंतत्रभुक्त्वाप्रसर्पति ॥ ५७ ॥ शैलागमंचतुर्थेचमासिप्राप्नोतिवैपुरम् ॥ पाषाणास्तत्रवर्षंतिप्रेतस्योपरिभूरिशः ॥ ५८ ॥

प्रेत वारंवार रोदन करता है, दो महीनेके अंतमें उस पुरमें पहुँचता है ॥ ५५ ॥ जो बांधवोंसे यहां दिया पिंड, जल, वस्त्र, भोगकर फेर यमदूतोंसे पाशोंसे खींचा जाता अगाड़ी जाता है ॥ ५६ ॥ तीसरे मासमें गंधर्वनगरमें जाकर, तीसरे मासके पिंडादिक वहां भोगकर, अंगाड़ी जाता है ॥ ५७ ॥ चौथें मासमें शैलागमपुरमें जाता है. तहां प्रेतके ऊपर बहुतसे पत्थर वर्षते हैं ॥ ५८ ॥ ॥ ॥

वहां चौथे मासका, पिंड भोजन कर कुछ सुखी होता है. पीछे प्रेत पंचममासमें क्रौंचपुरमें जाता है ॥ ५९ ॥ तहां क्रौंचपुरमें प्रेत जो हाथसे दिया हो उसको खाता है. साढ़े पांच मासके पिंड खाकर, क्रूरपुरमें जाता है ॥ ६० ॥ वहां साढ़े पांचमासमें न्यूनषाण्मासिक होता है उसमें दिये हुए पिंड और घटसे कुछ तृप्त हुवा स्थित रहता है ॥ ६१ ॥ वहां आधा मुहूर्त विश्राम लेकर, कंपायमान, अतिदुःखित हुवा उस पुरको त्यागकर, यमदूतोंसे डरा हुवा

चतुर्थमासिकंपिंडंभुक्त्वाकिंचित्सुखीभवेत् ॥ ततोयातिपुरंप्रेतःक्रौंचंमासेऽथपंचमे ॥ ५९ ॥ हस्तदत्तंतदाभुंक्तेप्रेतःक्रौंचपुरेस्थितः ॥ यत्पंचमासिकंपिंडंभुक्त्वाक्रूरपुरंव्रजेत् ॥ ६० ॥ सार्धकैःपंचभिर्मासैर्न्यूनषाण्मासिकंव्रजेत् ॥ तत्रदत्तेनपिंडेनघटेनाप्यायितःस्थितः ॥ ६१ ॥ मुहूर्तार्धंतुविश्रम्यकंपमानःसुदुःखितः ॥ तत्पुरंतुपरित्यज्यतर्जितोयमकिंकरैः ॥ ६२ ॥ प्रयातिचित्रभवनंविचित्रोनामपार्थिवः ॥ यमस्यैवानुजोभ्रातायत्रराज्यंप्रशास्तिहि ॥ ६३ ॥ तंविलोक्यमहाकायंयदाभीतःपलायते ॥ तदासंमुखआगत्यकैवर्ताइदमब्रुवन् ॥ ६४ ॥ वयंतेतर्तुकामायमहावैतरणींनदीम् ॥ नावमादायसंप्राप्तायदितेपुण्यमीदृशम् ॥ ६५ ॥ दानंवितरणंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ इयंसातीर्यतेयस्मात्तस्माद्वैतरणीस्मृता ॥ ६६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ६२ ॥ चित्रनाम भवनमें जाता है. जहां विचित्रनाम राजा है. यमराजका छोटा भाई उस राजमें दंड देता है तथा राज करता है ॥ ६३ ॥ उसको भयंकर शरीर देखकर, जब डराहुवा दौड़ता है तब सन्मुख आकर, नाव चलानेवाले ए बोलते हैं ॥ ६४ ॥ अरे ! हम तुम्हारेको महावैतरणी नदी उतारनेको नाव लेकर, आये हैं. सो तुम्हारो नावमें बैठनेको पुण्य हो तो बैठो ॥ ६५ ॥ तत्वज्ञान जाननेवाले मुनियोंनें दानको वितरण कह्या है सो जिससे उस

वितरणसे यानी दानसे तरी जाती है. तिससे इसका नाम वैतरणी है॥६६॥जो तुमने गोदान किया है तो नौका समीप आयेगी नहीं किया तो नहीं आयेगी ऐसे उनका बचन सुनके, हा दैव! ऐसा पुकारता है॥ ६७ ॥ उसको देखके, वह नदी औटीजाती है. उस नदीको देख, प्रेत पुकारता है. सो दान नहीं देनेवाला पापी उसीमें डूबता है ॥६८॥ उस पापीके मुखमें भाला देकर, आकासमें चलनेवाले दूत जैसे मत्स्यवेधकशस्त्र (कटिया)से मत्स्यको बेधै तैसे पार लेजाते हैं॥६९॥ छठे मासका पिंड वहां खाकर, चलता है सो मार्गमें विलाप करताहुवा जाता है. भूखसे अतिपीड़ितहुवा ॥७०॥

यदित्वयाप्रदत्तागौस्तदानौरुपसर्पति ॥ नान्यथेतिवचस्तेषांश्रुत्वाहादैवभाषते ॥ ६७ ॥ तंदृष्ट्वाक्वथ्यतेसातुतांदृष्ट्वासोऽतिक्रंदते ॥ अदत्तदानःपापात्मातस्यामेवनिमज्जति ॥ ६८ ॥ तन्मुखेकंटकंदत्वादूतैराकाशसंस्थितैः ॥ बडिशेनयथामत्स्यस्तथापारंप्रणीयते ॥६९॥ षाण्मासिकंचयत्पिंडंतत्रभुक्त्वाप्रसर्पति ॥ मार्गेसविलपन्यातिबुभुक्षापीडितोह्यलम् ॥७०॥ सप्तमेमासिसंप्राप्तेपुरंबह्वापदंव्रजेत् ॥ तत्रभुंक्तेप्रदत्तंयत्सप्तमेमासिपुत्रकैः ॥ ७१ ॥ तत्पुरंतुव्यतिक्रम्यदुःखदंपुरमृच्छति ॥ महद्दुःखमवाप्नोतिखेगच्छन्खेचरेश्वर ॥ ७२ ॥ मास्यष्टमेप्रदत्तंयत्पिंडंभुक्त्वाप्रसर्पति ॥ नवमेमासिसंपूर्णेनानाक्रंदपुरंव्रजेत् ॥ ७३ ॥ ॥ ॥

सातवें मासमें बह्वापदनाम पुरमें जाता है तहां सप्तम मासमें पुत्रसे जो दिया सो खाता है ॥ ७१ ॥ उस पुरको उल्लंघन कर, दुःखदनाम पुरमें जाता है. हे गरुड़! उस पुरमें बड़ा दुःख पाता है ॥ ७२ ॥ और अष्टम मासमें दियाहुवा पिंड वहां खाकर, चलता है सो नवत्रें मासके अंतमें नानाक्रंद नाम पुरमें जाता है॥ ७३ ॥ ॥ ॥ ॥

अतिदारुण पुकार रहे ऐसे नानाक्रंदगणोंको देखकर, आपही शून्य भया है हृदय ऐसा प्रेत दुःखी हुवा पुकार करता है ॥ ७४ ॥ यमदूतोंसे डरायाहुवा प्रेत उस पुरको त्यागकै दशवें मासमें कष्टसें सुतप्त भवनमें जाता है ॥ ७५ ॥ तहां पिंडदान और जल भोजन करकैभी नहीं सुखी होता है, एकादशवां म[illegible] पूरा हुए वोह प्रेत रौद्रपुरमें पहुँचता है ॥७६॥ एकादशवें मासका वहां पुत्रादिकोंसे दिया खाकर, साढ़ेग्यारा मासमें पयो-

नानाक्रंदगणान्दृष्ट्वाक्रंद[illegible]ान्सुदारुणान् ॥ स्वयंचशून्यहृदयःसमाक्रंदतिदुःखितः ॥ ७४ ॥ विहायतत्पुरंप्रेतस्तर्जितो यमकिंकरैः ॥ सुतप्तभव[illegible]च्छेद्दशमेमासिकृच्छ्रतः ॥ ७५ ॥ पिंडदानंजलंतत्रभुक्त्वापिनसु[illegible]॥ मासिचैकादशे पूर्णेपुरंरौद्रंसगच्छति ॥ ७[illegible] ॥ दशैकमासिकंतत्रभुंक्तेदत्तंसुतादिभिः ॥ सार्धेचैकादशेमासिपयोवर्षणमृच्छति ॥ ७७ ॥ मेघास्तत्रप्रवर्षंतिप्रेतानांदुःखदायकाः ॥ न्यूनाब्दिकंचयच्छ्राद्धंतत्रभुंक्तेसदुःखितः ॥ ७८ ॥ संपूर्णेतुततोवर्षेशीताढ्यंनगरंव्रजेत् ॥ हिमाच्छतगुणंतत्रमहाशीतंतपत्यपि ॥ ७९ ॥ शीतार्तःक्षुधितःसोऽपिवीक्षतेहिदिशोदश ॥ तिष्ठतेबांधवःकोऽपियोमेदुःखंव्यपोहति ॥ ८० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वर्षणनाम पुरमें जाता है ॥ ७७ ॥ तहां मेघ प्रेतोंको दुःखदायक वर्षा करते हैं. न्यूनाब्दिक जो श्राद्ध सो दुःखी हुवा प्रेत तहां भोगता है ॥ ७८ ॥ और वर्ष पूरेहुये पीछे, शीताढ्यनाम नगरमें जाता है तहां बरफसेभी सौगुणा महाशीत पड़ता है ॥ ७९ ॥ शीतसे पीड़ित हुवा, भूंखा वोह प्रेत दशोंदिशावोंमें देखता है कि—जो मेरो दुःखको नाश करै एसो कोई बांधव है ॥ ८० ॥ ॥

तहां वे दूत बोलते हैं-अरे! तुम्हारा अभी रक्षा करै ऐसा पुण्य कहां है. फेर वार्षिक पिंड वहां खाकर, धीरजताको प्राप्त होता है ॥ ८१ ॥ अ-गाड़ी वर्ष पूरेहुये यमको स्थान नजीक आया. तब बहुभीति पुरमें जाकर, हस्तमात्र शरीरको त्यागता है ॥ ८२ ॥ हे गरुड़! अंगुष्ठप्रमाण जीव कर्म भोगनेको यातनादेहको प्राप्त होकर, यमदूतोंके संग जाता है ॥ ८३ ॥ हे गरुड़! पारलौकिक दान जिन्होंनें नहीं दिया है वे दृढ बंध-

किंकरास्तेवदंत्यत्रकृतेपुण्यंहितादृशम् ॥ भुक्त्वाचवार्षिकंपिंडंधैर्यमालंबतेपुनः ॥ ८१ ॥ ततःसंवत्सरस्यांतेप्रत्यासन्नेयमालये ॥
बहुभीतिपुरेगत्वाहस्तमात्रंसमुत्सृजेत् ॥ ८२ ॥ अंगुष्ठमात्रोवायुश्चकर्मभोगायखेचरः ॥ यातनादेहमासाद्यसहयाम्यैःप्रयातिच
॥ ८३ ॥ और्ध्वदेहिकदानानियैर्नदत्तानिकाश्यप ॥ एवंकष्टेनयेयांतिगृहीतादृढबंधनैः ॥ ८४ ॥ धर्मराजपुरेसंतिचतुर्द्वाराणिखे
चर ॥ तत्रायंदक्षिणद्वारमार्गस्तेपरिकीर्तितः ॥ ८५ ॥ अस्मिन्पथिमहाघोरेक्षुत्तृषाश्रमपीडिताः ॥ यथायांतितथाप्रोक्तंकिंभूयःश्रो
तुमिच्छसि ॥ ८६ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेयममार्गनिरूपणंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ गरुडउवाच ॥ यममार्गमतिक्र
म्यगत्वापापीयमालये ॥ कीदृशींयातनांभुंक्तेतन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

नोंसे बँधे ऐसे कष्टसे जाते हैं ॥ ८४ ॥ हे गरुड़! धर्मराजके पुरमें चार द्वार हैं. तहां तुम्हारेको यह दक्षिण द्वार वर्णन किया है ॥ ८५ ॥ इस महाघोर मार्गमें क्षुधा, प्यास, परिश्रम इन्होंसे पीड़ित जैसे पापी जाते हैं तैसे तुम्हारेको कह्या फेर क्या सुननेकी इच्छा है ॥ ८६ ॥ इति श्री-गरुडपुराणस्य ज्ञानबोधिनीभाषाटीकायां यममार्गनिरूपणं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ गरुड़जी बोले कि- हे केशव! यमके मार्गका

उल्लंघनकरके पापी यमराजके स्थानमें जाकर, कैसी यातना भोगते हैं सो कहो ॥ १ ॥ अब श्रीभगवान कहते हैं– हे विनताके पुत्र! आदिसे अंततक कहता हूं. नरकोंको कहनेसे तुम कंपायमान होवोगे ॥ २ ॥ सो हेगरुड़! ४४ योजन बहुभीतिपुरसे अगाड़ी धर्मराजका महान् पुर है ॥ ३ ॥ उस पुरको हाहाकारसे संयुक्त देखकर, पापी पुकार करता है. यमराजके पुरवाशी दूत उस पुकारको सुनके, ॥ ४ ॥ जहां द्वारपालसे

श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ आद्यंतंचप्रवक्ष्यामिशृणुष्वविनतात्मज ॥ कथ्यमानेपिनरकेत्वंभविष्यसिकंपितः ॥ २ ॥ चत्वारिंशद्योजनानिचतुर्युक्तानिकाश्यप ॥ बहुभी[illegible]दग्रेधर्मराजपुरंमहत् ॥ ३ ॥ हाहाकारसमायुक्तंदृष्ट्वाक्रंदतिपातकी ॥ तत्क्रंदितंसमाकर्ण्ययमस्यपुरचारिणः ॥ ४ ॥ गत्वाचतत्रतेसर्वेप्रतीहारंवदंतिहि ॥ धर्मध्वजःप्रतीहारस्तत्र[illegible]ष्ठतिसर्वदा ॥ ५ ॥ [illegible]त्वाचित्रगुप्ता[illegible]स्यशुभाशुभम् ॥ ततस्तंचित्रगुप्तोऽपिधर्मराजंनिवेदयेत् ॥ ६ ॥ नास्तिकाये[illegible]स्ताक्ष्र्यमहापापरताःसदा ॥ तांश्चसर्वान्यथा[illegible]ंसम्यग्जानातिधर्मराट् ॥ ७ ॥ तथापिचित्रगुप्तायतेषां[illegible]पृच्छति ॥ चित्रगुप्तोऽपिसर्वज्ञःश्रवणान्परिपृच्छति ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥

कहते हैं तहां धर्मध्वज प्रतीहार सदा रहता है ॥ ५ ॥ वोह प्रतीहार चित्रगुप्तके पास जाकर, कहता है–फेर चित्रगुप्त उसको सब शुभ, अशुभ, अर्थात् पुण्य पाप, धर्मराजको कहता हैं ॥ ६ ॥ हे गरुड़! जो नास्तिक मनुष्य हैं सदा महापाप करते हैं उन सबको यथार्थ धर्मराज जानते हैं ॥ ७ ॥ तौभी चित्रगुप्तसे उन्होंका पुण्य पाप पूंछते हैं. चित्रगुप्त सब जानते हैं परंतु श्रवण देवतोंके प्रति पूछता है ॥ ८ ॥ ॥

श्रवण ब्रह्माके पुत्र हैं स्वर्ग, पृथ्वी, पातालमें विचरते हैं. और बहोत दूरसे सुनलेते हैं, दूरसे देखलेते हैं ॥ ९ ॥ उन्होंकी स्त्रियांभी तैसीही हैं. श्रवणी नामसे कहीजाती हैं. वह स्त्रियोंकी सब चेष्टा जानती हैं ॥ १० ॥ मनुष्य गुप्त वा प्रत्यक्ष जो कहींभी कहता तथा करता है सो सब चित्रगुप्तको वह श्रवण और श्रवणी कहती हैं ॥ ११ ॥ वे धर्मराजके चार हैं अर्थात् हरकाला हैं. मनुष्योंके मन, वाणी शरीरसे कियेहुवे

श्रवणाब्रह्मणःपुत्राःस्वर्भूपातालचारिणः ॥ दूरश्रवणविज्ञानाद्दूरदर्शनचक्षुषः ॥ ९ ॥ तेषांपत्न्यस्तथाभूताःश्रवण्यःपृथगाह्वयाः ॥ स्त्रीणांविचेष्टितंसर्वंताविजानंतितत्त्वतः ॥ १० ॥ नरैःप्रच्छन्नंप्रत्यक्षंयत्प्रोक्तंचकृतंचयत् ॥ सर्वमावेदयंत्येवचित्रगुप्तायतेचताः ॥ ११ ॥ चारास्तेधर्मराजस्यमनुष्याणांशुभाशुभम् ॥ मनोवाक्कायजंकर्मसर्वंजानंतितत्त्वतः ॥ १२ ॥ एवंतेषांशक्तिरस्तिमर्त्यामर्त्याधिकारिणाम् ॥ कथयंतिनृणांकर्मश्रवणाःसत्यवादिनः ॥ १३ ॥ व्रतैर्दानैश्चसत्योक्त्यायस्तोषयतितान्नरः ॥ भवंतितस्यतेसौम्याःस्वर्गमोक्षप्रदायिनः ॥ १४ ॥ पापिनांपापकर्माणिज्ञात्वातेसत्यवादिनः ॥ धर्मराजपुरःप्रोक्ताजायंतेदुःखदायिनः ॥ १५ ॥

पुण्य पाप सब यथार्थ जानते हैं ॥ १२ ॥ ऐसे मनुष्य और देवतावोंके अधिकारी श्रवण देवतावोंकी शक्ति है सो सत्यवादी श्रवण मनुष्योंका कर्म कहते हैं ॥ १३ ॥ व्रतकरनेसे दानसे सत्य बोलनेसे जो मनुष्य उनको प्रसन्न करता है उनको वे श्रवण प्रसन्नहुये स्वर्ग मोक्षके दाता होते हैं ॥ १४ ॥ और पापियोंके पापकर्म वे सत्यवादी श्रवण जानकर, धर्मराजके पुरमें कहे दुःखोंके दायक होते हैं ॥ १५ ॥

और सूर्य, १ चंद्रमा, २ वायु, ३ अग्नि, ३ स्वर्ग, ५ पृथ्वी, ६ जल, ७ हृदय, ८ यम, ९ दिन, १० रात्रि, ११ प्रातःसंध्या, १२ सायंसंध्या, १३ और धर्मराज, ए सब मनुष्यका वृत्तांत जानतेहैं ॥ १६ ॥ और धर्मराज, चित्रगुप्त, सूर्य, श्रवण, इत्यादि ए शरीरमें स्थित सब पुण्य पापको जानते हैं ॥ १७ ॥ यमराज ऐसे पापियोंके पापको निश्चय कर, उन पापियोंको बुलाय, अपना अतिभयानक रूप दिखाते हैं ॥ १८ ॥ वे पापी भयंकर यमरूपको देखते हैं, कैसा रूप है दंड हाथमें है, बड़ा शरीर है, भैंसापर बैठे हैं, ॥ १९ ॥ प्रलयके मेघके समान

आदित्यचं [illegible]वनिलोऽनलश्चद्यौर्भूमिरापोहृदयंयमश्च ॥ अहश्चरात्रिश्चउभेचसंध्येधर्मश्चजानातिनरस्यवृत्तम् ॥१६॥ धर्मराजश्चित्रगुप्तः श्रवणाभास्करादयः ॥ कायस्थं [illegible]श्यंतिपापंपुण्यंच[illegible]शः ॥ १७ ॥ एवंसुनिश्चयंकृत्वापापिनांपातकंयमः ॥ आहूयतान्निजंरूपंदर्शयत्यतिभीषणम् ॥१८॥ प[illegible]श्यंतियमरूपंभयंकरम् ॥ दंडहस्तंमहाकायंमहिषोपरिसंस्थितम् ॥ १९ ॥ प्रलयांबुदनिर्घोषंकज्जलाचलसन्निभम् ॥ विद्युत्प्रभायुधैर्भीमंद्वात्रिंशद्भुजसंयुतम् ॥ २० ॥ योजनत्रयविस्तारंवापीतुल्यवि[illegible] ॥ दंष्ट्राकरालवदनंरक्ताक्षंदीर्घनासिकम् ॥ २१ ॥ मृत्युज्वरादिभिर्युक्तश्चित्रगुप्तोऽपिभीषणः ॥ सर्वेदूताश्चगर्जंतियमतुल्यास्तदंतिके ॥ २२ ॥ ॥

गर्जना करते हैं, कज्जलाचलपर्वतजैसा स्वरूप है, विजलीजैसे शस्त्रोंसे भयंकर हैं, ३२ भुजा हैं ॥ २० ॥ और बारह कोश तीन योजन अर्थात् चौड़े लंबे हैं, बावड़ीजैसे नेत्र हैं, दाढ़ोंसे विकराल मुख हैं, रक्तनेत्र हैं, लंबी नासिका है ॥ २१ ॥ ऐसे मृत्युज्वरादिकोंसे युक्त चित्रगुप्तभी भयंकररूप, सब दूतभी यमराजजैसे पापियोंके नजीक गर्जना करै हैं ॥ २२ ॥ ॥ ॥ ॥

उन सबको देख, वोह दुष्ट भयभीत हो, हाय! हाय!! ऐसे बोलता है. नहीं दिया है दान, ऐसा पापी कंपायमान होता है फेर पुकारता है
॥ २३ ॥ तहां सब पुकाररहे और अपने कर्मोंको शोचरहे ऐसे पापियोंको यमकी अज्ञासे चित्रगुप्त कहते हैं ॥ २४ ॥ हे पापियो! तुम दुरा-
चारी हो, हम हैं ऐसे गर्वितहो, सो अरे मूर्खो! तुमने काहेके वास्ते पापसंचय किया ॥ २५ ॥ कामभोग तथा क्रोधसे होनेवाले तथा पापि-

तंदृष्ट्वाभयभीतस्तुहाहेतिवदतेखलः ॥ अदत्तदानःपापात्माकंपतेक्रंदतेपुनः ॥ २३ ॥ ततोवदतितान्सर्वान्क्रंदमानांश्चपा
पिनः ॥ शोचतःस्वानिकर्माणिचित्रगुप्तोयमाज्ञया ॥ २४ ॥ भोभोःपापादुराचाराअहंकारप्रदूषिताः ॥ किमर्थमर्जितंपापं
युष्माभिरविवेकिभिः ॥ २५ ॥ कामक्रोधाद्यदुत्पन्नंसंगमेनचपापिनाम् ॥ तत्पापंदुःखदंमूढाःकिमर्थंचरितंजनाः ॥ २६ ॥
कृतवंतःपुरायूयंपापान्यत्यंतहर्षिताः ॥ तथैवयातनाभोग्याः किमिदानींपराङ्मुखाः ॥ २७ ॥ कृतानियानिपापानियुष्मा
भिःसुबहून्यपि ॥ तानिपापानिदुःखस्यकारणंचनवंचना ॥ २८ ॥ मूर्खेपिपंडितेवापिदरिद्रेवाश्रियान्विते ॥ सबलेनिर्बले
वापिसमवर्तीयमःस्मृतः ॥ २९ ॥ ॥ ॥ ॥

योंके संगसे होनेवाले और दुःखदेनेवाले उस पापको हे मनुष्यो! क्यों संचय किया ॥ २६ ॥ जैसे पहले तुम पापोंको बड़ी खुसीसे किये हो तै-
सेही यमकी यातना भी भोगो. अब क्यों पीछे मुख करते हो ॥ २७ ॥ जो तुमनें बहुतसे पाप करेहैं वे सब दुःखके कारण हैं टलैंगे नहीं ॥ २८ ॥
क्योंकि मूर्खमें, पंडितमें, दरिद्रीमें, लक्ष्मीवालेमें, सबलमें, निर्बलमें, यम तो समवर्ती कहे हैं ॥ २९ ॥ ॥ ॥

दे पापी ऐसे चित्रगुप्तके वाक्य सुनकर, अपने कर्मोंके दुःख स्मरण करते, चुप हुवे निश्चल स्थित रहते हैं ॥ ३० ॥ धर्मराजभी पापी उन्होंको चोरजैसे निश्चल स्थितहुए देख, यथायोग्य दंड देनेको दूतोंको आज्ञा करते हैं ॥ ३१ ॥ पीछे वे निर्दई दूत ताड़ना देकर, बोलते हैं— हे पापिन् ! महाघोर अतिभयंकर नरकोंमें चलो ॥ ३२ ॥ यमके आज्ञाकारी प्रचंड चंडकआदिक वे दूत एकपाशमें उन सबोंको बांध, नरकोंमें

चित्रगुप्तस्येतिवाक्यंश्रुत्वातपापिनस्तदा ॥ शोचंतःस्वानिकर्माणितूष्णींतिष्ठंतिनिश्चलाः ॥ ३० ॥ धर्मराजोऽपितान्दृष्ट्वा चोरवन्निश्चलान्स्थितान् ॥ आज्ञापयतिपापानांशास्तिंचैवयथोचिताम् ॥ ३१ ॥ ततस्तेनिर्दयादूतास्ताडयित्वावदंतिच ॥ गच्छपापिन्महाघोरान्नरकानतिभीषणान् ॥ ३२ ॥ यमाज्ञाकारिणोदूताःप्रचंडचंडकादयः ॥ एकपाशेनतान्बध्वानयंति नरकान्प्रति ॥ ३३ ॥ तत्रवृक्षोमहानेकोज्वलदग्निसमप्रभः ॥ पंचयोजनविस्तीर्णएकयोजनमुच्छ्रितः ॥ ३४ ॥ तद्वृक्षेशृंखलैर्बद्ध्वाधोमुखंताडयंतिते ॥ रुदंतिज्वलितास्तत्रतेषांत्रातानविद्यते ॥ ३५ ॥ तस्मिन्वैशाल्मलीवृक्षेलंबंतेऽनेकपापिनः ॥ क्षुत्पिपासापरिश्रांतायमदूतैश्चताडिताः ॥ ३६ ॥ ॥ ॥ ॥

लेजाते हैं ॥ ३३ ॥ तहां एक बड़ा प्रज्वलित अग्निजैसा वृक्ष हैं. पांच योजन चौड़ा है; एकयोजन ऊंचा है ॥ ३४ ॥ उस वृक्षपर शृंखलोंसे बांध, नीचे मुख कर, वे दूत मारते हैं. तहां वृक्षकी अग्निसे जलतेहुये रोते हैं. उनको रक्षक कोई नहीं विद्यमान है ॥ ३५ ॥ उस शाल्मली वृक्षपर अनेक पापी लटकते हैं. कैसे पापी हैं ? क्षुधा प्याससे व्याकुल, यमदूतोंसें ताड़ित भये ॥ ३६ ॥ ॥ ॥

निराधार हुवे वे पापी मेरा अपराध क्षमा करो ऐसे हाथ जोड़, उन दूतोंके प्रति प्रार्थना करते हैं ॥ ३७ ॥ वारंवार यमदूतोंसे लोहेकी लकड़ियोंसे ताड़ित होते हैं और मुद्गर, तोमर, भल्ला, गदा, मुसल इन्होंसेभी ताड़ित होते हैं ॥ ३८ ॥ मार पड़नेसे चेष्टारहितहुवे वे पापी मूर्छाको प्राप्त होते हैं ॥ ३९ ॥ ऐसे चेष्टारहितहुवे उन पापियोंको देख, वे दूत कहते हैं ॥ ३९ ॥ हे पापियो! हे दुराचारियो! पहले किस वास्ते दुष्टकर्म किया? सुगम अन्नदान, जलदान, वस्त्रदान, क्यों नहीं दिये? ॥ ४० ॥ आधाग्रासमात्रभी कभी कुत्ते वा काकको बलि नहीं दिया,

क्षमध्वंभोपराधंमेकृतांजलिपुटाइति ॥ विज्ञापयंतितान्दूतान्पापिष्ठास्तेनिराश्रयाः ॥ ३७ ॥ पुनःपुनश्चतेदूतैर्हन्यंतेलोहयष्टिभिः ॥ मुद्गरैस्तोमरैःकुंतैर्गदाभिर्मुसलैर्भृशम् ॥ ३८ ॥ ताडनाच्चैवनिश्चेष्टामूर्च्छिताश्चभवंतिते ॥ तथानिश्चेष्टितान्दृष्ट्वाकिंकरास्तेवदंतिहि ॥ ३९ ॥ भोभोपापादुराचाराःकिमर्थंदुष्टचेष्टितम् ॥ सुलभानिनदत्तानिजलान्यन्यान्यपिकचित् ॥ ४० ॥ ग्रासार्धमपिनोदत्तंनश्ववायसयोर्बलिम् ॥ नमस्कृतानातिथयोनकृतंपितृतर्पणम् ॥ ४१ ॥ यमस्यचित्रगुप्तस्यनकृतंध्यानमुत्तमम् ॥ नजप्तश्चतयोर्मंत्रोनभवेद्येनयातना ॥ ४२ ॥ नापिकिंचित्कृतंतीर्थंपूजितानैवदेवताः ॥ गृहाश्रमस्थितेनापिहंतकारोऽपिनोधृतः ॥ ४३ ॥ ॥

अभ्यागतको श्रद्धामुजब देकर, नमस्कार नहीं किया, पितृश्वरोंके लिये तर्पणभी नहीं किया ॥ ४१ ॥ अरे मूर्खो! यमराज और चित्रगुप्तका कभी ध्यानभी नहीं किया. उनको मंत्रभी नहीं जपा कि– जिस्से यमकी यातना नहीं होती ॥ ४२ ॥ कोई तीर्थभी नहीं किया और देवपूजा नहीं करी, गृहस्थाश्रम[illegible]में रहकर, पितरोंको हंतकार नहीं निकाला ॥ ४३ ॥ ॥ ॥ ॥

माहात्माकी शुश्रूषाभी नहीं करी. सो अब अपने पापका फल भोगो. तुम पापी हो तुमने धर्म नहीं किया है, तिस्से तुमको मारना शुभ है ॥ ४४ ॥ और अपराधक्षमाको भगवान् हरि ईश्वर करते हैं तुमतो अपराधवालेको उनकी आज्ञासे दंड देते हैं ॥ ४५ ॥ ऐसे कहकर, निर्दयी वे दूत उनको ताड़ना देते हैं. उस मारके पड़नेसे नीचे बलता कोलसा जैसा दीखते हुये पड़ते हैं ॥ ४६ ॥ पड़नेसे शाल्मलीके पत्रोंसे शरीर छिन्नभिन्न होता है, उनको नीचे पड़े देखकर, कुत्ते खाते हैं और वह पापी रोते हैं ॥ ४७ ॥ वे दूत रोतेहुये पापियोंका मुख धूरसे भर, ना-

शुश्रूषिताश्चन संतोभुंक्ष्वपापफलंस्वकम् ॥ यतस्त्वंधर्महीनोऽसिततःसंताड्यतेशुभम् ॥ ४४ ॥ क्षमापराधंकुरुतेभगवान्हरिरीश्वरः ॥ वयंतुसापराधानांदंडदाहितदाज्ञया ॥ ४५ ॥ एवमुक्त्वाचतेदूतानिर्दयंताडयंतितान् ॥ ज्वलदंगारसदृशाःपतितास्ताडनादधः ॥ ४६ ॥ पतनात्तस्यपत्रैश्चगात्रच्छेदोभवेत्ततः ॥ तानधःपतितान्श्वानोभक्षयंतिरुदंतिते ॥ ४७ ॥ रुदंतस्तेततः दूतैर्मुखमापूर्यरेणुभिः ॥ निबध्यविविधैःपाशैर्हन्यंतेकेऽपिमुद्गरैः ॥ ४८ ॥ पापिनःकेऽपिभिद्यंतेक्रकचैःकाष्ठवद्द्विधा ॥ क्षिप्त्वाचान्येधरापृष्ठेकुठारैःखंडशःकृताः ॥ ४९ ॥ अर्धंखात्वावटेके[illegible]तमूर्ध्निसायकैः ॥ अपरेयंत्रमध्यस्थाःपीड्यंतेचेक्षुदंडवत् ॥ ५० ॥

नाप्रकारके पाशोंसे बांधकर, कितनिकको मुद्गरोंसे मारते हैं ॥ ४८ ॥ कितेक आरासे काष्ठजैसे दो भागसे भेदन होते हैं, कितेक पृथ्वीपर डालकर, कुठारोंसे टुकड़ा होते हैं, ॥ ४९ ॥ कितेकको आधा खड्डेमें गाड़, माथेमें बाणोंसे भेदन करते हैं, कितेक यंत्रमें डालेहुए जैसे ऊषके दंडको पेरते हैं तैसे पेरेजाते हैं ॥ ५० ॥

कितेक जलरहे अंगारोंसहितमें लकड़ियोंमें डालकर, चारोंतरफ लकड़ियोंमें अंगार लगाके, लोहपिंडके जैसे धमते हैं ॥ ५१ ॥ कोई घृतके कटाहमें पकायेतते हैं कोई तेलके कटाहमें पकायेते हैं ॥ ५२ ॥ कोई मतवाले हाथियोंके अगाड़ी डालजाते हैं, कोई हाथ पैर बांधिकै नीचे मुख कर दियेजाते हैं ॥ ५३ ॥ कोई कूपोंमें डालेजाते हैं, कोई पर्वतसे पटकजाते हैं, कीड़ोंके कुंडमें डूबेहुये दूसरे कोई कीड़ोंसे खायेजाते

केचित्प्रज्वलमानैस्तुसांगारैःपरितोभृशम् ॥ उल्मुकैर्वेष्टयित्वाचध्मायंतेलोहपिंडवत् ॥ ५१ ॥ केचिद्घृतमयेपाकेतैलपाकेतथापरे ॥
कटाहक्षिप्तवटवत्प्रक्षिप्यंतेयतस्ततः ॥ ५२ ॥ केचिन्मत्तगजेंद्राणांक्षिप्यंतेपुरतःपथि ॥ बद्धाहस्तौचपादौचक्रियंतेकेऽप्यधोमुखाः
॥ ५३ ॥ क्षिप्यंतेकेपिकूपेषुपात्यंतेकेपिपर्वतात् ॥ निमग्नाःकृमिकुंडेषुतुद्यंतेकृमिभिःपरे ॥ ५४ ॥ वज्रतुंडैर्महाकाकैर्गृध्रैरामिषगृध्नुभिः ॥
निष्कुष्यंतेशिरोदेशेनेत्रेवास्येचचंचुभिः ॥ ५५ ॥ नृणंवैप्रार्थयंत्यन्येदेहिदेहिधनंमम ॥ यमलोकेमयादृष्टोधनंमेभक्षितंत्वया ॥ ५६ ॥
एवंविवदमानानांपापिनांनरकालये ॥ छित्त्वासंदंशकैर्दूतामांसखंडान्ददंतिच ॥ ५७ ॥ ॥ ॥

हैं ॥ ५४ ॥ वज्रजैसे तुंड अर्थात् चोंचवाले काकोंसे और मांस खानेवाले गीधोंसे कितेक पापियोंके माथा, नेत्र, मुख चोंचोंसे उखाड़े जाते है ॥ ५५ ॥ हमारा धन देदे २ ऐसे दूसरे मनुष्यसे कहते हैं. और कहते हैं हमारा धन पूर्वजन्ममें खायगया. आज तुझको यमलोकमें मैनें देखा है ॥ ५६ ॥ ऐसे विवाद कररहे पापियोंको नरकस्थानमें दूत छूरावोंसे मांस काटकाटकर, मांसके टुकड़े, मांगनेवालोंको देते हैं ॥ ५७ ॥

यमदूत ऐसे उन पापियोंको ता[illegible]दकर, यमराजकी आज्ञासे पाशोंसें खींचकर, तामिश्रआदि घोर नरकोंमें ड[illegible]ते हैं ॥ ५८ ॥ उस शाल्मली वृक्षके समीप बहोत दुःखवा[illegible] नरक हैं. उन न[illegible]कोंमें महान्दु[illegible]ख है. वोह दुःख वाणीसेभी नहीं कह्या जाता ॥ ५९ ॥ हे गरुड़ ! चौरासी लक्ष ८४००००० नरक हैं. उन्होंमें अत्यंत घोरसे घोर इक्कीस २१ नरक हैं ॥ ६० ॥ तामिश्र, लोहशंकु, महारौरव, शाल्मली, रौरव, कुड्मल, कालसूत्रक, पूतिमृत्ति-

एवंसंताड्यतान्दूताःसंकृष्ययमशासनात् ॥ तामिस्रादिषुघोरेषुक्षिप्यंतेनरकेषुच ॥ ५८ ॥ नरकादुःखबहुलास्तत्रवृक्षसमीपतः ॥ तेष्वस्तियन्महद्दुःखंतद्वाचामप्यगोचरम् ॥ ५९ ॥ चतुराशीतिलक्षाणिनरकाःसंतिखेचर ॥ तेषांमध्येघोरतमाधौरेयास्त्वेकविंशतिः ॥ ६० ॥ तामिस्रोलोहशंकुश्चमहारौरवशाल्मली ॥ रौरवःकुड्मलःकालसूत्रकःपूतिमृत्तिकः ॥ ६१ ॥ संघातोलोहितोदश्चसविषःसंप्रतापनः ॥ महानिरयकाकोलौसंजीवनमहापथौ ॥ ६२ ॥ अवीचिरंधतामिस्रःकुंभीपाकस्तथैवच ॥ संप्रतापननामैकस्तपनस्त्वेकविंशतिः ॥ ६३ ॥ नानापीडामयाःसर्वेनानाभेदैःप्रकल्पिताः ॥ नानापापविपाकाश्चकिंकरौघैरधिष्ठिताः ॥ ६४ ॥ एतेषुपतितामूढाःपापिष्ठाधर्मवर्जिताः ॥ तत्रभुंजंतिकल्पांतेतास्तानरकयातनाः ॥ ६५ ॥ ॥ ॥

क, ॥ ६१ ॥ संघात, लोहितोद, सविष, संप्रतापन, महानिरय, काकोल, संजीवन, महापथ, ॥ ६२ ॥ अवीचि, अंधतामिस्र, कुंभीपाक, संप्रतापन, तपन ॥ ६३ ॥ ए सब इक्कीस नरक नानाप्रकारकी पीड़ामय भई हैं; इन्होंमें जुदी जुदी पीड़ा कल्पित कीगई हैं. नानाप्रकारके पापोंका फल है. दूतोंके समूह ऊपर खड़े हैं ॥ ६४ ॥ इन्होंमें पड़े मूर्ख पापिष्ठ धर्म नहीं करनेवाले तहां कल्पतक वो वो नरक यातना भोगते हैं ॥ ६५ ॥ ॥

जो तामिस्र, अंधतामिस्र, रौरवादिक, यातना हैं उनको स्त्री वा पुरुष, परस्पर संगसे पाप करनेवाले, भोगते हैं ॥ ६६ ॥ ऐसेही कुटुंब वा फक्त अपना पेट भरनेवाला पुरुष यहां दोनों कुटुम्ब वा देहका त्यागकर, मर, उसका ऐसा फल भोगता है ॥ ६७ ॥ अपने खास इस शरीरको त्यागकर, एकही रस्तेमें जाता है. कैसा शरीर? कि— जिसको पाप भोगनेवाले पुरुष भूत (प्राणियों) के द्रोहमें पालते हैं ॥६८॥ उस कुटुंबपालन करनेवालेको नरकमेंही प्राप्तहुवा पाप प्रारब्धयोगसे वो भोगता है. जैसा गृहस्थका धन गया हो वोह दुःखी रहै तैसे दुःखी रहता हे

यास्तामिस्रांधतामिस्रारौरवाद्याश्चयातनाः ॥ भुंक्तेनरोवानारीवामिथःसंगेननिर्मिताः ॥ ६६ ॥ एवंकुटुंबंबिभ्राणउदरंभरएववा ॥ विसृज्येहोभयंप्रेत्यभुंक्तेतत्फलमीदृशम् ॥ ६७ ॥ एकःप्रपद्यतेध्वांतंहित्वेदंस्वंकलेवरम् ॥ कुशलेतरपाथेयोभूतद्रोहेणयद्भृतम् ॥ ६८ ॥ दैवेनासादितंतस्यशमलेनिरयेपुमान् ॥ भुंक्तेकुटुंबपोषस्यहृतद्रव्यइवातुरः ॥ ६९ ॥ केवलेनह्यधर्मेणकुटुंबभरणोत्सुकः ॥ यातिजीवोंऽधतामिस्रंचरमंतमसःपदम् ॥ ७० ॥ अधस्तान्नरलोकस्ययावतीर्यातनादयः ॥ क्रमशःसमनुक्रम्यपुनरत्राव्रजेच्छुचिः ॥ ७१ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेयमयातनानिरूपणंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ॥

॥ ६९ ॥ ऐसे केवल पापसेही कुटुंब पालनेमें उत्साहवान् जीव सबसे महान्दुःखवाले अंधतामिस्र नामक नरकमें पड़ता है ॥ ७० ॥ मनुष्यलोकके नीचे जितनी नरकयातना हैं. क्रमसे सबको भोगकर, पीछे शुद्ध होकर, यहां आता है ॥ ७१ ॥ इति श्रीगरुडपुराणसारोद्धारस्य ज्ञानबोधिनीभाषाटीकायां यमयातनानिरूपणं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

गरुड़जी पूछते हैं– हे केशव! यमके मार्गमें पुरुष कौन पापोंसे जाते हैं? तथा वैतरणीमें कौन [illegible] पड़ते हैं? कौनसे पापोंसे [illegible]तरणीमें और नरकोंमें पड़ते हैं? स[illegible] १ ॥ श्रीभगवान कहते हैं– सदा जो कुकर्ममें आसक्त हैं, शुभ [illegible]से विमुख हैं वे नरकोंसे नरकोंमें जाते हैं, दुःखोंमे दुःख भोगते हैं, भ[illegible]से भय प्राप्त होते हैं ॥ २ ॥ धर्मराजके पुरमें धर्मात्मा तीन द्वारोंसे जाते हैं. और पापीतौ केवल द-क्षिणद्वारसे ही जाते हैं ॥ ३ ॥ इस दक्षिणमार्गमेंही महादुःख है तथा वैतरणी नदी है. तिसमें जो पापी जाते हैं उन्होंकी हकीकत तुमसे हम

॥ गरुडउवाच ॥ ॥ कैर्गच्छंतिमहामार्गेवैतरण्यांपतंतिकैः ॥ कैःपापैर्नरकेयांतितन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ सदैवाकर्मनिरताःशुभकर्मपराङ्मुखाः ॥ नरकान्नरकंयांतिदुःखाद्दुःखंभयाद्भयम् ॥ २ ॥ धर्मराजपुरेयांतित्रिभिर्द्वारैस्तुधार्मिकाः ॥ पापास्तुदक्षिणद्वारमार्गेणैवव्रजंतितम् ॥ ३ ॥ अस्मिन्नेवमहादुःखेमार्गेवैतरणीनदी ॥ तत्रयेपापिनोयांतितानहंकथयामिते ॥ ४ ॥ ब्रह्मघ्नाश्चसुरापाश्चगोघ्नावाबालघातकाः ॥ स्त्रीघातीगर्भपातीचयेचप्रच्छन्नपापिनः ॥ ५ ॥ येहरंतिगुरोर्द्रव्यंदेवद्रव्यंद्विजस्यवा ॥ स्त्रीद्रव्यहारिणोयेचबालद्रव्यहराश्चये ॥ ६ ॥ येऋणंनप्रयच्छंतियेवैन्यासापहारकाः ॥ विश्वासघातकायेचसविषान्नेनमारकाः ॥ ७ ॥

कहते हैं ॥ ४ ॥ ब्रह्महत्यावाले, मदिरा पीनेवाले, गौ मारनेवाले, बालघाती, स्त्रीघाती, गर्भपाती और गुप्त पाप करनेवाले ॥ ५ ॥ गुरुद्रव्य चोरनेवाले, देवद्रव्य, ब्राह्मणद्रव्य चोरनेवाले, स्त्रीद्रव्य चोरनेवाले, बाल द्रव्य चोरानेवाले ॥ ६ ॥ ऋण नहीं देनेवाले, विश्वाससे स्थापित व-स्तुको नहीं देनेवाले, विश्वासघाती, अन्नमें जहर डालकर, मारनेवाले ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥

दूसरेका दोष ग्रहण करनेवाले, गुण छिपानेवाले, गुणवानोंमें मत्सरता रखनेवाले, नीचोंसे स्नेह करनेवाले, मूर्ख सत्संगतिसे विमुख ॥ ८ ॥ और तीर्थ, सज्जन, सत्कर्म, गुरु, देव, इन्होंकी निंदा करनेवाले, पुराण, वेद, मीमांसा, न्याय, वेदांत, इन्होंमें दूषण काढ़नेवाले, ॥ ९ ॥ दुःखीको देख, हर्ष करनेवाले, सुखीको देख, दुःख देनेवाले, कुबचन बोलनेवाले, दुष्टचित्तवाले, ॥ १० ॥ हितका वचन शुनते नहीं, शास्त्रवार्ताको

दोषग्राहीगुणाश्लाघीगुणवत्सुसमत्सराः ॥ नीचानुरागिणोमूढाःसत्संगतिपराङ्मुखाः ॥ ८ ॥ तीर्थसज्जनसत्कर्मगुरुदेवविनिंदकाः ॥ पुराणवेदमीमांसान्यायवेदांतदूषकाः ॥ ९ ॥ हर्षितादुःखितंदृष्ट्वाहर्षितेदुःखदायकाः ॥ दुष्टवाक्यस्यवक्तारोदुष्टचित्ताश्रयेसदा ॥ १० ॥ नशृण्वंतिहितंवाक्यंशास्त्रवार्ताकदापिन ॥ आत्मसंभाविताःस्तब्धामूढाःपंडितमानिनः ॥ ११ ॥ एतेचान्येचबहवःपापिष्ठाधर्मवर्जिताः ॥ गच्छंतियममार्गेहिरोदमानादिवानिशम् ॥ १२ ॥ यमदूतैस्ताड्यमानायांति वैतरणींप्रति ॥ तस्यांपतंतियेपापास्तानहंकथयामिते ॥ १३ ॥ मातरंयेऽवमन्यंतेपितरंगुरुमेवच ॥ आचार्यंचापिपूज्यंचतस्यांमज्जंतितेनराः ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥

कभी नहीं शुनैं, आत्माभिमानी, ढीठ, मूर्ख और अपनेको पंडित माननेवाले ॥ ११ ॥ ए तथा औरभी पापिष्ठ धर्मसे रहित यमराजके मार्गमें रातदिन रोतेहुये जाते हैं ॥ १२ ॥ यमदूतोंसे ताड़ितहुये वैतरणीमें जाते हैं. तिसमें जो पापी पड़ते हैं उन्होंको तुम्हारेसे कहता हूं ॥ १३ ॥ जो माताका अपमान करते हैं तथा पिता, गुरु, आचार्य, पूज्य इन्होंको अपमान करते हैं वे उस वैतरणीमें डूबते हैं ॥ १४ ॥ ॥

पतिव्रता, कुलीन, सुंदरस्वभाववाली, नम्रतायुक्त ऐसी स्त्रीको जो मिथ्याद्वेषसे त्यागै हैं वे वैतरणीमें पड़ते हैं ॥ १५ ॥ महात्माओंके हजारों गुणोंमे जो दोष लगाते हैं और निंदा कर निंदा करते वे भी वैतरणीमें पड़ते हैं ॥ १६ ॥ ब्राह्मणको प्रतिज्ञाकरके जो प्रतिज्ञासुजब नहीं देवै, देनेको नामसे बुलाके, जो नहीं देवै उन दोनोंको बास वैतरणीमें निरंतर होता है ॥ १७ ॥ और आप देकर, पीछे लेता है, देकर पीछे पश्चात्ता-

पतिव्रतांसाधुशीलाकुलीनांविनयान्विताम् ॥ स्त्रियंत्यजंतियेद्वेषाद्वैतरण्यांपतंतिते ॥ १५ ॥ सतांगुणसहस्रेषुदोषानारोपयंतिये ॥
तेष्ववज्ञांचकुर्वंतिवैतरण्यांपतंतिते ॥ १६ ॥ ब्राह्मणायप्रतिश्रुत्ययथार्थंनददातियः ॥ आहूयनास्तियोब्रूयात्तयोर्वासश्चसंततम्
॥ १७ ॥ स्वयंदत्तापहर्ताचदानंदत्वानुतापकः ॥ परवृत्तिहरश्चैवदानेदत्तेनिवारकः ॥ १८ ॥ यज्ञविध्वंसकश्चैवकथाभंगकरश्चयः ॥
क्षेत्रसीमाहरश्चैव [illegible] गोचर [illegible] ॥ १९ ॥ ब्राह्मणोरसविक्रेतायदिस्याद्वृषलीपतिः ॥ वेदोक्तयज्ञादन्यत्रस्वार्थंपशुमारकः
॥ २० ॥ ब्रह्मकर्मपरिभ्रष्टो मांसभोक्ता च मद्यपः ॥ उच्छृंखलस्वभावोयःशास्त्राध्ययनवर्जितः ॥ २१ ॥ ॥ ॥

प करता है, दूसरेकी जीविका लेता है, दान देनेवालेको बर्जता है, ॥१८॥ यज्ञविध्वंस करता है, कथामें भंग करता है, खेतकी सीमा दाबता है, गोचरमें खेती करता है, ॥ १९ ॥ ब्राह्मण होकर, रस बेंचता है, ब्राह्मण होकर, शूद्रीसे संग करता है, वेदोक्त यज्ञविना अपनेवास्ते जीव मारता है ॥ २० ॥ और ब्राह्मणकर्मसे भ्रष्ट, मांस खानेवाला, मद्यपान करनेवाला, निरंकुश स्वभाववाला, शास्त्रके पढ़नेसे रहित ॥ २१ ॥

और शूद्र वेदके अक्षर पढ़ै, कपिला गौको दूध पीवै, यज्ञोपवीत धारण करै, ब्राह्मणीसे संभोग करै, ॥ २२ ॥ राजाकी स्त्रीकी इच्छा करै, परदारा हरलेवै, कन्यामें कामकी इच्छा करै, पतिव्रताको दूषित करै, ॥ २३ ॥ यह तथा और बहोत निषिद्ध आचरणसे प्रसन्न रहनेवाले स्वधर्मत्यागी मूढ़ वैतरणीमें पड़ते हैं ॥ २४ ॥ सर्वमार्गको उल्लंघकर, पापी यमके स्थानमें जाते हैं. यमकी आज्ञासे दूत पीछे लाकर, पापियोंको वैतरणीमें डालते हैं ॥ २५ ॥ हे गरुड़ ! संपूर्णमें मुख्य जो इक्कीसो नरक उन सबके दुःखपरिश्रमको वैतरणी धारण करती है. अर्थात् सब नरकोंमें जो

वेदाक्षरंपठेच्छूद्रःकापिलंयःपयःपिबेत् ॥ धारयेद्ब्रह्मसूत्रंचभवेद्वाब्राह्मणीपतिः ॥ २२ ॥ राजभार्याभिलाषीचपरदारापहारकः ॥ कन्यायांकामुकश्चैवसतीनांदूषकश्चयः ॥ २३ ॥ एतेचान्येचबहवोनिषिद्धाचरणोत्सुकाः ॥ विहितत्यागिनोमूढावैतरण्यांपतंतिते ॥ २४ ॥ सर्वमार्गमतिक्रम्ययांतिपापायमालये ॥ पुनर्यमाज्ञयागत्यदूतास्तस्यांक्षिपंतितान् ॥ २५ ॥ यावैधुरंधरासर्वधौरेयाणांखगाधिप ॥ अतस्तस्यांप्रक्षिपंतिवैतरण्यांचपापिनः ॥ २६ ॥ कृष्णागौर्यदिनोदत्तानोर्ध्वदेहक्रियाःकृताः ॥ तस्यांभुक्त्वामहद्दुःखंयांतिवृक्षंतटोद्भवम् ॥ २७ ॥ कूटसाक्ष्यंप्रदातारःकूटधर्मपरायणाः ॥ छलेनार्जनसंसक्ताश्चौर्यवृत्त्याचजीविनः ॥ २८ ॥ ॥

दुःख है सो वैतरणीमें भोगते हैं. इसीसे उसमें पापियोंको डालते हैं ॥ २६ ॥ और जो काली गौ दान नहीं करते हैं, पारलौकिक क्रिया नहीं करते हैं वे उस वैतरणीमें महान्दुःख भोग, वैतरणीके तटपर, प्रगटहुवे वृक्षपर प्राप्त होते हैं ॥ २७ ॥ जो मिथ्या साक्षी देते हैं, जो मिथ्या धर्ममें परायण हैं, कपटसे धन संग्रह करते हैं, चौरवृत्तिसे जीविका करते हैं ॥ २८ ॥ ॥ ॥

जो बहोत वृक्ष काटते हैं, बन, आराम अर्थात् बगीचा फोड़ते हैं, व्रत, तीर्थको त्याग कर, विधवा स्त्रीका शील नाश करते हैं, ॥ २९ ॥ स्त्री होकर, पतिमें दूषण देवै, मनमें दूसरे पुरुषकी इच्छा ..., यह करे भये सब शाल्मली वृक्षपर ब...त ताड़ना भोगते हैं ॥ ३० ॥ ताड़नासे पड़ेहुये इन्होंको दूत नरकोंमें फेंकते हैं उन... जो पापी पड़े हैं उनकों तुम्हारे लिये कहता हूं ॥ ३१ ॥ जो नास्तिक हैं, मर्यादाभिन्न हैं और कदर्य अर्थात् अपने शरीरको. धर्मकृत्य श्राद्धदानादिको और पुत्रोंको, स्त्रियोंको, देवतावोंको, अतिथि अभ्यागतोंको और सेवकोंको पीड़ि-

छेदयंत्यतिवृक्षांश्चवनारामविभंजकाः ॥ व्रतंतीर्थंपरित्यज्यविधवाशीलनाशकाः ॥ २९ ॥ भर्तारंदूषयेन्नारीपरंमनसिधारयेत् ॥ इत्या द्याःशाल्मलीवृक्षेभुंजंतेबहुताडनम् ॥ ३० ॥ ताडनात्पतितादूताःक्षिपंतिनरकेषुतान् ॥ पतंतितेषुयेपापास्तानहंकथयामिते ॥ ३१ ॥ नास्तिकाभिन्नमर्यादाःकदर्याविषयात्मकाः ॥ दांभिकाश्चकृतघ्नाश्चतेवैनरकगामिनः ॥ ३२ ॥ कूपानांचतडागानांवापीनांदेवसद्मनाम् ॥ प्रजागृहाणांभेत्तारस्तेवैनरकगामिनः ॥ ३३ ॥ विसृज्याश्नंतियेदारान्छिशून्भृत्यांस्तथागुरून् ॥ उत्सृज्यपितृदेवेज्यां तेवैनरकगामिनः ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

त करनेवाला, अर्थात् आप नहीं खा शक्ता और दूसेरेकोभी नहीं खिला शक्ता सो कदर्य है, विषयी हैं, कपटी हैं, कृतघ्नी हैं वेही नरकोंमें जानेवाले हैं ॥ ३२ ॥ और कूप, तलाव, बावड़ी, देवस्थान, प्रजाका घर, इन्होंका भेदन करनेवाले हैं वे भी नरकमें जाते हैं ॥ ३३ ॥ जो स्त्री, बालक, सेवक, गुरु इन्होंको त्याग कर, भोजन करते हैं तथा पितृ, देव अर्थात् बलिवैश्वदेव विना किये और जहां (पितृदेवेज्यं)

ऐसी पाठहोवै वहांपर पितृदेवोंके ईज्य, नाम पूज्य जो हरि तिन्होंको त्याग, भोजन करते हैं. वे निश्चय नरकमें जाते हैं ॥ ३४ ॥ और शंकु, सेतु, काष्ठ, पत्थर, कांटा इन्होंसे जो मार्ग रोकते हैं वे निश्चय नरकमें जाते हैं ॥ ३५ ॥ और शिव, देवी, हरि, सूर्य, गणेश और श्रेष्ठ उपदेश करनेवाला गुरु, पंडित इन्होंको जो मूर्ख नहीं पूजते हैं वे भी निश्चय नरकमें जाते हैं ॥ ३६ ॥ शूद्र तथा दासीको शय्यापर शयन कराय, ब्राह्मण नरकमें जाता है. शूद्रामें पुत्र उत्पन्न करके, ब्राह्मणजातिसे भ्रष्ट होता है ॥ ३७ ॥ ब्राह्मणोंमें नीच वोह नमस्कारयोग्य कभी नहीं. उसको

शंकुभिःसेतुभिःकाष्ठैःपाषाणैःकंटकैस्तथा ॥ येमार्गमुपरुंधंतितेवैनरकगामिनः ॥ ३५ ॥ शिवंशिवांहरिंसूर्यंगणेशंसद्गुरुंबु धम् ॥ नपूजयंतियेमंदास्तेवैनरकगामिनः ॥ ३६ ॥ आरोप्यदासींशयनेविप्रोगच्छेदधोगतिम् ॥ प्रजामुत्पाद्यशूद्रायांब्रा ह्मण्यादेवहीयते ॥ ३७ ॥ ननमस्कारयोग्योहिसकदापिद्विजोऽधमः ॥ तंपूजयंतियेमूढास्तेवैनरकगामिनः ॥ ३८ ॥ ब्रा ह्मणानांचकलहंगोयुद्धंकलहप्रियाः ॥ नवर्जंत्यनुमोदंतेतेवैनरकगामिनः ॥ ३९ ॥ अनन्यशरणस्त्रीणामृतुकालव्यतिक्रम म् ॥ येप्रकुर्वंतिविद्वेषात्तेवैनरकगामिनः ॥ ४० ॥ ॥ ॥ ॥

जो मूर्ख पूजते हैं वे भी निश्चय नरकमें जाते हैं ॥ ३८ ॥ और ब्राह्मणोंकी कलह, गौयुद्ध इन्होंको अच्छी मान, जो वर्जते नहीं हैं, ज्यादा कराते और कलहप्रिय हैं वे निश्चय नरकमें जाते हैं ॥ ३९ ॥ पतिसे नहीं है दूसरा शरण जिनके ऐसी स्त्रियोंको ऋतुकालमें जो पतिद्वेष-से ऋतुदान नहीं देता है वोहभी निश्चय नरकमें जाता है ॥ ४० ॥ ॥ ॥ ॥

जो कामसे अंधेहुए मनुष्य रजस्वला स्त्रीसे गमन करते हैं तथा पर्वमें, जलमें, दिवसमें, श्राद्ध गमन करतेहैं वेभी निश्चय नरकमें जातेहैं ॥ ४१ ॥ जो शरीरका मैल, मूत्र, विष्ठा अग्निमें वा जलमें फेंकते हैं. तथा बगीचामें, मार्गमें, गोशालामें, फेंकते हैं वे भी नरकगामी हैं ॥ ४२ ॥ शस्त्र, शर, धनुष इन्होंके जे करनेवाले और बेंचनेवाले हैं वे भी नरकमें जाते हैं ॥ ४३ ॥ वैश्य होकर चर्मका ब्यापार करते हैं, गृहस्थ स्त्री होकर, व्यभिचार करती हैं. और जे कोई जहरका ब्योपार करते हैं वै नरकमें जाते हैं ॥ ४४ ॥ जे अनाथपर दया नहीं क-

येऽपिगच्छंतिरागांधानरान्‍रींरजस्वल[illegible]र्वस्वप्सुदिवाश्राद्धेतेवैनरकगामिनः ॥ ४१ ॥ येशारीरंमलंवह्नौप्रक्षिपंतिजलेऽपिच ॥
आरामेपथिगोष्ठेवातेवैनरकगामिनः ॥ ४२ ॥ शस्त्राणांयेचकर्तारःशराणांधनुषांतथा ॥ विक्रेतारश्चयेतेषांतेवैनरकगामिनः ॥ ४३ ॥
चर्मविक्रयिणोवैश्याःकेशविक्रेयकाःस्त्रियः ॥ विषविक्रयिणःसर्वेतेवैनरकगामिनः ॥ ४४ ॥ अनाथंनानुकंपंतियेसतांद्वेषकारकाः ॥
विनापराधंदंडंतितेवैनरकगामिनः ॥ ४५ ॥ आशयासमनुप्राप्तान्ब्राह्मणानर्थिनोगृहे ॥ नभोजयंतिपाकेऽपितेवैनरकगामिनः ॥ ४६ ॥ सर्वभूतेष्वविश्वस्तास्तथातेषुविनिर्दयाः ॥ सर्वभूतेषुजिह्मायेतेवैनरकगामिनः ॥ ४७ ॥

रते हैं, जे सत्पुरुषोंसे द्वेष करते हैं, अपराधविना दंड देते हैं वे नरकमें जाते हैं ॥ ४५ ॥ और जे गृहस्थ आशासे गृहपर आये अभ्याग-तोंपर तथा ब्राह्मणोंपर क्रूर दृष्टिसे देखें और पाक हुवाभी है तौ भी भोजन नहीं कराते हैं वे निश्चय नरकगामी हैं ॥ ४६ ॥ सबमें जिनके विश्वास नहीं, जीवमात्रमें जिन्होंके दया नहीं, जो सब भूतोंसे कपट रक्खें वे भी निश्चय नरकमें जाते हैं ॥ ४७ ॥

जे नियमको धारण करते हैं पीछे इंद्रियोंको न जीतनेसे त्यागते हैं वै भी नरकमें निश्चय जाते हैं ॥ ४८ ॥ अध्यात्मज्ञान देनेवालेको जे गुरू नहीं मानते हैं वा पुराण बांचनेवालेको गुरू नहीं मानते हैं वे निश्चय नरकमें जाते हैं ॥ ४९ ॥ जे मित्रद्रोह करते हैं, प्रीतिछेद करते हैं, आशाभंग करते हैं. वे भी निश्चय नरकमें जाते हैं ॥ ५० ॥ और विवाह देवयात्रा तीर्थसेवाकरनेको जानेवालेंको जे लूटते हैं वे भी घोर नरकमें वसते हैं वहीसे फेर आना नहीं होता है ॥ ५१ ॥ जो महापापी गृहमें, गांवमें, वनमें, अग्नि जला देता है वो भी यमदूतोंसे

नियमान्समुपादाययेपश्चादजितेंद्रियाः ॥ विग्लापयंतितान्भूयस्तेवैनरकगामिनः ॥ ४८ ॥ अध्यात्मविद्यादातारंनैवमन्यं तियेगुरुम् ॥ तथापुराणवक्तारंतेवैनरकगामिनः ॥ ४९ ॥ मित्रद्रोहकरायेचप्रीतिच्छेदकराश्चये ॥ आशाच्छेदकरायेचतेवैनरकगा मिनः ॥ ५० ॥ विवाहंदेवयात्रांचतीर्थसार्थान्विलुंपति ॥ सवसेन्नरकेघोरतस्मान्नावर्तनंपुनः ॥ ५१ ॥ अग्निंदद्यान्महापापीगृहेग्रा मेतथावने ॥ सनीतोयमदूतैश्चवह्निकुंडेषुपच्यते ॥ ५२ ॥ अग्निनादग्धगात्रोऽसौयदाछायांप्रयाचते ॥ नीयतेचतदादूतैरसिपत्र वनांतरे ॥ ५३ ॥ खड्गतीक्ष्णैश्चतत्पत्रैर्गात्रच्छेदोयदाभवेत् ॥ तदोचुःशीतलच्छायेसुखनिद्रांकुरुष्वभो ॥ ५४ ॥ ॥

लेगयाभया अग्निकुंडमें पचायाजाता है ॥ ५२ ॥ अग्निसे जलगया है शरीर ऐसा पापी जब छायाकी वांछा करता है तब यमदूतोंसे खड्गजैसा पत्र ऐसे असिपत्रबनमें लेजाया जाता है ॥ ५३ ॥ खड्गजैसे तीक्ष्ण उसके पत्तोंसे जब शरीर छिन्न भिन्न होता है तब यमदूत कहते हैं— हे पापी! अब शीतल इस छायामें सुखसे निद्रा करो ॥ ५४ ॥ ॥ ॥ ॥

तब प्याससे व्याकुल हो, पानी पीनेकी इच्छा करते जब जलपानकी यांचा करता है तब उसको पीनेके वास्ते यमदूत अतिगरम तैल देते हैं ॥ ५५ ॥ और पीव भोजन कर, तुमारे वास्ते यह अन्न पान है ऐसे यमदूतोंके कहनेसे उस तेलके पीनेसे जलगई है सब आंतैं जिसकी ऐसो पापी मूर्छासे पड़ता है ॥ ५६ ॥ फेर बड़े कष्टसे उठकर, बड़े दीनकी तुल्य वेवश हुये ऊंचे श्वास लेते बोलनेको समर्थ नहीं होते हैं ॥ ५७ ॥ ऐसे हे गरुड़! बहोतसी पापियोंकी यमयातना हैं. विस्तरसे इन्होंको क्या वर्णूं ? सब शास्त्रोंमें कही हैं ॥ ५८ ॥ ऐसे क्लेशको प्राप्त

पानीयंपातुमिच्छन्वैतृषार्तोयदियाचते ॥ पानार्थंतैलमत्युष्णंतदादूतैःप्रदीयते ॥ ५५ ॥ पीयतांभुज्यतांपानमन्नमूचुस्तदेतिते ॥ पीतमात्रेणतेनैवदग्धांत्रानिपतंतिते ॥ ५६ ॥ कथंचित्पुनरुत्थायप्रलपंतिसुदीनवत् ॥ विवशाउच्छ्वसंतश्चवक्तुमपिनाशकन् ॥ ५७ ॥ इत्येवंबहुशस्तार्क्ष्ययातनाःपापिनांस्मृताः ॥ किमेतैर्विस्तरात्प्रोक्तैःसर्वशास्त्रेषुभाषितैः ॥ ५८ ॥ एवंवैक्लिश्यमानास्तेन रानार्यःसहस्रशः ॥ पच्यंतेनरकेघोरेयावदाभूतसंप्लवम् ॥ ५९ ॥ तस्याक्षयंफलंभुक्त्वातत्रैवोत्पद्यतेपुनः ॥ यमाज्ञयामहींप्राप्यभवंति स्थावरादयः ॥ ६० ॥ वृक्षगुल्मलतावल्लीगिरयश्चतृणानिच ॥ स्थावराइतिविख्यातामहामोहसमावृताः ॥ ६१ ॥ ॥

हुये हजारों पुरुष और स्त्रियां घोर नरकमें पचते हैं. जहांतक महाप्रलय होय ॥ ५९ ॥ उस पापको अक्षय फल भोग तहांहीं फेर उत्पन्न होते हैं. यमकी आज्ञासे पृथ्वीपर आके, वृक्षादिरूप स्थावर होते हैं ॥ ६० ॥ वृक्ष, गुल्म, लता, वल्ली, पर्वत, तृण ए स्थावर कहाते हैं— इन्होंमें बड़ा मोह रहता है ॥ ६१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कीट, पशु, पक्षी, जलचरजीव ए चौरासी लक्ष योनि कही हैं ॥ ६२ ॥ इन सबोंमें भ्रमकरके, मनुष्यजन्म होता है. मनुष्योंमेंभी चांडालादिक योनिमें नरकसे आये जन्मते हैं. तहां पापके चिन्होंसे बहोत दुःखी होते हैं ॥ ६३ ॥ और कोई पापी गलत्कुष्ठी, कोई जन्मांध, ऐसे ऐसे महारोगोंसे व्याकुल, अपने अपने पूर्वपातकोंके चिन्होंसे चिन्हित, स्त्री, पुरुष होते हैं ॥ ६४ ॥ इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे ज्ञानबो-

कीटाश्चपशवश्चैवपक्षिणश्चजलेचराः ॥ चतुरशीतिलक्षेषुकथितादेवयोनयः ॥ ६२ ॥ एताःसर्वाःपरिभ्रम्यततोयांतिमनुष्यताम् ॥ मानुषेऽपिश्वपाकेषुजायंतेनरकागताः ॥ तत्रापिपापचिह्नैस्तेभवंतिबहुदुःखिताः ॥ ६३ ॥ गलत्कुष्ठाश्चजन्मांधामहारोगसमाकुलाः ॥ भवंत्येवंनरानार्यःपापचिह्नोपलक्षिताः ॥ ६४ ॥ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेनरकप्रदपापचिह्ननिरूपणोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ गरुड उवाच ॥ येनयेनचपापेनयद्यच्चिह्नंप्रजायते ॥ यांयांयोनिंचगच्छंतितन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यैःपापैर्यांतियांयोनिंपापिनोनरकागताः ॥ येनपापेनयच्चिह्नंजायतेममतच्छृणु ॥ २ ॥ ॥

धिनीभाषाटीकायां नरकप्रदपापचिन्हनिरूपणो नाम चतुर्थोऽध्यायः॥ ४ ॥ गरुड़जी बोले कि– हे केशव ! जिस जिस पापसे जो जो चिन्ह होते हैं और जिस जिस योनिमें जाते हैं. सो हमारेको कहो ॥ १ ॥ अब श्रीभगवान कहते हैं–हे गरुड़ ! जिन पापोंसे पापी जिस योनिमें जाते हैं और नरकसे आयेहुयेके जो चिन्ह होते हैं सो हमारेसे सुनो ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

ब्रह्महत्यावालेके क्षयरोग होता है, गोहत्यावाला कूबड़ा और जड़ होता है, कन्याघाती कोढ़रोगी होता है. येह तीनों चांडालयोनिमें होते हैं ॥ ३ ॥ स्त्रीघाती, गर्भपाती, रोगी, भिल्ल होता है, अपने गोत्रकी स्त्रीगमन करनेसे नपुंसक होता है, गुरुपत्नीके भोगसे हाथीका चर्मजैसा चर्म होता है. ॥ ४ ॥ मांस खानेवाला अतिरक्तशरीरका होता है, मद्यपान करनेवाला [illegible]दांतका होता है, ब्राह्मण होके, जिह्वाके स्वादसे अभक्ष्य खानेसे जलोदर रोगी होता है ॥ ५ ॥ आर जो अपने बालबच्चोंको मीठा अन्न न देके और आप भोजन क[illegible] है. सो गलगंडवान् अर्थात् गंड-

ब्रह्महा क्षयरोगी स्याद्गोघ्नः स्यात्कुब्जजडः ॥ कन्याघाती भवेत्कुष्ठी त्रयश्चांडालयोनिषु ॥ ३ ॥ स्त्रीघाती गर्भपाती च पुलिंदो रोगवान्भवेत् ॥ अगम्यागमनात्षंढो दुश्चर्मा गुरुतल्पगः ॥ ४ ॥ मांसभोक्तातिरक्तांगः श्यावदंतस्तु मद्यपः ॥ अभक्ष्यभक्षको लौल्याद्ब्राह्मणः स्यान्महोदरः ॥ ५ ॥ अदत्वा मिष्टमश्नाति स भवेद्गलगंडवान् ॥ श्राद्धेऽन्नमशुचि दत्वा चित्रकुष्ठी प्रजायते ॥ ६ ॥ गुरोर्गर्वेणावमानादपस्मारी भवेन्नरः ॥ निंदको वेदशास्त्राणां पांडुरोगी भवेद्ध्रुवम् ॥ ७ ॥ कूटसाक्षी भवेन्मूकः काणः स्यात्पंक्तिभेदकः ॥ अनोष्ठः स्याद्विवाहघ्नो जन्मांधः पुस्तकं हरेत् ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

माला रोगवाला होता है. और जो श्राद्धमें अपवित्र अन्न देता है सो चित्रकुष्ठी होता है ॥ ६ ॥ और जो गुरूको गर्वसे अपमान करता है सो (अपस्मारी) अर्थात् मृगीरोगवाला होता है और जो वेदशास्त्रोंकी निन्दा करता है सो निश्चय पांडुरोगी होता है ॥ ७ ॥ और झूंठी साक्षी देनेवाला है वह मूका व गूंगा होता है और पंक्तिभेदक काना होता है और विवाहनाशक विना ओष्ठका होता है और पुस्तकचोर जन्मान्ध होता है ॥ ८ ॥

गौ ब्राह्मणको पादताड़नासे खंज और पांगला होता है, असत्य बोलनेवाला गद्गदरोगी होता है, मिथ्या शुननेवाला बहिरा होता है ॥ ९ ॥ जहर देनेवाला जड़ और उन्मत्त होता है, ग्रामआदिमें अग्निजलानेसे गंजा होता है, मांस वेचनेसे मंदभागी होता है, पर मांस खानेवाला रोगी होता है ॥ १० ॥ रत्नोंकी चोरी करनेसे हीन जातिमें जन्मता है, सुवर्ण चुरानेसे स्वभावसे विपरीत नख होते हैं, ॥ ११ ॥ धातुमात्र चोरनेवाला निर्धनी होता है, अन्न चोरनेसे मूषा होता है, धान्य चोरनेसे शलभ, अर्थात् टीड़ी होता है, जलकी चोरीसे पपीहा होता है, विषचोर-

गोब्राह्मणपदाघातात्खंजःपंगुश्चजायते ॥ गद्गदोनृपवादीस्यात्तच्छ्रोताबधिरोभवेत् ॥ ९ ॥ गरदःस्याज्जडोन्मत्तःखल्वाटोऽग्निप्रदायकः ॥ दुर्भगःपलविक्रेतारोगवान्परमांसभुक् ॥ १० ॥ हीनजातौप्रजायेतरत्नानामपहारकः ॥ कुनखीस्वर्णहर्तास्याद्धातुमात्रहरोऽधनः ॥ ११ ॥ अन्नहर्ताभवेदाखुःशलभोधान्यहारकः ॥ चातकोजलहर्तास्याद्विषहर्ताचवृश्चिकः ॥ १२ ॥ शाकंपत्रंशिखीहृत्वागंधांश्छुच्छुंदरीशुभान् ॥ मधुदंशःपलंगृध्रोलवणंचपिपीलिका ॥ १३ ॥ तांबूलफलपुष्पादिहर्तास्याद्वानरोवने ॥ उपानत्तृणकार्पासहर्तास्यान्मेषयोनिषु ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नेसे बिच्छू होता है, ॥ १२ ॥ शाक पत्ते चोरनेसे मयूर होता है, सुंदर सुगंध वस्तुके चोरनेसे छछूंदर होता है, सहत चोरनेसे मधुमक्षिका होता है, मांस चोरनेसे गीध होता है, लोन चोरनेसे चींटी होता है, ॥ १३ ॥ तांबूल फल पुष्पादि चोरनेसे वनमें वानर होता है, पगरखी, तृण, कपास इन्होंके चोरनेसे बकड़ेकी योनिमें होता है ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जो हिंसाकर्मसे जीविका करता है, जो मार्गमें यात्रिक लोगोंको लूटता है जो मृगया, अर्थात् जीवहिंसा करता है वोह कसाईके घरमें बकरा होता है ॥ १५ ॥ जो अपनी इच्छासे विष खाकर, मरता है वोह पर्वतमें काला सांप होता है, जिसका निरंकुश स्वभाव है वोह निर्जन वनमें हाथी होता है, ॥ १६ ॥ वैश्वदेव कर्मको नहीं करैं और सर्वभक्षी ऐसे — तथा विना परीक्षितके भोजन करनेवाले निर्जन वनमें व्याघ्र होते हैं, ॥ १७ ॥ जो गायत्री नहीं जपता तथा सन्ध्योपासन नहीं करता वोभी भीतरसे दुष्ट बाहरसे साधुजैसा बकवृत्ति ब्राह्मण बक होता है ॥ १८ ॥

यश्चरौद्रोपजीवीचमार्गेसार्थानि पति ॥ मृगयाव्यसनीयस्तुछागःस्याद्वधिकगृहे ॥ १५ ॥ योमृतोविषपानेनकृष्णसर्पोभवेद्गिरौ ॥ निरंकुशस्वभावःस्यात्कु ोनिर्जनेवने ॥ १६ ॥ वैश्वदेवमकर्तारःसर्वभक्षाश्चयेद्विजाः ॥ अपरीक्षितभोक्तारोव्याघ्राःस्युर्निर्जनेवने ॥ १७ ॥ गायत्रींनस्मरेद्यस्तुयोनसंध्यामुपासते ॥ अंतर्दुष्टोबहिःसाधुःसभवेद्ब्राह्मणोबकः ॥ १८ ॥ अयाज्ययाजकोविप्रःसभवेद्ग्रामसूकरः ॥ खरोवैबहुयाजित्वात्काकोनिर्मंत्रभोजनात् ॥ १९ ॥ पात्रेविद्यामदाताचबलीवर्दोभवेद्द्विजः ॥ गुरुसेवामकर्ताचशिष्यःस्याद्गोखरःपशुः ॥ २० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जो पतित यवनादिकोंको यज्ञ करावै वोह ब्राह्मण श्वान होता है, बहुत दक्षिणाके लोभसे यज्ञ करानेंसे (गधा) होता है, बगैर निमंत्रण भोजनसे काक होता है, ॥ १९ ॥ सुपात्र शिष्यको विद्या नहीं देनेसे ब्राह्मण बलीवर्द होता है, गुरूकी सेवा नहीं करनेसे शिष्यभी भार लादनेवाला बैल अथवा गधा होता है ॥ २० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गुरूको तथा ब्राह्मणको अवज्ञाकर, अर्थात हुंकार तुंकार कर, वादसे जीतनेसे वनमें निर्जलदेशमें ब्रह्मराक्षस होता है ॥ २१ ॥ प्रतिज्ञा कर, पीछे ब्राह्मणको दान न देनेसे शृगाल होता है और सत्पुरुषोंका तिरस्कार करनेसे अग्नि मुखमें निसरनेवाला पशु अर्थात् प्याउड़ी होता है ॥ २२ ॥ पित्रद्रोही पर्वतमें गीध होता है, व्योपारमें छल करनेसे उलूक होता है, वर्ण आश्रमके मिथ्या वादसे अर्थात् हुंकार तुंकारसे

गुरुंहुंकृत्यतुंकृत्यविप्रंनिर्जित्यवादतः ॥ अरण्येनिर्जलेदेशेजायतेब्रह्मराक्षसः ॥ २१ ॥ प्रतिश्रुतंद्विजेदानमदत्वाजंबुकोभवेत् ॥ सतामसत्कारकरःफेत्कारोऽग्निमुखोभवेत् ॥ २२ ॥ पितृध्रुग्गिरिगृध्रःस्यादुलूकःक्रयवंचनात् ॥ वर्णाश्रमपरीवादात्कपोतोजायते वने ॥ २३ ॥ आशाच्छेदकरोयस्तुस्नेहच्छेदकरस्तुयः ॥ योद्वेषात्स्त्रीपरित्यागीचक्रवाकश्चिरंभवेत् ॥ २४ ॥ मातापितृगुरुद्वेषीभगिनीभ्रातृवैरकृत् ॥ गर्भेयोनौविनष्टःस्याद्यावद्योनिसहस्रशः ॥ २५ ॥ श्वश्रूर्गालिप्रदानारीनित्यंकलहकारिणी ॥ साजलौकाचयूकास्याद्भर्तारंभर्त्संतेचया ॥ २६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

बुलावनमें कपोत होता है ॥ २३ ॥ जो आशाको भंगकरै, स्नेहको भंगकरै, जो द्वेषते श्रेष्ठ स्त्रीको त्यागै वो वनमें बहोत काल चकवा होता है ॥ २४ ॥ माता, पिता, गुरू बहेन भाई इन्होंसे जो वैर करता है वोह गर्भयोनिमें एक हजार योनितक मरता है, ॥ २५ ॥ जो स्त्री सासु वा श्वसुरको गाली देती है और नित्य कलह करती है वह लट् वा जोंक होती है और पतिको धमकाती है सोभी जोंक होती है ॥ २६ ॥

अपने पतिको त्यागके, जो स्त्री परपुरुषके अनुवर्तमें चलती है वह बागल वा गोह होती है वा दोमुखकी सर्पिणी होती है, ॥ २७ ॥ जो अपने गोत्रका घात करै, अपने गोत्रकी स्त्रीसे संभोग करै, वोह कांटावाला शल्लक अर्थात् श्याही होकर, रीछकी योनिमें जन्मता है, ॥ २८ ॥ तापसीसे संभोग करनेसे मरुदेशमें पिशाच होता है, छोटी अज्ञानव[illegible] लड़कीसे भोग[illegible]रनेसे वनमें अजगर सर्प होता है, ॥ २९ ॥ गुरुकी स्त्रीके, भोगकी इच्छासे मनुष्य गिर्[illegible] होता है, रानीसे भोगकरनेसे तथा मित्रकी स्त्रीसे भोग करै तो गधा होता है, ॥३०॥ गुदामें भोग

स्वपतिंच[illegible]रित्यज्यपरपुंसानुवर्ति[illegible] ॥ वल्गुलीगृहगोधास्याद्द्विमु[illegible]थसर्पिणी ॥ २७ ॥ यःस्वगोत्रोपघातीचस्वगोत्रस्त्रीनिषेवणात् ॥ तरक्षुःशल्लकोभूत्वाऋक्षयोनिषुजायते ॥ २८ ॥ तापसीगमनात्कामीभवेन्मरुपिशाचकः ॥ अप्राप्तयौवनासंगाद्भवेदजगरोवने ॥ २९ ॥ गुरुदाराभिलाषीचकृकलासोभवेन्नरः ॥ राज्ञींगत्वाभवेद्दुष्टोमित्रपत्नींचगर्दभः ॥ ३० ॥ गुदगोविड्वराहःस्याद्वृषःस्याद्वृषलीपतिः ॥ महाकामीभवेद्यस्तुस्यादश्वःकामलंपटः ॥ ३१ ॥ मृतस्यैकादशाहंतुभुंजानःश्वाविजायते ॥ लभेद्देवलकोविप्रोयोनिंकुक्कुटसंज्ञकाम् ॥ ३२ ॥ द्रव्यार्थंदेवतापूजांयःकरोतिद्विजाधमः ॥ सवैदेवलकोनामहव्यकव्येषुगर्हितः ॥ ३३ ॥ ॥

करनेसे ग्रामका सूकर होता है, शूद्रासे भोग करनेसे बैल होता है, जो महाकामी होय वोहभी काममें लंपट घोड़ा होता है, ॥ ३१ ॥ मरे हुवेके एकादशाहमें खानेसे कुत्ता होता है, जो देवलक अर्थात् मठधारी ब्राह्मण है वोह कुक्कुट अर्थात् मुर्गाकी योनिमें जन्मता है ॥ ३२ ॥ जो द्रव्यसंग्रहके लिये देवतोंकी पूजा करता है वोह ब्राह्मणोंमें नीच देवलकसंज्ञक पितृदेवकार्यमें अयोग्य है ॥ ३३ ॥ ॥

महापापोंसे हुवे घोर नरकोंमें प्राप्त होकर, कर्मोंके क्षीण होनेसे महापापी फेर यहां जन्मते हैं ॥ ३४ ॥ गधा, ऊंट, भैंसा इन्होंकी योनिमें ब्राह्मणके मारनेवाला प्राप्त होता है, वृक अर्थात् भेंड़िया स्याल कुत्ता इन्होंकी योनिको मदिरापानकरनेवाला प्राप्त होता है ॥ ३५ ॥ सुवर्ण चोरनेवाला कृमि, कीट, पतंग होता है, गुरुकी स्त्रीसे संग करनेवाला तृण, गुल्म, बेलड़ी इन्होंकी योनिको क्रमसे प्राप्त होता है ॥ ३६ ॥ दूसरेकी स्त्रीको चोरकर और धरोहरको उठाकर, ब्राह्मणके द्रव्यको हरकर, ब्रह्मराक्षस होता है ॥ ३७ ॥ ब्राह्मणको धन नम्रतासे खायाहुवा

महापातकजान्घोरान्नरकान्प्राप्यदारुणान् ॥ कर्मक्षयेप्रजायंतेमहापातकिनस्त्विह ॥ ३४ ॥ खरोष्ट्रमहिषीणांहिब्रह्महायोनिमृच्छ
ति ॥ वृकश्वानशृगालानांसुरापायांतियोनिषु ॥ ३५ ॥ कृमिकीटपतंगत्वंस्वर्णस्तेयीसमाप्नुयात् ॥ तृणगुल्मलतात्वंचक्रमशोगुरुत
ल्पगः ॥ ३६ ॥ परस्ययोषितंहृत्वान्यासापहरणेनच ॥ ब्रह्मस्वहरणाच्चैवजायतेब्रह्मराक्षसः ॥ ३७ ॥ ब्रह्मस्वंप्रणयाद्भुक्तंदहत्यासप्तमं
कुलम् ॥ बलात्कारेणचौर्येणदहत्याचंद्रतारकम् ॥ ३८ ॥ लोहचूर्णाश्मचूर्णेचविषंचजरयेन्नरः ॥ ब्रह्मस्वंत्रिषुलोकेषुकःपुमाञ्जरयिष्य
ति ॥ ३९ ॥ ब्रह्मस्वरसपुष्टानिवाहनानिबलानिच ॥ युद्धकालेविशीर्यंतेसैकताःसेतवोयथा ॥ ४० ॥ ॥

सातकुलतक दग्ध करता है, बलसे, चोरीसे जहांतक चंद्रमा तारा रहते हैं तहांतक होनेवाले कुलको दग्ध करता है ॥ ३८ ॥ लोहाका चूर्ण पत्थरका चूर्ण तथा विष इन्होंको मनुष्य पचा सक्ता है परंतु ब्राह्मणकी द्रव्य तीनों लोकोंमें कौन पुरुष पचा सकता है अर्थात् कोईभी नहीं ॥ ३९ ॥ ब्राह्मणोंके धनके रससे पुष्ट हुवे राजाओंके वाहन और सेना, युद्धसमयमें जैसे बालूके सेतु बिथरते हैं तैसे बिथरजाते हैं ॥ ४० ॥ ॥

...ोंकी द्रव्य भोगनेसे, ब्राह्मणका धन हरनेसे तथा ब्राह्मणके अतिक्रमसे कुलवानोंका कुल नाश होता है ॥ ४१ ॥ वेदशास्त्रमें परायण ऐसे अपने पासके ब्राह्मणको ... , औरोंको जो दानादि देत ... को अतिक्रम कहते हैं ॥ ४२ ॥ ब्राह्मणको अतिक्रम वेदरहित ब्राह्मणमें नहीं है. कारण ज्वलती अग्नि ... में नहीं होम कियाजाता ॥ ४३ ॥ अतिक्रम करनेसे हे गरुड़! क्रमसे नरकोंको भोग, जन्मसे अंधा औ दरिद्री होता है. केवल दनवालाही नहीं होता है किंतु मांगनेवाला भी होता है ॥ ४४ ॥ अपनी दीभई वा दूसरेंकी दीभई

देवद्रव्योपभोगेनब्रह्मस्वहरणेनच ॥ कुलान्यकुलतांयांतिब्राह्मणातिक्रमेणच ॥ ४१ ॥ स्वमाश्रितंपरित्यज्यवेदशास्त्रपरायणम् ॥ अन्येभ्योदीयतेदानंकथ्यतेऽयमतिक्रमः ॥ ४२ ॥ ब्राह्मणातिक्रमोनास्तिविप्रेवेदविवर्जिते ॥ ज्वलंतमग्निमुत्सृज्यनहिभस्मनिहूयते ॥ ४३ ॥ अतिक्रमेकृतेतार्क्ष्यभुक्त्वाचनरकान्क्रमात् ॥ जन्मांधःसन्दरिद्रःस्यान्नदाताकिंतुयाचकः ॥ ४४ ॥ स्वदत्तांपरदत्तांवा योहरेच्चवसुंधराम् ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिविष्ठायांजायतेकृमिः ॥ ४५ ॥ स्वयमेवचयोदत्वास्वयमेवापकर्षति ॥ सपापीनरकंयातियावदाभूतसंप्लवम् ॥ ४६ ॥ दत्वावृत्तिंभूमिदानंयत्नतःपरिपालयेत् ॥ नरक्षतिहरेद्यस्तुसपंगुःश्वाभिजायते ॥ ४७ ॥ ॥

जो पृथ्वीको हरता है वो साठ हजार वर्ष विष्ठामें कीड़ा होता है ॥ ४५ ॥ और जो आपही देता है और आपही पीछे ले लेता है सो पापी प्रलयपर्यन्त नरकमें वास करता है ॥ ४६ ॥ ब्राह्मणको जीविकाके लिये पृथ्वीदान देकर, यत्नसे पालना करनी जो पालना नहीं करता है, रक्षा नहीं करता है वो पांगला कुत्ता होता है ॥ ४७ ॥ ॥ ॥ ॥

ब्राह्मणकी जीविका करनेंमें लक्ष गोदानका फल मिलता है तथा ब्राह्मणकी जीविका हरनेसे मर्कट अर्थात् लंगूर, कुत्ता, बंदर होता है ॥ ४८ ॥ हे गरुड़ ! इत्यादि लक्षणोंवाली योनियां हैं. सो अपने कर्मसे रचीभई लोकमें दीख रहीं हैं ॥ ४९ ॥ ऐसे दुष्कर्म करनेवाले नरकोंकी यातना भोग, अवशेष पापोंसे कहीभई इन योनियोंमें जन्मता है ॥ ५० ॥ तहां हजारों जन्म पशुशरीर प्राप्त होकर, भार बहने आदि दुःखोंको प्राप्त होता है ॥ ५१ ॥ तिस पीछे

विप्रस्यवृत्तिकरणेलक्षधेनुफलंभवेत् ॥ विप्रस्यवृत्तिहरणान्मर्कटःश्वाकपिर्भवेत् ॥ ४८ ॥ एवमादीनिचिह्नानियोनयश्चखगेश्वर ॥ स्वकर्मविहितालोकेदृश्यंतेत्राशरीरिणाम् ॥ ४९ ॥ एवंदुष्कर्मकर्तारोभुक्त्वानिरययातनाम् ॥ जायंतेपापशेषेणप्रोक्तास्वेतासुयोनिषु ॥ ५० ॥ ततोजन्मसहस्रेषुप्राप्यतिर्यक्शरीरताम् ॥ दुःखानिभारवहनोद्भवादीनिलभंतिते ॥ ५१ ॥ पक्षिदुःखंततोभुक्त्वावृष्टिशीतातपोद्भवम् ॥ मानुषंलभतेपश्चात्समीभूतेशुभाशुभे ॥ ५२ ॥ स्त्रीपुंसोस्तुप्रसंगेनभुक्त्वागर्भक्रमादसौ ॥ गर्भादिमरणांतंचप्राप्य दुःखंम्रियेत्पुनः ॥ ५३ ॥ समुत्पत्तेर्विनाशश्चजायतेसर्वदेहिनाम् ॥ एवंप्रवर्तितंचक्रंभूतग्रामेचतुर्विधे ॥ ५४ ॥ घटीयंत्रंयथामर्त्या भ्रमंतिमममायया ॥ भूमौकदाचिन्नरकेकर्मपाशसमावृताः ॥ ५५ ॥ ॥ ॥ ॥

वर्षा, शीत, घाम इन्होंसे प्रगट भया पक्षि दुःख भोगकर, जब पुण्य पाप बराबर होवे तब मनुष्यजन्म प्राप्त होता है ॥ ५२ ॥ स्त्रीपुरुषके संयोगसे क्रमसे जीव गर्भको आदिले, मरणपर्यंत दुःख भोगकर, मरता है ॥ ५३ ॥ जन्म और नाश सब देहधारियोंका होता है ऐसे चतुर्विध भूतग्राममें संसारचक्र प्रवर्त रहा है ॥ ५४ ॥ जैसे घटीयंत्र तैसे मनुष्य मेरी मायासे कर्मपाशसे बँधे भये कभी पृथ्वीपर कभी नरकमें भ्रमते हैं ॥ ५५ ॥ ॥

और दान नहीं देनेसे दरिद्री होता है, दरिद्री होनेसे पाप करता है, पापके प्रभावसे नरकमें जाता है, नरकमेंसे आया हुवा फेर दरिद्री और पापी होता है ॥ ५६ ॥ कराहुवा शुभाशुभ कर्म अवश्य भोगनेयोग्य है, बिगरभोगे कोटिकल्पशतपर्यंत नहीं क्षीण होता है ॥ ५७ ॥ इति श्रीगरुडपुराणसारोद्धारस्य ज्ञानबोधिनीनामभाषाटीकायां पापचिन्हनिरूपणो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ अब गरुड़जी पूंछते हैं—हे केशव! नरकमेंसे आयाहुवा पापी माताके गर्भसे कैसे उत्पन्न होता है, गर्भसे आदि ले जो दुःख भोगता है सो कहो ॥ १ ॥ अब भगवान कहते हैं—

अदत्तदानाच्चभवेद्दरिद्रोदरिद्रभावाच्चकरोतिपापम् ॥ पापप्रभावान्नरकेप्रयातिपुनर्दरिद्रःपुनरेवपापी ॥ ५६ ॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ नाभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि ॥ ५७ ॥ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेपापचिह्ननिरूपणोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ कथमुत्पद्यतेमातुर्जठरेनरकागतः ॥ गर्भादिदुःखंयद्भुंक्तेतन्मेकथयकेशव ॥ १ ॥ ॥ विष्णुरुवाच ॥ ॥ स्त्रीपुंसोस्तुप्रसंगेननिरुद्धेशुक्रशोणिते ॥ यथायंजायतेमर्त्यस्तथा वक्ष्याम्यहंतव ॥ २ ॥ ऋतुमध्येहिपापानांदेहोत्पत्तिःप्रजायते ॥ इंद्रस्यब्रह्महत्यास्तियस्मिंतस्मिन्दिनत्रये ॥ ३ ॥ प्रथमेऽहनिचांडालीद्वितीयेब्रह्मघातिनी ॥ तृतीयेरजकीह्येतानरकागतमातरः ॥ ४ ॥

स्त्रीपुषरुके प्रसंगसे शुक्र और रक्त गर्भाशयमें रुका हुवा जैसे ए मनुष्य जन्मता है तैसे मैं तुमको कहता हूं सो सुनो ॥ २ ॥ पापियोंकी देहोत्पत्ति ऋतुके तीन दिनोंमें होती है. जिन तीन दिनोंमें इंद्रकी ब्रह्महत्या दीभई प्राप्त होती है ॥ ३ ॥ प्रथम दिवसमें चांडाली संज्ञा, दुसरे दिन ब्रह्मघातिनी संज्ञा, तीसरे दिन रजकी संज्ञा ए नरकमेंसे आये हुवोंकी मातावोंकी संज्ञा हैं ॥ ४ ॥ ॥ ॥

पूर्व किये कर्मसे जीव देहकी उत्पत्तिके वास्ते स्त्रीके उदरमें पुरुषके वीर्यके बिंदुके आश्रित प्रवेश होता है ॥ ५ ॥ सो एक रात्रसे वीर्य रक्त मिलकर, कीचड़ होता है, पांच रात्रसे गोला होता है, दश दिवशसे कठिन बोरजैसा होता है, उपरांत मांसके पिंडाका आकार होता है, ॥६॥ एक माससे शिर होता है, दो माससे भुजा, अंगआदि शरीरका भाग होता है, नख, रोम, हाड़, चर्म, लिंग, गुदा ए तीन माससे होते हैं. ॥ ७ ॥ चार माससे सात धातुवोंकी उत्पत्ति होती है, पांचवें मासमें क्षुधा प्यास होती है, षष्ठ माससे जरासे अर्थात् झीनेबारीक चमडासे

कर्मणादैवनेत्रेणजंतुर्देहोपपत्तये ॥ स्त्रियाःप्रविष्टउदरंपुंसोरेतःकणाश्रयः ॥ ५ ॥ कललंत्वेकरात्रेणपंचरात्रेणबुद्बुदम् ॥ दशाहेनतुकर्कंधूःपेश्यंडंवाततःपरम् ॥ ६ ॥ मासेनतुशिरोद्वाभ्यांबाह्वंगाद्यंगविग्रहः ॥ नखलोमास्थिचर्माणिलिंगच्छिद्रोद्भवस्त्रिभिः ॥ ७ ॥ चतुर्भिर्धातवःसप्तपंचभिःक्षुत्तृडुद्भवः ॥ षड्भिर्जरायुणावीतःकुक्षौभ्राम्यतिदक्षिणे ॥ ८ ॥ मातुर्जग्धान्नपानाद्यैरेधद्धातुरसंमते ॥ शेतेविण्मूत्रयोर्गर्तेसजंतुर्जंतुसंभवे ॥९॥ कृमिभिःक्षतसर्वांगःसौकुमार्यात्प्रतिक्षणम् ॥ मूर्च्छामाप्नोत्युरुक्लेशस्तत्रत्यैःक्षुधितैर्मुहुः ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वा वझरीसे वेष्टित होता है तथा दक्षिण कोखमें फिरता है ॥ ८ ॥ माताके खाये भये अन्नपानादिकोंसे पुष्ट हुवा शरीर ऐसा प्राणी नहीं योंग्य ऐसे विष्ठा मूत्रके खड्डेमें सोता है. कैसा खड्डा है कि—जिसमें कीड़े भी जन्मते हैं ॥ ९ ॥ कृमियोंसे खाया गया है सब शरीर ऐसा जीव अतिसकुमारतासे क्षणक्षणप्रति उन कीटोंसे बड़ा दुःखी होता है और मूर्च्छाको प्राप्त होता है ॥ १० ॥ ॥ ॥

कडुवा, तीखा, गरम चरचरा, रूखा, खट्टा इन विपरीत माताके खाये हुवेसे प्रगटहुवे रसोंको शरीरमें स्पर्श होनेसे सब अंगमें प्रगट भई वेदना और जरासे आच्छादित हुवा, बाहर आंतोंसे आ[illegible] हुवा ॥ ११ ॥ को[illegible]भई है पीठ और शिर तथा अपने अंगकी चेष्टामें समर्थ नहीं जैसा पिंजरमें सुवा [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]हां ऐसे दुःखकारी गर्भमें दैवयोगसे प्राप्तभई शौ १०० जन्म कर्मोंकी स्मृति ऐसा जीव पूर्वके दुःखोंको स्मरण करताहुवा अ[illegible] श्वास लेता कुछभी सुखको प्राप्त नहीं होता है ॥ १३ ॥ तहां देहमें आत्माको देखनेवाला जीव

कटुतीक्ष्णोष्णलवणरूक्षाम्लादिभिरुल्बणैः ॥ मातृभुक्तैरुपस्पृष्टःसर्वांगोत्थितवेदनः ॥ उल्बेनसंवृतस्तस्मिन्नंत्रैश्चबहिरावृतः ॥ ११ ॥
आस्तेकृत्वाशिरःकुक्षौभुग्नपृष्ठशिरोधरः ॥ अकल्पःस्वांगचेष्टायांशकुंतइवपंजरे ॥ १२ ॥ तत्रलब्धस्मृतिर्दैवात्कर्मजन्मशतोद्भवम् ॥
स्मरन्दीर्घमनुच्छ्वासंशर्मकिंनामविंदते ॥ १३ ॥ नाथमानऋषिर्भीतःसप्तवध्रिःकृतांजलिः ॥ स्तुवीततंविक्लवयावाचायेनोदरेऽर्पितः
॥ १४ ॥ आरभ्यसप्तमान्मासाल्लब्धबोधोऽपिवेपितः ॥ नैकत्रास्तेसूतिवातैर्विष्ठाभूरिवसोदरः ॥ १५ ॥ ॥

यांचा करता, डराहुवा और बंधनभूत हैं सातधातु जिस्के, सो हाथ जोड़ जिस ईश्वरनें उदरमें डाला उस परमेश्वरको अतिकायर दीन वाणीसे स्तुति करता है ॥ १४ ॥ सप्तम माससे अगाड़ी ज्ञान हुवा तौ भी कंपित हुवा जीव प्रसूतिकी पवनसे विष्ठाका कीड़ा जैसे एक ठिकानें स्थिर नहीं रहता है ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अब जीव स्तुति करता है– लक्ष्मीनाथ, जगतके आधार, पापोंके क्षय करनेवाले, शरण आयेके पालनेवाले ऐसे विष्णुजीके शरणको प्राप्त होता हूं ॥ १६ ॥ हे नाथ! तुम्हारी मायासे शरीरमें और पुत्रकलत्रमें और ए हमारा पुत्र है, स्त्री है इस अभिमानसे मैं जन्ममरणरूपी संसृतिमें प्राप्त हुवा हूं ॥ १७ ॥ कुटुंबके वास्ते मैनें शुभ अशुभ कर्म किया. परंतु फलभागी वैतो सब गये. उन अशुभ कर्मोंसे मै एकला दग्ध होता हूं ॥ १८ ॥ जो अब मैं इस माताके गर्भमेंसे निकला तबहीं आपके चरणारविंदका स्मरण करूंगा. जिस्से मुक्ति होय ऐसा उपाय करूंगा ॥ १९ ॥

॥ ॥ जीवउवाच ॥ ॥ श्रीपतिंजगदाधारमशुभक्षयकारकम् ॥ व्रजामिशरणंविष्णुंशरणागतवत्सलम् ॥ १६ ॥ त्वन्मायामोहितोदेहेतथापुत्रकलत्रके ॥ अहंममाभिमानेनगतोऽहंनाथसंसृतिम् ॥ १७ ॥ कृतंपरिजनस्यार्थेमयाकर्मशुभाशुभम् ॥ एकाकीतेन दग्धोऽहंगतास्तेफलभागिनः ॥ १८ ॥ यदियोन्याःप्रमुच्येऽहंतत्स्मरिष्येपदंतव ॥ तमुपायंकरिष्यामियेनमुक्तिंव्रजाम्यहम् ॥ १९ ॥ विण्मूत्रकूपेपतितोदग्धोऽहंजठराग्निना ॥ इच्छन्नितोविवसितुंकदानिर्यास्यतेबहिः ॥ २० ॥ येनेदृशंमेविज्ञानंदत्तंदीनदयालुना ॥ तमेवशरणंयामिपुनर्मेमास्तुसंसृतिः ॥ २१ ॥ नचनिर्गंतुमिच्छामिबहिर्गर्भात्कदाचन ॥ यत्रयातस्यमेपापकर्मणादुर्गतिर्भवेत् ॥ २२ ॥

विष्ठामूत्रके कूपमें पड़ा हूं, जठराग्निसे जल रहा हूं, यहांसे बाहर निकलनेकी इच्छा करता हूं, सो कब बाहर निकालोगे ॥ २० ॥ जिन दीनदयालुनें हमारेको ऐसा १०० सौ जन्मको अनुभवज्ञान दिया उनकेही शरणको प्राप्त होता हूं. फेर हमारा जन्म मरण मत होवे ॥ २१ ॥ अथवा गर्भके बाहिर मैं कभी निकलनेकी इच्छा नहीं करता हूं जहां प्राप्त हुवे ऐसे मेरेको पाप कर्मसे दुर्गति होती है ॥ २२ ॥ ॥

ति[illegible]से यहांही [illegible] स्थितहुवा कायरता त्याग, आपके चरणोंके [illegible]श्रयसे संसारस आत्माको उ[illegible]ार करूंगा ॥ २३ ॥ श्रीभगवान क-
हत हैं— ऐसे गर्भमें विचार करते, [illegible]नाके, स्तुति कर[illegible] जीवको प्रसूतिकी वायु प्रसूति होनेके लिये नीचेको तत्काल फेंकता है ॥ २४ ॥
उस पवनसे स्पर्श किया हुवा तत्काल नी[illegible]को शिर कर, दुःखी हुवा, रुकगया है श्वास, हत है ज्ञानस्मृति ऐसा जीव बाहिर निकसता है
॥ २५ ॥ वहां पृथ्वीपर पड़ा विष्ठा मूत्रसे कीड़ा जैसे चेष्टा करै तैसे करता है. सब विपरीत गतिको प्राप्त हुवा जीव ज्ञान जानेके बाद रोद-

तस्मादत्रमहद्दुःखेस्थितोऽपिविगतक्लमः ॥ तद्धरिष्यामिसंसारादात्मानंतेपदाश्रयः ॥ २३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एवंकृतमतिर्गर्भे
दशमास्यःस्तुवन्नृषिः ॥ सद्यःक्षिपत्यवाचीनंप्रसूत्यैसूतिमारुतः ॥ २४ ॥ तेनावसृष्टःसहसाकृत्वावाक्शिरआतुरः ॥ विनिष्क्राम
तिकृच्छ्रेणनिरुच्छ्वासोहतस्मृतिः ॥ २५ ॥ पतितोभुविविण्मूत्रेविष्ठाभूरिवचेष्टते ॥ रोरूयतिगतेज्ञानेविपरीतांगतिंगतः ॥ २६ ॥
गर्भेव्याधौश्मशानेचपुराणेयामतिर्भवेत् ॥ सायदिस्थिरतांयातिकोनमुच्येतबंधनात् ॥ २७ ॥ यदागर्भाद्बहिर्यातिकर्मभोगादनं
तरम् ॥ तदैववैष्णवीमायामोहयत्येवपूरुषम् ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥

न करता है ॥ २६ ॥ गर्भ, व्याधि, स्मशानभूमि, पुराण इनमें जो शुभ बुद्धि होती है वह कदाचित् स्थिर रहै तो कौन बंधनसे
नहीं छूटै अर्थात् सभी छूट जावैं ॥ २७ ॥ जब गर्भसे बाहिर कर्म भोगनेके पीछे आता है तबहीं विष्णुकी माया पुरुषको
मोहित करती है ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वो जब मायासे स्पर्शित होता है तब परवश हुवा कुछ नहीं बोलता. शिशुअवस्थाको आदि ले, पराधीनतासे दुःख भोगता है ॥ २९ ॥ परकी इच्छा नहीं जानता ऐसे पुरुषसे पाला हुवा अपना अभिप्रायको प्राप्त नहीं होता. जैसे कि— जब बालकको भूख लगती है तब दूधके लिये रोता है उस समयमें उस्के मातापिताआदि पालकगण अपनी कल्पनासे पेटमें दर्द होता है ऐसी कल्पना करके, नीमको रसआदि औषधि दर्द दूर होनेके लिये पिलाते हैं. और जब दर्द होता है तब दूध पिलाते हैं कि—बच्चेको भूख लगी है और वह उत्तर बोलनेको

सतदामाययास्पृष्टोनकिंचिद्वदतेऽवशः ॥ शैशवादिभवंदुःखंपराधीनतयाश्नुते ॥ २९ ॥ परच्छंदंनविदुषापुष्यमाणोजनेनसः ॥ अंनभिप्रेतमापन्नःप्रत्याख्यातुमनीश्वरः ॥ ३० ॥ शायितोऽशुचिपर्यंकेजंतुस्वेदजदूषिते ॥ नेशःकंडूयनेंऽगानामासनोत्थानचेष्टने ॥ ३१ ॥ तुदंत्यामत्वचंदंशामशकामत्कुणादयः ॥ रुदंतंविगतज्ञानंकृमयःकृमिकंयथा ॥ ३२ ॥ इत्येवंशैशवंभुक्त्वादुःखंपौगंडमेव च ॥ ततोयौवनमासाद्ययातिसंपदमासुरीम् ॥ ३३ ॥ ॥ ॥ ॥

समर्थ नहीं ॥ ३० ॥ अपवित्र शय्यापर सोता है. पसीनासे होनेवाले जीवोंसे खाया हुवा अपने हाथ पैरोंको खुजानेको तथा बैठना उठना चलना इन्होंमें समर्थ नहीं होता है ॥ ३१ ॥ डांश, मच्छर, खटमल, जुंवां, लीख ए बालककी सुकुमार त्वचाको खाते हैं; उस्से रोता है. और गया है ज्ञान जिसका ऐसे बालकको कीड़ा कीड़ाको जैसे खाय तैसे खाते हैं ॥ ३२ ॥ ऐसे पांच वर्षतक शिशुअवस्थाका दुःख भोग, पुनः पौगंडअवस्था भोग, यौवनअवस्थाको प्राप्त होकर, आसुरी संपदाको प्राप्त होता है ॥ ३३ ॥ ॥ ॥

तब दुर्व्यसनोंमें आसक्त हुवा, नीचोंके संगमें परायण, शास्त्र और सद्गु णोंका द्वेषी और कामलंप्ट होता है ॥ ॥ नहीं जीती हैं इंद्रि-
यां जिसने ऐसा जीव देवम ते ः मिमें पतंग पड़े
तैसे ॥ ३५ ॥ मृग, हस्ती,
से हाथी, रूप पतंग, गंधरं

तदादुर्व्यसनासक्तोर्न
प्रलोभितःपतत्यंधेतमस
तेपंचभिरेवपंच ॥ ३६ ।
ग्रहंकामीकामिष्वंतायचा

द्रियोंसें पंच विषय सेवन करता
अज्ञानसे बढ़ा है क्रोध जिसको ए
योंसे बैर करता है सो अधिक ब

वो जब मायासे स्पर्शित होता है तब परवश हुवा कुछ नहीं बोलता. शिशुअवस्थाको आदि ले, पराधीनतासे दुःख भोगता है ॥ २९ ॥ परकी इच्छा नहीं जानता ऐसे पुरुषसे पाला हुवा अपना अभिप्रायको प्राप्त नहीं होता. जैसे कि– जब बालकको भूख लगती है तब दूधके लिये रोता हैं उस समयमें उस्के मातापिताआदि पालकगण अपनी कल्पनासे पेटमें दर्द होता है ऐसी कल्पना करके, नीमको रसआदि औषधि दर्द दूर होनेके लिये पिलाते हैं. और जब दर्द होता है तब दूध पिलाते हैं कि–बच्चेको भूख लगी है और वह उत्तर बोलनेको

सतदामाययास्पृष्टोनकिंचिद्वदतेऽवशः ॥ शैशवादिभवंदुःखंपराधीनतयाश्नुते ॥ २९ ॥ परच्छंदंनविदुषापुष्यमाणोजनेनसः ॥ अनभिप्रेतमापन्नःप्रत्याख्यातुमनीश्वरः ॥ ३० ॥ शायितोऽशुचिपर्यंकेजंतुस्वेदजदूषिते ॥ नेशःकंडूयनेंऽगानामासनोत्थानचेष्टने ॥ ३१ ॥ तुदंत्यामत्वचंदंशामशकामत्कुणादयः ॥ रुदंतं विगतज्ञानंकृमयःकृमिकंयथा ॥ ३२ ॥ इत्येवंशैशवंभुक्त्वादुःखंपौगंडमेव च ॥ ततोयौवनमासाद्ययातिसंपदमासुरीम् ॥ ३३ ॥ ॥ ॥ ॥

समर्थ नहीं ॥ ३० ॥ अपवित्र शय्यापर सोता है. पसीनासे होनेवाले जीवोंसे खाया हुवा अपने हाथ पैरोंको खुजानेको तथा बैठना उठना चलना इन्होंमें समर्थ नहीं होता है ॥ ३१ ॥ डांश, मच्छर, खटमल, जुंवां, लीख ए बालककी सुकुमार त्वचाको खाते हैं; उससे रोता है. और गया है ज्ञान जिसका ऐसे बालकको कीड़ा कीड़ाको जैसे खाय तैसे खाते हैं ॥ ३२ ॥ ऐसे पांच वर्षतक शिशुअवस्थाका दुःख भोग, पुनः पौगंडअवस्था भोग, यौवनअवस्थाको प्राप्त होकर, आसुरी संपदाको प्राप्त होता है ॥ ३३ ॥ ॥ ॥

तब दुर्व्यसनोंमें आसक्त हुवा, नीचोंके संगमें परायण, शास्त्र और सत्पुरुषोंका द्वेषी और कामलंपट होता है ॥ ३४ ॥ नहीं जीती हैं इंद्रियां जिसने ऐसा जीव देवमाया स्त्रीको देख, उसके हावभावोंसे लोभित हुवा, अंधतम अर्थात् महामोहमें पड़ता है. जैसे अग्निमें पतंग पड़ै तैसे ॥ ३५ ॥ मृग, हस्ती, पतंग, भृंग, मीन ए शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध इन पांचों विषयोंसे नाश होते हैं. जैसें शब्दसे हरिण, स्पर्शसे हाथी, रूप[illegible] पतंग, गंधसे भौंरा, रससें मछली, ऐसे एक एक[illegible]के स्वादसे एक एक नाश होते हैं सो एक प्रमादी मनुष्य पंच इं-

तदादुर्व्यसनासक्तोनीचसंगपरायणः ॥ शास्त्रसत्पुरुषाणांचद्वेष्टास्यात्कामलंपटः ॥ ३४ ॥ दृष्ट्वास्त्रियंदेवमायांतद्भावैरजितेंद्रियः ॥
प्रलोभितःपतत्यंधेतमस्यग्नौपतंगवत् ॥ ३५ ॥ कुरंगमातंगपतंगभृंगमीनाहताःपंचभिरेवपं[illegible] ॥ एकःप्रमादीसकथंनहन्यतेयःसेव
तेपंचभिरेवपंच ॥ ३६ ॥ अलब्धाभीप्सितोऽज्ञानादिद्धमन्युःशुचार्पितः ॥ सहदेहेन[illegible]वर्धमानेनमन्युना ॥ ३७ ॥ करोतिवि
ग्रहंकामीकामिष्वंताय[illegible]नः ॥ बलाधिकैःसहन्येतगजैरन्यैर्गजोयथा ॥ ३८ ॥ ॥ ॥

द्रियोंसें पंच विषय सेवन करता है सो कैसे नहीं नाशको प्राप्त[illegible] ३६ ॥ नहीं प्राप्त भया है वांछित स्त्रीआदिका सुख जिसको और अज्ञानसे बढ़ा है क्रोध जिसको ऐसा प्राणी शोचको प्राप्त हुवा देहाभिमानसहित क्रोधसे ॥ ३७ ॥ कामी पुरुष अपने नाशके वास्ते कामियोंसे बैर करता है सो अधिक बलवानोंसे नाशको प्राप्त होता है. जै[illegible] प्रबल हाथियोंसे छोटे हाथी ॥ ३८ ॥ ॥

ऐसे जो बिषयासक्तिसे अतिदुर्लभ मनुष्यजन्म वृथा नाश करता है उससे अधिक मूर्ख और पापी कौन है अर्थात् कोईभी नहीं ॥ ३९ ॥ हे गरुड़! शैकड़ों जातियोंमें मनुष्यजन्म होता है तहां मनुष्यजन्ममें भी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यजन्म अत्यंत दुर्लभ है. जो इस जन्मको प्राप्त हो, धर्मपालन नहीं करता और इंद्रियोंको लालन करता है उसके हाथमें आयाहुवा अमृत प्रमादसे गिरता है ॥ ४० ॥ ऐसे यौवन अवस्थाके अगाड़ी वृद्धताको प्राप्त होकर, महारोगोंसे व्याकुल हुवा मृत्युको प्राप्त होकर, महादुःखकारी नरकोंमें पहलेकी माफक प्राप्त होता

एवंयोविषयासक्त्यानरत्वमतिदुर्लभम् ॥ वृथानाशयतेमूढस्तस्मात्पापतरोहिकः ॥ ३९ ॥ जातीशतेषुलभतेभुविमानुषत्वंतत्रापि दुर्लभतरंखलुभोद्विजत्वम् ॥ यस्तन्नपालयतिलालयतींद्रियाणितस्यामृतंक्षरतिहस्तगतंप्रमादात् ॥ ४० ॥ ततस्तांवृद्धतांप्राप्यमहा व्याधिसमाकुलः ॥ मृत्युंप्राप्यमहदुःखंनरकंयातिपूर्ववत् ॥ ४१ ॥ एवंगतागतैःकर्मपाशैर्बद्धाश्चपापिनः ॥ कदापिनविरज्यंतेमम मायाविमोहिताः ॥ ४२ ॥ इतितेकथितातार्क्ष्यपापिनांनारकीगतिः ॥ अंत्येष्टिकर्महीनानांकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ४३ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेपापिजन्मादिदुःखनिरूपणोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ ॥

है ॥ ४१ ॥ ऐसे नरकोंमें जाना नरकभोग पृथ्वीपर आना ए कही भई कर्मोंकी पाशोंसे बँधेहुवे पापी हमारी मायासे मोहितहुवे कभी भी विरागको नहीं प्राप्त होते हैं ॥ ४२ ॥ ऐसे हे गरुड़! तुम्हारेको नरकगति कही है फेर क्या सुननेकी इच्छा करते हो ॥ ४३ ॥ इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे ज्ञानबोधिनीनामभाषाटीकायां पापिजन्मादिदुःखनिरूपणो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ ॥

अब सूतजी कहते हैं—गरुड़जी ऐसे सुनकर, पिप्पलके पत्ता जैसे कंपित होते भये मनुष्योंके उपकारके वास्ते फेर भगवानको पूंछते भये ॥ १ ॥ गरुड़जी कहते हैं—मनुष्य गाफिलतासे वा जानकर, पापकरके फेर कौन उपायसे यमकी यातनावोंको नहीं प्राप्त होय ? सो कहो ॥ २ ॥ संसारसमुद्रमें डूबरहे, दीनचित्त, पापोंसें खंडितभई बुद्धि, विषयोंसे नाशभया आत्मा ऐसे पुरुषोंके ॥ ३ ॥ उद्धारके [illegible] हे स्वामिन् ! पुराणके

सूतउवाच ॥ इतिश्रुत्वातुगरुडःकंपितोश्वत्थपत्रवत् ॥ जनानामुपकारार्थंपुनःप्रपच्छकेशवम् ॥ १ ॥ गरुडउवाच ॥ कृत्वापापानिमनुजाःप्रमादाद्बुद्धितोऽपिवा ॥ नयांतियातनायाम्याःकेनोपायेनकथ्यताम् ॥ २ ॥ संसारार्णवमग्नानांनराणांदीनचेतसाम् ॥ पापोपहतबुद्धीनांविषयोपहतात्मनाम् ॥ ३ ॥ उद्धारार्थंवदस्वामिन्पुराणार्थविनिश्चयम् ॥ उपायंयेनमनुजाःसद्गतिंयांतिमाधव ॥ ४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधुपृष्टंत्वयाताक्ष्यमानुषाणांहितायवै ॥ शृणुष्वावहितोभूत्वासर्वंतेकथयाम्यहम् ॥ ५ ॥ दुर्गतिःकथितापूर्वमपुत्राणांचपापिनाम् ॥ पुत्रिणांधार्मिकाणांतुनकदाचित्खगेश्वर ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥

अर्थमें विशेषतासे निश्चय ऐसा उपाय कहो जिस उपायसे हे माधव ! श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होय ॥ ४ ॥ श्रीभगवान कहते हैं— हे गरुड़ ! तुमनें मनुष्योंके कल्याणके वास्ते श्रेष्ठ पूंछा है, सो संपूर्ण सावधान होकर, सुनो. मैं कहता हूं ॥ ५ ॥ हे गरुड़ ! पहले अपुत्र और पापियोंकी दुर्गति तौ कही पुत्रवाले और धर्मात्मावोंकी कभी दुर्गति नहीं होती है ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पुत्रके जन्मको अवरोध जो कोईभी कर्मसे होय तब कोईभी उपायसे पुत्रकी उत्पत्तिको साधन करना ॥ ७ ॥ हरिवंशकी कथा सुननी अथवा शतशंडीविधान करना वा भक्तिसे श्रीशीवजीको आराधन करके, बुद्धिवान पुरुष पुत्रउत्पादन करैं ॥ ८ ॥ पुंनाम नरकसे पुत्र जिससे पिताको तिरा देवै इसीसे साक्षात् ब्रह्मानें पुत्रनामसे कहा है ॥ ९ ॥ एकभी धर्मात्मा पुत्र सब कुलको तारता है और पुत्रकरकेही लोकोंको जीतते हैं. ऐसी सनातनी श्रुति है ॥१०॥ ऐसे वेदोंसे पुत्रको उत्तम माहात्म्य कह्यो है तिस्सें पुत्रको मुख देखकर, पितृके ऋणसें छूटता है ॥११॥

पुत्रजन्मविरोधःस्याद्यदिकेनापिकर्मणा ॥ तदाकश्चिदुपायेनपुत्रोत्पत्तिंप्रसाधयेत् ॥ ७ ॥ हरिवंशकथांश्रुत्वाशतचंडीविधानतः ॥
भक्त्याश्रीशिवमाराध्यपुत्रमुत्पादयेत्सुधीः ॥ ८ ॥ पुन्नाम्नोनरकाद्यस्मात्पितरंत्रायतेसुतः ॥ तस्मात्पुत्रइतिप्रोक्तःस्वयमेवस्वयंभु
वा ॥ ९ ॥ एकोऽपिपुत्रोधर्मात्मासर्वंतारयतेकुलम् ॥ पुत्रेणलोकाञ्जयतिश्रुतिरेषासनातनी ॥ १० ॥ इतिवेदैरपिप्रोक्तंपुत्रमाहा
त्म्यमुत्तमम् ॥ तस्मात्पुत्रमुखंदृष्ट्वामुच्यतेपैतृकादृणात् ॥ ११ ॥ पौत्रस्यस्पर्शनान्मर्त्योमुच्यतेचऋणत्रयात् ॥ लोकानन्त्येद्दिवःप्रा
प्तिःपुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः ॥ १२ ॥ ब्राह्मोढापुत्रोन्नयतिसंग्रहीतस्त्वधोनयेत् ॥ एवंज्ञात्वाखगश्रेष्ठहीनजातिसुतांस्त्यजेत् ॥ १३ ॥ ॥

पौत्रको स्पर्श करनेसे मनुष्य तीनों ऋणोंसे छूटता है यमलोकका उल्लंघनकर पुत्र पौत्र प्रपौत्रोंसे स्वर्गप्राप्ति होती है ॥ १२ ॥ ब्राह्मविधिसे व्याहीभई सवर्ण स्त्रीको पुत्र स्वर्गादिकोंमें ले जाता है. अपनी इच्छासे ग्रहण करी स्त्रीको पुत्र नरकोंमें ले जाता है. ऐसे जानकर, हे गरुड़ हीनजातिकी कन्याकों त्यागना ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सवर्ण पुरुषोंसे सवर्ण स्त्रियोंमें जे पुत्र होते हैं वे औरस पुत्र कहाते हैं उन्होसे किया श्राद्ध, दान पितरोंको स्वर्गदायक है ॥ १४ ॥ पुत्रके दिये भये श्राद्धसे स्वर्गमें जाय उसका तो क्या कहना परंतु दूसरेके दिये भये श्राद्धसे प्रेत स्वर्गमें गया है सो सुनो ॥ १५ ॥ यहां और्ध्वदेहिक दानको उत्कृष्ट माहात्म्य दिखानेवाला एक पुरातन इतिहास कहता हूं ॥ १६ ॥ पहले त्रेतायुगमें हे गरुड़! एक बभ्रुवाहन नाम राजा महोदयनाम सुंदर पुरमें धर्मनिष्ठावान् बड़ा बली होता भया ॥ १७ ॥ यज्ञकरनेवा[illegible] दान देनेवाले संपदावान ब्राह्मणीक साधुवोंपर दया कर-

स[illegible]र्णेभ्यःसवर्णासुयेपुत्राऔरसाःखग ॥ तएवश्राद्धदानेनपितॄणांस्वर्गहे[illegible]वः ॥ १४ ॥ श्राद्धेनपुत्र[illegible]नेनस्व[illegible]तीतिकिमुच्यते ॥ प्रेतोऽपिपर[illegible]ःस्वर्गमथोशृणु ॥ १५ ॥ अत्रैवोदाहरिष्येऽहमितिहासंपुरातनम् ॥ और्ध्वदेहि[illegible]स्यपरमाहात्म्यसूचकम् ॥ १६ ॥ पुरात्रेतायुगेतार्क्ष्य[illegible]जासीद्बभ्रुवाहनः ॥ महोदयपुरेरम्येधर्मनिष्ठोमहाबलः ॥ १७ ॥ यज्वादानपतिःश्रीमान्ब्रह्मण्यः साधुवत्सलः ॥ शीलाचारगुणोपेतोदयादाक्षिण्यसंयुतः ॥ १८ ॥ पालयामासधर्मेणप्रजाःपुत्रानिवौरसान् ॥ क्षत्रधर्मरतोनित्यंसदंड्यान्दंडयन्नृपः ॥ १९ ॥ सकदाचिन्महाबाहुःससैन्योमृगयांगतः ॥ वनंविवेशगहनंनानावृक्षसमन्वितम् ॥ २० ॥ ॥

नेवाला, शील, आचार, गुण इन्होंसे युक्त और दया, चातुर्यतासे युक्त ॥ १८ ॥ ऐसा वो राजा धर्मसे प्रजावोंको औरसपुत्रोंजैसे पालता भया. क्षत्रधर्ममें नित्य आसक्त ऐसा राजा दंडयोग्योंको दंड देता भया ॥ १९ ॥ वोह बभ्रुवाहन एक समयमें सेनासहित सिकारको जाता भया सो नानावृक्षोंसे गहन ऐसे वनमें प्रवेश करता भया ॥ २० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कैसा वह वन कि– अनेक मृगसमूहोंसे व्याप्त तथा अनेक पक्षियोंसे नादित ऐसे वनमें राजा एक मृगको देखता भया
॥३२॥ राजानें अतिदृढ बाणसे मृगको मारा. वोह मृग उस राजाके बाणको लेकर, वनमें छिपगया ॥ २२ ॥ वोह राजाभी रुधिरसे गीलेहुवे मार्गसे मृग- ॥ २१ ॥ उसी वख्त भा०।०
के पीछे पीछे जाता भया उस मृगप्रसंगसे वोह राजा दूसरे वनमें प्रवेश करता भया ॥ २३ ॥ भूखसे सूख गया है कंठ ऐसा राजा परिश्रम अ०५
संतापसे मूर्छित हुवा जलके सरोवरको प्राप्त होके, घोड़ासहित स्नान करता भया ॥ २४ ॥ और कमलके गंधसे सुगंधित शीतल जल पीता

नानामृगगणाकीर्णंनानापक्षिनिनादितम् ॥ वनमध्येतदाराजामृगंदूरादपश्यत ॥ २१ ॥ तेनविद्धोमृगोऽतीवबाणेनसुदृढेनच ॥
बाणमादायतंतस्यवनेऽदर्शनमेयिवान् ॥ २२ ॥ कक्षेणरुधिरार्द्रेणसराजानुजगामतम् ॥ ततोमृगप्रसंगेनवनमन्यद्विवेशसः ॥२३॥
क्षुत्क्षामकंठोनृपतिःश्रमसंतापमूर्च्छितः ॥ जलाशयंसमासाद्यसाश्वएवव्यगाहत ॥ २४ ॥ पपौतदुदकंशीतंपद्मगंधादिवासितम् ॥
ततोवतीर्यसलिलाद्विश्रमोबभ्रुवाहनः ॥ २५ ॥ ददर्शन्यग्रोधतरुंशीतच्छायंमनोहरम् ॥ महाविटपविस्तीर्णपक्षिसंघनिनादितम्
॥ २६ ॥ वनस्यतस्यसर्वस्यमहाकेतुमिवस्थितम् ॥ मूलंतस्यसमासाद्यनिषसादमहीपतिः ॥ २७ ॥ ॥

भया. तिस जलसे निकल, बभ्रुवाहन परिश्रमरहित होता भया ॥ २५ ॥ उस सरोवरके तीरपर एक वटका वृक्ष देखता भया. कैसा वो वट है?
कि– शीतल जिसकी छाया, मनोहर बड़े बड़े शाखावोंसे विस्तारवान, पक्षियोंके शब्दसे नादित ॥ २६ ॥ उस संपूर्ण वनकी बड़ी ध्वजा जैसे
स्थित होरह्या ऐसे वटके मूलके नीचे वो बभ्रुवाहन बैठता भया ॥ २७ ॥ ॥ ॥ ॥

ऐसे बैठा हुवा राजा उस वनमें अकस्मात् एक प्रेतको देखता भया. कैसा प्रेत है ? कि—ऊर्ध्वकेश, मलीन, कुबड़ा, मांसरहित, हाड़मात्र शेष रहा, भयंकर दर्शन ॥ २८ ॥ ऐसे घोर विकराल उस प्रेतको देख, बभ्रुवाहन आश्चर्यको प्राप्त होता भया. प्रेतभी घोर वनमें आये. राजाको देख ॥ [illegible] ॥ [illegible] चित्त होके, राजाके नजीक आयके, हे गरुड़ ! वोह प्रेतराज राजाको ए वचन कहता भया ॥ ३० ॥ हे राजन् ! तुम्हारे संयोगसे प्रेत[illegible] त्यागकर, परमगतिको प्राप्तहुवा. मैं बड़ा धन्य हूं ॥ ३१ ॥ राजा कहता है—हे कृष्णवर्ण ! विकरालमुखके प्रेत ! तुम्हारेको

अथप्रेतंददर्शासौक्षुत्तृड्भ्यांव्याकुलेंद्रियम् ॥ ऊर्ध्वकचंमलिनंकुब्जंनि[illegible]सिंभीमदर्शनम् ॥ २८ ॥ तंदृष्ट्वा[illegible]तंघोरंविस्मितोबभ्रुवाहनः ॥ प्रेतोऽपिदृष्ट्वातंघोरामटवीमागतंनृपम् ॥ २९ ॥ समुत्सुकमनाभू[illegible]तस्यांतिकमुपागतः ॥ अब्रवी[illegible]गताक्ष्र्यप्रेतराजोनृपंवचः ॥ ३० ॥ प्रेतभावोमयात्यक्तःप्राप्तोऽस्मिपरमांगतिम् ॥ त्वत्संयोगान्महाबाहोजातोधन्यतरोऽस्म्यहम् ॥ ३१ ॥ राजोवाच ॥ कृष्णवर्णकरालास्यप्रेतत्वंघोरदर्शनम् ॥ केनकर्मविपाकेनप्राप्तंतेबह्वमंगलम् ॥ ३२ ॥ प्रेतत्वकारणंतातब्रूहिसर्वमशेषतः ॥ कोऽसित्वंकेनदानेनप्रेतत्वंतेविनश्यति ॥ ३३ ॥ प्रेतउवाच ॥ कथयामिनृपश्रेष्ठसर्वमेवादितस्तव ॥ प्रेतत्वकारणंश्रुत्वादयांकर्तुंत्वमर्हसि ॥ ३४ ॥

कौनसे कर्मके फलसे बहोत अमांगलिक घोर जिसका दर्शन ऐसा प्रेतपना प्राप्त हुवा ॥ ३२ ॥ हे तात ! प्रेतभावको कारण संपूर्ण समग्रतासे कहो. तुम कौन हो ? कौनसे दानसे तुम्हारा प्रेतपना नाश होवे ? ॥ ३३ ॥ अब प्रेत कहता है—हे नृपश्रेष्ठ ! संपूर्ण आदिसे तुम्हारेको कहता हूं. प्रेतत्वको कारण सुनकर, तुम दयाकरनेको योग्य हो ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥

एक वैदिश नाम नगर है. कैसा? कि– सब संपदासे संयुक्त, अनेक प्रकारके मनुष्योंके समूहोंसे व्याप्त, अनेक रत्नोंसे संयुक्त ॥ ३५ ॥ जाली झरोखोंसे भई शोभासे शोभित, अनेक धर्मोंसे संयुक्त है. तहां हे राजन्! देवतोंकी पूजामें रत मैं बसता भया ॥ ३६ ॥ वैश्यजातमें सुदेव नामसे मै हूं ऐसा तुम जानो. मैने साकल्यसे देवतोंको तृप्त किया है तथा श्राद्धोंसे पितरोंको तृप्त किया है, ॥ ३७ ॥ नानाप्रकारके दान देनेसे ब्राह्मणोंको तृप्त किया है, दीन, अंधे, गरीबोंको मैनें अनेक प्रकार अन्नदान दिया है ॥ ३८ ॥ हे राजन्! वह सब प्रारब्धसे ह-

वैदिशंनामनगरंसर्वसंपत्समन्वितम् ॥ नानाजनपदाकीर्णंनानारत्नसमाकुलम् ॥ ३५ ॥ हर्म्यप्रासादशोभाढ्यंनानाधर्मसमन्वितम् ॥ तत्राहंन्यवसंतातदेवार्चनरतःसदा ॥ ३६ ॥ वैश्योजात्यासुदेवोऽहंनाम्नाविदितमस्तुते ॥ हव्येनतर्पितादेवाःकव्येनपितरस्तथा ॥ ३७ ॥ विविधैर्दानयोगैश्चविप्राःसंतर्पितामया ॥ दीनांधकृपणेभ्यश्चदत्तमन्नमनेकधा ॥ ३८ ॥ तत्सर्वंनिष्फलंराजन्ममदैवादुपागतम् ॥ यथामेनिष्फलंजातंसुकृतंतद्वदामिते ॥ ३९ ॥ ममवैसंततिर्नास्तिनसुहृन्नचबांधवः ॥ नचमित्रंहिमेतादृग्यःकुर्यादौर्ध्वदैहिकम् ॥ ४० ॥ यस्यनस्यान्महाराजश्राद्धंमासिकषोडशम् ॥ प्रेतत्वंसुस्थिरंतस्यदत्तैःश्राद्धशतैरपि ॥ ४१ ॥ ॥

मारा निष्फल हुवा है. जैसे हमारा निष्फल हुवा सो तुम्हारेको कहता हूं ॥ ३९ ॥ हमारे संतान नहीं है, ऐसा मित्र नहीं है, बंधु नहीं है जो हमारी पारलौकिक क्रिया करै ॥ ४० ॥ हे महाराज! जिसके सोलामासिक श्राद्ध नहीं होते उसको शैकड़ों श्राद्ध देनेसे प्रेतयोनि नहीं जाती है ॥ ४१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हेराजन् ! आप हमारी और्ध्वदेहिक क्रिया करके, प्रेतयोनिसे उद्धार करो. क्योंकि इस संसारमें संपूर्ण वर्णोंका बन्धु राजा कह्या है ॥ ४२ ॥
हे राजेंद्र ! इससे हमारेको [illegible]रो. जैसे हमारी श्रेष्ठ गति होय और प्रेतयोनि जाय. मै तुमको मणिरत्न [illegible] ॥ ४३ ॥ हे वीर ! तुमको तैसा
करना जो हमारे [illegible]रकी इच्छा करतेहो तौ क्षुधा और प्या[illegible] आदिले दुःखोंसें हमारे प्रेतपना [illegible]रह है ॥ ४४ ॥ इस वनमें बड़े
स्वादके फल [illegible] ांदकारी शीतल जल है. सो भूखमें हमको वै फल नहीं मिलते हैं और प्यासमें जल नहीं प्राप्त होता है ॥ ४५ ॥ सो

त्वमौर्ध्वदेहिकंकृत्वामामुद्धरमहीपते ॥ वर्णानांचैवसर्वेषांराजाबन्धुरिहोच्यते ॥ ४२ ॥ तन्मातारयराजेंद्रमणिरत्नंददामिते ॥ यथामे
सद्गतिर्भूयात्प्रेतयोनिश्चगच्छति ॥ ४३ ॥ तथाकार्यंत्वयावीरममचेदिच्छसिप्रियम् ॥ क्षुधातृषादिभिर्दुःखैःप्रेतत्वंदुःसहंमम ॥ ४४ ॥
स्वादूदकंफलंचास्तिवनेऽस्मिन्शीतलंशिवम् ॥ नप्राश्नामिक्षुधार्तोऽहंतृषार्तोनजलंक्वचित् ॥ ४५ ॥ यदिमेहिभवेद्राजन्विधिर्नाराय
णेमहान् ॥ तदग्रेवेदमंत्रैश्चक्रियासर्वौर्ध्वदेहिकी ॥ ४६ ॥ तदानश्यतिमेनूनंप्रेतत्वंनात्रसंशयः ॥ वेदामंत्रास्तपोदानंदयासर्वत्रजंतुषु
॥ ४७ ॥ सच्छास्त्रश्रवणंविष्णोःपूजासज्जनसंगतिः ॥ प्रेतयोनिविनाशायभवंतीतिमयाश्रुतम् ॥ ४८ ॥ ॥

हे राजन् ! हमारी नारायणबलिविधि होय तथा वहां वेदमंत्रोंसें संपूर्ण और्ध्वदैहिक क्रिया होय ॥ ४६ ॥ तब हमारा निश्चय प्रेतपना नष्ट
होय इसमें संदेह नहीं है. वेदके मंत्र, तप, दान, सर्व जीवोंपर दया, श्रेष्ठ शास्त्रका सुनना, विष्णुकी पूजा, महात्माकी संगति ए प्रेतयोनिके
नाशके वास्ते हैं ऐसा मैनें सुना है ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ॥ ॥ ॥

इसीसे तुमको प्रेतयोनिकी नाश करनेवाली विष्णुकी पूजा कहता हूं सोला मासाको एकसुवर्ण सो दो सुवर्ण कर न्यायसे कमाया सोना लेकर हे राजन्! उसकी १ नारायणकी मूर्ति बनानी ॥ ४९ ॥ सो पीले रेस्मी दो वस्त्र धारण कराकर संपूर्ण आभूषण पहिराना, पीछे सुगंधित जलसे स्नान करा सिंहासनपर विराजमान कर, पूजा करनी ॥ ५० ॥ उसमूर्तिके पूर्वमें श्रीधर भगवानकों पूजना, दक्षिणमें मधुसूदन भगवान, पश्चिममें

अतोवक्ष्यामितेविष्णुपूजांप्रेतत्वनाशिनीम् ॥ सुवर्णद्वयमानीयसुवर्णंन्यायसंचितम् ॥ तस्यनारायणस्यैकांप्रतिमांभूपकल्पयेत् ॥ ४९ ॥ पीतवस्त्रयुगच्छन्नांसर्वाभरणभूषिताम् ॥ स्नापितांविविधैस्तोयैरधिवास्ययजेत्ततः ॥ ५० ॥ पूर्वेतुश्रीधरंतस्यादक्षिणेमधुसूदनम् ॥ पश्चिमेवामनंदेवमुत्तरेचगदाधरम् ॥ ५१ ॥ मध्येपितामहंचैवतथादेवंमहेश्वरम् ॥ पूजयेच्चविधानेनगंधपुष्पादिभिःपृथक् ॥ ५२ ॥ ततःप्रदक्षिणीकृत्यवह्नौसंतर्प्यदेवताः ॥ घृतेनदध्नाक्षीरेणविश्वेदेवांश्चतर्पयेत् ॥ ५३ ॥ ततःस्नातोविनीतात्मायजमानःसमाहितः ॥ नारायणाग्रेविधिवत्स्वांक्रियामौर्ध्वदेहिकीम् ॥ ५४ ॥ ॥ ॥ ॥

वामन भगवान्, उत्तरमें गदाधर भगवान्को पूजना ॥ ५१ ॥ मध्यमें ब्रह्माको तथा महादेवको विधिसे गंध, अक्षत पुष्पादिकोंसे पूजना ॥ ५२ ॥ पीछे प्रदक्षिणा करके, अग्निमें देवतोंको तृप्ति करके, घृत, दधि दूधसे विश्वेदेवोंको तृप्त करना ॥५३॥ पीछे स्नानकर, नम्र सावधान हुवा यजमान नारायणके अगाडी विधिपूर्वक अपनी और्ध्वदैहिकी क्रिया करनी ॥ ५४ ॥ ॥ ॥ ॥

उस क्रियामें शास्त्रानुसार क्रोधलोभसे रहित हो, संपूर्ण श्राद्ध आरंभ करना तथा वृषोत्सर्ग करना ॥ ५५ ॥ ब्राह्मणोंको पीछे तेरा पद दान देना, शय्यादान देकर, प्रेतघट देना ॥ ५६ ॥ राजा कहता है—हे प्रेत ! कैसें प्रेतघट करना और कौनसी विधिसें देना सो संपूर्णकी दयाके वास्ते प्रेतके मुक्ति देनेवाला घटदान कहौ ॥ ५७ ॥ अब प्रेत कहता है—हे महाराज ! तुमनें श्रेष्ठ बात पूछी है सो मैं कहता हूं आप सुनों.

आरभेतयथाशास्त्रंक्रोधलोभविवर्जितः ॥ कुर्याच्छ्राद्धानिसर्वाणिवृषस्योत्सर्जनंतथा ॥ ५५ ॥ ततःपदानिविप्रेभ्योदद्याच्चैवत्रयोद
श ॥ [illegible]नंप्रदत्वाचघटंप्रेतस्यनिर्वपेत् ॥ ५६ ॥ राजोवाच ॥ कथंप्रेतघटंकुर्याद्दद्यात्केनवि[illegible] ॥ ब्रूहिसर्वानुकंपार्थंघटंप्रेत
विमुक्तिदम् ॥ ५७ ॥ प्रेतउवाच ॥ ॥ साधुपृष्टंमहा[illegible]जकथयामिनिबोधते ॥ प्रेतत्वंनभवेद्येनदानेनसुदृढेनच ॥ ५८ ॥ दानं
प्रेतघटंनामसर्वाशुभविनाशनम् ॥ दुर्लभंसर्वलोकानांदुर्गतिक्षयकारकम् ॥ ५९ ॥ संतप्तहाटकमयंतुघटंविधायब्रह्मेशकेशवयुतंसहलो
कपालैः ॥ क्षीराज्यपूर्णविवरंप्रणिपत्यभक्त्याविप्रायदेहितवदानशतैःकिमन्यैः ॥ ६० ॥ ॥ ॥

जिस दृढ़दानके देनेसें प्रेतपना नहीं होय सो ॥ ५८ ॥ प्रेतघट नाम दान संपूर्ण पापको नाश करता है. संपूर्ण लोकोंमें दुर्लभ है. दुर्गतिको नाश करता है ॥ ५९ ॥ सुंदर तपेहुए सुवर्णको ब्रह्मा, महादेव, विष्णु और लोकपालकसहित घट कराय, दूध घृतसें भरकर भक्तिसें ब्राह्मणको नमस्कार करके, देवै और सैकड़ों दान देवैगा तौभी क्या है. ॥ ६० ॥ ॥ ॥ ॥

ब्रह्मा, शंकर इन्होंकोभी मध्यमें पूजना, पूर्वआदि दिशोंमें उस घटकेभी कंठमें लोकपाल अनुक्रमसे पूजना ॥ ६१ ॥ हे राजन् ! ऐसे विधिसे धूप, पुष्प, चंदन इन्होंसे पूजाकर पीछे दूध घृतसहित सुवर्णघटको दान देना ॥ ६२ ॥ यह दान सब दानोंसे अधिक महापापोंका नाश करनेवाला है. सो हे राजन् ! प्रेतभावकी निवृत्तिके वास्ते श्रद्धासें करना ॥ ६३ ॥ अब श्रीभगवान् कहते हैं—हे गरुड ! ऐसे बभ्रुवाहन राजाको प्रेतसे संभाषण हो-

ब्रह्मामध्येतथाविष्णुःशंकरःशंकरोऽव्ययः ॥ प्राच्यादिषुचतत्कंठेलोकपालान्क्रमेणतु ॥ ६१ ॥ संपूज्यविधिवद्राजन्धूपैःकु सुमचंदनैः ॥ ततोदुग्धाज्यसहितंघटंदद्याद्धिरण्मयम् ॥ ६२ ॥ सर्वदानाधिकंचैतन्महापातकनाशनम् ॥ कर्तव्यंश्रद्ध याराजन्प्रेतत्वविनिवृत्तये ॥ ६३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एवंसंजल्पतस्तस्यप्रेतेनसहकाश्यप ॥ सेनाजगामानुपदंहस्त्यश्वरथ संकुला ॥ ६४ ॥ ततोबलेसमायातेदत्त्वाराज्ञेमहामणिं ॥ नमस्कृत्यपुनःप्रार्थ्यप्रेतोऽदर्शनमेयिवान् ॥ ६५ ॥ तस्माद्वनाद्वि निष्क्रम्यराजापिस्वपुरंययौ ॥ स्वपुरंचसमासाद्यतत्सर्वंप्रेतभाषितम् ॥ ६६ ॥ चकारविधिवत्पक्षिन्नौर्ध्वदेहिकजंविधिम् ॥ तस्यपुण्यप्रदानेनप्रेतोमुक्तोदिवंययौ ॥ ६७ ॥ ॥ ॥ ॥

ता था हाथी, घोड़ा, रथ इन्होंसे व्याप्त सेना आवती भई ॥ ६४ ॥ तब सेना आवती देख राजाकों महामणि देकर नमस्कार कर क्रियाकी प्रार्थना कर प्रेत अलक्ष्य होता भया ॥ ६५ ॥ उस वनसे निसर राजा अपने पुरमें जाता भया अपने पुरमें प्राप्त होके वा सर्वप्रेतकी कही भई ॥ ६६ ॥ हे गरुड़! और्ध्वदेहिकी क्रिया विधिसे करता भया. उस पुण्यके देनेके प्रभावसे प्रेत मुक्तिको प्राप्त हो, स्वर्गमें जाता भया ॥ ६७ ॥

दुसरेने दियेभये श्राद्धमें प्रेत श्रेष्ठगतिको प्राप्त होताभया. सो पुत्रके दिये श्राद्धसे पिता स्वर्गमें जाय उसमें क्या कहना ॥ ६८ ॥ यह पवित्र इतिहास जो सुनै और सुनावै वे दोनों पापआचरण करनेवाले हैं तौ भी प्रेतगतिको नहीं प्राप्त होवैं ॥ ६९ ॥ इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे ज्ञानबोधनीभाषाटीकायां बभ्रुवाहनप्रेतसंस्कारोनाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ अब गरुड कहते हैं—हे प्रभो! इस लो-

श्र[illegible]न [illegible]तःप्रेतोऽपिसद्गतिम् ॥ किंपुनःपुत्रदत्तेनपितायातीतिचाद्भुतम् ॥ ६८ ॥ इतिहासमिमंपुण्यंशृणोतिश्रावयेच्चयः ॥ नतौप्रेतत्वमायातःपापान्[illegible]युतावपि ॥ ६९ ॥ इतिश्रीग० सारोद्धारेबभ्रुवाहनप्रेतसंस्कारोनामसप्तमोध्यायः ॥७॥ ॥ गरुडउवाच ॥ आमुष्मिकींक्रियांसर्वांवदसुकृतिनांमम ॥ कर्तव्[illegible]ासायथापुत्रैस्तथाचकथयप्रभो ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधुपृष्टंत्वया ताक्ष्यमानुषाणांहितायवै ॥ धार्मिकार्हंचयत्कृत्यंतत्सर्वंकथ[illegible]मिते ॥ २ ॥ सुकृतीवार्धकेदृष्ट्वाशरीरंव्याधिसंयुतम् ॥ प्रतिकूलान्ग्रहांश्चैवप्राणघोषस्यचाश्रुतिम् ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

ककी संपूर्णक्रिया सुकृती पुरुषोंकी कहो जैसे वा पुत्रोसे करने योग्यहैं सो कहौ ॥ १ ॥ अब भगवान कहते हैं—हे गरुड़! तुमने मनुष्योंके हितके लियें श्रेष्ठ बात पूछीहै. धर्मात्मा पुरुषोंके योग्य जो कृत्य सो संपूर्ण तुमारेको कहता हूं ॥ २ ॥ सुकृती वृद्धावस्थामें रोगसहित शरीर देख, प्रतिकूल ग्रहोंको देख, प्राणशब्द सुननेंमें नहीं आवै ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

तब अपना मरना जान, निर्भय हुवा इंद्रियोंको जीत, जान अजान संपूर्ण पापोंको प्रायश्चित्त आचरण करना चाहिये ॥ ४ ॥ जब आतुरकाल आवै तब स्नान करना. शालिग्रामस्वरूपी विष्णुको पूजन करना ॥५॥ गंध, पुष्प, केशर तुलसीदलोंसे धूप दीप बहोत मोदकादि नैवेद्यसे पूजन करना ॥ ६ ॥ फेर ब्राह्मणोंको दक्षिणा दे, भोजन कराय, अष्टाक्षरी मंत्र जपना अथवा द्वादशाक्षरी जपना ॥ ७ ॥ विष्णुसहस्रनाम वा

तदास्वमरणंज्ञात्वानिर्भयःस्यादतंद्रितः ॥ अज्ञातज्ञातपापानांप्रायश्चित्तंसमाचरेत् ॥ ४ ॥ यदास्यादातुरःकालस्तदास्नानंसमारभेत् ॥
पूजनंकारयेद्विष्णोःशालग्रामस्वरूपिणः ॥ ५ ॥ अर्चयेद्गंधपुष्पैश्चकुंकुमैस्तुलसीदलैः ॥ धूपैर्दीपैश्चनैवेद्यैर्बहुभिर्मोदकादिभिः ॥ ६ ॥
दत्वाचदक्षिणांविप्रान्नैवेद्यादेवभोजयेत् ॥ अष्टाक्षरंजपेन्मंत्रंद्वादशाक्षरमेवच ॥ ७ ॥ संस्मरेच्छृणुयाच्चैवविष्णोर्नामशिवस्यच ॥
हरेर्नामहरेत्पापंनृणांश्रवणगोचरम् ॥ ८ ॥ रोगिणोऽतिकमासाद्यशोचनीयंनबांधवैः ॥ स्मरणीयंपवित्रंमेनामध्येयंमुहुर्मुहुः ॥ ९ ॥
मत्स्यःकूर्मोवराहश्चनारसिंहश्चवामनः ॥ रामोरामश्चकृष्णश्चबुद्धःकल्कीतथैवच ॥ १० ॥ ॥ ॥

शिवसहस्रनाम पढ़ना वा सुनना. अहो हरिको नाम मनुष्योंके कानमें प्राप्त भया पापोंको हरैहै ॥ ८ ॥ रोगीके नजीक प्राप्त होकर, बांधवोंकरके शोचकरना अयोग्य है. कारण मेरा पवित्र नाम और ध्यान वारंवार स्मरण कराना ॥ ९ ॥ मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, रामचंद्र, श्रीकृष्ण, बुद्ध, कल्की ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ए दश नाम सदा ॥ बुद्धिवानोंको स्मरण करने योग्य हैं जो रोगीके समीप कहते हैं वही बांधव कहेहैं ॥ ११ ॥ कृष्ण ऐसा मांगलिक नाम जिसकी वाणीमें वर्तताहै ... महापापोंकी कोटिभी तत्काल भस्म होतीहै ॥ १२ ॥ मरताहुवा अजामिल पुत्रनिमित्तसे हरिका नामउच्चारण कर, भगवद्धामको प्राप्त होता भया, सो श्रद्धासे भगवत्स्मरण करता भगवद्धाम प्राप्त होय उसको क्या आधिक ॥ १३ ॥ दुष्टचित्तसे भी

एतानिदशनामानिस्मर्तव्यानिसदाबुधैः ॥ समीपेरोगिणोब्रूयुर्बांधवास्तेप्रकीर्तिताः ॥ ११ ॥ कृष्णेतिमंगलंनामयस्यवाचिप्रवर्तते ॥ तस्यभस्मीभवंत्याशुमहापातककोटयः ॥ १२ ॥ म्रियमाणोहरेर्नामगृणन्पुत्रोपचारितम् ॥ अजामिलोऽप्यगाद्धामकिंपुनः श्रद्धयागृणन् ॥ १३ ॥ हरिर्हरतिपापानिदुष्टचित्तैरपिस्मृतः ॥ अनिच्छयापिसंस्पृष्टोदहत्येवहिपावकः ॥ १४ ॥ हरेर्नाम्नश्चयाशक्तिःपापनिर्हरणेद्विज ॥ तावत्कर्तुंसमर्थोनपातकंपातकीजनः ॥ १५ ॥ किंकरेभ्योयमःप्राहानयध्वंनास्तिकंजनम् ॥ नैवानयतभोदूताहरिनामस्मरन्नरम् ॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

स्मरण किये हरि पापोंको हरतेहैं. जैसे भूलसेभी स्पर्शकरी भई अग्नि दग्ध कर देती है ॥१४॥ सो हे गरुड़! हरिनामकी जितनी पाप नाशकरनेमें शक्ति है उतनी पातकी पुरुषकी पाप करनेकी शक्ति नहींहै ॥ १५ ॥ यमराज अपने दूतोसे कहते हैं– हे दूतो! नास्तिक मनुष्यको लावो और हरिनाम स्मरण करनेवालेको मति लावो ॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥

अच्युत, केशव, राम, नारायण, कृष्ण, दामोदर, वासुदेव, हरि, श्रीधर, माधव, गोपिकावल्लभ, जानकीनाथ, रामचंद्रको हम भजते हैं ऐसे जे भगवन्नाम भजरहे हैं ॥१७॥ हे कमलनयन! हे वासुदेव! हे विष्णो! हें धरणिधर! हे अच्युत! हे शंखचक्रपाणे! हमारे आप शरणरूप होवो ऐसे जो कहरहे उन निष्पापियोंको हे दूतो! दूरसे त्यागदेना अर्थात् नजीक मत जाना॥१८॥ उन पापियोंको पकड़ लाना जो मुकुंद भगवानके चरणारविंदरूपी मकरंद अर्थात् सुगंधित रससे निरंतर विमुख हैं. जो रसके जाननेवाले निष्किंचन परमहंसोंके कुलसे सेवित हैं उनसे विमुख और

अच्युतंकेशवंरामनारायणंकृष्णदामोदरंवासुदेवंहरिम् ॥ श्रीधरंमाधवंगोपिकावल्लभंजानकीनायकंरामचंद्रंभजे ॥ १७ ॥ कमलनयनवासुदेवविष्णोधरणिधराच्युतशंखचक्रपाणे ॥ भवशरणमितीरयंतियेवैत्यजभटदूरतरेणतानपापान् ॥ १८ ॥ तानानयध्वमसतोविमुखान्मुकुंदपादारविंदमकरंदरसादजस्रम् ॥ निष्किंचनैःपरमहंसकुलैरसङ्गैर्जुष्टाद्गृहेनिरयवर्त्मनिबद्धतृष्णान् ॥ १९ ॥ जिह्वानवक्तिभगवद्गुणनामधेयंचेतश्चनस्मरतितच्चणारविंदम् ॥ कृष्णायनोनमतियच्छिरएकदापितानानयध्वमसतोऽकृतविष्णुकृत्यान् ॥ २० ॥ तस्मात्संकीर्तनंविष्णोर्जगन्मंगलमंहसाम् ॥ महतामपिपक्षींद्रविच्छेकांतिकनिष्कृतिम् ॥ २१ ॥ ॥

नरकका मार्ग घरमेंही बांधीहै तृष्णा ऐसेनको लाना ॥ १९ ॥ जिन्होंकी जिह्वा भगवद्गुणानुवाद और भगवन्नाम नहीं बोलैहै और चित्त भगवतके चरणारविंदको नहीं स्मरण करता है. शिर कदापि नमस्कार नहीं करै है और नहीं कियो है भगवत्आराधन ऐसे दुष्टोंको लावो ॥ २० ॥ हे पक्षींद्र! तिसीसे विष्णुको नामोच्चारण जगतको मांगलिक है और महान् पापोंको परम प्रायश्चित्त जानो ॥ २१ ॥ ॥

करेभये भी प्रायश्चित्त नारायणसे विमुखको नहीं पवित्र करते हैं. जैसे नदी मदिराके घटको नहीं पवित्र करती हैं । २२ ॥ कृष्णनामसे गया है जिनका पाप ऐसे पुरुष नरकमें नहीं पड़ते हैं. यम और यमदूतोंको स्वप्नमेंभी नहीं देखते हैं ॥२३॥ मांस, हाड़, रक्त, इन संबंधी शरीररूपी वैतर[illegible] जे[illegible] अंतसमयमें गोदान ब्राह्मणोंको देवे हैं और नंदनंदन ऐसे बोलै हैं सो नरकमें नहीं पड़ते हैं. अर्थात् जन्ममरणसे छूट, मोक्षको प्राप्त हा‌त हैं ॥ २४ ॥ इसीसे पापोंके समूहोंको नाशकरनेवाला विष्णुका नाम[illegible]ग्ण करना. गीता, सहस्रनाम पढ़ना अथवा

प्रायश्चित्तानिचीर्णानिनारायणपराङ्मुखम् ॥ ननिष्पुनंतिदुर्बुद्धिंसुराकुंभमिवापगाः ॥ २२ ॥ कृष्णनाम्नाननरकंपश्यंतिगतकिल्बिषाः ॥ यमंचतद्भटांश्चैवस्वप्नेऽपिनकदाचन ॥ २३ ॥ मांसास्थिरक्तवत्कायोवैतरण्यांपतेन्नरः ॥ योऽतेदद्याद्द्विजेभ्यश्चनंदनंदनगामिति ॥ २४ ॥ अतःस्मरेन्महाविष्णोर्नामपापौघनाशनम् ॥ गीतासहस्रनामानिपठेद्वाशृणुयादपि ॥ २५ ॥ एकादशीव्रतंगीतागंगांबुतुलसीदलम् ॥ विष्णोःपादांबुनामानिमरणेमुक्तिदानिच ॥ २६ ॥ ततःसंकल्पयेदन्नंसघृतंचसकांचनम् ॥ सवत्साधेनवोदेयाःश्रोत्रियायद्विजातये ॥ २७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ब्राह्मणके मुखसे श्रवण करना ॥ २५ ॥ एकादशीको व्रत, गीता, गंगाजल, तुलसीदल, विष्णुको चरणामृत भगवन्नाम ए मरणसमयमें मुक्तिके देनेवाले हैं ॥ २६ ॥ इसीसे अंतमें अन्नदान घृत और सुवर्णसहित संकल्प करना, वेदपाठी ब्राह्मणको बछरासहित गोदान देना ॥ २७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अंतमें जो मनुष्य थोड़ा अथवा बहुत देवै है हे गरुड़! वो अक्षय होता है और देनेवाला पुत्र आनंद सुख भोगता है ॥ २८ ॥ अंतकालमें श्रेष्ठ-पुत्रने पितामाताको सर्व दान देना. धर्ममें निपुण इसीसे लोकमें पुत्रकी वांछा करते हैं ॥ २९ ॥ पृथ्वीपर स्थित आधे मूंदगये हैं नेत्र ऐसे पिताको देखकर, पुत्रोंकरके उनके पूर्वसंचय किये धनमें तृष्णा नहीं करना ॥ ३० ॥ श्रेष्ठपुत्र जो दान देताहै उस दानके प्रभावसे जहांतक जीवै तहांतक परम सुखी होताहै परलोकमें जानेवाला मार्गमें आतुर दानसे दुःखको नहीं प्राप्त होता ॥३१॥ एकतो आतुरसमयमें दूजा ग्रहण समय-

अंतेजनोयद्ददातिस्वल्पंवायदिवाबहु ॥ तदक्षयंभवेत्ताक्ष्र्ययत्पुत्रश्चानुमोदत ॥ २८ ॥ अंतकालेतुसत्पुत्रःसर्वदानानिदापयेत् ॥ यत्तदर्थंसुतोलोकेप्रार्थ्यतेधर्मकोविदैः ॥ २९ ॥ भूमिष्ठंपितरंदृष्ट्वाअर्धोन्मीलितलोचनम् ॥ पुत्रैस्तृष्णानकर्तव्यातद्धनेपूर्वसंचिते ॥ ॥ ३० ॥ सतद्ददातिसत्पुत्रोयावज्जीवत्यसौचिरम् ॥ अतिवाहस्तुतान्मार्गेदुःखंनलभतेयतः ॥ ३१ ॥ आतुरेचोपरागेचद्वयंदानंविशिष्यते ॥ अतोऽवश्यंप्रदातव्यमष्टदानंतिलादिकम् ॥ ३२ ॥ तिलालोहंहिरण्यंचकार्पासोलवणंतथा ॥ सप्तधान्यंक्षितिर्गावएकैकंपावनंस्मृतम् ॥ ३३ ॥ एतदष्टमहादानंमहापातकनाशनम् ॥ अंतकालेप्रदातव्यंभृणुतस्यचसत्फलम् ॥ ३४ ॥ ॥

में ए दो दान श्रेष्ठ कहे हैं. इसीसे तिलादिक अष्टदानभी अवश्य देनेयोग्य हैं ॥ ३२ ॥ तिल, लोह, सुवर्ण, कपास, लवण, सप्तधान्य, पृथ्वी, गो, ए एकैक अंतमें पवित्र करनेवाले कहे हैं ॥ ३३ ॥ ए अष्ट महादान महापापोंके नाश करनेवाले कहे हैं. इन्होंको अंतसमयमें देना. इनका जो फल है सो सुनो ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हमारे प्रस्वेदसे अर्थात् पसीनासे प्रगट भये ऐसे पवित्र तीन जातके तिल हैं. सो तिलोंके दानसे असुर दानव और दैत्य तृप्त होते हैं ॥ ३५ ॥ श्वेत, कृष्ण और कपिलवर्ण ए तीन जातके दानकिये तिल; वाणी मन शरीरसे किये तीनों प्रकारके पापोंको नाशते हैं ॥ ३६ ॥ पृथ्वीपर हाथ धरकर, लोहदान दे तो यमकी सीममें तथा उनके मार्गमें नहीं जाता है ॥ ३७ ॥ कुठार, मुसल, दंड, खड्ग, छूरी ए शस्त्र

ममस्वेदसमुद्भूताःपवित्रास्त्रिविधास्तिलाः ॥ असुरादानवादैत्यास्तृप्यंतितिलदानतः ॥ ३५ ॥ तिलाःश्वेतास्तथाकृष्णादा
नकपिलास्तिलाः ॥ संहरंतित्रिधापापं ङ्मनःकायसंचितम् ॥ ३६ ॥ लोहदानंचदातव्यंभूमियुक्तेनपाणिना ॥ यमसी
[illegible] छेत्तस्यवर्त्मनि ॥ ३७ ॥ कुठारोमुसलोदंडःखड्गश्चछुरिकातथा ॥ शस्त्राणियमहस्तेचनिग्रहेपापकर्मणा
म् ॥ ३८ ॥ यमायुधानांसंतुष्ट्यैदानमेतदुदाहतम् ॥ तस्माद्द्याल्लोहदानंयमलोकेसुखावहम् ॥ ३९ ॥ उरणःश्यामसूत्रश्च
शुंडामर्कोऽप्युदुंबरः ॥ शेषंबलोमहादूतालोहदानात्सुखप्रदाः ॥ ४० ॥ शृणुतार्क्ष्यपरं [illegible] नांदानमुत्तमम् ॥ दत्तेनतेन
तुष्यंतिभूर्भुवःस्वर्गवासिनः ॥ ४१ ॥ ॥ ॥ ॥

यमके हाथमें पापियोंके दंडके लियेहैं ॥ ३८ ॥ उन यमके शस्त्रोंकी प्रसन्नताके वास्ते ए दान कहेहैं. तिसीसे यमलोकमें सुखदेनेवाला लोहदान देना ॥ ३९ ॥ उरण, श्यामसूत्र, शुंडामर्क, उदुंबर, शेषंबल ए यमके महादूत लोहदानसे सुख देतेहैं ॥ ४० ॥ हे गरुड़ ! परमगुप्त दानोंमें उत्तम दान सुनो, जिसके देनेसे भूःभुवः स्वर्गवासी ए सब प्रसन्न होते हैं ॥ ४१ ॥ ॥ ॥ ॥

ब्रह्मादिक, ऋषि, देवता, धर्मराजकी सभामें रहनेवाले ए सुवर्णदानसें प्रसन्न और वरदेनेवाले होते हैं ॥ ४२ ॥ तिसीसे प्रेतके उद्धारके वास्ते सुवर्णदान देना. हे गरुड़ ! सुवर्णदानसे यमलोकमें नहीं जाता है और स्वर्गको प्राप्त होताहै ॥ ४३ ॥ सो दानी बहोत कालतक स्वर्गमें वसता है पीछे पृथ्वीपर राजा होताहै. कैसा राजा ? रूपवान्, धर्मात्मा, वक्ता, लक्ष्मीवान् अतुल पुरुषार्थी ॥ ४४ ॥ कपासके दानसे दूतोंसे भय नहीं

ब्रह्माद्याऋषयोदेवाधर्मराजसभासदाः ॥ स्वर्णदानेनसंतुष्टाभवंतिवरदायकाः ॥ ४२ ॥ तस्माद्देयंस्वर्णदानंप्रेतोद्धरणहेतवे ॥ नयातियमलोकंसःस्वर्गंतितातगच्छति ॥ ४३ ॥ चिरंवसेत्सत्यलोकेततोराजाभवेदिह ॥ रूपवान्धार्मिकोवाग्मीश्रीमानतुलविक्रमः ॥ ४४ ॥ कार्पासस्यतुदानेनदूतेभ्योनभयंभवेत् ॥ लवणंदीयतेयच्चतेननैवभयंयमात् ॥ ४५ ॥ अयोलवणकार्पासतिलकांचनदानतः ॥ चित्रगुप्तादयस्तुष्टायमस्यपुरवासिनः ॥ ४६ ॥ सप्तधान्यप्रदानेनप्रीतोधर्मध्वजोभवेत् ॥ तुष्टाभवंतियेन्येऽपित्रिषुद्वारेष्वधिष्ठिताः ॥ ४७ ॥ व्रीहयोयवगोधूमामुद्गामाषाःप्रियंगवः ॥ चणकाःसप्तमाज्ञेयाःसप्तधान्यमुदाहृतम् ॥ ४८ ॥ ॥ ॥ ॥

होताहै. लवण दान देनेसेभी यमसे भय नहीं होताहै ॥ ४५ ॥ लोह , लवण, कपास, तिल, सुवर्ण ए दानोंसे चित्रगुप्तादि यमके पुरमें रहनेवाले प्रसन्न रहतेहैं ॥ ४६ ॥ सप्तधान्यके देनेसे धर्मध्वज प्रसन्न रहताहै और अगाड़ी कहैंगें वे तीनों द्वारपर रहनेवाले प्रसन्न होतेहैं ॥ ४७ ॥ चांवल, यव, गोहूं, मूंग, उड़द, प्रियंगु, चना ए सप्त धान्य जानने ॥ ४८ ॥ ॥ ॥ ॥

गौके चर्मजितनी पृथ्वी पात्रको विधिसे दी भई ब्रह्महत्यासे भी पवित्र करतीहै ए मुनीश्वरोंने निश्चय कियाहै ॥ ४९ ॥ राज्यमें कियाहुवा पाप व्रतसे तीर्थसे और दानोंसे नहीं नाश होताहै केवल पृथिवीदानसे नष्ट होताहै ॥ ५० ॥ कोमल तृणसे शोभित पृथ्वी जो ब्राह्मणको देताहै वो देवता असुरोंसे पूज्य हुवा इंद्रभवनमें जाताहै ॥ ५१ ॥ हे गरुड़! और दान बहोत थोड़े फल देतेहैं. पृथ्वीदानका पुण्य दिन दिन

गोचर्ममात्रेऽपि दत्तापात्रेविधानतः ॥ पुनातिब्रह्महत्यायादृष्टमेतन्मुनीश्वरैः ॥ ४९ ॥ नव्रतेभ्योनतीर्थेभ्योनान्यद्दाना द्विनश्यति ॥ राज्येकृतंमहापापंभूमिदानाद्विलीयते ॥ ५० ॥ पृथिवींसस्यसंपूर्णांयोददातिद्विजाययः ॥ सप्रयातींद्रभुव नेपूज्यमानःसुरासुरैः ॥ ५१ ॥ अत्यल्पफलदानिस्युरन्यदानानिकाश्यप ॥ पृथिवीदानजंपुण्यमहन्यहनिवर्धते ॥ ५२ ॥ योभूत्वाभूमिपोभूमिंनोददातिद्विजातये ॥ सनाप्नोतिकुटींग्रामेदरिद्रीस्याद्भवेभवे ॥ ५३ ॥ अदानाद्भूमिदानस्यभूपति त्वाभिमानतः ॥ निवसेन्नरकेयावच्छेषोधारयतेधराम् ॥ ५४ ॥ तस्माद्भूमीश्वरोभूमिदानमेवप्रदायेत् ॥ अन्येषांभूमिदा नार्थगोदानंकथितंमया ॥ ५५ ॥ ॥ ॥ ॥

बढ़ता है ॥ ५२ ॥ जो राजा होकर, ब्राह्मणको पृथ्वी नहीं देताहै वो दूसरे जन्ममें ग्राममें कुटीकोभी प्राप्त नहीं होता और जन्मजन्ममें दरिद्री होताहै ॥ ५३ ॥ पृथ्वीदानकों राजापनाके अभिमानसे नहीं देनेसे जहांतक शेषजी पृथ्वी धारण करैं तहांतक नरकमें वसताहै ॥ ५४ ॥ इसीसे राजा होकर, पृथ्वीदानही देना और वर्णोंको पृथ्वीदानकी जगा गोदान मैनें कहा है ॥ ५५ ॥ ॥ ॥

तिसीसे अंतधेनु देनी तथा रुद्रधेनु देनी, ऋणधेनु देनी पीछे मोक्षधेनु देनी ॥५६॥ हे गरुड़! समग्र विधिसे वैतरणी गौ देनी गोदान तीनों पापोंसें तारती है ॥ ५७ ॥ बालपनमें कुमारअवस्थामें यौवनअवस्थामें वृद्धा अवस्थामें जन्मांतरमें जो पाप किया हुवा है ॥ ५८ ॥ जो रात्रिमें प्रातःकाल मध्याह्न सायंकालमें किया है जो संध्यासमयमें किया है. शरीर, मन, वाणीसे किया है ॥ ५९ ॥ सो दूधसहित सर्व सामग्रीसहि-

ततोंऽतधेनुर्दातव्यारुद्रधेनुंप्रदापयेत् ॥ ऋणधेनुंततोदत्वामोक्षधेनुंप्रदापयेत् ॥ ५६ ॥ दद्याद्वैतरणींधेनुंविशेषविधि
नाखग ॥ तारयंतिनरंगावस्त्रिविधाच्चैवपातकात् ॥ ५७ ॥ बालत्वेयच्चकौमारेयत्पापंयौवनेकृतम् ॥ वयःपरिणतौ
यच्चयच्चजन्मांतरेष्वपि ॥ ५८ ॥ यन्निशायांतथाप्रातर्यन्मध्याह्नापराह्णयोः ॥ संध्ययोर्यत्कृतंपापंकायेनमनसागिरा
॥ ५९ ॥ दत्वाधेनुंसकृद्वापिकपिलांक्षीरसंयुताम् ॥ सोपस्करांसवत्सांचतपोवृत्तसमन्विते ॥ ६० ॥ ब्राह्मणेवेदविदु
षिसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ उद्धरेदंतकालंसादातारंपापसंचयात् ॥ ६१ ॥ एकागौःस्वस्थचित्तस्यह्यातुरस्यचगोशतम् ॥
सहस्रंम्रियमाणस्यदत्तंचित्तविवर्जितम् ॥ ६२ ॥ ॥ ॥ ॥

त बछरासहित तपोव्रतसंयुक्त ब्राह्मणको एक कपिला गौ देनेसे सर्व पापका नाश होता है ॥ ६० ॥ ऐसे वेदवेत्ता ब्राह्मणके दान देनेसे संपूर्ण पापोंसे छूटता है. अंतकालमें दी भई गौ देनेवालेका पापोंके संचयसे उद्धार करती है ॥ ६१ ॥ सावधानके समीप एक गौ और मरनेवालेके समीप सौ गौ उसी क्षणमें मररह्यो उसके समीप हजार गौ मानकी इच्छासे रहित दी भई ॥ ६२ ॥ ॥

मरनेबाद फेर लक्ष गो दान इन्होंको तुल्य पुण्य है. तीर्थपर सुपात्रको दिया भया एकदानभी लक्षगुण फल देता है ॥ ६३ ॥ सुपात्रमें दिया भया जो दान सो लक्षगुण होता है देनेंवालेको अनंत फल होता है सुपात्रके प्रतिग्रह नहीं लगता है ॥ ६४ ॥ वेदपठन तथा होमसंयुक्त स्वपाकी अर्थात् अपने हाथसे भोजन बनाके, खानेवाला ब्राह्मण रत्नोंसे पूर्ण पृथ्वी दान लेकरभी प्रतिग्रहसे लिप्त नहीं होता है ॥ ६५ ॥ जैसे विष और शीत नाशकरनेवाले मंत्र और अग्निको क्या दोष लागता है और अपात्रमें दी गौ देनेवालेको नरकमें ले जाती है ॥ ६६ ॥ और

मृतस्यैतत्पुनर्लक्षंविधिपूतंचतत्समम् ॥ तीर्थपात्रसमापेतंदानमेकंचलक्षधा ॥ ६३ ॥ पात्रेदत्तंचयद्दानंतल्लक्षगुणितंभवेत् ॥ दातुः फलमनंतंस्यान्नपात्रस्यप्रतिग्रहः ॥ ६४ ॥ स्वाध्यायहोमसंयुक्तःपरपाकविवर्जितः ॥ रत्नपूर्णामपिमहींप्रतिगृह्यनलिप्यते ॥ ६५ ॥ विषशीतापहौमंत्रवह्नीकिंदोषभागिनौ ॥ अपात्रेसाचगौर्दत्तादातारंनरकंनयेत् ॥ ६६ ॥ कुलैकशतसंयुक्तंगृहीतारंतुपातयेत् ॥ नापात्रेविदुषादेयाआत्मनःश्रेयइच्छता ॥ ६७ ॥ एकाह्येकस्यदातव्याबहूनांनकदाचन ॥ साविक्रीताविभक्तावादहत्यासप्तमंकुलम् ॥ ६८ ॥ कथितायामयापूर्वंतववैतरणीनदी ॥ तस्याउद्धरणोपायंगोदानंकथयामिते ॥ ६९ ॥ ॥ ॥

ग्रहणवालेके एक सौ एक कुल नरकमें डालती है, आत्माके कल्याणकी इच्छावाले विवेकीको कुपात्रमें नहीं देनी ॥ ६७ ॥ एक गोदान एकको देना बहुतोंको सामलमें कभी नहीं देना. बेंचीभई गौ तथा भाग करीहुई सप्त कुलतक दग्ध करती है ॥६८॥ मैने तुम्हारेको जो वैतरणी पहली कही उसके उतरनेका उपाय गौदान तुमको कहता हूं ॥ ६९ ॥ ॥ ॥

काली वा पीली गौको सुशोभित करना. सोनाके सींग, रूपाके खुर, कांशाके पात्रकी छोटी दोहिनी ॥७०॥ और दो कालेवस्त्र ओढ़ाना, कंठमें घंटा बांधनी. ऐसे करके, पीछे कपासके ऊपर तांबाका पात्र वस्त्रसहित स्थापित करना ॥ ७१ ॥ उसपर सुवर्णके यमराजको लोहेके दंडसहित स्थापित करना, तहां कांशाके पात्रमें घृत डाल, तिसके ऊपर सब स्थापित करना ॥७२॥ ऊखकी नौका बनाकर, रेस्मीसूत्रसे बांधकर, एक ख-

कृष्णांवापाटलांवापिधेनुंकुर्यादलंकृताम् ॥ स्वर्णशृंगींरौप्यखुरींकांस्यपात्रोपदोहिनीम् ॥ ७० ॥ कृष्णवस्त्रयुगच्छन्नांकंठघंटासमन्विताम् ॥ कार्पासोपरिसंस्थाप्यताम्रपात्रंसचेलकम् ॥ ७१ ॥ यमंहैमंन्यसेत्तत्रलोहदंडसमन्वितम् ॥ कांस्यपात्रेघृतंकृत्वासर्वंतस्योपरिन्यसेत् ॥ ७२ ॥ नावमिक्षुमयींकृत्वापट्टसूत्रेणवेष्टयेत् ॥ गर्तंविधायसजलंकृत्वातस्मिन्क्षिपेत्तरिम् ॥ ७३ ॥ तस्योपरिस्थितांकृत्वासूर्यदेहसमुद्भवाम् ॥ धेनुंसंकल्पयेत्तत्रयथाशास्त्रविधानतः ॥ ७४ ॥ सालंकाराणिवस्त्राणिब्राह्मणायप्रकल्पयेत् ॥ पूजांकुर्याद्विधानेनगंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ ७५ ॥ पुच्छंसंगृह्यधेनोस्तुनावमाश्रित्यपादतः ॥ पुरस्कृत्यततोविप्रमिमंमंत्रमुदीरयेत् ॥ ७६ ॥ ॥ ॥ ॥

ड्डा खोद, उसमें जलभर फेर नौका तिरानी ॥ ७३ ॥ उसपर सूर्यधेनु स्थितकर, जैसी शास्त्रविधिहै तैसे संकल्प करना ॥ ७४ ॥ आभूषणोंसहित वस्त्र ब्राह्मणको देना, गंध पुष्प अक्षतादिकोंसे विधिपूर्वक पूजा करनी ॥७५॥ गौकी पुच्छ ग्रहण कर, पगसे नावस्पर्श कर, ब्राह्मणके सन्मुख ले, ए मंत्र बोलना ॥ ७६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

संसारसमुद्रमें डूबरहे, शोक तापरूपी तरंगोंसे दुःखी होरहे ऐसे हमारी हे जगन्नाथ! शरण आयेपर दया करनेवाले आप रक्षा करो ॥७७॥ हे भगवद्रूप ब्राह्मण! हे पृथ्वीके देव! दक्षिणासहित वैतरणी गौ तुमको दिया है. तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥७८॥ यमके महाघोर मार्गमें वह सौ योजन विस्तृत वैतरणी नदी है उसको तिनेके वास्ते ए गौ देता हूं तुम वैतरणीरूप हो इसीसे नमस्कार हों ॥७९॥ हे गौ! मेरेको यमद्वार महापथमें तिरनेके लिये दृष्टिकर. हे देवि! वैतरणीरूप तुमको नमस्कार है ॥ ८० ॥ वें गौ! हमारे अगाड़ी होवें, गउवें हमारे पीछे होवें

भवसागरमग्नानांशोकतापोर्मिदुःखिनाम् ॥ त्रातात्वंहिजगन्नाथःशरणागतवत्सलः ॥ ७७ ॥ विष्णुरूपद्विजश्रेष्ठमामुद्धरमहीसुर ॥
सदक्षिणामयादत्तातुभ्यंवैतरणीनमः ॥७८॥ यममार्गेमहाघोरेतांनदींशतयोजनाम् ॥ तर्तुकामोददाम्येतांतुभ्यंवैतरणींनमः ॥७९॥
धेनुकेमांप्रतीक्षस्वयमद्वारमहापथे ॥ उत्तारणार्थंदेवेशिवैतरण्यैनमोऽस्तुते ॥ ८० ॥ गावोमेअग्रतःसंतुगावोमेसंतुपृष्ठतः ॥ गावो
मेहृदयेसंतुगवांमध्येवसाम्यहम् ॥ ८१ ॥ यालक्ष्मीःसर्वभूतानांयाचदेवेप्रतिष्ठिता ॥ धेनुरूपेणसादेवीममपापंव्यपोहतु ॥ ८२ ॥
इतिमंत्रैश्चसंप्रार्थ्यसांजलिर्धेनुकायमम् ॥ सर्वंप्रदक्षिणीकृत्यब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ ८३ ॥ ॥ ॥

गउवें हमारे हृदयमें रहें, गावोंके मध्य हमारा वास होवै ॥ ८१ ॥ जो लक्ष्मी संपूर्ण भूतप्राणीमें है, जो लक्ष्मी मनुष्यराजा और देवराजामें है वह देवी गौ रूपसे हमारे पाप नाश करे ॥ ८२ ॥ ऐसे मंत्रोंसे हाथ जोड़, गौको तथा यमराजको संपूर्णको परिक्रमा कर, ब्राह्मणको देदेना ॥ ८३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हे गरुड़! ऐसे विधिसे जो वैतरणी गौ देता है वो धर्ममार्गसे धर्मराजकी सभाके मध्य जाता है॥ ८४ ॥ सावधान शरीर रहै तबतक वैतरणीके व्रतको आचरण करना, उस नदीके तिरनेकी कामनावाले विवेकीने गौदान देना ॥ ८५ ॥ हे गरुड़! गोदान देनेसे वह नदी महामार्गमें नहीं आती है. तिस्से पुण्यकालोंमें सदा गौदान देना ॥ ८६ ॥ गंगादि सबतीर्थोंमें, ब्राह्मणके गृहमें, चंद्रमा सूर्यके ग्रहणमें, संक्रांतिमें,

एवंदद्याद्विधानेनयोगांवैतरणींखग ॥ सयातिधर्ममार्गेणधर्मराजसभांतरे ॥८४॥ स्वस्थावस्थशरीरेतुवैतरण्यांव्रतंचरेत् ॥ देयाचविदुषाधेनुस्तांनदींतर्तुमिच्छता ॥८५॥ सानायातिमहामार्गेगोदानेननदीखग ॥ तस्मादवश्यंदातव्यंपुण्यकालेषुसर्वदा ॥८६॥ गंगादिसर्वतीर्थेषुब्राह्मणावसथेषुच ॥ चंद्रसूर्योपरागेषुसंक्रांतौदर्शवासरे ॥ ८७ ॥ अयनेविषुवेचैवव्यतीपातेयुगादिषु ॥ अन्येषुपुण्यकालेषुदद्याद्गोदानमुत्तमम् ॥८८॥ यदैवजायतेश्रद्धापात्रंसंप्राप्यतेयदा ॥ सएवपुण्यकालःस्याद्यतःसंपत्तिरस्थिरा ॥८९॥ अस्थिराणिशरीराणिविभवोनैवशाश्वतः ॥ नित्यंसन्निहितोमृत्युःकर्तव्योधर्मसंचयः ॥ ९० ॥ ॥

अमावस्याके दिन, ॥८७॥ मकर, कर्क, मेष, तुलाकी, संक्रांतिके दिन, व्यतीपात, युगादिकोंमें अर्थात् अक्षयतृतीयादिकोंमें और भी पुण्यकालोंमें गौदान देना ॥ ८८ ॥ जब श्रद्धा होजाय, जब पात्र प्राप्ति होजाय वही पुण्यकाल है. क्योंकि संपदा चंचल है ॥ ८९ ॥ शरीर और वैभव सदा रहता नहीं मृत्यु नित्य नजीक रहता है इसीसे धर्मसंचय करना ॥ ९० ॥ ॥ ॥

अपने वैभवके अनुसार तहां दान दिया अनंत है और दान अपने आत्माके कल्याणकी इच्छावालेने विवेकी ब्राह्मणको देना ॥ ९१ ॥ थो-
ड़े धनसेभी अपनेंवास्ते अपने हाथसे किया भया दान अक्षय होता है. उसी कालमें प्राप्त होता है ॥ ९२ ॥ ग्रहण किया है परलोक-
भोग्य जिसने ऐसा जीव महामार्गमें सुखसे जाता है नहींतो जीव क्लेश पाता है ॥९३॥ जो जो दान पृथ्वीपर मनुष्य देते हैं वै वै दान यममा-

आत्मवित्तानुसारेणतत्रदानमनंतकम् ॥ देयंविप्रायविदुषेस्वात्मनःश्रेयइच्छता ॥ ९१ ॥ अल्पेनापिहिवित्तेनस्वहस्तेनात्म
नेकृतम् ॥ तदक्षय्यंभवेद्दानंतत्कालंचोपतिष्ठति ॥ ९२ ॥ गृहीतदानपाथेयःसुखंयातिमहाध्वनि ॥ अन्यथाक्लिश्यतेजंतुः
पाथेयरहितःपथि ॥ ९३ ॥ यानियानिचदानानिदत्तानिभुविमानवैः ॥ यमलोकपथेतानिह्युपतिष्ठंतिचाग्रतः ॥ ९४ ॥
महापुण्यप्रभावेणमानुषंजन्मलभ्यते ॥ यस्तत्प्राप्यचरेद्धर्मंसयातिपरमांगतिं ॥ ९५ ॥ अविज्ञायनरोधर्मंदुःखमायातियाति
च ॥ मनुष्यजन्मसाफल्यंकेवलंधर्मसेवनम् ॥ ९६ ॥ धनपुत्रकलत्रादिशरीरमपिबांधवाः ॥ अनित्यंसर्वमेवेदंतस्मा ॥
द्धर्मंसमाचरेत् ॥ ९७ ॥ ॥

र्गमें अगाड़ी स्थित रहते हैं ॥ ९४ ॥ महापुण्यके प्रभावसे मनुष्यजन्म प्राप्त होता है जो उसको पाकर, धर्मआचरण करता है सो परमग-
तिको प्राप्त होता है ॥ ९५ ॥ मनुष्य धर्म नहीं जानकर, दुःख पाता है, जन्ममरण प्राप्त होता है, मनुष्यजन्मकी सफलता तौ केवल धर्म-
सेवन ही है ॥ ९६ ॥ धन, पुत्र, स्त्री, शरीर, बांधवादि ए सब अनित्य हैं इसीसे धर्मआचरण करना ॥ ९७ ॥

जहांतक मनुष्य जीता है वहांतक बंधु है, पिता है. मरनेका अंतर जान, क्षणभरमें स्नेह निवृत्त होता है ॥ ९८ ॥ आत्माही आत्माको बंधु है ऐसा वारंवार जानना. जीवते भी ऐसा है सो मरेबाद कौन देगा ॥ ९९ ॥ ऐसे जानता हुवा अपने हाथसे संपूर्ण देना जीवनातो अनित्य है पीछे कौन देगा ॥ १०० ॥ मरे शरीरको काष्ठमृत्तिकाजैसे पृथ्वीपर डालकर, विमुख हुवे बांधव तौ आय-जाय हैं धर्म उसके पीछे जाता है ॥ १ ॥ संपदातौ गृहसेही निवृत्त होती है, स्मशानभूमिसे सर्वबांधव निवृत्त होते हैं. शुभ वा अशुभ

तावद्बंधुःपितातावद्यावज्जीवतिमानवः ॥ मृतानामंतरंज्ञात्वाक्षणात्स्नेहोनिवर्तते ॥ ९८ ॥ आत्मैवह्यात्मनोबंधुरितिविद्यान्मुहुर्मुहुः ॥ जीवन्नपीतिसंचिंत्यमृतानांकःप्रदास्यति ॥ ९९ ॥ एवंजानन्निदंसर्वंस्वहस्तेनैवदीयताम् ॥ अनित्यंजीवितंयस्मात्पश्चात्कोऽपिनदास्यति ॥ १०० ॥ मृतंशरीरमुत्सृज्यकाष्ठलोष्टसमंक्षितौ ॥ विमुखाबांधवायांतिधर्मस्तमनुगच्छति ॥ १ ॥ गृहादर्थानिवर्तंते श्मशानात्सर्वबांधवाः ॥ शुभाशुभंकृतंकर्मगच्छंतमनुगच्छति ॥२॥ शरीरंवह्निनादग्धंकृतंकर्मसहास्थितम् ॥ पुण्यंवायदिवापापंभुंक्तेसर्वत्रमानवः ॥३॥ नकोऽपिकस्यचिद्बंधुःसंसारेदुःखसागरे ॥ जायतेकर्मसंबंधाद्यातिकर्मक्षयेपुनः ॥ ४ ॥ ॥

किये हुये कर्म जाते हुयेके पीछे जाते हैं ॥ २ ॥ जिस शरीरसे कर्म करता है वो शरीरतौ अग्निसे जल जाता है. किया कर्म संग रहता है पुण्य वा पाप कियाहुवा मनुष्य सब जगा भोगता है ॥ ३ ॥ दुःखके सागर संसारमें कोईका कोई बंधु नहीं है. कर्मोंके संबंधसे आते हैं कर्म क्षीण होनेसे पीछे जाते हैं ॥ ४ ॥ ॥ ॥

माता, पिता, पुत्र, भाई, बंधु, स्त्री इन्होको संगम जैसे जीवोंको चौरस्ताकी प्रपापर होता है तैसे होता है. जैसे नदीमें तृणसमूह चल हैं तैसे है ॥ ५ ॥ किसका पुत्र है और पोता है, किसकी स्त्री है और धन है. संसारमें कोई किसीको नहीं तिसीसे आपही देना ॥ ६ ॥ जहांतक अपने स्वाधीन धन रहता है तहांतक ब्राह्मणको देना. क्योंकि जब धन पराधीन हुवा तब कुछ बोल नहीं सक्ता है ॥ ७ ॥ पूर्वजन्ममें किये दानसे यहां बहुतसा धन प्राप्त हुवा है ऐसा विचार कर, धर्मके लिये देना ॥ ८ ॥ धर्मसे अर्थ होता है, धर्मसे काम होता

मातृपितृसुतभ्रातृबंधुदारादिसंगमः ॥ प्रपायामिवजंतूनांनद्यांकाष्ठौघवच्चलः ॥ ५ ॥ कस्यपुत्राश्चपौत्राश्चकस्यभार्याधनंचवा ॥ संसारेनास्तिकःकस्यस्वयंतस्मात्प्रदीयताम् ॥ ६ ॥ आत्मायत्तंधनंयावत्तावद्विप्रेसमर्पयेत् ॥ पराधीनेधनेजातेनकिंचिद्वक्तुमुत्सहेत् ॥ ७ ॥ पूर्वजन्मकृताद्दानादत्रलब्धंधनंबहु ॥ तस्मादेवंपरिज्ञायधर्मार्थेदीयतांधनम् ॥ ८ ॥ धर्मात्संजायतेऽर्थश्चधर्मात्कामोऽभिजायते ॥ धर्मएवापवर्गायतस्माद्धर्मंसमाचरेत् ॥ ९ ॥ श्रद्धयाधार्यतेधर्मोबहुभिर्नार्थराशिभिः ॥ निष्किंचनाहिमुनयःश्रद्धावंतोदिवंगताः ॥ १० ॥ पत्रंपुष्पंफलंतोयंयोमेभक्त्याप्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रियमात्मनः ॥ ११ ॥ ॥

है. धर्मसे मोक्ष होता है. तिसीसे धर्मआचरण करना ॥ ९ ॥ जैसे श्रद्धासे धर्मधारण होता है तैसे बहोत धनके समूहसे नहीं होता है. क्योंकि निष्किंचन मुनि श्रद्धासे स्वर्गमें गये हैं ॥ १० ॥ पत्र, पुष्प, फल, जल जो मेरेलिये भक्तिसे अर्पण करै है वे मैं भक्तिसे अर्पण कियेहुये प्रसन्नतासे भक्षण करता हूं ॥ ११ ॥ ॥ ॥

तिसीसे अवश्य विधिसे दान देना. थोड़ा अथवा बहुत परंतु गिनती नहीं करनी ॥ १२ ॥ वो धर्मात्मा पुत्र देवतोंसेभी पूजित होता है जो अंतसमयमें पृथ्वीपर स्थितहुवे पिताको दान देता है ॥१३॥ पिताके निमित्त पुत्र जो धन सुपात्रमें देता है उससे पुत्रका पोता प्रपोतावोंसहित आत्मा पवित्र होता है ॥१४॥ पिताको दिया पुण्य सौगुना होता है, माताको दिया हजारगुना होता है, बहिनीका दिया दान दश हजार गुना होता है,

तस्मादवश्यंदातव्यंतदादानंविधानतः ॥ अल्पंवाबहुवेतीमांगणनांनैवकारयेत् ॥ १२ ॥ धर्मात्माचसपुत्रोवैदैवतैरपिपूज्यते दापयेद्यस्तुदानानिपितरंह्यातुरंभुवि ॥ १३ ॥ पित्रोर्निमित्तंयद्वित्तंपुत्रैःपात्रेसमर्पितम् ॥ आत्मापिपावितस्तेनपुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः ॥ १४ ॥ पितुःशतगुणंपुण्यंसहस्रंमातुरेवच ॥ भगिनीदशसाहस्रंसोदरेदत्तमक्षयम् ॥ १५ ॥ नचैवोपद्रवादातुर्नवानरकयातनाः ॥ मृत्युकालेनचभयंयमदूतसमुद्भवम् ॥ १६ ॥ यदिलोभान्नयच्छंतिकालेह्यातुरसंज्ञके ॥ मृताःशोचंतितिते सर्वेकदर्याःपापिनःखग ॥ १७ ॥ पुत्राःपौत्राःसहभ्रात्रासगोत्राःसुहृदस्तुये ॥ ददंतिनातुरेदानंब्रह्मघ्नास्तेनसंशयः ॥११८॥
इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे ज्ञा० आतुरदाननिरूपणं नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥

सोदरका दिया अक्षय होता है ॥१५॥ देनेवालेके नहींतो अंतमें उपद्रव होते हैं, नहीं नरक दुःख होता है, मृत्युसमयमें यमदूतोंका भय नहीं होता है ॥१६॥ जो लोभसे अंतसमयमें नहीं देते हैं. हे गरुड़ ! वे कदर्य पापी मरे पीछे बहोत शोच करते हैं ॥१७॥ पुत्र, पोता, भाई गोत्रका मित्र जो अंतसमयमें दान नहीं देते हैं वै ब्रह्महत्यारे हैं उसमें संशय नहीं ॥ ११८ ॥ इ० ग० सा० ज्ञा० टी० आतुरदाननिरूपणो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अब गरुड़जी कहते हैं— हे प्रभो! आपने आतुर समयको दानतौ यथार्थ कह्या अब मररहे पुरुषोंके जो कृत्य हैं वे कहो ॥ १ ॥ श्रीभगवान कहते हैं— हे गरुड़ सुनो. देहत्यागकी विधि कहताहूं जिस विधिसे मरेभये मनुष्य श्रेष्ठगतिको प्राप्त होतेहैं ॥ २ ॥ कर्मयोगसे जड़ जीव अपना शरीर यहां त्यागता है तब तुलसीके समीप गोबरसे मंडल करना ॥ ३ ॥ वा तिल बिथराके, दर्भ स्थापित करना, उसपर सुंदर आ-

गरुडउवाच ॥ कथितंभवतासम्यग्दानमातुरकालिकम् ॥ म्रियमाणस्ययत्कृत्यंतदिदानींवदप्रभो ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामिदेहत्यागस्यतद्विधिम् ॥ मृतायेनविधानेनसद्गतिंयांतिमानवाः ॥ २ ॥ कर्मयोगाद्यदादेवीमुंचत्यत्रनिजंवपुः ॥ तुलसीसन्निधौकुर्यान्मंडलंगोमयेनतु ॥ ३ ॥ तिलांश्चैवविकीर्याथदर्भांश्चैवविनिःक्षिपेत् ॥ स्थापयेदासनेशुभ्रेशालग्रामशिलांतदा ॥ ४ ॥ शालग्रामशिलायत्रपापदोषभयापहा ॥ तत्सन्निधानमरणान्मुक्तिर्जंतोःसुनिश्चिता ॥ ५ ॥ तुलसीविटपच्छायायत्रास्तिभवतापहा ॥ तत्रैवमरणान्मुक्तिःसर्वदादानदुर्लभा ॥ ६ ॥ तुलसीविटपस्थानंगृहेयस्यावतिष्ठते ॥ तद्गृहंतीर्थरूपंहिनयांतियमकिंकराः ॥ ७ ॥ ॥ ॥

सन बिछाकर, शालिग्राम भगवानको स्थापित करना ॥ ४ ॥ जहां पाप दोष भयका नाशकरनेवाली शालिग्रामकी शिला होय उसके नजीक मरनेसे जीवकी मुक्ति निश्चय होतीहै ॥ ५ ॥ तुलसीके वृक्षकी छाया जिसके घरमें होय उसके नजीक मरनेसे दानसे कभी नहीं होनेवाली मुक्ति होतीहै ॥ ६ ॥ तुलसीके विटपको स्थान जिसके घरमें स्थित होय वो घर तीर्थरूपहै उसमें यमके दूत नहीं आते हैं ॥ ७ ॥ ॥

तुलसीकी मंजरीसहित जो प्राणोंको त्यागैहै वो शैकड़ों पापोंसे संयुक्त होय तौभी यमराज उसको देखनेको समर्थ नहीहैं ॥ ८ ॥ तुलसीका दल मुखमें धर, तिल दर्भके आसनपर जो मरता है तौ पुत्रहीन भी वो पुरुष विष्णुपुरमें जाताहै ॥ ९ ॥ तीनप्रकारके पवित्र तिल, दर्भ, तुलसी ए अंतमें दुर्गतिको जाते हुए पुरुषको निवारण करते हैं ॥ १० ॥ मेरे पसीनासे प्रगट हुये तिल हैं इसीसे तिल पवित्र हैं. असुर,

तुलसीमंजरीयुक्तोयस्तुप्राणान्विमुंचति ॥ यमस्तंनेक्षितुंशक्तोयुक्तंपापशतैरपि ॥ ८ ॥ तस्यादलंमुखेकृत्वातिलदर्भास नेमृतः ॥ नरोविष्णुपुरंयातिपुत्रहीनोप्यसंशयः ॥ ९ ॥ तिलाःपवित्रास्त्रिविधादर्भाश्चतुलसीरपि ॥ नरंनिवारयंत्येते दुर्गतिंयांतमातुरम् ॥ १० ॥ ममस्वेदसमुद्भूतायतस्तेपावनास्तिलाः ॥ असुरादानवादैत्याविद्रवंतितिलैस्ततः ॥ ११ ॥ दर्भाविभूतिर्मेताक्ष्यममरोमसमुद्भवाः ॥ अतस्तत्स्पर्शनादेवस्वर्गंगच्छंतिमानवाः ॥ १२ ॥ कुशमूलेस्थितोब्रह्माकुशम ध्येजनार्दनः ॥ कुशाग्रेशंकरोदेवस्त्रयोदेवाःकुशेस्थिताः ॥ १३ ॥ अतःकुशावह्निमंत्रतुलसीविप्रधेनवः ॥ नैतेनिर्माल्य तांयांतिक्रियमाणाःपुनःपुनः ॥ १४ ॥ ॥ ॥

दानव, दैत्य ए तिलोंसे भगतेहैं ॥ ११ ॥ हे गरुड़ ! दर्भ हमारी विभूति हैं हमारे रोमोंसे प्रगट हुएहैं इसीसे दर्भोंके स्पर्शसे मनुष्य स्वर्गमें जातेहैं ॥ १२ ॥ दर्भोंके मूलमें ब्रह्मा रहतेहैं, दर्भोंके मध्यमें भगवान रहतेहैं, दर्भोंके अगाड़ी महादेव रहतेहैं. ऐसे तीनों देवता कुशोंमें स्थित हैं ॥ १३ ॥ इसीसे दर्भ, अग्नि, मंत्र, तुलसी, ब्राह्मण, गौ ए निर्माल्य अर्थात् अयोग्यताको नहीं प्राप्त होते हैं बार बार करे भयेभी ॥१४॥

दर्भतो पिंडोंपर निर्माल्य होतेहैं, ब्राह्मण प्रेतभोजनमें निर्माल्य अर्थात् अयोग्य होतेहैं, मंत्र, गौ, तुलसी ए नीचके घरमें अयोग्य होतेहैं, चितामें अग्नि अयोग्य होतेहैं ॥ १५ ॥ गोबरसे लीपीहुई दर्भबिछीहुई पृथ्वीपर आतुरसमय करना अंतरिक्षमें नहीं ॥ १६ ॥ ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, सब देवता, अग्नि ए मंडल अर्थात लीपी हुई पृथ्वीपर स्थित रहते हैं तिसीसे लीपी पृथ्वी करनी ॥ १७ ॥ जहां आगल लेप नहीं हुवा वहां संपूर्ण ऐसेही पवित्र है. जहां पहले लीपीगई वहां फेर लेपसे ही पवित्र होतीहै ॥ १८ ॥ राक्षस, पिशाच, भूत, प्रेत, यमके दूत ए

दर्भाः पिंडेषुनिर्माल्याब्राह्मणाःप्रेतभोजने ॥ मंत्रागौस्तुलसीनीचेचितायाचहुताशनः ॥ १५ ॥ गोमयेनोपलिप्तेतुदर्भास्तरणसंस्कृते ॥ भूतलेह्यातुरंकुर्यादंतरिक्षंविवर्जयेत् ॥ १६ ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चसर्वेदेवाहुताशनः ॥ मंडलोपरितिष्ठंतितस्मात्कुर्वीतमंडलम् ॥ १७ ॥ सर्वत्रवसुधापूतालेपोयत्रनविद्यते ॥ यत्रलेपःकृतस्तत्रपुनर्लेपेनशुध्यति ॥ १८ ॥ राक्षसाश्चपिशाचाश्चभूताःप्रेतायमानुगाः ॥ अलिप्तदेशेखट्वायामंतरिक्षेविशंतिच ॥ १९ ॥ अतोऽग्निहोत्रंश्राद्धंचब्रह्मभोज्यंसुरार्चनम् ॥ मंडलेनविनाभूम्यामातुरंनैवकारयेत् ॥ २० ॥ लिप्तभूम्यामतःकृत्वास्वर्णरत्नंमुखेक्षिपेत् ॥ विष्णोःपादोदकंदद्याच्छालग्रामस्वरूपिणः ॥ २१ ॥ ॥

बिगर लीपे स्थानमें और खाट अंतरिक्षमें प्रवेश होते हैं ॥ १९ ॥ इसीसे अग्निहोत्र श्राद्ध, ब्राह्मणभोजन, देवतोंकी पूजा ए और मरनेवालाको मंडल विना पृथ्वीपर नहीं करना ॥ २० ॥ इसीसे लीपीभई पृथ्वीपर करके, सुवर्ण और रत्न मुखमें देना. शालिग्रामस्वरूपी विष्णुको चरणामृत देना ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शालिग्रामशिलाका जल जो बिंदुमात्र पीताहै वो सब पापोंसे छूटके, वैकुंठस्थानमें जाताहै ॥ २२ ॥ पीछे महापापोंके नाशकरनेवाला गं-
गाजल देना वो गंगाजल पीनेसे संपूर्ण तीर्थोंमें स्नान दान करनेका पुण्य होताहै ॥ २३ ॥ जो शरीर शुद्ध करनेवाला हजार चांद्रायण व्रत
करतेहैं और जो अंतमें गंगाजल पीतेहैं वे दोनो बराबर शुद्ध होतेहैं ॥२४॥ जैसे हे गरुड़! अग्नि पाय, रुईकी राशि नाश होतीहै तैसे गंगाजल

शालग्रामशिलातोयंयःपिबेद्बिंदुमात्रकम् ॥ ससर्वपापनिर्मुक्तोवैकुंठभुवनंव्रजेत् ॥ २२ ॥ ततोगंगाजलंदद्यान्महापातक
नाशनम् ॥ सर्वतीर्थकृतःस्नानदानपुण्यफलप्रदम् ॥ २३ ॥ चांद्रायणंचरेद्यस्तुसहस्रंकायशोधनम् ॥ पिबेद्यश्चैवगंगांभःस
मौस्यातामुभावपि ॥ २४ ॥ अग्निंप्राप्ययथाताक्ष्येतूलराशिर्विनश्यति ॥ तथागंगांबुपानेनपातकंभस्मसाद्भवेत् ॥ २५ ॥
यस्तुसूर्यांशुसंतप्तंगांगंयःसलिलंपिबेत् ॥ ससर्वयोनिनिर्मुक्तःप्रयातिसदनंहरेः ॥ २६ ॥ नद्योजलावगाहेनपावयंतीतरा
न्नरान् ॥ दर्शनात्स्पर्शनात्पानात्तथागंगेतिकीर्तनात् ॥ २७ ॥ पुनात्यपुण्यान्पुरुषान्शतशोऽथसहस्रशः ॥ गंगातस्मा
त्पिबेत्तस्याजलंसंसारतारकम् ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥

पीनेसे पाप भस्म होतेहैं ॥ २५ ॥ जो सूर्यके किरणसे तपाहुवा गंगाजल पीताहै वो संपूर्ण योनियोंसे छूट, हरिके स्थानमें जाताहैं ॥ २६ ॥
नदियां जलमें स्नान करनेसे पवित्र करतीहैं गंगातो देखनेसे, स्पर्श करनेसे, पीनेसे, गंगा ऐसे नाम लेनेसे पवित्र करती है ॥ २७ ॥ श्रीगंगा शै-
कड़ों हजारों पापीपुरुषोंको पवित्र करतीहै तिसीसे संसारतिरानेवाला गंगाजल पीना ॥ २८ ॥ ॥ ॥

गंगा गंगा ऐसे जो प्राण कंठमें गयेभी बोलताहै वो मरा हुवा विष्णुरमें जाताहै फेर पृथ्वीपर नहीं जन्मताहै ॥ २९ ॥ प्राण निकलते समय जो पुरुष श्रद्धासे मनसेभी गंगाको स्मरण करताहै वो परमगतिको प्राप्त होताहै ॥३०॥ इसीसे गंगाको ध्यान करना, नमस्कार करना, स्मरण करना वो जल पीना. पीछे मोक्ष देनेवाला कुछ भागवत सुनना ॥३१॥ श्लोक अथवा आधा श्लोक पादभी जो अंतमें भागवतको पढ़ै सुनै उसको ब्रह्मलोकसे कभी पीछा आना नहीं होताहै ॥३२॥ वेद उपनिषदका पाठ करनेसे, शिव विष्णुकी स्तुति करनेसे, ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इह्नोंको

गंगागंगेतियोब्रूयात्प्राणैःकंठगतैरपि ॥ मृतोविष्णुपुरंयातिनपुनर्जायतेभुवि ॥ २९ ॥ उत्क्रामद्भिश्चयःप्राणैःपुरुषःश्रद्धयान्वितः ॥
चिंतयेन्मनसागंगांसोपियातिपरांगतिम् ॥ ३० ॥ अतोध्यायेन्नमेद्गंगांसंस्मरेत्तज्जलंपिबेत् ॥ ततोभागवतंकिंचिच्छृणुयान्मोक्षदा
यकम् ॥ ३१ ॥ श्लोकंश्लोकार्धपादंवायोऽंतेभागवतंपठेत् ॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन ॥३२॥ वेदोपनिषदांप[illegible]च्छिव
विष्णुस्तवादपि ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशांमरणंमुक्तिदायकम् ॥ ३३ ॥ प्राणप्रयाणसमयेकुर्यादनशनंखग ॥ दद्यादातुरसंन्यास[illegible]
क्तस्यद्विजन्मनः ॥ ३४ ॥ संन्यस्तमितियोब्रूयात्प्राणैःकंठगतैरपि ॥ मृतोविष्णुपुरंयातिनपुनर्जायतेभुवि ॥ ३५ ॥ ॥

मरना मुक्ति देनेवालाहै ॥ ३३ ॥ प्राण जानेके समय हे गरुड़ ! अनशन करना अर्थात् जल अन्न त्यागना. पीछे विरक्त ब्राह्मण क्षत्री वैश्यको आतुरसंन्यास देना ॥ ३४ ॥ आतुरसंन्यास ऐसा जो प्राण कंठमें आयाभी बोलताहै वो मराहुवा विष्णुपुरमें जाता है फेर पृथ्वीपर नहीं जन्मता है ॥ ३५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हे गरुड़ ! ऐसे हुवाहै विधान जिसको ऐसे धर्मात्माके प्राण ऊर्ध्वछिद्रोंसे सुखसे निकलतेहैं ॥३६॥ मुख, नेत्र, नासिका, कर्ण ए सात ऊपरके द्वार हैं इन्होंसे सुकृतियोंके प्राण जातेहैं. योगिराजोंके तलुवासे प्राण जाताहै ॥३७॥ अपानवायुसे मिला भया प्राणवायु जब अपानसे जुदा होता है तब प्राणवायु. सूक्ष्म होकर, शरीरसे बाहिर निकलताहै ॥ ३८ ॥ प्राणवायु निसरे पीछे शरीर पड़ताहैं जैसे पवनसे उखड़ा निराधार

एवंजातविधानस्यधार्मिकस्यतदाखग ॥ ऊर्ध्वच्छिद्रेणगच्छंतिप्राणास्तस्यसुखेनहि ॥३६॥ मुखंचचक्षुषीनासेकर्णौद्वाराणि सप्तच ॥ एभ्यःसुकृतिनोयांतियोगिनस्ताळुरंध्रतः ॥ ३७ ॥ अपानान्मिलितप्राणोयदाहिभवतःपृथक् ॥ सूक्ष्मीभूत्वातदा वायुर्विनिष्क्रामतिपुत्तलात् ॥ ३८ ॥ शरीरंपततेपश्चान्निर्गतेमरुतीश्वरे ॥ कालाहतंपतत्येवंनिराधारोयथाद्रुमः ॥ ३९ ॥ निर्विचेष्टंशरीरंतुप्राणैर्मुक्तंजुगुप्सितम् ॥ अस्पृश्यंजायतेसद्योदुर्गंधंसर्ववेनिंदितम् ॥ ४० ॥ त्रिधावस्थाशरीरस्यकृमि विड्भस्मरूपतः ॥ किंगर्वःक्रियतेदेहेक्षणविध्वंसिभिर्नरैः ॥ ४१ ॥ पृथिव्यांलीयतेपृथ्वीआपश्चैवतथाप्सुच ॥ तेजस्ते जसिलीयेतसमीरस्तुसमीरणे ॥ ४२ ॥ ॥ ॥

वृक्ष पड़ै तैसे ॥ ३९ ॥ प्राणोंसे रहित, चेष्टा विना निंदित शरीर होताहै. दुर्गंधसे सबको निंदित अस्पृश्य होताहै ॥ ४० ॥ शरीरकी कीड़ा, विष्ठा, भस्म ऐसे तीन अवस्था अंतमें होतीहैं सो ऐसे क्षणमें नाशहोनेवाले शरीरसे मनुष्य क्या गर्व करतेहैं ॥४१॥ ऐसे जब पृथ्वी पृथ्वीमें लीन होतीहै, जलमें जल लीन होताहै, तेजमें तेज लीन होताहै, वायु वायुमें लीन होताहै ॥ ४२ ॥ ॥

आकाशमें आकाश लीन होताहै ऐसे सर्वव्यापी शंकर नित्यमुक्त जगत्साक्षी आत्मा देहमें अजर और अमरहै ॥ ४३ ॥ तहां सर्व इंद्रियोंसे युक्त शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध इन विषयोंसे युक्त कामगारादिकोंसें युक्त कर्मोंके कोशसंयुक्त ॥४४॥ पुण्य वासनासहित ऐसा जीव अपने कर्मोंसे रचेहुए नवीन शरीरमें प्रवेश होय जैसे घर जलगये बाद गृहस्थी दुसरे घरमें प्रवेश होय ॥ ४५ ॥ उसीसमय किंकिणीजालमाली ऐसा विमान लेकर, शोभित चमरसहित देवपार्षद आतेहैं ॥ ४६ ॥ धर्मके तत्वको जाननेवाले, बुद्धिवान्, धर्मात्माके सदा वल्लभ ऐसे देवदूत

आकाशश्वतथाकाशेसर्वव्यापीचशंकरः ॥ नित्यमुक्तोजगत्साक्षीआत्मादेहेष्वजोऽमरः ॥ ४३ ॥ सर्वेंद्रिययुतोजीवःशब्दादिविषयैर्वृतः ॥ कामरागादिभिर्युक्तःकर्मकोशसमन्वितः ॥४४॥ पुण्यवासनयायुक्तोनिर्मितेस्वेनकर्मणा ॥ सप्रविश्यनवेदेहेगृहेदग्धेयथागृही ॥४५॥ तदाविमानमादायकिंकिणीजालमालियत् ॥ आयांतिदेवदूताश्वलसच्चामरशोभिताः ॥४६॥ धर्मतत्त्वविदःप्राज्ञाःसदाधार्मिकवल्लभाः ॥ तदैनंकृतकृत्यंस्वविमानेननयंतिते ॥४७॥ सुदिव्यदेहोविरजांबरस्रक्सुवर्णरत्नाभरणैरुपेतः ॥ दानप्रभावात्समहानुभावःप्राप्नोतिनाकंसुरपूज्यमानः ॥ ४८ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेम्रियमाणकृत्यनिरूपणोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥

इस धर्मात्माको सत्कारसे सवार कराकर, विमानसे स्वर्गमें ले जातेहैं ॥४७॥ सुंदर दिव्य है देह जिनकी, स्वच्छ हैं वस्त्र, आभूषण और माला, सुवर्णसे रत्नोंसे जडित, आभूषणोंसे संयुक्त ऐसे दानके प्रभावसे महान् है प्रभाव धर्मात्मा देवतोंसे पूजाभया स्वर्गमें जाताहै ॥ ४८ ॥ इति श्रीसारोद्धारगरुडपुराणस्य ज्ञानबोधिनीभाषाटीकायां म्रियमाणकृत्यनिरूपणो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥

अब गरुड़जी कहतेहैं हे विभो! सुकृती पुरुषोंके देहको दाहकरनेकी विधि कहो. जो स्त्री कदाचित् सती होय तो उसकी महिमा कहो ॥१॥ अब भगवान कहतेहैं– हे गरुड़! संपूर्ण पारलौकिक क्रिया कहताहूं सो सुनो. जिस क्रियाको करनेसे पुत्र पोता पितृश्वरोंके ऋणसे छूटतेहैं ॥२॥ बहुत दानके देनेसे क्याहै? माता पिताके दाहसे आदिले अंतकृत्य करना तिससे अग्निष्टोमजैसा फल पुत्रको प्राप्त होताहै ॥३॥ तब पुत्र

गरुडउवाच ॥ देहदाहविधानंचवदसुकृतिनांविभो ॥ सतीयदिभवेत्पत्नीतस्याश्चमहिमांवद ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुता
र्क्ष्यप्रवक्ष्यामिसर्वमेवौर्ध्वदेहिकम् ॥ यत्कृत्वापुत्रपौत्राश्चमुच्यंतेपैतृकादृणात् ॥ २ ॥ किंदत्तैर्बहुभिर्दानैःपित्रोरंत्येष्टिमाचरेत् ॥ ते
नाग्निष्टोमसदृशंपुत्रःफलमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥ तदाशोकंपरित्यज्यकारयेन्मुंडनंसुतः ॥ समस्तबांधवैर्युक्तःसर्वपापापनुत्तये ॥ ४ ॥
मातापित्रोर्मृतौयेनकारितंमुंडनंनहि ॥ आत्मजःसकथंज्ञेयःसंसारार्णवतारकः ॥ ५ ॥ अतोमुंडनमावश्यंनखकक्षाविवर्जितम् ॥ त
तःसबांधवःस्नात्वाधौतवस्त्राणिधारयेत् ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥

शोकको त्यागकर, मुंडन करावे. संपूर्ण बांधवोंसहित जिससे पुत्रके सर्वपाप नाश होतेहैं ॥ ४ ॥ माता पिताके मरणमें जो पुत्रने मुंडन नहीं किया उसको संसारसमुद्रके तिरानेवाला पुत्र कैसे जानना ॥ ५ ॥ इसीसे अवश्य मुंडन करना मुंडनमें नख और कांखमें वर्जित करना पीछे बांधवोंसहित स्नानकर, धोयेहुये वस्त्र पहरने ॥ ६ ॥ ॥ ॥

उसी समयके लाये हुवे जलसे उस मुर्दाको स्नान कराना तथा चंदन और पुष्पोंकी मालासे संयुक्त करना अथवा गंगाकी मृत्तिकासे संयुक्त करना ॥ ७ ॥ नवीन वस्त्रसे आच्छादित कर, नाम गोत्र उच्चारकर, अपसव्यसे संकल्प कराय, दक्षिण हाथसे पिंड देना ॥ ८ ॥ मृत्युस्थानमें शव नाम है इसीसे शवनामसे पिंड देना. उस पिंडके देनेसे पृथ्वी और पृथ्वीअधिष्ठात्री देवता प्रसन्न होतीहै ॥ ९ ॥ द्वारपर पांथ-

सद्योजलंसमानीयततस्तंस्नापयेच्छवम् ॥ मंडयेचंदनैःस्रग्भिर्गंगामृत्तिकयाऽथवा ॥ ७ ॥ नवीनवस्त्रैःसंच्छाद्यतदापिंडंसद
क्षिणम् ॥ नामगोत्रंसमुच्चार्यसंकल्पेनापसव्यतः ॥ ८ ॥ मृत्युस्थानेशवोनामतस्यनाम्नाप्रदापयेत् ॥ तेनभूमिर्भवेत्तुष्टातद
धिष्ठातृदेवता ॥ ९ ॥ द्वारदेशेभवेत्पांथस्तस्यनाम्नाप्रदापयेत् ॥ तेननैवोपघातायभूतकोटिषुदुर्गताः ॥ १० ॥ ततःप्रदक्षि
णांकृत्वापूजनीयाःस्नुषादिभिः ॥ स्कंधःपुत्रेणदातव्यस्तदान्यैर्बांधवैःसह ॥ ११ ॥ धृत्वास्कंधेस्वपितरंयःश्मशानायगच्छति ॥
सोऽश्वमेधफलंपुत्रोलभतेचपदेपदे ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥

संज्ञा होतीहै सो उस पांथनामसे दरवाजेपर पिंड देना. उस पिंडसे भूतकोटिमें जो दुर्गतिवाले हैं वे उपघात नहीं करते ॥ १० ॥ पीछे प्रदक्षिणा करके, पुत्र बंधुआदिकोंसे पूजन योग्य है. उसी समयमें और बांधवोंसहित पुत्र स्कंध अर्थात् पिताको कंधापर धरके, लेजावे ॥ ११ ॥ जो पुत्र अपने कंधेपर पिताको धारणकर, स्मशानभूमिमें लेजाताहै वो पुत्र पदपदमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता है ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कंधा, पीठ, गोदी इन्होंमें धारण कर, सदा पितासे लालित होताहै सो उस वक्तही उस ऋणसे छूटता है. जब मरेहुवे अपने पिताको स्कंधसे
ले चलताहै ॥ १३ ॥ पीछे अर्द्धस्मशानमार्गमें पृथ्वीको बहार, जलसे छिड़क, विश्राम करना. स्नानकराय, भूतसंज्ञक उसको भूतनामसे पिंड देना
॥ १४ ॥ पिशाच, राक्षस, यक्ष तथा जो औरभी दिशोंमें स्थित हैं वे सब हवनकरनेलायक शरीरके अयोग्यत्वकारक नहीं होतेहैं ॥ १५ ॥
पीछे स्मशानभूमिमें लेजाय उत्तरमें मुखकर, स्थापित करना. तहां देहदाहकरनेके वास्ते पृथ्वीशोधन करना ॥ १६ ॥ बहार कर, पृथ्वीमें गो-

नीत्वास्कंधेस्वपृष्ठेऽङ्केसदातातेनलालितः ॥ तदैवतदृणान्मुच्येन्मृतंस्वपितरंवहेत् ॥ १३ ॥ ततोऽर्धमार्गेविश्रामंसंमार्ज्याभ्युक्ष्यकार
येत् ॥ संस्नाप्यभूतसंज्ञायतस्मतेनप्रदापयेत् ॥ १४ ॥ पिशाचाराक्षसायक्षायेचान्येदिक्षुसंस्थिताः ॥ तस्यहोतव्यदेहस्यनैवायोग्य
त्वकारकाः ॥ १५ ॥ ततोनीत्वाश्मशानेषुस्थापयेदुत्तरामुखम् ॥ तत्रदेहस्यदाहार्थंस्थलंसंशोधयेद्यथा ॥ १६ ॥ संमार्ज्यभूमिंसंलि
प्योल्लिख्योद्धृत्यचवेदिकाम् ॥ अभ्युक्ष्योपसमाधायवह्नितत्रविधानतः ॥ १७ ॥ पुष्पाक्षतैरथाभ्यर्च्यदेवंक्रव्यादसंज्ञकम् ॥ लोमभ्य
स्त्वनुवाकेनहोमंकुर्याद्यथाविधि ॥ १८ ॥ ॥ ॥ ॥

रेखामध्ये अनामिका और अँगूठासे उद्धारकर, जलसे प्रोक्षणकर, नजीक बैठ, तहां वि-
बरसे वेदी लीपकर, उस वेदीपर दर्भोंसे ऊर्ध्वरेखा कर, "लोमेभ्यः स्वाहा, त्वग्भ्यः स्वाहा, मांसेभ्यः स्वाहा"
धिसे अग्नि स्थापित कर ॥ १७ ॥ क्रव्यादसंज्ञक अग्नि देवताको पुष्प अक्षतोंसे पूजकर,
इत्यादिक अनुवाक्योंसे वेदमंत्रोंसे विधिपूर्वक होम करना ॥ १८ ॥ ॥ ॥ ॥

हे क्रव्याददेव ! तुम भूतोंको धारण करतेहो, जगत्के कारण हो, भूतोंके पालनकरनेवाले हो; इसीसे मरेहुवे इस संसारीको स्वर्गमें प्राप्तकरो ॥ १९ ॥ ऐसे अग्निदेवकी प्रार्थना कर, तहां चिता करनी, चंदन, तुलसी, पलाश, पिप्पल इन वृक्षोंके काष्ठसे ॥ २० ॥ चितापर उस प्रेतको बैठाकर, दोपिंड तहां देने. हे गरुड़ ! चितामें मुर्दाके हाथमें प्रेत नामसे पिंड देने इसी चितासे ल, सपिंड कर्मपर्यंत प्रेतपना होताहै ॥ २१ ॥

त्वंभूतभृज्जगद्योनिस्त्वंभूतपरिपालकः ॥ मृतःसांसारिकस्तस्मादेनंत्वंस्वर्गतिंनय ॥ १९ ॥ इतिसंप्रार्थयित्वाऽग्निंचितांतत्रैवकारयेत् ॥ श्रीखंडतुलसीकाष्ठैःपलाशाश्वत्थदारुभिः ॥ २० ॥ चितामारोप्यतंप्रेतंपिंडौद्वौतत्रदापयेत् ॥ चितायांशवहस्तेचप्रेतनाम्नाखगेश्वर ॥ चितामोक्षप्रभृतिकंप्रेतत्वमुपजायते ॥ २१ ॥ केपितंसाधकंप्राहुःप्रेतकल्पविदोजनाः ॥ चितायांतेननाम्नावाप्रेतनाम्नाथवाकरे ॥ २२ ॥ इत्येवंपंचभिःपिंडैःशवस्याहुतियोग्यता ॥ अन्यथाचोपघातायपूर्वोक्तास्तेभवंतिहि ॥ २३ ॥ प्रेतोदत्वापंचपिंडान्हुतमादायतंतृणैः ॥ अग्निंपुत्रस्तदादद्यान्नभवेत्पंचकंयदि ॥ २४ ॥ ॥ ॥

प्रेतकल्पके जाननेवाले कोई उसको साधक कहतेहैं सो चितामें साधक नामसे वा प्रेतनामसे देना ॥ २२ ॥ ऐसे पांच पिंडोंसे शवकी आहुतियोग्यता होती है. नहीं तो पूर्व कहे उपघात करतेहैं॥ २३ ॥ ऐसे प्रेतको पांच पिंड देकर, पीछे पुत्र तृणोंसे अग्नि लेकर, तहां देवे; जो पंचक नहीं हों तो ॥ २४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जो पंचकोंमें मरता है वोह मनुष्य गतिको नहीं प्राप्त होताहै इसीसे दाह नहीं करना करेसे दूसरा मरताहै ॥ २५ ॥ आदि धनिष्ठासे ले, रेवतीतक ए पांच नक्षत्र दाहकरनेके योग्य नहीं हैं इन्होंमें दाह करनेसे शुभ नहीं होताहै ॥ २६ ॥ जो इन नक्षत्रोंमें मरताहै उसका दाह करनेसे घरमें हानि होतीहै. पुत्रोंके वा गोत्रवालोंके कोई विघ्न होताहै ॥ २७ ॥ जो पंचकोंमें दाह करना, हो तो विधिसे करना. वह विधि तुम्हारेको

पंचकेप्रमृतोयस्तुनगतिंलभतेनरः ॥ दाहस्तत्रनकर्तव्यःकृतेऽन्यमरणंभवेत् ॥ २५ ॥ आदौकृत्वाधनिष्ठार्धमेतन्नक्षत्रपंचकम् ॥ रेवत्यंतंनदाहेऽर्हंदाहेचनशुभंभवेत् ॥ २६ ॥ गृहेहानिर्भवेत्तस्यऋक्षेष्वेषुमृतोहियः ॥ पुत्राणांगोत्रिणांचापिकश्चिद्विघ्नःप्रजायते ॥ २७॥ अथवाऋक्षमध्येहिदाहःस्याद्विधिपूर्वकः ॥ तद्विधिंतेप्रवक्ष्यामिसर्वदोषप्रशांतये ॥ २८ ॥ शवस्यनिकटेतार्क्ष्यनिक्षिपेत्पुत्तलांस्तदा ॥ दर्भमयांश्चचतुरऋक्षमंत्राभिमंत्रितान् ॥ २९ ॥ तप्तहेमप्रकर्तव्यंवहंतिऋक्षनामभिः ॥ प्रेताजयतमंत्रेणपुनर्होमस्तुसंपुटैः ॥ ३०॥ ततोदाहःप्रकर्तव्यस्तैश्चपुत्तलकैःसह ॥ सपिंडनदिनेकुर्यात्तस्यशांतिविधिंसुतः ॥ ३१ ॥ ॥ ॥

संपूर्ण दोषकी शांतिके वास्ते कहताहूं ॥ २८ ॥ शवके नजीक हे गरुड़ ! नक्षत्रके मंत्रोंसे मंत्रितभये दर्भोंके चार पुत्तला स्थापित करना ॥ २९ ॥ तहां सुवर्णका दान देना नक्षत्रोंके नामसे होम करना मध्यमें "प्रेताजयत" इस मंत्रसे होम करना. फेर नक्षत्रोंके नामसे होम करना. ऐसे संपुटी होम करना ॥ ३० ॥ पीछे उन चारों पुतलोंसहित दाह करना. पुत्र सपिंडिके दिन उसकी शांतिविधि करै ॥ ३१ ॥ ॥ ॥

तिलोंको पात्र सुवर्ण रौप्य रत्न घृतसे भराहुवा कांशाको पात्र ए दान दोषकी शांतिवास्ते देना ॥ ३२ ॥ ऐसे पंचकशांतिविधान करके, जो दाह करताहै उसके विघ्न नहीं होतेहैं. प्रेत परमगतिको प्राप्त होताहै ॥ ३३ ॥ ऐसे पंचकोंमें दाह होताहै. पंचक नहीं हों तो केवल शवको दाह करना जो कदाचित् उसकी स्त्री सती हो तो उसके साथहीं दग्ध करना ॥३४॥ जो पतिव्रता स्त्री भर्तारके प्रिय और हितमें आसक्त हो, पतिके संग जा-

तिलपात्रंहिरण्यंचरूप्यंरत्नंयथाक्रमम् ॥ घृतपूर्णकांस्यपात्रंदद्याद्दोषप्रशांतये ॥ ३२ ॥ एवंशांतिविधानंतुकृत्वादाहंकरोतियः ॥ नतस्यविघ्नोजायेतप्रेतायांतिपरांगतिं ॥ ३३ ॥ एवंपंचकदाहःस्यात्तद्विनाकेवलंदहेत् ॥ सतीयदिभवेत्पत्नीतयासहविनिर्दहेत् ॥ ३४ ॥ पतिव्रतायदानारीभर्तुःप्रियहितेरता ॥ इच्छेत्सहैवगमनंतदास्नानंसमाचरेत् ॥ ३५ ॥ कुंकुमांजनसद्वस्त्रभूषणैर्भूषितांतनुम् ॥ दत्त्वंदद्याद्द्विजातिभ्योबंधुवर्गेभ्यएवच ॥ ३६ ॥ गुरुंनमस्कृत्यतदानिर्गच्छेन्मंदिराद्बहिः ॥ ततोदेवालयंगत्वाभक्त्यातंप्रणमेद्धरिम् ॥ ३७ ॥ समर्प्याभरणंतत्रश्रीफलंपरिगृह्यच ॥ लज्जांमोहंपरित्यज्यश्मशानभवनंव्रजेत् ॥ ३८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नेकी इच्छा करै तो स्नान करना ॥ ३५ ॥ केशर, कुंकुम, अंजन, श्रेष्ठवस्त्र, आभूषण इन्हींसे शरीरको शोभित करना, ब्राह्मणोंको और कुटुंबको दान देना ॥ ३६ ॥ गुरूको नमस्कार करके, तदा घरसे बाहिर निकलना. तहांसे देवस्थानमें जाकर, भक्तिसे हरिको नमस्कार करना ॥ ३७ ॥ तहां आभूषण अर्पणकर, श्रीफल देकर, लज्जा और मोह त्यागके, स्मशानभूमिमें जाना ॥ ३८ ॥ ॥ ॥

पीछे वहां सूर्यनारायणके नमस्कार करके, चिताकी परिक्रमा कर, पुष्पशयाजैसे मान, चितामें स्थित हो, अपनी गोदीमें पतिको स्थापित करना ॥ ३९ ॥ अपनी सखियोंको श्रीफल देकर, पीछे दाह करनेकी आज्ञा देनी. जैसे गंगास्नान हो ऐसा मान, शरीर दग्ध करना ॥ ४० ॥ गर्भिणी स्त्री पतिसंग शरीर दग्ध नहीं करै. बालक प्रगट कर, पालन करके, सती होना ॥ ४१ ॥ स्त्री भर्त्तारके पीछे जो शरीर दग्ध करतीहै उसका अंग अग्नि जलाती है. आत्माको पीड़ा नहीं देतीहै ॥ ४२ ॥ जैसे धमीहुई धातु मैलको दग्ध करतीहै तैसे स्त्री अमृततुल्य अग्निमें

तत्रसूर्यंनमस्कृत्यपरिक्रम्यचितांतदा ॥ पुष्पशय्यांतदारोहेन्निजांकेस्थापयेत्पतिम् ॥ ३९ ॥ सखिभ्यःश्रीफलंदद्याद्दाहमाज्ञापयेत्ततः ॥ गंगास्नानसमंज्ञात्वाशरीरंपरिदाहयेत् ॥ ४० ॥ नदहेद्गर्भिणीनारीशरीरंपतिनासह ॥ जनयित्वाप्रसूतिंचबालंपोष्यसतीभवेत् ॥ ४१ ॥ नारीभर्तारमासाद्यशरीरंदहतेयदि ॥ अग्निर्दहतिगात्राणिनैवात्मानंप्रपीडयेत् ॥ ४२ ॥ दह्यतेध्मायमानानांधातूनांच यथामलः ॥ तथानारीदहेत्पापंहुताशेह्यमृतोपमे ॥ ४३ ॥ दिव्यादौसत्ययुक्तश्चशुद्धोधर्मयुतोनरः ॥ यथानदह्यतेतप्तलोहपिंडेनकर्हिचित ॥ ४४ ॥ तथासापतिसंयुक्तादह्यतेनकदाचन ॥ अंतरात्मात्मनाभर्तामृतेनैकत्वमागता ॥ ४५ ॥ ॥ ॥

पाप दग्ध करतीहै ॥ ४३ ॥ विवाद शपथादिकोंमें जैसे सत्यवक्ता शुद्ध धर्मात्मा मनुष्य तपेहुवे लोहाके पिंडसे कभी नहीं दग्ध होताहै ॥ ४४ ॥ तैसे वह भी पतिसंयुक्त कभी दग्ध नहीं होतीहै. अंतरात्माकरके मराहुवा भर्तारके एकत्र स्वरूप प्राप्त होती है अर्थात् फेर नारीशरीर नहीं प्राप्त होती है ॥ ४५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जहांतक स्त्री मरेहुवे पतिसंग अपने शरीरको दग्ध नहीं करती है तहांतक वह स्त्री स्त्रीशरीरसे नहीं छूटती है ॥ ४६ ॥ तिसीसे संपूर्ण यत्नसे अपने पतिकी सदा सेवा करना. कर्मोंसे, मनसे, वाणीसे मरेहुवे वा जीवते पतिकी आज्ञानुसार होना ॥ ४७ ॥ पतिके मरेबाद जो स्त्री अग्निमें प्रवेश करै वह इंद्राणीके तुल्य हुई स्वर्गमें प्रकाशतीहै ॥ ४८ ॥ वह स्वर्गमें पतिके प्रियहुई अप्सरोंके समूहसे स्तुतिको

यावच्चाग्नौमृतेपत्यौस्त्रीनात्मानंप्रदाहयेत् ॥ तावन्नमुच्यतेसाहिस्त्रीशरीरात्कथंचन ॥ ४६ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनस्वपतिंसेवयेत्सदा ॥ कर्मणामनसावाचामृतेजीवतितद्व्रता ॥ ४७ ॥ मृतेभर्तरियानारीसमारोहेद्धुताशनम् ॥ साऽरुंधतीसमाभूत्वास्वर्गलोकेमहीयते ॥ ४८ ॥ तत्रसाभर्तृपरमास्तूयमानाप्सरोगणैः ॥ रमतेपतिनासार्धंयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ ४९ ॥ मातृकंपैतृकंचैवयत्रसाचप्रदीयते ॥ कुलत्रयंपुनात्यत्रभर्तारंयानुगच्छति ॥ ५० ॥ तिस्रःकोट्योऽर्धकोटीचयानिरोमाणिमानुषे ॥ तावत्कालंवसेत्स्वर्गेपतिनासहमोदते ॥ ५१ ॥ ॥ ॥ ॥

प्राप्त हुई पतिके संग जहांतक चौदह इंद्र हों जहांतक रमतीहै ॥ ४९ ॥ माताके कुलका, पिताके कुलका, ऐसे तीन कुलोंको पवित्र करतीहै जो स्त्री पतिके संग जलती है ॥ ५० ॥ मनुष्यशरीरमें साढ़ेतीन करोड़ रोम हैं. उतनेहीं वर्षपर्यंत स्वर्गलोकमें वास करतीहै. पतिके संग आनंद भोगती है ॥ ५१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ५२ ॥ सूर्यजैसे प्रकाशमान विमानमें अपने प्यारेके संग रमतीहै. जहांतक सूर्य चंद्रमा रहें तहांतक पतिके लोकमें वास करतीहै ॥ ५२ ॥
फेर चिरायु होकर, निर्मल कुलमें जन्मतीहै. जो स्त्री पतिव्रता हो सो उसी पतिको प्राप्त होतीहै ॥ ५३ ॥ जो स्त्री क्षणमात्र दाह होनेके
दुःखसे ऐसे सुखको त्यागतीहै वह मूर्खिणी जन्मपर्यंत विरहकी अग्निसे दग्ध होतीहै ॥ ५४ ॥ तिसीसे पतिको शिवरूप जानके, उसके

विमानेसूर्यसंकाशेक्रीडतेरमणेनसा ॥ यावदादित्यचंद्रौचभर्तृलोकेचिरंवसेत् ॥ ५२ ॥ पुनश्चिरायुःसाभूत्वाजायतेविमले
कुले ॥ पतिव्रतातुयानारीतमेवलभतेपतिम् ॥ ५३ ॥ याक्षणंदाहदुःखेनसुखमेतादृशंत्यजेत् ॥ सामूढाजन्मपर्यंतंदह्यतेविर
हाग्निना ॥ ५४ ॥ तस्मात्पतिंशिवंज्ञात्वासहतेनदहेत्तनुम् ॥ यदिनस्यात्सतीतार्क्ष्यतमेवंप्रदहेत्तदा ॥ ५५ ॥ अर्धेदग्धेऽथ
वापूर्णेस्फोटयेत्तस्यमस्तकम् ॥ गृहस्थानांतुकाष्ठेनयतीनांश्रीफलेनच ॥ ५६ ॥ प्राप्तयेपितृलोकानांभित्त्वातद्ब्रह्मरंध्रकम् ॥
आज्याहुतिंततोदद्यान्मंत्रेणानेनतत्सुतः ॥ ५७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

संग शरीर दग्ध करना. हे गरुड़! सती हो तो तिसको इसप्रकार दग्ध करना ॥ ५५ ॥ आधा दग्ध हुवा वा पूरा दग्ध हुवा उसका मस्तक
फोड़ना सो मस्तक गृहस्थोंको तो काष्ठसे और यतियोंको श्रीफलसे फोड़ना ॥ ५६ ॥ पितृलोककी प्राप्तिके लिये उसका ब्रह्मरंध्र भेदनकर, ॥५२॥
उसमें घृतकी पुत्र आहुति देवै इस मंत्रसे ॥ ५७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हे पावक! तुम श्रीभगवानसे प्रगटेहो सो तुम्हारे सकाशसे यह मनुष्य स्वर्गलोकमें जावै ॥ ५८ ॥ ऐसे तिलोंसे मिली मंत्रसहित घृतकी आहुति देकर, गाढ़ रोदन करना. उससे प्राणीके सुख होताहै ॥ ५९ ॥ दाहक्रियाके अगाड़ी स्त्रियोंने स्नान करना, पुत्रोंकरके नाम गोत्रको लेकर, तिलोदक देना ॥ ६० ॥ नीमके पत्ता भक्षण करना, मरेहुवेके गुण कहने, स्त्रियोंको अगाड़ी कर, पीछे मनुष्यसमूह

अस्मात्त्वमधिजातोऽसित्वदयंजायतांपुनः ॥ असौस्वर्गायलोकायस्वाहाज्वलतुपावकः ॥ ५८ ॥ एवमाज्याहुतिंदत्वातिलमिश्रांसमंत्रकाम् ॥ रोदितव्यंततोगाढंतेनतस्य सुखंभवेत् ॥ ५९ ॥ दाहादनंतरंकार्यंस्त्रीभिःस्नानंततःसुतैः ॥ तिलोदकंततोदद्यान्नामगोत्रेणकल्पितम् ॥ ६० ॥ प्राशयेन्निंबपत्राणिमृतकस्यगुणान्वदेत् ॥ स्त्री नाऽग्रेगृहंगच्छेत्पृष्ठतोनरसंचयः ॥ ६१ ॥ गृहेस्नानंपुनःकृत्वागोग्रासंचप्रदापयेत् ॥ पत्रावल्यांचभुंजीयाद्गृहान्नंनैवभक्षयेत् ॥ ६२ ॥ मृतकस्थानमालिप्यदक्षिणाभिमुखंततः ॥ द्वादशाहकपर्यंतंदीपंकुर्यादहर्निशम् ॥ ६३ ॥ सूर्येऽस्तमागतेतार्क्ष्यस्मशानेवाचतुष्पथे ॥ दुग्धंचमृन्मयेपात्रेतोयंदद्याद्दिनत्रयम् ॥ ६४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

होकर, घरमें जाना ॥ ६१ ॥ फेर घरमें स्नान करके, गोग्रास देना, पत्रावलीमें भोजन करना, घरका अन्न नहीं खाना ॥ ६२ ॥ मृतकका स्थान लीपके, दक्षिणको मुख कर, बारा दिनपर्यंत रातदिन दीपक करना ॥ ६३ ॥ हे गरुड़! सूर्य अस्तहुवे पर स्मशानमें वा चौरस्तामें, मृत्तिकामय पात्रमें तीन दिन दूध, जल देना ॥ ६४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कच्ची मृत्तिकाके पात्रमें दूध, घी भरकर, जेवड़ीसे बांधे हुये तीन काष्ठ धरकर, ये मंत्र पढ़ना ॥६५॥ स्मशानरूपी अग्निसें दग्ध हो, बांधवोंसे त्यागे भये हो सो यह जल और दूध है. इस जलमें स्नान करो और दूध पीवो ॥ ६६ ॥ चौथेदिन साग्निक और निरग्निकोंकरके अस्थिसंचय करना, तीसरे दिन वा दूसरे दिनभी करना. पंचक शनिवारादिकोंका वर्जना ॥६७॥ स्मशानभूमिमें जाकर, स्नान करके, पवित्र होना. ऊन वस्त्र

अपक्वमृन्मयंपात्रंक्षीरनीरप्रपूरितम् ॥ काष्ठत्रयंगुणैर्बद्धंधृत्वामंत्रंपठेदिमम् ॥ ६५ ॥ श्मशानानलदग्धोऽसिपरित्यक्तोऽसि
बांधवैः ॥ इदंनीरमिदंक्षीरमत्रस्नाहिइदंपिब ॥ ६६ ॥ चतुर्थेसंचयःकार्यःसाग्निकैश्चनिरग्निकैः ॥ तृतीयेऽह्निद्वितीयेवा
कर्तव्यश्चाविरोधतः ॥ ६७ ॥ गत्वाश्मशानभूमिंचस्नानंकृत्वाशुचिर्भवेत् ॥ ऊर्णासूत्रंवेष्टयित्वापवित्रींपरिधायच ॥ ६८ ॥
दद्यात्श्मशानवासिभ्यस्ततोमाषबलिंसुतः ॥ यमायत्वेतिमंत्रेणतिस्रःकुर्यात्परिक्रमाः ॥ ६९ ॥ ततोदुग्धेनसंभ्युक्ष्यचिता
स्थानंखगेश्वर ॥ जलेनसेचयेत्पश्चादुद्धरेदस्थिवृंदकम् ॥ ७० ॥ कृत्वापलाशपत्रेषुक्षालयेद्दुग्धवारिभिः ॥ संस्थाप्यमृ
न्मयेपात्रेश्राद्धंकुर्याद्यथाविधि ॥ ७१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पहरकर, पवित्री धारण कर, ॥ ६८ ॥ पुत्र स्मशानवासियोंको उड़दकी बलि देवै "यमायत्वा" इस मंत्रसे तीन परिक्रमा करना ॥ ६९ ॥ हे गरुड़! पीछे दूधसे चितास्थान प्रोक्षणकर, जलसे फेर छिड़कना. पीछे हाड़ोंका समूह ग्रहण करना ॥ ७० ॥ उन हाड़ोंको पलाशके पत्तोंमें डाल, दूधजलसे धोने पीछे मृत्तिकाके पात्रमें स्थापित कर, विधिसे श्राद्ध करना ॥ ७१ ॥ ॥ ॥ ॥

त्रिकोण स्थंडिल करके, गोबरसे लीप, दक्षिणको मुख कर, तीनों दिशावोंमें तीन पिंड देने ॥ ७२ ॥ पीछे चिताकी भस्म इकट्ठी कर, उसपर तिपाई धरके, तिपाईपर जलसे भरा बिगर ढका घट धरना ॥ ७३ ॥ पीछे चांवल रांध कर, दही घृत मिलाकर, प्रेतको जलसहित विधिसे मीठा बलिदेना ॥ ७४ ॥ पीछे पंद्रहपद उत्तरदिशामें जाना. वहां खड्डा खोदकर, हे गरुड़! हड्डीके पात्रको स्थापित करना ॥ ७५ ॥

त्रिकोणंस्थंडिलंकृत्वागोमयेनोपलेपितम् ॥ दक्षिणाभिमुखोदिक्षुदद्यात्पिंडत्रयंत्रिषु ॥ ७२ ॥ पुंजीकृत्यचिताभस्मतत्रधृत्वात्रिपादुकाम् ॥ स्थापयेत्तत्रसजलमनाच्छाद्यमुखंघटम् ॥ ७३ ॥ ततस्तंडुलपाकेनदधिघृतसमन्वितम् ॥ बलिंप्रेतायसजलंदद्यान्मिष्टंयथाविधि ॥ ७४ ॥ पदानिदशपंचैवचोत्तरस्यांदिशिव्रजेत् ॥ गर्तंविधायतत्रास्थिपात्रंसंस्थापयेत्खग ॥ ७५ ॥ तस्योपरिततोदद्यात्पिंडंदाहार्तिनाशनम् ॥ गर्तादुद्धृत्यतत्पात्रंनीत्वागच्छेज्जलाशयम् ॥ ७६ ॥ तत्रप्रक्षालयेद्दुग्धजलादस्थिपुनःपुनः ॥ चर्चयेच्चंदनेनाथकुंकुमेनविशेषतः ॥ ७७ ॥ धृत्वासंपुटकेतानिकृत्वाचहृदिमस्तके ॥ परिक्रम्यनमस्कृत्यगंगामध्येविनिःक्षिपेत् ॥ ७८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पीछे उसके ऊपर दाहकी आर्ति नाशकरनेवाला पिंड देना. पीछे खड्डेसे काढ़कर, उस पात्रको जलके सरोवरमें लेजाय ॥ ७६ ॥ तहां दूध, जलसें हाड़ वारंवार धोने. चंदनसे केशरसे चर्चित करने ॥ ७७ ॥ फेर संपुटमें धरके, उन्होंको हृदय और मस्तकपर कर, परिक्रमा दे नमस्कार कर, श्रीगंगाके मध्यमें स्थापित करने ॥ ७८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दशदिनके भीतर जिसका हाड गंगाजलमें डालाजाताहै उसको ब्रह्मलोकसे फेर कभी पीछा आना नहीं होताहै ॥ ७९ ॥ जहांतक मनुष्यके हाड़ गंगाजलमें स्थित रहतेहैं उतने हजारवर्ष स्वर्गलोकमें वास करताहै ॥ ८० ॥ गंगाजलकी तरंग स्पर्श करके जो पवन मरेहुवेका स्पर्श करै तौ उसके पाप तत्काल नाश होतेहैं ॥ ८१ ॥ महान तपस्यासे राजा भगीरथ श्रीगंगाको आराधन करके, पितृश्वरोंके उद्धार करनेके वा-

अंतर्दशाहंयस्यास्थिगंगातोयेनिमज्जति ॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन ॥ ७९ ॥ यावदस्थिमनुष्यस्यगंगातोये षुतिष्ठति ॥ तावद्वर्षसहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते ॥ ८० ॥ गंगाजलोर्मिसंस्पृश्यमृतकंपवनोयदा ॥ स्पृशतेपातकंतस्य सद्यएवविनश्यति ॥ ८१ ॥ आराध्यतपसोग्रेणगंगांदेवींभगीरथः ॥ उद्धारार्थंपूर्वजानामानयद्ब्रह्मलोकतः ॥ ८२ ॥ त्रिषुलोकेषुविख्यातंगंगायाःपावनंयशः ॥ यापुत्रान्सगरस्यैतान्भस्माख्याननयद्दिवम् ॥ ८३ ॥ पूर्वेवयसिपापानियेकृ त्वामानवामृताः ॥ गंगायामस्थिपतनात्स्वर्गलोकंप्रयांतिते ॥ ८४ ॥ कश्चिद्व्याधोमहारण्येसर्वप्राणिविहिंसकः ॥ सिं हेननिहतोयावत्प्रयातिनरकालये ॥ ८५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

स्ते ब्रह्मलोकसे लाये ॥ ८२ ॥ सो श्रीगंगाको पवित्र यश त्रिलोकीमें विख्यात है. जो गंगा भस्मभये सगरके पुत्रोंको स्वर्गमें प्राप्त करतीभई ॥ ८३ ॥ पूर्वअवस्थामें पाप करके, जो मरतेहैं वेभी गंगामें हाड़ डालनेसे स्वर्गमें जाते हैं ॥ ८४ ॥ कोई महान वनमें सब प्राणियोंको हिंसक व्याध सिंहसे माराहुवा नरकमें जाताथा ॥ ८५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तिसीसमय एक कागनें उसका हाड़ लेकर, गंगामें पटका हाड़के डालनेंसे दिव्य विमानमें बैठकर, वोइ स्वर्गमें जाताभया ॥ ८६ ॥ इसीसे सुपुत्र आपही अपने पिताके अस्थि गंगामें डाले. अस्थिसंचयके अगाड़ी दशगात्र करना ॥ ८७ ॥ इसके आगल कोई विदेशमें वा वनमें अथवा चोरभयसे मरताहै. जिसका शरीर नहीं मिलता तब जिसदिन [illegible]नता है ॥ ८८ ॥ उसीदिन दर्भोंका पुतला करके, पहले कही रीतसे

तावत्कालेनतस्यास्थिगंगायांपातितंतदा ॥ दिव्यंविमानमा[illegible]सगतोदेवमंदिरम् ॥ ८६ ॥ अतःस्वमेवसत्पुत्रोगंगायाम
स्थिपातयेत् ॥ अस्थिसंचयनादूर्ध्वंदशगात्रंसमाचरेत् ॥ ८७ ॥ अथकश्चिद्विदेशेवावनेचौरभयेमृतः ॥ नलब्धस्तस्यदेहश्चे
च्छृणुयाद्यां[illegible]नेतदा ॥ ८८ ॥ दर्भपुत्तलकंकृत्वापूर्ववत्केवलंदहेत् ॥ तस्यभस्मसमादायगंगातोयेविनिःक्षिपेत् ॥ ८९ ॥
दशगात्रादि[illegible]कर्मतद्दिनादेवकारयेत् ॥ सएवदिवसोग्राह्यःश्राद्धेसांवत्सरादिके ॥ ९० ॥ पूर्णेगर्भेमृतांनारीविदार्यजठरंत
दा ॥ बालंनिष्कास्यनिक्षिप्यभूमौतामेवदाहयेत् ॥ ९१ ॥ गंगातीरेमृतंबालंगंगायामेवपातयेत् ॥ अन्यदेशेक्षिपेद्भूमौसप्त
विंशतिमासजम् ॥ ९२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

केवल दग्ध करना और उसकी भस्म लेकर, गंगामें डालना ॥ ८९ ॥ दशगात्रादिक कर्म उसीदिनसे करने वही दिवस श्राद्धमें ग्रहण करना ॥ ९० ॥ जो पूर्ण गर्भहुई स्त्री मरजाय तब उसका पेट चीर, बालक निकाल, पृथ्वीमें गाड़के, उस स्त्रीको दग्ध करना ॥ ९१ ॥ गंगातीरपर मरेहुवे बालकको गंगामें पटकना और देशमें मरेहुवे बालकको सत्तावीस महीनातक पृथ्वीमें डालना ॥ ९२ ॥ ॥ ॥ ॥

इसके आगल उसको दग्ध करना, गंगामें हाड़ डालना. जलको कलश देना. बालकोंको भोजन कराना॥९३॥ गर्भनाश हुवेकी क्रिया नहीं है. मरेहुवे बालकको दूध देना. जलघट और क्षीरभोजन बालकोंको देना ॥ ९४ ॥ पांचवर्षकी अवस्थातक बालक मरे तो बालकोंको भोजन कराने. दशवर्षतक पौगंडअवस्थामें व्रतरहित बालक मराहुवा पौगंड अवस्थाके बालक भोजन कराने ॥ ९५ ॥ पंचम वर्षसे उपरांत व्रतस-

अतःपरंदहेत्तस्यगंगायामस्थिनिक्षिपेत् ॥ जलकुंभश्चदातव्यंबालानामेवभोजनम् ॥ ९३ ॥ गर्भेनष्टेक्रियानास्तिदुग्धंदेयं मृतेशिशौ ॥ घटंचपायसंभोज्यंदद्याद्बालविपत्तिषु ॥ ९४ ॥ कुमारेचमृतेबालान्कुमारानेवभोजयेत् ॥ सबालान्भोजयेद्द्वि प्रान्पौगंडेसव्रतेमृते ॥ ९५ ॥ मृतश्चपंचमादूर्ध्वमव्रतःसव्रतोऽपिवा ॥ पायसेनगुडेनापिपिंडान्दद्याद्दशक्रमात् ॥ ९६ ॥ एकादशंद्वादशंचवृषोत्सर्गविधिंविना ॥ महादानविहीनंचपौगंडेकृत्यमाचरेत् ॥ ९७ ॥ जीवमानेचपितरिनपौगंडेसपिंड नम् ॥ अतस्तस्यद्वादशाहन्येकोद्दिष्टंसमाचरेत् ॥ ९८ ॥ स्त्रीशूद्राणांविवाहस्तुव्रतस्थानेप्रकीर्तितः ॥ व्रतात्प्राक्सर्ववर्णानां वयस्तुल्याक्रियाभवेत् ॥ ९९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हित वा व्रतरहित मरेहुवेको पायसगुड़से क्रमसे दशपिंड देने॥ ९६ ॥ एकादशा, द्वादशा, वृषोत्सर्ग और महादान विना पौगंड अवस्थामें कृत्य करना ॥ ९७ ॥ पिता जीवता हुवा पौगंड अवस्थामें सपिंडीकर्म नहीं करना इसीसे उसके बारवेंदिवस एकोद्दिष्टश्राद्ध करना ॥ ९८ ॥ स्त्री और शूद्रोंके व्रतस्थानमें विवाह कहाहै. व्रतके पहिले सब वर्णोंके अवस्थातुल्य क्रिया करनी ॥ ९९ ॥ ॥ ॥ ॥

थोड़े कर्मोंके प्रसंगसे थोड़े विषयोंके बंधनमें थोड़ी अवस्थामें थोड़ीही क्रिया कहीहै ॥ १०० ॥ किशोर और तरुण अवस्थामें शय्यादान वृषयज्ञादिक करनी. पददान महादान गोदान भी देने ॥ १ ॥ सब यतियोंको दाह करना और जलक्रिया नहीं कहीहै उन्होंका दशगात्रादिकभी पुत्रोंने नहीं कराना ॥२॥ दंड ग्रहण करनेसे मनुष्य नारायणस्वरूप होता है सो तीन दंडोंके ग्रहण करनेसे उन्होको प्रेतपना नहीं हो-

स्वल्पात्कर्मप्रसंगाच्चस्वल्पाद्विषयबंधनात् ॥ स्वल्पेवयसिदेहेचक्रियास्वल्पामपीच्छति ॥ १०० ॥ किशोरेतरुणेकुर्याच्छय्या वृषमखादिकम् ॥ पददानंमहादानंगोदानमपिदापयेत् ॥ १ ॥ यतीनांचैवसर्वेषांनदाहोनोदकक्रिया ॥ दशगात्रादिकंतेषांनकर्तव्यंसुतादिभिः ॥ २ ॥ दंडग्रहणमात्रेणनरोनारायणोभवेत् ॥ त्रिदंडग्रहणात्तेषांप्रेतत्वंनैवजायते ॥ ३ ॥ ज्ञानिनस्तुसदामुक्ताःस्वरूपानुभवेनहि ॥ अतस्तेतुप्रदत्तानांपिंडानांनैवकांक्षिणः ॥ ४ ॥ तस्मात्पिंडादिकंतेषांतन्नोदकमाचरेत् ॥ तीर्थश्राद्धंगयाश्राद्धंपितृभक्त्यासमाचरेत् ॥ ५ ॥ हंसंपरमहंसंचकुटीचकबहूदकौ ॥ एतान्संन्यासिनस्तार्क्ष्यपृथिव्यां स्थापयेन्मृतान् ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ताहै ॥ ३ ॥ ज्ञानी स्वरूपके अनुभवसे सदामुक्त रहतेहैं इसीसे वे ज्ञानी दिये भये पिंडोंको नही वांछा करतेहैं ॥ ४ ॥ तिसीसे उन्होंको पिंडादिक नहीं कहाहै, जलांजलि नहीं कहीहै, तीर्थश्राद्ध, गयाश्राद्ध, पितृभक्तिसे आचरण करना, ॥ ५ ॥ हंस, परमहंस, कुटीचक, बहूदक ए कहे संन्यासियोंको हे गरुड़! मरनेसे पृथ्वीमें स्थापित करने ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गंगादि महानदियोंके अभावमें पृथ्वीमें गाड़ना कहाहै जब महानदी हो तब उन्होंमें डालै ॥ १०७ ॥ इति श्रीसारोद्धारे गरुडपुराणे ज्ञानबोधनीभाषाटीकायां दाहास्थिसंचयनिरूपणो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ अब गरुड़जी कहतेहैं— हे केशव! दशगात्रोंकी विधि कहो. दशगात्र करनेसे क्या सुकृत होता है? पुत्र नहीं हुवा तौ कौन करै? ए हमारेको कहो ॥ १ ॥ अब भगवान कहते हैं— हे गरुड़!

गंगादीनामभावेहिपृथिव्यांस्थापनंस्मृतम् ॥ यत्रसंतिमहानद्यस्तदातास्वेवनिःक्षिपेत् ॥ १०७ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेदाहास्थिसंचयकर्मनिरूपणोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ दशगात्रविधिंब्रूहिकृतेकिंसुकृतंभवेत् ॥ पुत्राभावेतुकःकुर्यादितिमेवदकेशव ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामिदशगात्रविधिंतव ॥ यद्विधायचसत्पुत्रोमुच्यतेपैतृकादृणात् ॥ २ ॥ पुत्रःशोकंपरित्यज्यधृतिमास्थायसात्विकीम् ॥ पितुःपिंडादिकंकुर्यादश्रुपातंनकारयेत् ॥ ३ ॥ श्लेष्माश्रुबांधवैर्मुक्तंप्रेतोभुंक्तेयतोऽवशः ॥ अतोनरोदितव्यंहितदाशोकान्निरर्थकात् ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

सुनो तुम्हारेको दशगात्रोंकी विधि कहताहूं जिनको करके, श्रेष्ठ पुत्र पितृऋणसे छूटता है ॥ २ ॥ पुत्र शोकको त्यागके, सात्विकी धीरजता धर, पिताके, पिंडादिक करने और अश्रुपात नहीं डालने ॥ ३ ॥ कफ अश्रुपात जो बंधु छोड़ते हैं उसको प्रेत पराधीन हुवा भोगता है इसीसे उस वख्त नहीं रोदन करना कारण शोक निरर्थक है ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जो ॥नुष्य ९ ... ॥तदिन शोच करै तौभी नाशहुवा कभी नहीं दिखता है ॥ ५ ॥ जन्मेहुएकी निश्चय मृत्यु है. मरेहुएका निश्चय जन्म है तिसीसे विवेकी दूर करनेको अशक्य ऐसे कार्यमें शोक ... करै ॥ ६ ॥ ऐसा कोई दैवी वा मानषी उपाय नहीं है जो मृत्युके वशीभूत हुये जीवको फेर यहां प्राप्त करै ॥ ७ ॥ अवश्यभावी पदार्थोंका जो उपाय होता तौ नल, रामचंद्र, युधिष्ठिर ए दुःखोंसे नहीं युक्त होते

यदिवर्षसहस्राणिशोचतेऽहर्निशंनरः ॥ तथापिनैवनिधनंगतोदृश्येतकर्हिचित् ॥ ५ ॥ जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥ तस्मादपरिहार्येर्थेनशोकंकारयेद्बुधः ॥ ६ ॥ नहिकश्चिदुपायोऽस्तिदैवोवामानुषोपिवा ॥ योहिमृत्युवशंप्राप्तोजंतुःपुनरिहाव्रजेत् ॥७॥ अवश्यंभाविभावानांप्रतीकारोभवेद्यदि ॥ तदादुःखैर्नयुज्येरन्नलरामयुधिष्ठिराः ॥ ८ ॥ नायमत्यंतसंवासःकस्यचित्केनचित्सह ॥ अपिस्वस्यशरीरेणकिमुतान्यैःपृथग्जनैः ॥ ९ ॥ यथाहिपथिकःकश्चिच्छायामाश्रित्यविश्रमेत् ॥ विश्रम्यचपुनर्गच्छेत्तद्वद्भूतसमागमः ॥ १० ॥ यत्प्रातःसंस्कृतंभोज्यंसायंतच्चविनश्यति ॥ तदन्नरससंपुष्टेकायेकानामनित्यता ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ८ ॥ अत्यंत समागम कोईका किसीके संग नहीं है अपने शरीरके संगभी नहीं है तो दूसरे कुटुंबादिकोंसे क्या हो ॥ ९ ॥ जैसे कोई रस्तेमें जानेवाला मार्गमें छाया देखकर, विश्राम लेता है विश्राम लेकर, पीछो जायहै तैसे यह प्राणियोंका संगम है ॥ १० ॥ जो प्रातःकालका बनाया भया अन्न सायंकाल नष्ट होता है उसी रससे पुष्ट ऐसे शरीरमें कौनसी नित्यता है ॥ ११ ॥ ॥ ॥

इस दुःखका औषध विचार है सो जानकर, पुत्र अज्ञानसे प्रगटहुवे शोकको त्यागके, क्रिया करे ॥ १२ ॥ पुत्र नहीं होतो स्त्री करे स्त्री न हो तो छोटाभाई करै वा सोदर करै वा ब्राह्मणके वा शिष्य अथवा सपिंड क्रिया करै ॥ १३ ॥ हे गरुड़! बड़े वा छोटे भाईके पुत्र वा पोतासे पुत्रहीनकी दशगात्रादिक क्रिया करें ॥ १४ ॥ एक पितासे हुये ऐसे भाइयोंमें जो एक पुत्रवाला हो तो वे सब एक भाईके पुत्र कर-

भैषज्यमेतद्दुःखस्यविचारंपरिचिंत्यच ॥ अज्ञानप्रभवंशोकंत्यक्त्वाकुर्यात्क्रियांसुतः ॥ १२ ॥ पुत्राभावेवधूःकुर्याद्भार्याभावेच सोदरः ॥ शिष्योवाब्राह्मणस्यैवसपिंडोवासमाचरेत् ॥ १३ ॥ ज्येष्ठस्यवाकनिष्ठस्यभ्रातुःपुत्रैश्चपौत्रकैः ॥ दशगात्रादिकं कार्यंपुत्रहीनेनरेखग ॥ १४ ॥ भ्रातॄणामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान्भवेत् ॥ सर्वेतेतेनपुत्रेणपुत्रिणोमनुरब्रवीत् ॥ १५ ॥ पत्न्यश्चबह्व्यएकस्यचैकापुत्रवतीभवेत् ॥ सर्वास्ताःपुत्रवत्यःस्युस्तेनैकेनसुतेनहि ॥ १६ ॥ सर्वेषांपुत्रहीनानांमित्रःपिंडंप्रदापयेत् ॥ क्रियालोपोनकर्तव्यःसर्वाभावेपुरोहितः ॥ १७ ॥ स्त्रीवाऽथपुरुषःकश्चिदिष्टस्यकुरुतेक्रियाम् ॥ अनाथप्रेतसंस्कारात्कोटियज्ञफलंलभेत् ॥ १८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

के पुत्रवान हैं ए मनुका वाक्य है ॥ १५ ॥ एक पुरुषके बहोत स्त्रियोंमें एक जो पुत्रवती हो तो उस एक पुत्रसे वे सब स्त्रियां पुत्रवती हैं ॥ १६ ॥ संपूर्ण पुत्रहीनवालोंको मित्र पिंड देवै परंतु क्रियालोप नहीं करे कोईभी नहीं हो तो पुरोहित करे ॥ १७ ॥ स्त्री हो अथवा पुरुष हो कोईभी मित्रकी क्रिया करते हैं अनाथ प्रेतके संस्कार करनेंसे उन्होंको करोड़ यज्ञोंका फल होता है ॥ १८ ॥ ॥ ॥

हे गरुड़ ! पिताकी दशगात्रादिक क्रिया पुत्रकरके करने योग्य हैं. बड़ा पुत्रभी मरा हो अत्यंत स्नेह हो तोभी पिता पुत्रकी क्रिया नहीं करै ॥ १९ ॥ जो कदाचित् पुत्र बहोत होंय तोभी एक पुत्र विधिसे क्रिया करे दशगात्र, सपिंडीकर्म, दूसरे सोलह श्राद्ध ॥ २० ॥ पुत्र न्यारे न्यारे हों तोभी एकसेही करनेयोग्य हैं. तथा न्यारे हों तो सांवत्सरादिक श्राद्ध जुदे जुदे करने ॥ २१ ॥ तिसीसे बड़ा पुत्र भक्तिसे दशगा-

पितुःपुत्रेणकर्तव्यंदशगात्रादिकंखग ॥ मृतेज्येष्ठेऽप्यतिस्नेहान्नकुर्वीतपितासुते ॥ १९ ॥ बहवोऽपियदापुत्राविधिमेकःसमाचरेत् ॥ दशगात्रंसपिंडत्वंश्राद्धान्यन्यानिषोडश ॥ २० ॥ एकेनैवतुकार्याणिसंविभक्तधनेष्वपि ॥ विभक्तैस्तुपृथक्कार्यंश्राद्धंसांवत्सरादिकम् ॥२१॥ तस्माज्ज्येष्ठःसुतोभक्त्यादशगात्रंसमाचरेत् ॥ एकभोजीभूमिशायीभूत्वाब्रह्मपरःशुचिः ॥२२॥ सप्तवारंपरिक्रम्यधरणींयत्फलंलभेत् ॥ क्रियांकृत्वापितुर्मातुस्तत्फलंलभतेसुतः ॥ २३ ॥ आरभ्यदशगात्रंचयावद्द्वैवार्षिकंभवेत् ॥ तावत्पुत्रःक्रियांकुर्वन्गयाश्राद्धफलंलभेत् ॥ २४ ॥ ॥ ॥ ॥

त्र करै, एक वख्त भोजन करे, पृथ्वीपर सोवे, ब्रह्मचारी पवित्र रहे ॥२२॥ सातबार पृथ्वीकी परिक्रमा करनेसे जो फल मिलता है वो फल पुत्रको माता पिताकी क्रिया करनेसे मिलता है ॥ २३ ॥ दशगात्रसे आरंभ लेकर, जहांतक वर्षी हो वहांतक क्रिया करनेसे गया श्राद्धके फलको प्राप्त होता है ॥ २४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कूप, तलाव, आराम, तीर्थ, देवस्थान इनमें कोईसेभी स्थानमें मध्यान्ह समयमें जाकर, अमंत्रक स्नान करना ॥ २५ ॥ वृक्षके नीचे प्रवित्र होकर, दक्षिणको मुख कर, स्थित हो, तहां वेदी करनी. उसको गोबरसे लीपनी ॥ २६ ॥ उस वेदीपर पान बिछा, दर्भोंको कौशिक ब्राह्मण स्थापित करना, उसको पाद्य अर्घ्यादिकोंसे पूजकर, "अतसीपुष्पसंकाशं" इस मंत्रसे नमस्कार करना ॥२७॥ उसके अगाड़ी पिंड देनेको कु-

कूपेतडागेवाऽऽरामेतीर्थेदेवालयेपिवा ॥ गत्वामध्यमयामेतुस्नानंकुर्यादमंत्रकम् ॥ २५ ॥ शुचिर्भूत्वावृक्षमूलेदक्षिणाभि
मुखःस्थितः ॥ कुर्याच्चवेदिकांतत्रगोमयेनोपलिप्यताम् ॥ २६ ॥ तस्यांपूर्णेदर्भमयंस्थापयेत्कौशिकंद्विजं ॥ तंपाद्यादिभिर
भ्यर्च्यप्रणमेदतसीतिच ॥२७॥ तदग्रेचततोदत्वापिंडार्थंकौशमासनम् ॥ तस्योपरिततःपिंडंनामगोत्रोपकल्पितम् ॥२८॥
दद्यात्तंडुलपाकेनयवपिष्टेनवासुतः ॥ उशीरंचंदनंभृंगराजपुष्पंनिवेदयेत् ॥ धूपंदीपंचनैवेद्यंमुखवासंचदक्षिणाम् ॥ २९ ॥
काकान्नंपयसोःपात्रेवर्धमानजलांजलीन् ॥ प्रेतायामुकनाम्नेचमद्दत्तमुपतिष्ठतु ॥ ३० ॥ ॥ ॥

शोंको आसन देना: उसके ऊपर नामगोत्रसे पिंड देना ॥ २८ ॥ चावलोंका पाक करके वा जवोंके आटासे देना. उशीर, चंदन भृंगराजके पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, मुखवास, दक्षिणा ए अर्पण करना ॥ २९ ॥ काकवलि, जल, दूधके पात्रोंमें वर्धमान जलांजली ए अमुकनाम प्रेतको मेरी दीभई प्राप्त होवैं ॥ ३० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अन्न, वस्त्र, जल, द्रव्य और जो कछु देतेहैं सो प्रेतशब्दसे जो दिया है सो मरेहुवेको अनंत फलदायक है ॥ ३१ ॥ तिसीसे आदिदिनसे लेकर, सपिंडीकर्मतक स्त्री अथवा पुरुषको प्रेतनामसे उच्चारण करना ॥ ३२ ॥ पहिले दिन जो विधिसे पिंड देवै उसी विधिसे उस अन्नसे नव पिंड देने ॥ ३३ ॥ नवमें दिन मृतकको स्वर्गमें जानेके वास्ते सब सपिंडोंकरके सहित तैलका उबटना करना ॥ ३४ ॥ बाहिर

अन्नंवस्त्रंजलंद्रव्यमन्यद्वादीयतेचयत् ॥ प्रेतशब्देनयद्दत्तंमृतस्यानंत्यदायकम् ॥ ३१ ॥ तस्मादादिदि[illegible]दूर्ध्वंप्राक्सपिंडीवि
धानतः ॥ योषितःपुरुषस्यापिप्रेतशब्दंसमुच्चरेत् ॥ ३२ ॥ प्रथमेऽहनियत्पिंडोदीयतेविधिपूर्वकं ॥ तेनैवविधिनान्नेननव
पिंडान्प्रदापयेत् ॥ ३३ ॥ नवमेदिवसेचैवसपिंडैःसकलैर्जनैः ॥ तैलाभ्यंगःप्रकर्तव्योमृतकस्वर्गकाम्य[illegible] ॥ ३४ ॥ ब
हिःस्नात्वागृहीत्वाचदूर्वालाजसमन्विताः ॥ अग्रतःप्रमदांकृत्वासमागच्छेन्मृतालयं ॥ ३५ ॥ दूर्वावत्कुलवृद्धिस्तेलाजा
इवविकासता ॥ एवमुक्त्वात्यजेद्गेहेलाजांदूर्वासमन्वितान् ॥ ३६ ॥ दशमेऽहनिमांसेनपिंडंदद्यात्खगेश्वर ॥ माषेणतन्नि
षे[illegible]द्वाकलौनपलपैतृकम् ॥ ३७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

[illegible]न करके, दूध, चांवल, लेकर स्त्रियोंको अगाडी करकै, मरेहुवेके स्थानमें जाना ॥ ३५ ॥ दूर्वाकी जैसी तुम्हारे कुलकी वृद्धि [illegible] चावलोंजैसे विकसित हों ऐसे कहकर, दूधसहित चा[illegible]ल घरमें डालने ॥ ३६ ॥ हे गरुड़! दशवे दिन मांससे पिंड देना कलियुगमें [illegible]म्के निषेधमें उड़दोंकों देना ॥ ३७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दशवें दिन बांधवोंको मुंडनसहित क्षौर करना. क्रिया करनेवाले पुत्रका फेर मुंडन करना ॥ ३८ ॥ मिष्टान्नसे दश दिनोंमें एक ब्राह्मण जिमाना. हाथ जोड़, हरिको ध्यानकर, प्रेतकी मुक्तिकी प्रार्थना करना ॥ ३९ ॥ अतसीके पुष्प जैसा घनश्याम स्वरूप, पीतांबर वस्त्र, अखंडित स्वरूप ऐसे गोविंदको जो नमस्कार कर्तेहैं उनके भय नहीं विद्यमान है. ॥ ४० ॥ नहींहै आदि नाश ऐसे देव शंख चक्र गदा धारणकरे, अक्षय, कमलजैसे नेत्र ऐसे भगवान प्रेतको मोक्ष देवैं ॥ ४१ ॥ ऐसे प्रार्थनाको मंत्र श्राद्धके अंतमें नि-

दशमेदिवसेक्षौरंबांधवानांससमुंडनं ॥ क्रियाकर्तुःसुतस्यापिपुनर्मुंडनमाचरेत् ॥ ३८ ॥ मिष्टान्नैर्भोजयेदेकंदिनेषुदशसुद्विजम् ॥ प्रार्थयेत्प्रेतमुक्तिंचहरिंध्यात्वाकृतांजलिः ॥ ३९ ॥ अतसीपुष्पसंकाशंपीतवाससमच्युतं ॥ येनमस्यंतिगोविंदंनतेषांविद्यतेभयं ॥ ४० ॥ अनादिनिधनोदेवःशंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यःपुंडरीकाक्षप्रेतमोक्षप्रदोभव ॥ ४१ ॥ इतिसंप्रार्थनामंत्रंश्राद्धांतेप्रत्यहंपठेत् ॥ स्नात्वागत्वागृहेदत्वागोग्रासंभोजनंचरेत् ॥ ४२ ॥ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेदशगात्रविधिनिरूपणोनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ गरुडउवाच ॥ एकादशदिनस्यापिविधिंब्रूहिसुरेश्वर ॥ वृषोत्सर्गविधानंचवदमेजगदीश्वर ॥ १ ॥ ॥

त्य पढ़ना. स्नान कर, घरमें जाय, गोग्रास देकर, भोजन करना ॥ ४२ ॥ इति श्रीगरुडपुराणेसारोद्धारस्य ज्ञानबोधनीभाषाटीकायांदशगात्रविधिनिरूपणोनाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ अब गरुड़ कहतेहैं—हे सुरेश्वर! ग्यारहवें दिनकी विधि हमारेसे कहो. हे जगदीश्वर! वृषोत्सर्गविधानभी मेरेसे कहो ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीभगवान् कहते हैं—ग्यारहवें दिन प्रातःकाल जलके सरोवरपर जाना वहां पारलौकिक सब क्रिया करनी ॥ २ ॥ वेदशास्त्रमें परायण ऐसे ब्राह्मणोंको निमंत्रण करना. हाथ जोड़, नमस्कार कर, प्रेतकी मुक्तिकी प्रार्थना करना ॥ ३ ॥ स्नान संध्यादिक कर्म करके, आचार्यभी पवित्र होवे. ग्यारहवें दिनके योग्यविधानविधिसे करने ॥ ४ ॥ दश दिनतक तो बिगर मंत्र श्राद्ध नामगोत्रसे करने. ग्यारहवें दिन प्रेतको मंत्रसहि-

श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ एकादशेऽह्निगंतव्यंप्रातरेवजलाशये ॥ और्ध्वदेहिक्रियासर्वाकरणीयाप्रयत्नतः ॥ २ ॥ निमंत्रये
द्ब्राह्मणांश्चवेदशास्त्रपरायणान् ॥ प्रार्थयेत्प्रेतमुक्तिंचनमस्कृत्यकृतांजलिः ॥ ३ ॥ स्नानसंध्यादिकंकृत्वाह्याचार्योऽपिशुचि
र्भवेत् ॥ विधानंविधिवत्कुर्यादेकादशदिनोचितम् ॥ ४ ॥ अमंत्रंकारयेच्छ्राद्धंदशाहंनामगोत्रतः ॥ एकादशेऽह्निप्रेतस्यद
द्यात्पिंडंसमंत्रकम् ॥ ५ ॥ सौवर्णंकारयेद्विष्णुंब्रह्माणंरौप्यकंतथा ॥ रुद्रस्ताम्रमयःकार्योयमोलोहमयःखग ॥ ६ ॥ पश्चिमे
विष्णुकलशंगंगोदकसमन्वितम् ॥ तस्योपरिन्यसेद्विष्णुंपीतवस्त्रेणवेष्टितम् ॥ ७ ॥ पूर्वेतुब्रह्मकलशंक्षीरोदकसमन्वितम् ॥
ब्रह्माणंस्थापयेत्तत्रश्वेतवस्त्रेणवेष्टितम् ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

त पिंड देवे ॥ ५ ॥ सुवर्णके विष्णु करावे, रूपाके ब्रह्मा करावे, तामके महादेव करावे, हे गरुड़! लोहेके यम करावे ॥ ६ ॥ पश्चिममें विष्णुको कलश स्थापन करे उसमें गंगोदक भरे उस कलशपर पीतांबर पहरे विष्णुको स्थापित करे ॥ ७ ॥ पूर्वमें ब्रह्मकलश क्षीरोदकसहित स्थापित करे तहां श्वेतवस्त्र पहिरे ब्रह्माको स्थापित करे ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उत्तरमें रुद्रकलश सहत घृतसे भरा स्थापित करे उसपर रक्तवस्त्र पहिरे रुद्रको स्थापित करे ॥ ९ ॥ दक्षिणमें यमघट इंद्रोदकसहित स्थापित करे काले वस्त्र पहिराय, उसपर यमको स्थापित करे ॥ १० ॥ मध्यमें मंडल करना उसपर पुत्र कौशिक ब्राह्मणको स्थापित करे पीछे दक्षिणाभिमुख हो, अपसव्यसे तर्पण करे ॥ ११ ॥ विष्णु, ब्रह्मा, शिव, धर्म इन्होंको वेदमंत्रोंसे तर्पण करे. होम करके पीछे, दशघटादि श्राद्ध

उत्तरस्यांरुद्रकुंभंपूरितंमधुसर्पिषा ॥ श्रीरुद्रंस्थापयेत्तत्ररक्तवस्त्रेणवेष्टितम् ॥ ९ ॥ दक्षिणस्यांयमघटमिंद्रोदकसमन्वितम् ॥ कृष्णवस्त्रेणसंवेष्ट्यतस्योपरियमंन्यसेत् ॥ १० ॥ मध्येतुमंडलंकृत्वास्थापयेत्कौशिकंसुतः ॥ दक्षिणाभिमुखोभूत्वाऽपसव्येनचतर्पयेत् ॥११॥ विष्णुंविधिंशिवंधर्मंवेदमंत्रैश्चतर्पयेत् ॥ होमंकृत्वाचरेत्पश्चाच्छ्राद्धंदशघटादिकम् ॥ १२ ॥ गोदानंचततोदद्यात्पितृणांतारणायवै ॥ गौरेषाहिमयादत्ताप्रीतयेतेऽस्तुमाधव ॥ १३ ॥ उपभुक्तंतुतस्यासीद्वस्त्रभूषणवाहनम् ॥ घृतपूर्णकांस्यपात्रंसप्तधान्यंतदीप्सितम् ॥ १४ ॥ तिलाद्यष्टमहादानमंतकालेनचेत्कृतम् ॥ शय्यासमीपेधृत्वैतद्दानंतस्याःप्रदापयेत् ॥ १५ ॥ ॥ ॥

करना ॥ १२ ॥ पीछे गोदान देना, पितृश्वरोंको तिरानेके लिये यह गौ मैनें दीहै सो हे माधव! तुम्हारी प्रसन्नताके अर्थ होवे ॥ १३ ॥ उसका भोगाहुवा जो वस्त्र आभूषण वाहन घृतसे भर, कांशाका पात्र सप्तधान्य ए उसके वांछित ॥ १४ ॥ तिलादि अष्ट महादान जो अंतकालमें नहीं किया हो तो शय्याके समीप धारण कर, उस शय्याका दान देंना ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥

ब्राह्मणके चरण धोकर, वस्त्रादिकोंसे पूजने उसको सिद्ध किया अन्न देना. मोदक, अपूप, दूध ए देने ॥ १६ ॥ पुत्र तिस समयमें शय्यापर सुवर्णको पुरुष स्थापित करे. पूजा करके, विधिसे शय्या देवे ॥ १७ ॥ प्रेतकी मूर्तिसहित सर्वसामग्रीसहित हे ब्राह्मण! यह प्रेतशय्या तुमको मैने अर्पण करी है ॥ १८ ॥ ऐसे आचार्य कुटुंबी ब्राह्मणको देना पीछे परिक्रमा करके नमस्कार करके देवे ॥ १९ ॥ ऐसे शय्या देनेसे नव-

प्रक्षाल्यविप्रचरणौपूजयेदंबरादिभिः ॥ सिद्धान्नंतस्यदातव्यंमोदकाऽपूपकाःपयः ॥ १६ ॥ स्थापयेत्पुरुषंहैमंशय्योपरि तदासुतः ॥ पूजयित्वाप्रदातव्यामृतशय्यायथोदिता ॥ १७ ॥ प्रेतस्यप्रतिमायुक्तासर्वोपकरणैर्वृता ॥ प्रेतशय्यामयाह्येषा तुभ्यंविप्रनिवेदिता ॥ १८ ॥ इत्याचार्यायदातव्याब्राह्मणायकुटुंबिने ॥ ततःप्रदक्षिणीकृत्यप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥ १९ ॥ एवंशय्याप्रदानेनश्राद्धेननवकादिना ॥ वृषोत्सर्गविधानेनप्रेतोयातिपरांगतिम् ॥ २० ॥ एकादशेह्निविधिनावृषोत्सर्गंस माचरेत् ॥ हीनांगंरोगिणंबालंत्यक्त्वाकुर्यात्सलक्षणम् ॥ २१ ॥ रक्ताक्षःपिंगलोयस्तुरक्तःशृंगेगलेखुरे ॥ श्वेतोदरःकृष्णपृ ष्ठोब्राह्मणस्यविधीयते ॥ २२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कादि श्राद्ध करनेसे वृषोत्सर्ग विधिसे प्रेत परम गतिको प्राप्त होता है ॥ २० ॥ ग्यारहवें दिन विधिसे वृषोत्सर्गआचरण करे. हीन अंग, रोगी, बालक इन्होंको त्यागके, लक्षणोंसहित करे ॥ २१ ॥ लालनेत्र और जो पीला हो, शृंग गला और खुरोंमें रक्त हो, सपेद उदर हो, काली पीठ हो, ऐसा वृषोत्सर्ग ब्राह्मणको करना ॥ २२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जिसको सचिक्कण वर्ण हो और लाल होय वो क्षत्रियको कह्या है पीलवर्णको वैश्यको कह्या है कृष्णवर्णको शूद्रको कह्या है ॥ २३ ॥ जो सब अंगमें पीला होय पूंछ पदोंमें सपेद होय उसको पिंगवृष कहते हैं वो पितृश्वरोंको प्रीति बढ़ाता हैं ॥ २४ ॥ जिस वृषके चरण, मुख, पूंछ सपेद हैं जो लाषके रसजैसा वर्णका है उसको नीलवृष ऐसा कहते हैं ॥ २५ ॥ जो वर्णसे लोहित है, मुख और पूंछसे सपेद है, खुर

सुस्निग्धवर्णोयोरक्तःक्षत्रियस्यविधीयते ॥ पीतवर्णश्चवैश्यस्यकृष्णःशूद्रस्यशस्यते ॥ २३ ॥ यस्तुसर्वांगपिंगःस्याच्छ्वेतःपुच्छे पदेषुच ॥ सपिंगोवृषइत्याहुःपितृणांप्रीतिवर्धनः ॥ २४ ॥ चरणास्तुमुखंपुच्छंयस्यश्वेतानिगोपतेः ॥ लाक्षारससवर्णोयःस नीलइतिकीर्तितः ॥ २५ ॥ लोहितोयस्तुवर्णेनमुखेपुच्छेचपांडुरः ॥ पिंगःखुरविषाणाभ्यांरक्तनीलोनिगद्यते ॥ २६ ॥ स र्वांगेष्वेकवर्णोयःपिंगःपुच्छेखुरेषुयः ॥ तंनीलपिंगमित्याहुःपूर्वजोद्धारकारकम् ॥ २७ ॥ पारावतसवर्णस्तुललाटेतिलका न्वितः ॥ तंबभ्रुनीलमित्याहुःपूर्णसर्वांगशोभनम् ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

और शींगोंसे पीला है उसको रक्तनील कहते हैं ॥ २६ ॥ जो सर्व अंगमें एकसा वर्ण हो, पूंछ और खुरोंमें पीला हो उसको नीलपिंग कहते हैं वोभी पितृश्वरोंका उद्धार करता है ॥ २७ ॥ कबूतरजैसा वर्णका हो, ललाटमें तिलक हो, उसको बभ्रुनील ऐसे कहते हैं उसको पूर्णअंग और सर्वअंगसे शोभित लेना ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जो सबशरीरमें नीला होय दोनों नेत्रोंमें लाल होय उसकोभी महानील कहते हैं. नील पांच प्रकारका है ॥ २९ ॥ उस वृषको अवश्य छोड़ना वृषको घरमें नहीं रखना तिसकी इस लोकमें पुरातनी कथा चलती है ॥ ३० ॥ बहोत पुत्रोंकी वांछा करनी कारण बहोत हों तो कोई एक गयामें ज़ाता है गौरी अर्थात् अष्ट वर्षकी कन्याको विवाह करता है वा नील वृष छोड़ता हैं ॥ ३१ ॥ वही पुत्र माना है जो

नीलःसर्वशरीरेषुरक्तश्चनयनद्वये ॥ तमप्याहुर्महानीलंनीलःपंचविधःस्मृतः ॥ २९ ॥ अवश्यमेवमोक्तव्योनसधार्योगृहेभवेत् ॥ तदर्थमेषाचरतिलोकेगाथापुरातनी ॥ ३० ॥ एष्टव्याबहवःपुत्रायद्येकोपिगयांव्रजेत् ॥ गौरींविवाहयेत्कन्यांनीलंवावृषमुत्सृजेत् ॥ ३१ ॥ सएवपुत्रोमंतव्योवृषोत्सर्गंतुयश्चरेत् ॥ गयायांश्राद्धदाताचयोऽन्योविष्ठासमःकिल ॥ ३२ ॥ रौरवादिषुयेकेचित्पच्यंतेयस्यपूर्वजाः ॥ वृषोत्सर्गेणतान्सार्वांस्तारयेदेकविंशतिम् ॥ ३३ ॥ वृषोत्सर्गंकिलेच्छंतिपितरःस्वर्गताअपि ॥ अस्मद्वंशेसुतःकोऽपिवृषोत्सर्गंकरिष्यति ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥

माता पिताके संग वृषोत्सर्ग करता है. जो गयामें श्राद्ध देता है और यह नहीं करनेवाला विष्ठासम कहा है ॥ ३२ ॥ रौरवादि नरकोंमें जिसके पितृश्वर पचते हैं वे सब एकविंश पीढ़ीतक वृषोत्सर्गसे तिरते हैं ॥ ३३ ॥ वृषोत्सर्ग किया तो निश्चय पितृश्वर स्वर्गमें गयेभी इच्छा करते हैं कि– हमारे वंशमें कोई पुत्र वृषोत्सर्ग करैगा ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उस वृषके त्यागनेसे हम समग्र परमगतिको जावैंगे. सब यज्ञोंमें हमारेको वृषयज्ञ परम मुक्ति दाता है ॥ ३५ ॥ तिसीसे पितृश्वरोंकी मुक्तिके लिये वृषयज्ञ आचरण करना यथोक्त विधिसे संपूर्ण यत्नसे करना ॥ ३६ ॥ ग्रहोंको स्थापन करके, उन उनके मंत्रोंसे पूजन करना. शास्त्रोक्त विधिसे होम करना. पीछे वृषकी पूजा करनी ॥ ३७ ॥ बछरा बछिया लाकर, उनके कंकण बांधना उस वक्त विवाहविधिसे स्तंभ रोपना

तदुत्सर्गाद्वयंसर्वेयास्यामःपरमांगतिम् ॥ सर्वयज्ञेषुचास्माकंवृषयज्ञोहिमुक्तिदः ॥ ३५ ॥ तस्मात्पितृविमुक्त्यर्थंवृषयज्ञंसमाचरेत् ॥ यथोक्तेनविधानेनकुर्यात्सर्वप्रयत्नतः ॥ ३६ ॥ ग्रहाणांस्थापनंकृत्वातत्तन्मंत्रैश्चपूजनं ॥ होमंकुर्याद्यथाशास्त्रंपूजयेद्वृषमातुरः ॥३७॥ वत्संवत्सींसमानाय्यबध्नीयात्कंकणंतयोः ॥ वैवाह्येनविधानेनस्तंभमारोपयेत्तदा ॥ ३८ ॥ स्नापयेच्चवृषंवत्सींरुद्रकुंभोदकेनच ॥ गंधमाल्यैश्चसंपूज्यकारयेच्चप्रदक्षिणाम् ॥ ३९ ॥ त्रिशूलंदक्षिणेपार्श्वेवामेचक्रंप्रदापयेत् ॥ तंविमुच्यांजलिंबध्वापठेन्मंत्रमिमंसुतः ॥ ४० ॥ धर्मस्त्वंवृषरूपेणब्रह्मणानिर्मितःपुरा ॥ तवोत्सर्गप्रदानेनतारयस्वभवार्णवात् ॥ ४१ ॥ ॥ ॥

॥ ३८ ॥ वृषका और बछियाका रुद्रकुंभके कलशसे स्नान कराना गंधमालासे पूजन करके, प्रदक्षिणा करनी ॥ ३९ ॥ दक्षिणबाजूमें त्रिशूल, वामबाजूमें चक्र देना. पीछे उसको छोड़के, हाथ जोड़, पुत्र यह मंत्र पढ़ै ॥ ४० ॥ तुम साक्षात् धर्म हो 'वृषरूपसे तुमको पहले ब्रह्माने रचा है सो तुम्हारे छोड़नेके दानसे पितृश्वरोंको भवसागरसे तिरावो ॥ ४१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ऐसे मंत्रोंसे नमस्कार कर, बछरा बछिया छोड़ना. हे गरुड़! उनको मैं कामना देता हूं प्रेतको मोक्ष देताहौं ॥ ४२ ॥ तिसीसे इस वृषोत्सर्गको करना इसके फलको जीवता करै तौभी प्राप्त होताहै अपुत्र आप करनेंसे परमगतिको सुखसे जाताहै ॥ ४३ ॥ कार्तिकआदि शुभ महीनोमें, उत्तरायण सूर्यमें, शुक्लपक्ष अथवा कृष्णपक्षमें, द्वादशी आदितिथियोंमें ॥ ४४ ॥ दोनों ग्रहणोंमें, पवित्र तीर्थमें, दोनों अयनोंमें, अर्थात् मेष तुलाकी

इतिमंत्रान्नमस्कृत्यवत्संवत्सींमनुत्सृजेत् ॥ वरदोऽहंसदातस्यप्रेतमोक्षंददामिच ॥ ४२ ॥ तस्मादेषःप्रकर्तव्यस्तत्फलंजीवतोभवेत् ॥ अपुत्रस्तुस्वयंकृत्वासुखंयातिपरांगतिम् ॥ ४३ ॥ कार्तिकादौशुभेमासेचोत्तरायणगेरवौ ॥ शुक्लपक्षेऽथवा कृष्णेद्वादश्यादितिथौतथा ॥ ४४ ॥ ग्रहणद्वितयेचैवपुण्यतीर्थेऽयनद्वये ॥ विषुवद्वितयेचापिवृषोत्सर्गंसमाचरेत् ॥ ४५ ॥ शुभलग्नेमुहूर्तेचशुचौदेशेसमाहितः ॥ ब्राह्मणंतुसमाहूयविधिज्ञंशुभलक्षणम् ॥ ४६ ॥ जपैर्होमैस्तथादानैःप्रकुर्यादेहशोधनम् ॥ पूर्ववत्सकलंकृत्यंकुर्याद्धोमादिलक्षणं ॥ ४७ ॥ शालग्रामंचसंस्थाप्यवैष्णवंश्राद्धमाचरेत् ॥ आत्मश्राद्धंततःकुर्याद्दद्याद्दानंद्विजन्मने ॥ ४८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

संक्रांतिके दिनोमें इन्होंमें वृषोत्सर्ग करना ॥ ४५ ॥ शुभदेशमें शुभलग्न और शुभमुहूर्तमें सावधान होकर, विधिका ज्ञाता शुभ लक्षणवाले ब्राह्मणको बुलाकर ॥ ४६ ॥ जप होम दानसे देहशुद्धि करनी पहलेके जैसे होमादि लक्षण सब कृत्य करने ॥ ४७ ॥ शालिग्राम भगवानको स्थापित करके, वैष्णवश्राद्ध करना पीछे आत्मश्राद्ध करके, ब्राह्मणके अर्थ दान देना ॥ ४८ ॥ ॥ ॥ ॥

ऐसे हे गरुड़ ! जो पुत्रवान वा अपुत्रवान करताहै उसको सब कामको फल वृषोत्सर्गसे होताहै ॥ ४९ ॥ अग्निहोत्रादि यज्ञोंसे, नाना प्रकारके दानोंसे उस गतिको नहीं प्राप्त होताहै जिस गतिको वृषोत्सर्गसे होताहै ॥ ५० ॥ बाल्य अवस्थामें, कौमारमें, पौगंडमें, यौवनमें, वृद्धामें जो पाप किया है वो सब वृषोत्सर्गसे नष्ट होताहै इसमें संदेह नहींहै ॥ ५१ ॥ मित्रद्रोही, कृतघ्नी, मदिरा पीनेवाला, गुरुकी शय्याका गामी,

एवंयःकुरुतेपक्षिन्नपुत्रस्यापिपुत्रवान् ॥ सर्वकामफलंतस्यवृषोत्सर्गात्प्रजायते ॥ ४९ ॥ अग्निहोत्रादिभिर्यज्ञैर्दानैश्चविविधैरपि ॥ नतांगतिमवाप्नोतिवृषोत्सर्गेणयांलभेत् ॥ ५० ॥ बाल्येकौमारेपौगंडेयौवनेवार्धकेकृतं ॥ यत्पापंतद्विनश्येतवृषोत्सर्गान्नसंशयः ॥ ५१ ॥ मित्रद्रोहीकृतघ्नश्चसुरापोगुरुतल्पगः ॥ ब्रह्महाहेमहारीचवृषोत्सर्गात्प्रमुच्यते ॥ ५२ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनवृषयज्ञंसमाचरेत् ॥ वृषोत्सर्गसमंपुण्यंनास्तिताक्ष्यंजगत्त्रये ॥ ५३ ॥ पतिपुत्रवतीनारीद्वयोरग्रेमृतायदि ॥ वृषोत्सर्गंनैवकुर्याद्दद्याद्गांचपयस्विनीम् ॥ ५४ ॥ वृषभंवाहयेद्यस्तुस्कंधेपृष्ठेचखेचर ॥ सपतेन्नरकेघोरेयावदाभूतसंप्लवम् ॥ ५५ ॥ ॥ ॥

ब्राह्मणकी हत्या करनेवाला, सुवर्ण चोरनेवाला ए पापी वृषोत्सर्गसे सर्व पापोंसे छूटते हैं ॥ ५२ ॥ तिसीसे सर्व प्रयत्नसे वृषयज्ञ करना. हे गरुड़! वृषोत्सर्गजैसा पुण्य त्रिलोकीमें नहींहै ॥ ५३ ॥ पति पुत्रके जीवते जो स्त्री मरजाय तो वृषोत्सर्ग नहीं करना दूधवाली गौका दान देना ॥ ५४ ॥ वृषको जो कंधा पीठपर वाहता है हे गरुड़! वो मनुष्य कल्पपर्यंत घोर नरकोंमें पड़ताहै ॥ ५५ ॥ ॥

जो निर्दयी वृषको मूठी, लकड़ीसें मारताहै वो मनुष्य कल्पपर्यंत यमराजकी यातना भोगताहै ॥ ५६ ॥ ऐसे वृषोत्सर्ग करके, षोड़श श्राद्ध करने सपिंडी करनेके पीछे सो मै तुमको कहताहौं ॥ ५७ ॥ मृतकस्थानमें, द्वारमें, अर्द्धमार्गमें, चितामें, शवके हाथमें, अस्थि-संचयसमयमें, ऐसे छे पिंड और दश पिंड दश दिनमें ॥ ५८ ॥ ए मलीनषोड़शी प्रथम कहीहै. दूसरी मध्यषोडशी तुमको कहताहौं

वृषभंताडयेद्यस्तुनिर्दयोमुष्टियष्टिभिः ॥ सनरःकल्पपर्यंतंभुंजतेयमयातनाम् ॥ ५६ ॥ एवंकृत्वावृषोत्सर्गंकुर्याच्छ्राद्धानिषोडश ॥ सपिंडीकरणादर्वाक्कृतदहंकथयामिते ॥ ५७ ॥ स्थानेद्वारेऽर्धमार्गेचचितायांशवहस्तकें ॥ अस्थिसंचयनेषष्ठोदशपिंडादशाह्निकाः ॥ ५८ ॥ मलिनंषोडशंचैतत्प्रथमंपरिकीर्तितम् ॥ अन्यच्चषोडशंमध्येद्वितीयंकथयामिते ॥ ५९ ॥ प्रथमंविष्णवेदद्याद्द्वितीयंश्री शिवायच ॥ याम्यायपरिवारायतृतीयंपिंडमुत्सृजेत् ॥ ६० ॥ चतुर्थंसोमराजायहव्यवाहायपंचमम् ॥ कव्यवाहायषष्ठंचदद्यात्का लायसप्तमम् ॥ ६१ ॥ रुद्रायचाष्टमंदद्यान्नवमंपुरुषायच ॥ प्रेतायदशमंचैवैकादशंविष्णवेनमः ॥ ६२ ॥ ॥

॥ ५९ ॥ प्रथम विष्णुको पिंड देना, दूजा शिवको देना, तीजा यमके परिवारको देना, ॥ ६० ॥ चौथा सोमराजको देना, पंचम हव्यवाह अग्निको देना, छठा कव्यवाहको देना, सप्तम कालको देना, ॥ ६१ ॥ महादेवको अष्टम पिंड देना, नवमा पुरुषको देना, प्रेतको दशमा देना, ग्यारहवां विष्णुको देना, ॥ ६२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

बारहवां ब्रह्माको देना, विष्णुको तेहरवां देना, चौदहवां शिवको देना, यमको पंद्रहवां देना ॥ ६३ ॥ हे गरुड़! तत्पुरुषको सोलहवां पिंड देना. ए मध्यमषोड़शी तत्वज्ञाता पुरुष कहते हैं ॥ ६४ ॥ बारह महीनेमें बारह पाक्षिक, त्रिपाक्षिक, ऊनषाण्मासिक, उनाब्दिक ए उत्तम षोड़शी मैनें तुमको कही है सो खीर पकाकर, हे गरुड़! ग्यारहवें दिन करनी ॥ ६५॥ ६६ ॥ ऐसे तीनो षोड़शियोंके अड़तालीश श्राद्ध प्रेतपना-

द्वादशंब्रह्मणेदद्याद्विष्णवेचत्रयोदशम् ॥ चतुर्दशंशिवायैवयमायदशपंचकम् ॥ ६३ ॥ दद्यात्तत्पुरुषायैवपिंडंषोडशकंखग ॥ मध्यंषोडशकंप्राहुरेतत्तत्त्वविदोजनाः ॥ ६४ ॥ द्वादशप्रतिमासेषुपाक्षिकंचत्रिपाक्षिकम् ॥ न्यूनषाण्मासिकंपिंडंदद्यान्न्यूनाब्दिकंतथा ॥ ६५ ॥ उत्तमंषोडशंचैतन्मयातेपरिकीर्तितम् ॥ श्रपयित्वाचरुंतार्क्ष्यकुर्यादेकादशेहनि ॥ ६६ ॥ चत्वारिंशत्तथैवाष्टौश्राद्धंप्रेतत्वनाशनम् ॥ यस्यजातंविधानेनसभवेत्पितृपंक्तिभाक् ॥ ६७ ॥ पितृपंक्तिप्रवेशार्थंकारयेत्षोडशत्रयम् ॥ एतच्छ्राद्धविहीनश्चेत्प्रेतोभवतिसुस्थिरम् ॥ ६८ ॥ यावन्नदीयतेश्राद्धंषोडशत्रयसंज्ञकम् ॥ स्वदत्तंपरदत्तंचतावन्नैवोपतिष्ठते ॥ ६९ ॥ ॥

को नाश करते हैं. जिसकी विधिसे होते हैं वो पितृश्वरोंकी पंक्तिमें प्राप्त होता है ॥ ६७ ॥ सो पितृपंक्तिमें प्रवेश होनेको तीनों षोड़शी करनी. ए कहेभये अड़तालीश श्राद्धोंसे रहित बहोत कालतक प्रेत रहता है ॥ ६८ ॥ जहांतक तीनों षोड़शीका श्राद्ध प्राणीको नहीं देता है तहांतक अपना वा दूसरेका दिया नहीं मिलता है ॥ ६९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तिसीसें पुत्र त॰ ॱ षोड़शी करे अथवा स्त्री अपने पतिकी करै तौ अनंत कल्याण होताहैं ॥ ७० ॥ मरेहुवे पतिकी जो स्त्री ऊर्ध्वदैहिक क्रि-
या करतीहै तथा क्ष .तिथिमें, ॱ ाश्विनमें, श्राद्धपक्षमें, श्राद्ध करतीहै उसको मैं सती कहताहूं ॥ ७१ ॥ वह स्त्री तौ पतिके उपकारके वास्ते
जीवतीहै उसको जीवन सफल है. जो मरेहुवे पतिको सेवतीहै ॥ ७२ ॥ अथवा कोई जो प्रमादसे अग्नि वा जलसे मरंजाय तौ उसके संस्कार-

तस्मात्पुत्रेणकर्तव्यंविधिनाषोडशत्रयम् ॥ भर्तुर्वाकुरुतेपत्नीतस्यश्रेयोह्यनंतकम् ॥ ७० ॥ संपरेतस्ययापत्युःकुरुतेचौर्ध्वदेहिकम् ॥
क्षयाहंपाक्षिकश्राद्धंसासतीत्युच्यतेमया ॥ ७१ ॥ उपकारायसाभर्तुर्जीवत्येषापतिव्रता ॥ जीवितंसफलंतस्यायामृतंस्वामिनंभजेत्
॥ ७२ ॥ अथकश्चित्प्रमादेनम्रियतेवह्निवारिभिः ॥ संस्कारप्रमुखंकर्मसर्वंकुर्याद्यथाविधि ॥ ७३ ॥ प्रमादादिच्छयावापिनागाद्वा
म्रियतेयदि ॥ पक्षयोरुभयोर्नागंपंचमीषुप्रपूजयेत् ॥ ७४ ॥ कुर्यात्पिष्टमयींलेख्यांनागभोगाकृतिंभुवि ॥ अर्चयेत्तांसितैःपुष्पैः
सुगंधैश्चंदनेनच ॥ ७५ ॥ प्रदद्याद्धूपदीपौचतंडुलांश्चतिलान्क्षिपेत् ॥ आमपिष्टंचनैवेद्यंक्षीरंचविनिवेदयेत् ॥ ७६ ॥ ॥

आदि सर्व कर्म यथाविधि करना ॥ ७३ ॥ प्रमादसे वा इच्छासे जो कदाचित् सर्पसे मर जाय तो दोनोपक्षमें पंचमीको नाग पूजना ॥ ७४ ॥
आटाकी वा पृथ्वीपर लिखी हुई सर्पके शरीरकी आकृति करना. उसको सपेद सुगंधित पुष्पोंसे चंदनसे पूजना ॥ ७५ ॥ धूप, दीप, देना.
चांवल और तिल डालना, आटाकी नैवेद्य, दूध, अर्पण करना ॥ ७६ ॥ ॥ ॥ ॥

ब्राह्मणको शक्तिसे सुवर्णको सर्प और गोदान देना, पीछे हाथ जोड़के बोलना. हमारे पर नागराजा प्रसन्न होवै ॥ ७७ ॥ फेर उनकी नारायणबलिकी क्रिया करनी. तिससे स्वर्गमें वास प्राप्त होताहै और सब पापोंसे छूटताहै ॥ ७८ ॥ ऐसे सर्वक्रिया करके, जलसे भरके, अन्नसहित घटदान वर्षपर्यंत नित्य देना वा एकदिवसमें ग्यारहवें दिन तीनशो साठ पिंड और जलांजलि देनी ॥ ७९ ॥ ग्यारहवें दिवस कर्म करके, पीछे

सौवर्णशक्तितोनागंगांचदद्याद्द्विजन्मने ॥ कृतांजलिस्ततोब्रूयात्प्रीयतांनागराडिति ॥ ७७ ॥ पुनस्तेषांप्रकुर्वीतनारायणबलिक्रियाम् ॥ तयालभंतेस्वर्वासंमुच्यंतेसर्वपातकैः ॥ ७८ ॥ एवंसर्वक्रियांकृत्वाघटंसान्नंजलान्वितम् ॥ दद्यादब्दंयथासंख्यान्पिंडान्वासजलान्क्रमात् ॥ ७९ ॥ एवमेकादशेकृत्वाकुर्यात्सापिंडनंततः ॥ शय्यापदानांदानंचकारयेत्सूतकेगते ॥ ८० ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेएकादशदिनविधिनिरूपणेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ सपिंडनविधिंब्रूहिसूतकस्यचनिर्णयं ॥ शय्यापदानांसामग्रींतेषांचमहिमाप्रभो ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

बारहवें दिन सपिंडीकर्म करना और सूतक निवृत्तहुवे शय्यादान तथा पददान देना ॥ ८० ॥ इति ज्ञानबोधिनीभाषाटीकायां एकादशदिनविधिनिरूपणो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ गरुड़जी पूछते हैं हे प्रभो! सपिंडनकी विधि कहो और सूतकके निर्णय कहो. शय्यादान पददानकी सामग्री कहो और उनका फल मेरे प्रति कहो ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अब भगवान कहतेहैं हे गरुड़ ! सुनो सपिंडीआदि अखिलक्रिया कहताहूं जिस सपिंडी क्रियासे प्रेतनामको त्यागके, पितृगणमें जाताहै ॥ २ ॥ जिन्होंका पिंड पितामह शिवादिकोंमें नहीं मिलाहै उन्होंको पुत्रोंसे दियाहुवा अनेक प्रकारका दान है तोभी नहीं मिलताहै ॥ ३ ॥ सपिंडी करे बिगर पुत्र सदा अशुद्ध रहता है कभी नहीं शुद्ध होताहै सूतकभी निवृत्त नहीं होताहै ॥४॥ तिसीसे पुत्रकरके, सूतकके अंतमें सपिंडन कर-

श्रीभग[illegible]वाच ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामिसापिंड्याद्यखिलांक्रियां ॥ प्रेतनामपरित्यज्ययथापितृगणेविशेत् ॥ २ ॥ नपिंडोमिलि त[illegible]षांपितामहशिवा[illegible]षु ॥ नोपतिष्ठंतिदानानिपुत्रैर्दत्तान्यनेकधा ॥ ३ ॥ अशुद्धःस्यात्सदापुत्रोनशुद्ध्यंतिकदाचन ॥ सूतकंन निवर्तेतसपिंडीकरणंवि[illegible]ा ॥ ४ ॥ तस्मात्पुत्रेणकर्तव्यंसूतकांतेसपिंडनम् ॥ सूतकंतेप्रवक्ष्यामिसर्वेषांचयथोचितं ॥ ५ ॥ ब्राह्म णस्तुदशाहेनक्षत्रियोद्वादशेहनि ॥ वैश्यःपंचदशाहेनशूद्रोमासेनशुध्यति ॥ ६ ॥ दशाहेनसपिंडास्तुशुद्ध्यंतिप्रेतसूतके ॥ त्रिरा त्रेणसकुल्यास्तुस्नात्वाशुध्यंतिगोत्रजाः ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ना तुमको सब वर्णोंको यथोचित सूतक कहता हूं ॥ ५ ॥ ब्राह्मण दश दिन रात्रिसे शुद्ध होताहै, क्षत्रिय बारह रात्रिसे शुद्ध होता है. वैश्य पन्द्रह रात्रि दिनसे, शूद्र एकमाससे शुद्ध होताहै ॥ ६ ॥ प्रेतसूतकमें दशदिनसे सपिंड अर्थात् चार पीढ़ीतकके शुद्ध होतेहैं, तीन रात्रिसे सकुल्य अर्थात् सातपीढ़ीतकके शुद्ध होतेहैं, गोत्रज अर्थात् दशवीं पीढ़ीतक स्नानमात्रसे शुद्ध होतेहैं ॥ ७ ॥ ॥ ॥

चौथ पुरुषतक यानी सपिंड दशरात्रीसे शुद्ध होताहै, पंचम पुरुष छह रात्रिसे, छट्ठा चारदिवससे, सातवां तीनदिनसे ॥ ८ ॥ अष्टम एकदिनसे नवमां दोपहरमें, दशवां स्नानमात्रसे. इस प्रकार मृतक और जन्मसूतक रहता है ॥९॥ देशांतरमें गया ऐसा जिसदिन सुनै उसीदिन जितने द-शदिनमेंसे बाकी रहैं उतने दिन अशुद्ध रहताहै ॥ १० ॥ जो दशदिन बीते बाद सुनैतौ तीनरात्रि अशुद्ध रहताहै. एक वर्ष व्यतीत हुवे सुनै तौ स्नानमात्रसे शुद्ध होता है ॥ ११ ॥ जो मृतक सूतकके आदिके दोभाग रहैं तबतक यानी छहदिनके मध्यमें दूसरा सूतक होजाय तौ आदि-

चतुर्थेदशरात्रंस्यात्षण्णिशाःपुंसिपंचमे ॥ षष्ठेचतुरहःप्रोक्तंसप्तमेचदिनत्रयम् ॥ ८ ॥ अष्टमेदिनमेकंतुनवमेप्रहरद्वयम् ॥ दशमे स्नानमात्रंहिमृतकंजन्मसूतकम् ॥ ९ ॥ देशांतरगतःकश्चिच्छृणुयाद्योह्यहर्निशम् ॥ यच्छेषंदशरात्रस्यतावदेवाशुचिर्भवेत् ॥ १० ॥ अतिक्रांतेदशाहेतुत्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ संवत्सरेव्यतीतेतुस्नानमात्राद्विशुध्यति ॥ ११ ॥ आद्यभागद्वयंयावन्मृतकस्यचसूतके ॥ द्वितीयेपतितेचाद्यात्सूतकाच्छुद्धिरिष्यते ॥ १२ ॥ आदंतजननात्सद्यआचौलान्नैशिकीस्मृता ॥ त्रिरात्रमाव्रतादेशाद्दशरात्रम तःपरम् ॥ १३ ॥ आजन्मनस्तुचौलांतंयत्रकन्याविपद्यते ॥ सद्यःशौचंभवेत्तत्रसर्ववर्णेषुनित्यशः ॥ १४ ॥ ॥

के सूतकसे दूसरा सूतक शुद्ध होताहै ॥ १२ ॥ दांत आनेके पहिले स्नानमात्रसे शुद्धि है, दांत आनेके पीछे चौलकर्मतक एक रात्रिसे शुद्धि है, चौलकर्मके पीछे उपवीतसंस्कारके पहले, तीनरात्रिसे शुद्धिहै इसके आगे दशरात्रिसे शुद्धि है ॥ १३ ॥ जन्मसे लेकर, चौलकर्मतक अर्थात् सत्ताईस मासतक जो कन्या मरजाय तौ स्नानमात्रसे शुद्ध होताहै ए सर्व वर्णोंमें नित्य है ॥ १४ ॥ ॥

सत्ताईस माससे अगाड़ी सगाईतक एकदिनसे शुद्धि है, इसके अगाड़ी बड़ी हुई कन्याको तीन रात्रिका अशौच है, ऐसा निश्चय है ॥ १५ ॥ वाग्दान अर्थात् सगाई करे पींछे पिता और वर दोनोंको तीन दिवसका कारण है और विवाह करे पीछे पतिकेही कारण रहता है और पिताके नहीं ॥ १६ ॥ जो छह मासके अंदर गर्भस्राव हो तो मासकी बराबर दिनोंसे उसकी माताके सूतक रहता है ॥ १७ ॥ इसके अगाड़ी छे माससे पीछे गर्भस्रावसे अपनी जातिमें कहा सूतक माताके होता है और सपिंडोंके गर्भस्रावमें स्नानमात्रसे शुद्धि होती है

ततोवाग्दानपर्यंतंयाव ेकाहमेवहि ॥ अतःपरंप्रवृद्धानांत्रिरात्रमितिनिश्चयः ॥ १५ ॥ वाग्प्रदानेकृतेतत्त्वज्ञेयंचोभयतस्त्र्यहम् ॥
पितुर्वरस्यचततोदत्तानांभर्तुरेवहि ॥ १६ ॥ षण्मासाभ्यंतरेयावद्गर्भस्रावोभवेद्यदि ॥ तदामाससमैस्तासांदिनसैःशुद्धिरिष्यते ॥१७॥
अतऊर्ध्वंस्वजात्युक्तमाशौचंतासुविद्यते ॥ सद्यःशौचंसपिंडानांगर्भस्यपतनेसति ॥ १८ ॥ सर्वेषामेववर्णानांसूतकेमृतकेऽपिवा ॥
दशाहाच्छुद्धिरित्येषकलौशास्त्रस्यनिश्चयः ॥ १९ ॥ आशीर्वादंदेवपूजांप्रत्युत्थानाभिवंदनम् ॥ पर्यंकेशयनंस्पर्शनकुर्यान्मृतसूतके ॥ २० ॥ संध्यादानंजपंहोमंस्वाध्यायंपितृतर्पणम् ॥ ब्रह्मभोज्यंव्रतंनैवकर्तव्यंमृतसूतके ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ १८ ॥ सब ए वर्णोंके जन्मसूतक और मृतकसूतकमें दशदिनसे शुद्धि है. कलियुगमें यह शास्त्रका निश्चय है ॥१९॥ आशीर्वाद, देवपूजा, प्रत्युत्थान, नमस्कार, शय्यापर सोना, स्पर्श ए मृतकसूतकमें नहीं करना ॥२०॥ संध्या, दान, जप, होम, वेदपठन, पितृतर्पण, ब्राह्मणभोजन, व्रत एभी मृतसूतकमें नहीं करना ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नित्यनैमित्तिक और काम्यकर्म जो सूतकमें आचरण करता है उसका पूर्वकृत नित्यादिक कर्म नाश होता है ॥ २२ ॥ चांद्रायणादिमहाव्रत-युक्त ब्रह्मचारी, महामंत्रोंसे पवित्र, अग्निहोत्री, ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण, संन्यासी, राजा इन्होंके सूतक नहीं है ॥२३॥ विवाह, उत्सव, यज्ञ इन्होंमें मृतसूतक हुवा उसका पूर्वकृत अन्नभोजन करना ए मनुप्रमाण कहा है ॥ २४ ॥ सूतकमें जो अजान दान लेता है उसको दोष नहीं है. देनेवाला दोषको प्राप्त होता है याचकको देनेसे ॥ २५ ॥ जो सूतकको गुप्त करके, ब्राह्मणको अन्न देता है. सूतक जानकरभी जो ब्राह्मण

नित्यंनैमित्तिकंकाम्यंसूतकेयःसमाचरेत् ॥ तस्यपूर्वकृतंनित्यादिकंकर्मविनश्यति ॥ २२ ॥ व्रतिनोमंत्रपूतस्यसाग्निकस्यद्विजस्य च ॥ ब्रह्मनिष्ठस्ययतिनोनहिराज्ञांचसूतकम् ॥ २३ ॥ विवाहोत्सवयज्ञेषुजातेचमृतसूतके ॥ तस्यपूर्वकृतंचान्नंभोज्यंतंमनुरब्रवीत् ॥ २४ ॥ सूतकेयस्तुगृह्णातितदज्ञानान्नदोषभाक् ॥ दातादोषमवाप्नोतियाचकायददन्नपि ॥ २५ ॥ प्रच्छाद्यसूतकंयस्तुददात्यन्नं द्विजायच ॥ ज्ञात्वागृह्णन्तियेविप्रादोषभाजस्तएवहि ॥ २६ ॥ तस्मात्सूतकशुद्ध्यर्थंपितुःकुर्यात्सपिंडनम् ॥ ततःपितृगणैःसार्धंपि तृलोकंसगच्छति ॥ २७ ॥ द्वादशाहेत्रिपक्षेवाषण्मासेवत्सरेऽपिवा ॥ सपिंडीकरणंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ २८ ॥ ॥

लेता है वे दोनों दोषभागी हैं ॥ २६ ॥ तिसीसे सूतककी शुद्धिके वास्ते पिताको सपिंडन करे. तिस सपिंडसे वो पिता पितृगणोंके संग पितृलोकमें जाता है ॥ २७ ॥ बारहवें दिन त्रिपक्ष श्राद्धमें, षाण्मासिक श्राद्धमें, सांवत्सर श्राद्धमें, तत्त्वद्रष्टा मुनियोंनें सपिंडीकरण कहा है ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हे गरुड़! मैने तो शास्त्रधर्मके अनुसार चारोंही वर्णोंको बारहवें दिन सपिंडन कर्म कहा है ॥ २९ ॥ कारण कलियुगके धर्मोंके अनंतपनासे पुरुषोंके आयुष्यका नाश होनेसे, शरीरकी अस्थिरतासे, बारहवें दिन श्रेष्ठ कहा है ॥ ३० ॥ उपवीत, संस्कार, उत्सवआदि, व्रतको, उद्यापन, विवाहादि, वृद्ध मरे हुवे पर नहीं होते हैं ॥ ३१ ॥ भिक्षुक भिक्षा नहीं लेता है, पितर हंतकार नहीं लेते हैं, नित्यनैमित्तिक कर्म लोप

मयातुप्रोच्यतेतार्क्ष्यशास्त्रधर्मानुसारतः ॥ चतुर्णामेववर्णानांद्वादशाहेसपिंडनं ॥ २९ ॥ आनंत्यात्कलिधर्माणांपुंसांचैवायुषःक्षयात् ॥ अस्थिरत्वाच्छरीरस्यद्वादशाहेप्रशस्यते ॥ ३० ॥ व्रतबंधोत्सवादीनिव्रतस्योद्यापनानिच ॥ विवाहादिर्भवेन्नैवमृतेचगृहमेधिनि ॥ ३१ ॥ भिक्षुर्भिक्षांनगृह्णातिहंतकारोनगृह्यते ॥ नित्यंनैमित्तिकंलुप्येद्यावत्पिंडंनमेलितम् ॥ ३२ ॥ कर्मलोपात्प्रत्यवायीभवेत्तस्मात्सपिंडनं ॥ निरग्निकःसाग्निकोवाद्वादशाहेसमाचरेत् ॥ ३३ ॥ यत्फलंसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुयत्फलम् ॥ तत्फलंसमवाप्नोतिद्वादशाहेसपिंडनात् ॥ ३४ ॥ अतःस्नात्वामृतस्थानेगोमयेनोपलेपिते ॥ शास्त्रोक्तेनविधानेनसपिंडींकारयेत्सुतः ॥ ३५ ॥ ॥ ॥

होता है, जहांतक पिंड नहीं मिलाया जाता है ॥ ३२ ॥ कर्मलोपसे प्रत्यवायी अर्थात् दोषभागी होता है. तिसीसे सपिंडीकर्म निरग्नि वा साग्निकको बारहवें दिन करै ॥ ३३ ॥ जो फल सर्व तीर्थोंमें स्नान करनेसे होता है, सर्व यज्ञ करनेसे जो फल होता है, वो फल बारहवें दिवस सपिंडी करनेसे होता है ॥ ३४ ॥ इसीसे स्नान करके, मरेहुवेके स्थानको गोबरसे लीपके, शास्त्रोक्त विधिसे पुत्र सपिंडीकर्म करै ॥ ३५ ॥

पाद्य, अर्घ्य, आचमन इत्यादिकोंमें विश्वेदेवोंको पूजना, पीछे विकिर पिंड देके, हाथ धोकर, आचमन करना ॥ ३६ ॥ पितामहादिकोंको तीन पिंड देने, अनुक्रमसे वसु, रुद्र, सूर्यरूप और चौथा मृतकका पिंड देना ॥ ३७ ॥ चंदन, तुलसीपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य, मुखवास, वस्त्र, दक्षिणा इन्होंसे पूजना ॥३८॥ प्रेतपिंडको तीन प्रकार करके, सुवर्णकी शलाकासे पितामहादि पिंडोंमें न्यारा न्यारा मिलाना ॥३९॥ पितामहीके

पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैर्विश्वेदेवांश्चपूजयेत् ॥ कोपित्रेविकिरंदत्वापुनराचम्यउपस्पृशेत् ॥ ३६ ॥ दद्यात्पितामहादीनांत्रीन्पिंडांश्चयथाक्रमम् ॥ वसुरुद्रार्करूपाणांचतुर्थंमृतकस्यच ॥ ३७ ॥ चंदनैस्तुलसीपत्रैर्धूपैर्दीपैःसुभोजनैः ॥ मुखवासैःसुवस्त्रैश्चदक्षिणाभिश्चपूजयेत् ॥ ३८ ॥ प्रेतपिंडंत्रिधाकृत्वासुवर्णस्यशलाकया ॥ पितामहादिपिंडेषुमेलयेत्तंपृथक्पृथक् ॥ ३९ ॥ पितामह्यासमंमातुःपितामहसमंपितुः ॥ सपिंडीकरणंकुर्यादितिताक्ष्र्यमतंमम ॥ ४० ॥ मृतेपितरियस्याथविद्यतेचपितामहः ॥ तेनदेयास्त्रयःपिंडाःप्रपितामहपूर्वकाः ॥ ४१ ॥ तेभ्यश्चपैतृकंपिंडंमेलयेत्तंत्रिधाकृतम् ॥ मातर्यग्रेप्रशांतायांविद्यतेचपितामही ॥ ४२ ॥ ॥ ॥

पिंडके संग माताके पिंडको मिलाना और पितामहके पिंडके संग पिताको पिंड मिलाना. सपिंडीकरण करना. हे गरुड़! ए हमारा मत है ॥ ४० ॥ जिसका पिता तौ मरजाय और दादा विद्यमान हो उसको प्रपितामहको आदि ले तीन पिंड देने ॥ ४१ ॥ प्रपितामहादिकोंमें तीन प्रकार पिताके पिंडको कर, मिलाना. जो पितामही विद्यमान हो; वा माता अगाड़ी शांत होजाय तौ ॥ ४२ ॥ ॥

माताके श्राद्धमें पिताकीजैसी विधि करना अथवा मेरेमें और महालक्ष्मीमें उन्होंका पिंड मिलाना ॥ ४३ ॥ अपुत्रा स्त्रीके सपिंडनादिक पति करै इस स्त्रीका अपनी शासुआदिकनके संग सपिंडीकरण होता है ॥ ४४ ॥ पति पिता पितामहादिकोंके पिंडके संग, स्त्रीका पिंड देना हे गरुड़ ! ए मेरा मत नहीं है कारण स्त्रीका स्त्रियोंके संग पुरुषोंका पुरुषोंके संग सपिंडी कर्म करना ए हमारा मत है ॥४५॥ हे गरुड़ ! कदाचित् स्त्री पुरुष दोनो एक चितामें दग्ध हुये हों तब सपिंडीकरणके समय तृण बीचमें कर, पुरुषका पिताके संग स्त्रीका शासुआदिके संग सपिंडी

तदामातृकश्राद्धेपिकुर्यात्पैतृकवद्विधिः ॥ यद्वामयिमहालक्ष्म्यांतयोःपिंडंचमेलयेत् ॥ ४३ ॥ अपुत्रायाःस्त्रियाःकुर्यात्पतिःसापिंडनादिकं ॥ श्वश्र्वादिभिःसहैवास्याःसपिंडीकरणंभवेत् ॥ ४४ ॥ भर्त्रादिभिस्त्रिभिःकार्यंसपिंडीकरणंस्त्रियाः ॥ नैतन्ममसतंताक्ष्र्यपत्यासापिंड्यमर्हति ॥ ४५ ॥ एकांचितांसमारूढौदंपतीयदिकाश्यप ॥ तृणमंतरतःकृत्वाश्वशुरादेस्तदाचरेत् ॥ ४६ ॥ एकएवसुतःकुर्यादादौपिंडादिकंपितुः ॥ तदूर्ध्वंचप्रकुर्वीतसत्याःस्नानंपुनश्चरेत् ॥ ४७ ॥ हुताशंयासमारूढादशाहाभ्यंतरेसती ॥ तस्याभर्तुर्दिनेकार्यंशय्यादानंसपिंडनं ॥ ४८ ॥ कृत्वासपिंडनंताक्ष्र्यप्रकुर्यात्पितृतर्पणम् ॥ उदाहरेत्स्वधाकारंवेदमंत्रैःसमन्वितं ॥ ४९ ॥ ॥

कर्म करना ॥ ४६ ॥ पुत्र प्रथमतौ पिताके पिंडादिक करै उसके पीछे वही पुत्र स्नान करके, सतीका सपिंडन करै ॥४७॥ जो सती पतिके दशदिनके भीतर चितामें दग्ध होती है उसकाही भर्ताके सपिंडीके दिनमें शय्यादान और सपिंडन करना ॥ ४८ ॥ हे गरुड़ ! इस विधिसे सपिंडन करके, पितृतर्पण करना. वेदमंत्रोंसे स्वधाकारउच्चारण करना ॥ ४९ ॥ ॥ ॥ ॥

पीछे अभ्यागत ब्राह्मणका भोजन कराना हंतकार सदा बोलना उस हंतकारसे पितर, देव, मुनि, दानव ए सब प्रसन्न होते हैं ॥५०॥ एक ग्रासकी भिक्षा होती है चार ग्रासका पुष्कल होता है, चार पुष्कलोंको हंतकार कहा है ॥ ५१ ॥ सपिंडीकर्ममें ब्राह्मणके चरणोंको चंदन, अक्षतोंसे पूजना उसको अक्षय तृप्तिके लिये दान देना ॥ ५२ ॥ वर्षभरकी जीविका, घृत, अन्न, सुवर्ण, चांदी, सुशीला गौ, घोड़ा, हाथी, रथ, पृथ्वी

अतिथिंभोजयेत्पश्चाद्धंतकारंचसर्वदा ॥ तेनतृप्यंतिपितरोमुनयोदेवदानवाः ॥ ५० ॥ ग्रासमात्राभवेद्भिक्षाचतुर्ग्रासंतुपुष्कलं ॥ पुष्कलानिचचत्वारिहंतकारोविधीयते ॥ ५१ ॥ सपिंड्यांविप्रचरणौपूजयेच्चंदनाक्षतैः ॥ दानंतस्मैप्रदातव्यमक्षय्यंतृप्तिहेतवे ॥ ५२ ॥ वर्षवृत्तिंघृतंचान्नंसुवर्णंरजतंसुगाम् ॥ अश्वंगजंरथंभूमिमाचार्यायप्रदापयेत् ॥ ५३ ॥ ततश्चपूजयेन्मंत्रैःस्वस्तिवाचनपूर्वकं ॥ कुंकुमाक्षतनैवेद्यैर्ग्रहान्देवींविनायकं ॥ ५४ ॥ आचार्यस्तुततःकुर्यादभिषेकंसमंत्रकम् ॥ बद्ध्वासूत्रंकरेदद्यान्मंत्रपूतांस्तथाक्षतान् ॥ ५५ ॥ ततश्चभोजयेद्विप्रान्मिष्टान्नैर्विविधैःशुभैः ॥ दद्यात्सदक्षिणांस्तेभ्यःसजलान्नान्द्विषद्घटान् ॥ ५६ ॥ ॥

ए आचार्यको देने ॥ ५३ ॥ पीछे मंत्रोंसे स्वस्तिवाचनपूर्वक कुंकुम, अक्षत, नैवेद्य इन्होंसे ग्रह, देवी, गणेश इन्होंको पूजना ॥५४॥ आचार्य पीछे मंत्रसहित अभिषेक करै. हाथमें सूत्र बांधकर, मंत्रसे पवित्र अक्षत देवै ॥ ५५ ॥ पीछे नानाप्रकारके सुंदर मिष्टान्नोंसे ब्राह्मणभोजन कराना, दक्षिणासहित उन ब्राह्मणोंको बारह घट जलअन्नसहित देना ॥ ५६ ॥ ॥ ॥ ॥

जल, शस्त्र, प्रत्यंचा, दंड ए ब्राह्मणभोजनसे पीछे अनुक्रमसे ब्राह्मणादि वर्णोंसे स्पर्श करने. जैसे कि– ब्राह्मण जल, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य प्रत्यंचा, शूद्र दंडको स्पर्श करै ॥ ५७ ॥ ऐसे सपिंडन करके, क्रियाके वस्त्रोंको त्यागना. स्वच्छ सपेद वस्त्र पहरके, शय्यादान देना ॥५८॥ शय्यादानको इंद्रसहित सर्वदेवता सराहते हैं तिसीसे मरेपीछे अथवा जीवता हुवा शय्यादान देना ॥ ५९ ॥ सो शय्या सारके काठकी रमणीक सुंदर चित्रविचित्र जड़ीहुई रेस्मी डोरियोंसे बिनीहुई, सुवर्णके पत्तोंसे जड़ित ॥ ६० ॥ हंसजैसी स्वच्छ, उज्वल, कोमल प्रच्छादनव-

वार्यायुधप्रतोदस्तुदंडस्तुद्विजभोजनात् ॥ स्प्रष्टव्यानंतरंवर्णैःशुद्ध्येरंस्तेततःक्रमात् ॥ ५७ ॥ एवंसपिंडनंकृत्वाक्रियावस्त्राणिसंत्यजेत् ॥ शुक्लांबरधरोभूत्वाशय्यादानंप्रदापयेत् ॥ ५८ ॥ शय्यादानंप्रशंसंतिसर्वेदेवाःसवासवाः ॥ तस्माच्छय्याप्रदातव्यामरणेजीवितेपिवा ॥ ५९ ॥ सारदारुमयींरम्यांसुचित्रैश्चित्रितांदृढाम् ॥ पट्टसूत्रैर्विततनितांहेमपत्रैरलंकृताम् ॥ ६० ॥ हंसतूलीप्रतिच्छन्नांशुभशीर्षोपधानिकाम् ॥ प्रच्छादनपटीयुक्तांपुष्पगंधैःसुवासिताम् ॥ ६१ ॥ दिव्यबंधैःसुबद्धांचसुविशालांसुखप्रदां ॥ शय्यामेवंविधांकृत्वाह्यास्तृतायांन्यसेद्भुवि ॥ ६२ ॥ छत्रंदीपालयंरौप्यंचामरासनभाजनम् ॥ भृंगारकारकादर्शपंचवर्णवितानकम् ॥ ६३ ॥

स्त्रसे संयुक्त, सुंदर शीर्षोपधानिक अर्थात् तकिया जिसपर, ऊपर सुंदर ढकनेंको वस्त्र, पुष्प, अतर अर्गजासे सुगंधित, ॥ ६१ ॥ दिव्य बंधनोंसे बंधी, बड़ी चौंड़ी, सुख देनेवाली ऐसी शय्या कराके, जाजमबिछी हुई पृथ्वीपर स्थापित करना ॥ ६२ ॥ छत्ररूपाको दीपक, चामर, आसन, पात्र, गडुई, कलश, काच ए सामग्री धरके, ऊपर पंचरंग चंदवा बांधना ॥ ६३ ॥ ॥ ॥ ॥

औरभी जो कुछ शय्याकी सामग्री हो वह समग्र उस शय्याके चौतरफ स्थापित करना ॥ ६४ ॥ उसपर सुवर्णके लक्ष्मीजीसहित हरिको स्थापित करने. कैसे कि– हरि संपूर्ण आभूषण और शस्त्र तथा वस्त्रोंसे संयुक्त ॥ ६५ ॥ और सौभाग्यवंती स्त्रियोंकी शय्या हो तौ कज्जल, ममहाउर, कुंकुम, वस्त्र, आभूषण ए संपूर्ण देने ॥ ६६ ॥ पीछे स्त्रीसहित ब्राह्मणको गंधपुष्पोंसे शोभित कर, कुंडल अँगूठीआदि आभूषणोंसे,

शयनस्थभवेत्किंचिद्यच्चान्यदुपकारकम् ॥ तत्सर्वंपरितस्तस्याःस्वेस्वेस्थानेनियोजयेत् ॥ ६४ ॥ तस्यांसंस्थापयेद्धैमंहरिंलक्ष्मीसमन्वितम् ॥ सर्वाभरणसंयुक्तमायुधांबरसंयुतं ॥ ६५ ॥ स्त्रीणांचशयनेधृत्वाकज्जलालक्तकुंकुमम् ॥ वस्त्रंभूषादिकंयच्चसर्वमेवप्रदापयेत् ॥ ६६ ॥ ततोविप्रंसपत्नीकंगंधपुष्पैरलंकृतम् ॥ कर्णांगुलीयाभरणैःकंठसूत्रैश्चकांचनैः ॥ ६७ ॥ उष्णीषमुत्तरीयंचचोलकंपरिधायच ॥ स्थापयेत्सुखशय्यायांलक्ष्मीनारायणाग्रतः ॥ ६८ ॥ कुंकुमैःपुष्पमालाभिर्हरिंलक्ष्मींसमर्चयेत् ॥ पूजयेल्लोकपालांश्चग्रहान्देवींविनायकम् ॥ ६९ ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वागृहीत्वाकुसुमांजलिम् ॥ उच्चारयेदिमंमंत्रंविप्रस्यपुरतःस्थितः ॥ ७० ॥ ॥

सुवर्णके कंठसूत्रसे शोभित करना ॥ ६७ ॥ पाग, डुपट्टा, अंगरखा पहराय, सुखशय्यापर लक्ष्मीनारायणके अगाड़ी स्थापित करने ॥ ६८ ॥ कुंकुम और पुष्पोंकी मालासे हरि और लक्ष्मीजीको पूजना तथा लोकपाल, ग्रह, देवी, विनायक इन्होंको पूजन करना ॥ ६९ ॥ उत्तरके तरफ मुख करके, पुष्पांजली लेकर, ब्राह्मणके अगाड़ी स्थित हो, ए मंत्रउच्चारण करै ॥ ७० ॥ ॥ ॥ ॥

हे कृष्ण! जैसे आपकी क्षीरसमुद्रमें शय्या है तैसे मेरी ए जन्म ... में अशून्य हो ॥ ७१ ॥ ऐसें पुष्पांजलि ब्राह्मण और हरिकी प्रतिमाको देना. पीछे सब सामग्रीसहित संकल्पसे शय्यादान देना ॥ ७२ ॥ व्रतको उपदेश करनेवाला वेदवादी गुरू हो उसको देना, हे ब्राह्मण! इसको ग्रहण करो ऐसे कहकर, कौन देताहै ऐसा बोलना ॥ ७३ ॥ शय्यापर स्थित ऐसा ब्राह्मण लक्ष्मी, हरि इन्होंको आन्दोलन करना. पीछे प्रदक्षिणा कर-

यथाकृष्णत्वदीयास्तिशय्याक्षीरोदसागरे ॥ तथाभूयादशून्ये ,ममजन्मनिजन्मनि ॥ ७१ ॥ एवंपुष्पांजलिंविप्रेप्रतिमायां हरेःक्षिपेत् ॥ ततःसोपस्करंशय्यादानंसंकल्पपूर्वकम् ॥ ७२ ॥ दद्याद्व्रतोपदेष्टृचगुरवेब्रह्मवादिने ॥ गृहाणब्राह्मणैनांत्वंको ददातीतिकीर्तयन् ॥ ७३ ॥ आंदोलयेद्द्विजंलक्ष्मींहरिंचशयनेस्थितम् ॥ ततःप्रदक्षिणीकृत्यप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥ ७४ ॥ सर्वोपस्करणैर्युक्तंप्रदद्यादतिसुंदरम् ॥ शय्यायांसुखसुप्त्यर्थंगृहंचविभवेसति ॥ ७५ ॥ जीवमानःस्वहस्तेनयदिशय्यांद दातियः ॥ तज्जीवतावृषोत्सर्गंपर्वणीषुसमाचरेत् ॥ ७६ ॥ इयमेकस्यदातव्याबहूनांनकदाचन ॥ साविभक्ताचविक्री तादातारंपातयत्यधः ॥ ७७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

के, नमस्कार करके, संकल्पसे देना ॥ ७४ ॥ सर्ववस्तुवोंसे सहित सुखसे निद्रा करनेके वास्ते शय्या, अत्यंतसुंदर घरदान, वैभव हो तौ देना ॥ ७५ ॥ जो जीवता हुवा अपने हाथसे शय्यादान देताहै वो जीवताहुवा शय्यादान पर्वोंमें आचरण करना ॥ ७६ ॥ यह शय्या एकको देना बहोतोंको कभी नहीं देना. वह शय्या विभाग हुई और विक्रीभई देनेवालेको नरकमें डालती है ॥ ७७ ॥ ॥ ॥

सुपात्रको शय्या देनेसे मनोवांछित फलको प्राप्त होताहै. पिता और पुत्र परलोकमें और इसलोकमें आनंद भोगतेहैं पुरंदरके दिव्य घरमें अथवा सूर्यपुत्रके घरमें ॥ ७८ ॥ प्राप्त होताहै. शय्यादानके प्रभावसे इसमें संदेह नहीं ॥ ७९ ॥ श्रेष्ठ विमानपर बैठकर, अप्सरोंके समूहसे सेवित हुवा जहांतक महाप्रलय हो तहांतक रोगरहितहुवा स्थित रहताहै ॥ ८० ॥ सर्व तीर्थोंमें स्नान करनेसे जो पुण्य होताहै, सर्व पर्वदिनोंमें दा-

पात्रेप्रदायशयनंवांछितंफलमाप्नुयात् ॥ पिताचदातातनयःपरत्रेहचमोदते ॥ पुरंदरगृहेदिव्येसूर्यपुत्रालयेपिच ॥ ७८ ॥ उपतिष्ठेन्नसंदेहःशय्यादानप्रभावतः ॥ ७९ ॥ विमानवरमारूढःसेव्यमानोऽप्सरोगणैः ॥ आभूतसंप्लवंयावत्तिष्ठत्यातंकवर्जितः ॥ ८० ॥ सर्वतीर्थेषुयत्पुण्यंसर्वपर्वदिनेषुच ॥ तेभ्यश्चाप्यधिकंपुण्यंशय्यादानोद्भवंभवेत् ॥ ८१ ॥ एवंदत्वासुतःशय्यांपददानंप्रदापयेत् ॥ तच्छृणुष्वमयाख्यातंयथावत्कथयामिते ॥ ८२ ॥ छत्रोपानहवस्त्राणिमुद्रिकाचकमंडलुः ॥ आसनंपंचपात्राणिपदंपंचविधंस्मृतम् ॥ ८३ ॥ दंडेनताम्रपात्रेणह्यामान्नैर्भोजनैरपि ॥ अर्घ्ययज्ञोपवीतैश्चपदंसंपूर्णतांव्रजेत् ॥ ८४ ॥ ॥ ॥

नदेनेंसे जो पुण्यहोताहै, उससे अधिक पुण्य शय्यादानका होताहै ॥ ८१ ॥ ऐसे पुत्र शय्या देकर, पददान देवै सो मेरा कहा सुनों मैं तुमको यथार्थ कहताहूं ॥ ८२ ॥ छत्र, पगरखी, वस्त्र, मुद्रिका, कमंडलु, आसन, पंचपात्र, ॥ ८३ ॥ दंड, ताम्रपात्र, आमान्न, भोजन, अर्घ्य, यज्ञोपवीत ए तेरह वस्तुवोंसे पददान संपूर्ण होताहै ॥ ८४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ऐसी विधिसे तेरह पद यथाशक्ति करके, तेरह ब्राह्मणोंको बारहवें दिन देने ॥ ८५ ॥ इस पददानसे धर्मात्मा श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होताहै और यममार्गमें गये हुवेको पददान सुख देताहै ॥ ८६ ॥ वहां सूर्यताप बड़ा भयंकर है जिससे मनुष्य दग्ध होताहै और यहां जो छत्रदान देताहै उसके मस्तकपर सुंदर छाया होतीहै ॥ ८७ ॥ अत्यंत संकटोंसे व्याप्त ऐसा यमलोकका मार्ग है जो यहां पगरखी, देतेहैं वे घोड़ेपर

त्रयोदशपदानीत्थंयथाशक्त्याविधायच ॥ त्रयोदशेभ्योविप्रेभ्यःप्रदद्याद्द्वादशेहनि ॥ ८५ ॥ अनेनपददानेनधार्मिकायांतिसद्गतिं ॥ यममार्गगतानांचपददानंसुखप्रदं ॥ ८६ ॥ आतपस्तत्रवैरौद्रोदह्यतेयेनमानवः ॥ छत्रदानेनसुच्छायाजायतेतस्यमूर्धनि ॥ ८७ ॥ अतिसंकटसंकीर्णेयमलोकस्यवर्त्मनि ॥ अश्वारूढाश्चतेयांतिददतेयद्युपानहौ ॥ ८८ ॥ शीतोष्णवातदुःखानितत्रघोराणिखेचर ॥ वस्त्रदानप्रभावेणसुखंनिस्तरतेपथि ॥ ८९ ॥ यमदूतामहारौद्राःकरालाःकृष्णपिंगलाः ॥ नपीडयंतितंमार्गेमुद्रिकायाःप्रदानतः ॥ ९० ॥ बहुधर्मसमाकीर्णेनिर्वातेतोयवर्जिते ॥ कमंडलुप्रदानेनतृषितःपिबतेजलं ॥ ९१ ॥ मृतोद्देशेनयोदद्यादुदपात्रंचताम्रजं ॥ प्रपादान सहस्रस्ययत्फलंसोऽश्नुतेध्रुवं ॥ ९२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

बैठे जातेहैं ॥ ८८ ॥ हे गरुड़! शीत, उष्ण, वायु ए घोर दुःख वहां है. वस्त्रदानके प्रभावसे इन्होंको सुखसे तिरताहै ॥ ८९ ॥ यमके दूत बड़े भयंकर, विकराल, काले, पीले उसको मार्गमें नहीं पीड़ा देतेहैं जो मुद्रिकादान देताहै ॥ ९० ॥ बहोत घामसे व्याप्त, निर्वात, जलरहित ऐसे मार्गमें कमंडलुके देनेसे तृषायुक्त हुवा जल पीताहै ॥ ९१ ॥ जो मृतकके उपदेशसे ताम्रका जलपात्र देताहै उसको हजार पानीय-

शालादान देनेका जो फल है वो निश्चय प्राप्त होता है ॥ ९२ ॥ आसन पात्र ए विधिसे ब्राह्मणको दियाहुवा सुखकरके, परलोकमें भोग्य भोगता है. मार्गमें शनैःशनैः जाताहै ॥ ९३ ॥ ऐसे सपिंडनदिनमें विधिसे दान देकर, बहोत ब्राह्मण भोजन कराने और चांडालादिकोंकोभी देना ॥ ९४ ॥ पीछे सपिंडनके उपरांत वर्षतक प्रतिमास पिंडसहित जलकलश देना ॥ ९५ ॥ हे गरुड़! प्रेतकार्यके बिगर करे हुवेको करना नहीं है. प्रेतके लिये अक्षय तृप्तिके वास्ते वारंवार करना ॥ ९६ ॥ अब मासिक श्राद्धका और आब्दिक श्राद्धका विशेष कहता हूं

आसनेभोजनेचैवदत्तेसम्यग्द्विजातये ॥ सुखेनभुंक्तेपाथेयंपथिगच्छन्शनैःशनैः ॥ ९३ ॥ एवंसपिंडनदिनेदत्वादानंविधानतः ॥ बहून्संभोजयेद्विप्रान्यःश्वपाकादिकानपि ॥ ९४ ॥ ततःसपिंडनादूर्ध्वमर्वाक्संवत्सरादपि ॥ प्रतिमासंप्रदातव्योजलकुंभःसपिंडकः ॥ ९५ ॥ कृतस्यकरणंनास्तिप्रेतकार्यादृतेखग ॥ प्रेतार्थंतुपुनःकुर्यादक्षय्यतृप्तिहेतवे ॥ ९६ ॥ अतोविशेषंवक्ष्यामिमासिकस्याब्दिकस्यच ॥ पाक्षिकस्यविशेषंचविशेषतिथिषुमृते ॥९७॥ पौर्णमास्यांमृतोयस्तुचतुर्थीतस्यऊनिका ॥ चतुर्थ्यांतुमृतोयस्तुनवमीतस्यऊनिका ॥ ९८ ॥ नवम्यांतुमृतोयस्तुरिक्तातस्यचतुर्दशी ॥ इत्येवंपाक्षिकंश्राद्धंकुर्याद्विंशतिमेदिने ॥ ९९ ॥ ॥

और प्रथम पाक्षिक श्राद्धकी विशेषता पौर्णमास्यादि तिथियोंमें मरे हुवे पुरुषकी विधि कहता हूं ॥ ९७ ॥ पौर्णमासीको जो मरता है उसकी अमावस्याके अगाड़ीकी चतुर्थी ऊनिका अर्थात् पाक्षिक श्राद्धतिथि है और जो चतुर्थीको मरता है उसकी दुसरी चतुर्थी वाद नवमी ऊनिका है ॥ ९८ ॥ और नवमीको जो मरता है उसकी दुसरी नवमी वाद चतुर्दशी ऊनिका तिथि है. ऐसे बीशवें दिन पाक्षिकश्राद्ध करना ॥ ९९ ॥

अब मासिक श्राद्धकीभी अधिक विधि कहते हैं. जो एकही मासमें दो संक्रांति संयुक्त हों उसको क्षयमास कहते हैं, जिसमें संक्रांति नहीं हो उसको मलमास कहते हैं, जो कार्तिक और मार्गशीर्ष क्षयमास हो तो तब कार्तिक मार्गशीर्षमें व्रत श्राद्धादिक जिस पक्षमें जिस-तिथिमें जिस अपराह्णआदि कालमें कहा है वे क्षयमासमें तहां तहां करना अर्थात् कार्तिक क्षय हो तो मार्गशीर्षमें करना, मार्गशीर्ष क्षय हों तो पौषमें करना ॥ १०० ॥ अब एक मासमें दो महीना हों उसका निर्धार कहते हैं. जो एकमासमें दो महीना हों

एकएव यदामासःसंक्रांतिद्वयसंयुतः ॥ मासद्वयगतंश्राद्धंमलमासेहिशस्यते ॥ १०० ॥ एकस्मिन्मासिमासौद्वौयदिस्यातांतरद्वयोः ॥ तावेवपक्षौताएवतिथयस्त्रिंशदेवहि ॥ १ ॥ तिथ्यर्धेप्रथमेपूर्वोद्वितीयेऽर्धेतदुत्तरः ॥ मासावितिबुधैश्चिंत्यौमलमासस्यमध्यगौ ॥ २ ॥ असंक्रांतेचकर्तव्यंसपिंडीकरणंखग ॥ तथैवमासिकंश्राद्धंवार्षिकंप्रथमंतथा ॥ ३ ॥ ॥

तो दोनो मासोंकी पंद्रह तिथिही तीस तिथी जाननी ॥ १ ॥ और जो अधिक मासमें मरजाय तौ उसका मासिक वार्षिक श्राद्ध तिथिके पूर्वार्द्धमें मरा होयतो कृष्णपक्षमें करना और तिथिके उत्तरार्द्धमैं मरा हो तो शुक्लपक्षमें करना परंतु तिथितौ मृत्यु-हो सोई दिन लेना ॥ २ ॥ हे गरुड़! मलमासमें मरेहुएको सपिंडीकरण बारहवें दिन करना. तैसेही मासिकश्राद्ध और वार्षिक श्राद्ध प्रथमही करना ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वर्षके मध्यमें जो अधिक मास हो तौ तेरहवें महीनेमें प्रेतकी प्रथम वर्षकी क्रिया करनी ॥ ४ ॥ असंक्रांतिमासमें पिंडविना श्राद्ध करना, संक्रांति हो उसमें पिंडसहित करना. ऐसे वर्ष वर्ष प्रति मलमासमें श्राद्धदिनकी वंध्यत्वनिवृत्तिके लिये पिताके उद्देशसे ब्राह्मणभोजन कराय, शुद्धमासमें सपिंडन श्राद्ध करना ॥ ५ ॥ ऐसे वर्ष पूरा हुवा तब वार्षिकश्राद्ध करना. उस वार्षिकमें ज्यादा ब्राह्मणभोजन कराने ॥ ६ ॥ वर्षके उपरांत श्राद्धमें सदाही तीन पिंड करने. एकोदिष्ट वर्ष पीछे नहीं करना उससे पितृघातक होता है ॥ ७ ॥ पितृसंबंधी

संवत्सरस्यमध्येतुयदिस्यादधिमासकः ॥ तदात्रयोदशेमासिक्रियाप्रेतस्यवार्षिकी ॥ ४ ॥ पिंडवर्ज्यमसंक्रांतेसंक्रांतेपिंडसंयुतम् ॥
प्रतिसंवत्सरंश्राद्धमेवंमासद्वयेपिच ॥ ५ ॥ एवंसंवत्सरेपूर्णेवार्षिकंश्राद्धमाचरेत् ॥ तस्मिन्नपिविशेषेणभोजनीयाद्विजातयः ॥ ६ ॥
कुर्यात्संवत्सरादूर्ध्वंश्राद्धेपिंडत्रयंसदा ॥ एकोद्दिष्टंनकर्तव्यंतेनस्यात्पितृघातकः ॥ ७ ॥ तीर्थश्राद्धंगयाश्राद्धंगजच्छायंचपैतृकम् ॥
अब्दमध्येनकुर्वीतग्रहणेनयुगादिषु ॥ ८ ॥ यदापुत्रेणवैकार्यंगयाश्राद्धंखगेश्वर ॥ तदासंवत्सरादूर्ध्वंकर्तव्यंपितृभक्तितः ॥ ९ ॥
गयाश्राद्धात्प्रमुच्यंतेपितरोभवसागरात् ॥ गदाधरानुग्रहेणतेयांतिपरमांगतिम् ॥ १० ॥ ॥ ॥

तीर्थश्राद्ध, गयाश्राद्ध, गजछायाश्राद्ध ए वर्षके मध्यमें नहीं करना. युगादि श्राद्धभी नहीं करना ॥ ८ ॥ हे गरुड़! जो पुत्र गयाश्राद्ध करै तौ पितृश्वरोंकी भक्तिके वास्ते वर्षके उपरांत करना ॥ ९ ॥ गयाश्राद्धसे पितृश्वर संसारसागरसे छूटकर, गदाधर भगवानकी अनुग्रहसे परमगतिको प्राप्त होते हैं ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तुलसीकी मंजरीसे विष्णुकी पादुका पूजनी. उसके लवादि तीर्थोंमें दश पिंड देने अनुक्रमसे ॥ ११ ॥ सात गोत्रोंको और एकसो एक कुल उद्धार करता है. जो शमीपत्रप्रमाण पिंड गयाशिरपर देता है ॥ १२ ॥ गयापर प्राप्त होकर, जो कुलको आनंदकारी पुत्र श्राद्ध करता है उसका पितृश्वरोंको प्रसन्नता देनेवाला वोह जन्म सफल होता है ॥ १३ ॥ अहो गरुड ! पितृश्वरोंकी गाईभई पूर्वकथा सुननेंमें आती है सो सुनो. हिमालयके पार्श्ववर्ती कलापग्रामके उपवनमें मनु. पुत्र इक्ष्वाकु राजाकी देवतोंकरके गाई ॥ १४ ॥ अहो ! हमारे कुलमें वे सन्मार्ग-

तुलसीमंजरीभिश्चपूजयेद्विष्णुपादुकाम् ॥ तस्यालवादितीर्थेषुपिंडान्दद्याद्यथाक्रमम् ॥ ११ ॥ उद्धरेत्सप्तगोत्राणिकुलमेकोत्तरंशतं ॥ शमीपत्रप्रमाणेनपिंडंदद्याद्गयाशिरे ॥ १२ ॥ गयामुपेत्ययःश्राद्धंकरोतिकुलनंदनः ॥ सफलंतस्यतज्जन्मजायतेपितृतुष्टिदम् ॥१३॥ श्रूयतेचापिपितृभिर्गीतागाथाखगेश्वर ॥ इक्ष्वाकोर्मनुपुत्रस्यकलापोपवनेसुरैः ॥१४॥ अपिनस्तेभविष्यंतिकुलेसन्मार्गशीलिनः ॥ गयामुपेत्ययेपिंडान्दास्यंत्यस्माकमादरात् ॥ १५ ॥ एवमायुष्मिकींताक्ष्र्ययःकरोतिक्रियांसुतः ॥ सस्यात्सुखीभवेन्मुक्तः कौशिकस्यात्मजायथा ॥ १६ ॥ भरद्वाजात्मजाःसप्तभुक्त्वाजन्मपरंपरां ॥ कृत्वापिगोवधंताक्ष्र्यमुक्ताःपितृप्रसादतः ॥ १७ ॥ ॥

शील होयगे कि- जो गयामें जाकर, हमारेको आदरसे पिंड देवें ॥ १५ ॥ ऐसे हे गरुड ! जो पुत्र क्रिया करता है वोह सुखी होता है और मुक्त होता है जैसे कौशिकमुनिके पुत्र हुये तैसे ॥ १६ ॥ भरद्वाजके सात पुत्र जन्मपरंपरा भोगके, गोवधभी करके, हे गरुड ! पितृश्वरोंकी कृपासे मोक्ष पातेभये ॥ १७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दशार्णदेशमें सात व्याध, कालंजरपर्वतमें मृगा, शरद्वीपमें चकवा, मानससरोवरमें हंस ॥१८॥ ए कहेहुये पितृभक्तिसे कुरुक्षेत्रमें वेदपारगामी ब्राह्मण होतेभये पीछे समग्र ब्राह्मणके पुत्र मुक्तिको प्राप्त होतेभये ॥१९॥ तिसीसे सब यत्नसे मनुष्य पितृभक्त होवे क्यों कि इसलोक और परलोकमें पितृभक्तिसे सुखी होता है ॥ २० ॥ हे गरुड़! संपूर्ण और्ध्वदेहिक मैने तुमको कहा है. जो पुत्रकी वांछा देनेवाला, पवित्र और

सप्तव्याधादशार्णेषुमृगाःकालंजिरेगिरौ ॥ चक्रवाकाःशरद्वीपेहंसाःसरसिमानसे ॥ १८ ॥ तेपिजाताःकुरुक्षेत्रेब्राह्मणावेदपारगाः ॥ पितृभक्त्याचतेसर्वेगतामुक्तिंद्विजात्मजाः ॥ १९ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपितृभक्तोभवेन्नरः ॥ इहलोकेपरेवापिपितृभक्त्यासुखीभवेत् ॥ २० ॥ एतत्तार्क्ष्यमयाख्यातंसर्वमेवौर्ध्वदेहिकम् ॥ पुत्रवांछाप्रदंपुण्यंपितुर्मुक्तिप्रदायकम् ॥ २१ ॥ निर्धनोपिनरःकश्चिद्यःशृणोतिकथामिमाम् ॥ सोपिपापविनिर्मुक्तोदानस्यफलमाप्नुयात् ॥२२॥ विधिनाकुरुतेयस्तुश्राद्धंदानेमयोदितं ॥ शृणुयाद्गारुडंचापिशृणुतस्यापियत्फलम् ॥ २३ ॥ पितादादातिसत्पुत्रान्गोधनानिपितामहः ॥ धनदाताभवेत्सोऽपियस्तस्यप्रपितामहः ॥ २४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पितृश्वरोंको मुक्ति देनेवाला है ॥ २१ ॥ निर्धनभी जो मनुष्य इस कथाको सुनै वोहभी पापोंसे छूटके, दानके फलको प्राप्त होता है ॥ २२॥ विधिसे मेरा कह्या श्राद्धदान जो करता है और गरुडपुराण सुनता है उसको जो फल है सो सुनो ॥ २३ ॥ उसको पिता श्रेष्ठ पुत्रोंको देता है, दादा गोधन देता है और परदादा धन देता है ॥ २४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पुष्ट अन्नादिक वृद्ध प्रपितामह देताहै वे सर्व श्राद्धसे तृप्त हुवे पुत्रकी वांछा देकर ॥ २५ ॥ धर्ममार्गसे धर्मराजके मंदिरमें जातेहैं. वहां धर्मसभामें वे परमआदरसे स्थित रहतेहैं ॥ २६ ॥ सूतजी कहतेहैं—ऐसे श्रीविष्णुसे उक्त ऊर्ध्वदानको अनंत माहात्म्य सुनके, गरुड़ हर्षको प्राप्त होते भये ॥ २७ ॥ इति श्रीसारोद्धारे गरुडपुराणे ज्ञानबोधिनीभाषाटीकायां सपिंडनादिकर्मनिरूपणं नाम त्रयोद-

दद्याद्विपुलमन्नाद्यंवृद्धस्तुप्रपितामहः ॥ तृप्ताःश्राद्धेनतेसर्वेदत्वापुत्रस्यवांछितम् ॥ २५ ॥ गच्छंतिधर्ममार्गैश्चधर्मराजस्यमन्दिरम् ॥ तत्रधर्मसभायांतेतिष्ठंतिपरमादरात् ॥ २६ ॥ सूतउवाच ॥ एवंश्रीविष्णुनाप्रोक्तमौर्ध्वदानसमुद्भवम् ॥ श्रुत्वामाहात्म्यमतुलंगरुडोहर्षमागतः ॥ २७ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेसपिंडनादिसर्वकर्मनिरूपणंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ यमलोकःकियन्मात्रःकीदृशःकेननिर्मितः ॥ सभाचकीदृशीतस्यांधर्मआस्तेचकैःसह ॥ १ ॥ येधर्ममार्गैर्गच्छंतिधार्मिकाधर्ममन्दिरम् ॥ तान्धर्मानपिमार्गांश्चममाख्याहिदयानिधे ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

शोऽध्यायः ॥ १३ ॥ गरुड़जी पूंछतेहैं कि—यमलोक कैसा है? कितना बड़ा है? कौनने उसको रचा है? वह सभा कैसी है? उस सभामें धर्म किन्होंके संग बैठतेहैं? ॥ १ ॥ जो धर्मात्मा धर्ममार्गसे धर्मराजके मंदिरमैं जातेहैं उन धर्मोंको तथा धर्ममार्गोंको हे दयानिधे! आप हमारेको कहो ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अब श्रीभगवान कहतेहैं— हे गरुड़! सुनो. जो नारदादि मुनियोंसे जाननेमें आवै ऐसा धर्मराजका दिव्य नगर है. वो महा पुण्यवानको प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥ जो दक्षिण और नैऋत्यके मध्यमें वैवस्वतको नगर है वो समग्र वज्रमणिमयी है. देवदानवोंसे अभेद्य है ॥ ४ ॥ चार दरवाजे हैं, चौकोन है, उच्च रकबासे वेष्टित है, हजार योजन प्रमाणसे कह्याहै ॥ ५ ॥ उस पुरमें सुंदर चित्रगुप्तको मंदिर है. पच्चीस संख्या योजनोंसे

श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामियद्रम्यंनारदादिभिः ॥ तद्धर्मनगरंदिव्यंमहापुण्यैरवाप्यते ॥ ३ ॥ याम्यनैर्ऋतयोर्मध्येपुरंवैवस्वतस्ययत् ॥ सर्ववज्रमयंदिव्यमभेद्यंतत्सुरासुरैः ॥ ४ ॥ चतुरस्रंचतुर्द्वारमुच्चप्राकारवेष्टितम् ॥ योजनानांसहस्रंहिप्रमाणेनतदुच्यते ॥ ५ ॥ तस्मिन्पुरेऽस्तिसुभगंचित्रगुप्तस्यमन्दिरम् ॥ पंचविंशतिसंख्याकैर्योजनैर्विस्तृतायतम् ॥ ६ ॥ दशोच्छ्रितंमहादिव्यंलोहप्राकारवेष्टितम् ॥ प्रतोलीशतसंचारंपताकाध्वजभूषितम् ॥ ७ ॥ विमानगणसंकीर्णंगीतवादित्रनादितम् ॥ चित्रितंचित्रकुशलैर्निर्मितंदेवशिल्पिभिः ॥ ८ ॥ उद्यानोपवनैरम्यंनानाविहगकूजितं ॥ गंधर्वैरप्सरोभिश्चसमंतात्परिवारितम् ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

लंबा चौंड़ा है ॥ ६ ॥ दश योजन उंचा है, महान् दिव्य है; लोहाके परकोटसे वेष्टित है, शैकड़ों बन्दनवार, ध्वजा पताकावोंसे शोभित है ॥ ७ ॥ विमानोंके समूहसे व्याप्त हो रहाहै. गीत और बाजोंसे सुंदर नादित है, श्रेष्ठ चित्रोंसे चित्रित है, विश्वकर्माआदिकोंसे रचा गयाहै ॥ ८ ॥ बगीचा उपवनोंसे रमणीक है नानाप्रकारके पक्षियोंसे शब्दायमान है. गंधर्व अप्सरोंसे चहूंतरफसे सेवित है ॥ ९ ॥ ॥ ॥

उस सभामें चित्रगुप्त अपने परम-अद्भुत आसनपर बैठे मनुष्योंकी आयु जैसी है तैसी गिनते हैं ॥ १० ॥ वोह यमराज सुकृत और दुष्कृतमें कभी मोहको नहीं प्राप्त होतेहैं. जो जिसकरके सुकृत वा दुष्कृतसंचय किया है ॥११॥ वे सब वहां चित्रगुप्तकी आज्ञासे भोगतेहैं. चित्रगुप्तके स्थानसे पूर्वमें ज्वरको महान् स्थान है ॥ १२ ॥ [illegible]क्षिण दिशामें शूलको और [illegible]विस्फो[illegible]को स्थान है. पश्चिममें कालपाश, अजीर्ण

तत्सभायांचित्रगुप्तःस्वासनेपरमाद्भुते ॥ [illegible]ोग[illegible]ायुर्मानुषाणांयथान्तथं ॥ १० ॥ नमुह्यतिकथंचित्ससुकृतेदुष्कृतेपि वा ॥ यद्येनोपार्जितंकर्मशुभंवायदिवाशुभं ॥ ११ ॥ तत्सर्वंभुंजतेयत्रचित्रगुप्तस्यशासनात् ॥ चित्रगुप्तालयात्प्राच्यांज्वरस्यास्तिमहागृहम् ॥ १२ ॥ दक्षिणस्यांचशूलस्यलूताविस्फोटयोस्तथा ॥ पश्चिमेकालपाशःस्यादजीर्णस्यारुचेस्तथा ॥ १३ ॥ उदीच्यांराजरोगोऽस्तिपांडुरोगस्तथैवच ॥ ऐशान्यांतुशिरोर्तिःस्यादाग्नेय्यामस्तिमूर्च्छना ॥ १४ ॥ अतिसारोनैर्ऋतेतुवायव्यांशीतदाहकौ ॥ एवमादिभिरन्यैश्चव्याधिभिःपरिवारितः ॥ १५ ॥ लिखतेचित्रगुप्तस्तुमानुषाणांशुभाशुभं ॥ चित्रगुप्तालयादग्रेयोजनानांचविंशतिः ॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

और अरुचि रहताहै ॥ १३ ॥ उत्तरमें राजरोग है, पांडुरोग है, ऐशानमें शिरपीड़ा है, अग्निकोणमें मूर्छारोगहै, ॥ १४ ॥ नैर्ऋत्यमें अतीसार है, वायव्यमें शीत और दाह रोग है ऐसे इन्होंको आदिले औरभी रोगोंसे संयुक्त है ॥ १५ ॥ ऐसे चित्रगुप्तभी मनुष्योंके शुभाशुभ लिखते हैं चित्रगुप्तके स्थानसे अगाड़ी बीश योजन ॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पुरके मध्य दिव्य धर्मराजको मंदिर है. वहां रत्नमयी दिव्य बिजली, अग्नि, सूर्य इन्होंकीसी कांतिहै ॥ १७ ॥ दोसै योजन विस्तारमें और चोड़ा है, पच्चास योजन उंचाहै ॥ १८ ॥ हजारों स्तंभोसे धारित है, वैडूर्य मणियोंसे जड़ित है, कांचनसे शोभित है, अनेक प्रकारके महल झरोखावोंसे व्याप्त है ॥ १९ ॥ शरदऋतुके मेघतुल्य सुवर्णके कलशोंसे मनोहर, चित्रविचित्र स्फटिक जातिकी मणियोंसे बंधीभ-

पुरमध्येमहादिव्यंधर्मराजस्यमंदिरं ॥ अस्तिरत्नमयंदिव्यंविद्युज्वालार्कवर्चसं ॥ १७ ॥ द्विशतंयोजनानांचविस्तारायाम तःस्फुटं ॥ पंचाशच्चप्रमाणेनयोजनानांसमुच्छ्रितं ॥ १८ ॥ धृतंस्तंभसहस्रैश्चवैडूर्यमणिमंडितं ॥ कांचनालंकृतंनानाहर्म्य प्रासादसंकुलं ॥ १९ ॥ शारदाभ्रनिभंरुक्मकलशैःसुमनोहरं ॥ चित्रस्फटिकसोपानंवज्रकुट्टिमशोभितं ॥ २० ॥ मुक्ताजा लगवाक्षंचपताकाध्वजभूषितं ॥ घंटानकनिनादाढ्यंहेमतोरणमंडितम् ॥ २१ ॥ नानाश्चर्यमयंस्वर्णकपाटशतसंकुलं ॥ ना नाद्रुमलतागुल्मैर्निष्कंटैःसुविराजितं ॥ २२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ईहैं सीढ़ीजिनकी, वज्रमणियोंसे शोभित कोठरी जिन्होंमें ॥ २० ॥ मोतियोंकी वंदनवार पताका ध्वजा इन्होंसे शोभित, अनेक घंटा और बाजेके नादसे संयुक्त, सुवर्णके तोरणसे शोभित ॥ २१ ॥ नाना आश्चर्यमयी सुवर्णके शैकड़ों केवाड़ोंसे युक्त, निष्कंटक जो नानाप्रकारके वृक्ष, लता, गुल्म इन्होंसे सुंदर शोभित ॥ २२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इन्होंको आदिले औरभी भूषणोंसे सदा भूषित, विश्वकर्माने उसको आत्मयोगप्रभावसे रचा है ॥ २३ ॥ उसमें एक दिव्य सभा है वह शौ योजन चौड़ी है, सूर्यजैसा प्रकाश है, प्रकाशमान सब जग कामरूप है ॥ २४ ॥ उसमें ज्यादा शीत नहीं है, अतिगरम नहीं है, मनको अत्यंत हर्षकारी है, उसमें शोक नहीं है, जराअवस्था नहीं है, भूख प्यास नहीं है, ॥ २५ ॥ दुःख नहीं है, जो देवतोंके और मनुष्यों-

एवमादिभिरन्यैश्चभूषणैर्भूषितंसदा ॥ आत्मयोगप्रभावैश्चनिर्मितंविश्वकर्मणा ॥ २३ ॥ तस्मिन्नस्तिसभादिव्याशतयोजनमायता ॥ अर्कप्रकाशाभ्राजिष्णुःसर्वतःकामरूपिणी ॥ २४ ॥ नातिशीतानचात्युष्णामनसोत्यंतहर्षिणी ॥ नशोकोनजरातस्यांक्षुत्पिपासेनचाप्रियं ॥ २५ ॥ सर्वेकामाःस्थितायस्यांयेदिव्यायेचमानुषाः ॥ रसवच्चप्रभूतंचभक्ष्यंभोज्यंचसर्वशः ॥ २६ ॥ रसवंतिचतोयानिशीतान्युष्णानिचैवहि ॥ पुण्याशब्दादयस्तस्यांनित्यंकामफलद्रुमाः ॥ २७ ॥ असंबाधाचसाताक्ष्यरम्याकामागमासभा ॥ दीर्घकालंतपस्तप्त्वानिर्मिताविश्वकर्मणा ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥

के काम हैं, वे सब उसमें स्थित हैं, सर्व रसवाला प्रगट भक्ष्य, भोज्य है ॥ २६ ॥ रसवान सलिल और गरम जल है, उसमें पवित्र शब्दादिक हैं, नित्य इच्छामुजब फलवाले वृक्ष हैं ॥ २७ ॥ हे गरुड़! इस सभामें कोईभी बाधा नहीं ऐसी रमणीक कामपूर्वक प्राप्ति होनेवाली है. बहोतकाल तप करके, विश्वकर्मानें रची है ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उसमें उग्र तपस्वी, सुंदर व्रतवाले, सत्यवादी, शांत, संन्यासी, सिद्ध, पवित्रकर्मवाले जाते हैं ॥ २९ ॥ वे समग्र प्रकाशमान हैं, शरीर आभूषण पहरे, सुंदर स्वच्छवस्त्र धारण करे, वहां अपने कियेभये पवित्रकर्मोंसे शोभित हुये, स्थित रहते हैं ॥ ३० ॥ उस सभामें वो भगवान धर्मराज अनुपम अपने शुभ आसनपर बैठे हैं, कैसा आसन है? दशयोजन चौड़ा, सर्वरत्नोंसे जड़ित ॥ ३१ ॥ उसपर बैठा, सत्पुरुषोंमें श्रेष्ठ, छत्रसे

तामुग्रतपसोयांतिसुव्रताःसत्यवादिनः ॥ शांताःसंन्यासिनःसिद्धाःपूताःपूतेनकर्मणा ॥ २९ ॥ सर्वेभास्वरदेहास्येऽलंकृताविरजांब राः ॥ स्वकृतैःकर्मभिःपुण्यैस्तत्रतिष्ठंतिभूषिताः ॥ ३० ॥ तस्यांसधर्मोभगवानासनेऽनुपमेशुभे ॥ दशयोजनविस्तीर्णेसर्वरत्नैःसु मंडिते ॥ ३१ ॥ उपविष्टःसतांश्रेष्ठश्छत्रशोभितमस्तकः ॥ कुंडलालंकृतःश्रीमान्महामुकुटमंडितः ॥ ३२ ॥ सर्वालंकारसंयुक्तोनी लमेघसमप्रभः ॥ बालव्यजनहस्ताभिरप्सरोभिश्चवीजितः ॥ ३३ ॥ गंधर्वाणांसमूहाश्चसंघशश्चाप्सरोगणाः ॥ गीतवादित्रनृत्या द्यैःपरितःसेवयंतितं ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शोभित मस्तक है, कुंडलोंसे शोभित है, श्रीमान महामुकुटसे शोभित ॥ ३२ ॥ सर्व अलंकारोंसे संयुक्त, नीलमेघोंकीसी कांतिवाले व्यजन हैं हाथमें ऐसी अप्सरोंसें पवनवान ॥ ३३ ॥ गंधर्वोंका समूह अप्सरावोंके संघ गीत वादित्र नृत्यादिकोंसे चहूंतरफ उसको सेवते हैं ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पाशहाथवाले मृत्युसे, बलवान् कालसे विचित्र चित्रगुप्तसे सेवित ॥ ३५ ॥ पाश और दंडके धारण करनेवाले, उग्र आज्ञावर्ती, आत्मतुल्य बलवाले योद्धावोंसे सेवित, ॥ ३६ ॥ अग्नि[illegible], [illegible], सोमपा जो उष्मपा, स्वधावंत, बर्हिषद, हे गरुड़! मूर्तिवान्, अमूर्तिवान् ॥ ३७ ॥ अर्यमाको आदि ले, पितृसमूह औरभी मूर्तिमंत ए कहेभय समग्र मुनियोंसे साथ धर्मराजकी उपासना करते हैं ॥ ३८ ॥ अत्रि, वसिष्ठ,

मृत्युनापाशहस्तेनकालेनचबलीयसा ॥ चित्रगुप्तेनचित्रेणकृतातेननिषेवितः ॥ ३५ ॥ पाशदंडधरैरुग्रैर्निदेशवशवर्तिभिः ॥ आत्म
तुल्यबलैर्नानासुभटैःपरिवारितः ॥ ३६ ॥ अग्निष्वात्ताश्चपितरःसोमपाश्चोष्मपाश्चये ॥ स्वधावंतोबर्हिषदोमूर्तामूर्ताश्चयेखग ॥३७॥
अर्यमाद्याःपितृगणामूर्तिमंतस्तथापरे ॥ सर्वेतेमुनिभिःसार्धंधर्मराजमुपासते ॥ ३८ ॥ अत्रिर्वसिष्ठःपुलहोदक्षःक्रतुरथांगिराः ॥
जामदग्न्योभृगुश्चैवपुलस्त्यागस्त्यनारदाः ॥ ३९ ॥ एतेचान्येचबहवःपितृराजसभासदः ॥ नशक्याःपरिसंख्यातुंनामभिःकर्मभिस्त
था ॥ ४० ॥ व्याख्याभिर्धर्मशास्त्राणांनिर्णेतारोयथातथं ॥ सेवंतेधर्मराजंतेशासनात्परमेष्ठिनः ॥ ४१ ॥ ॥ ॥

पुलह, दक्ष, क्रतु, अंगिरा, जामदग्न्य, भृगु, पुलस्त्य, अगस्त्य, नारद ॥ ३९ ॥ ए कहेभये औरभी बहोत पितृराजकी सभामें रहते हैं. इन्होंकी संख्या करनेको नाम और कर्मोंसे नहीं समर्थ है ॥ ४० ॥ ए व्याख्या करके, धर्मशास्त्रोंको यथार्थ निर्णय करते हैं. ब्रह्मपरमात्माकी शिक्षासे धर्मराजकी उपासना करते हैं ॥ ४१ ॥ ॥ ॥ ॥

सूर्यवंशी राजा और सोमवंशी राजा ए धर्मके ज्ञाता सभामें धर्मराजकी उपासना करते हैं ॥ ४२ ॥ मनु, दिलीप, मांधाता, सगर, भगीरथ, अंबरीष, अनरण्य, मुचकुंद, निमि, पृथु, ॥ ४३ ॥ ययाति, नहुष, पूरु, दुष्यंत, शिबि, नल, भरत, शंतनु पांडु, सहस्रार्जुन ॥४४॥ ए पवित्र राजऋषि बड़े कीर्तिमंत, बहोत श्रोता, बहोत अश्वमेधोंसे यजन करके धर्मराजके सभासद हुये हैं ॥ ४५ ॥ धर्मराजकी सभामें धर्मही वर्तता

राजानःसूर्यवंशीयाःसोमवंशास्तथापरे ॥ सभायांधर्मराजंतेधर्मज्ञाःपर्युपासते ॥ ४२ ॥ मनुर्दिलीपोमांधातासगरश्चभगीरथः ॥ अंबरीषोऽनरण्यश्चमुचुकुंदोनिमिःपृथुः ॥ ४३ ॥ ययातिर्नहुषःपूरुर्दुष्यंतश्चशिबिर्नलः ॥ भरतःशंतनुःपांडुःसहस्रार्जुनएवच ॥४४॥ एतेराजर्षयःपुण्याःकीर्तिमंतोबहुश्रुताः ॥ इष्ट्वाश्वमेधैर्बहुभिर्जाताधर्मसभासदः ॥ ४५ ॥ सभायांधर्मराजस्यधर्मएवप्रवर्तते ॥ नतत्रपक्षपातोस्तिनानृतंनचमत्सरः ॥ ४६ ॥ सभ्याःसर्वेशास्त्रविदःसर्वेधर्मपरायणाः ॥ तस्यांसभायांसततंवैवस्वतमुपासते ॥ ४७ ॥ ईदृशीसासभाताक्ष्यधर्मराज्ञोमहात्मनः ॥ नतांपश्यंतियेपापादक्षिणेनपथागताः ॥ ४८ ॥ धर्मराजपुरेगंतुंचतुर्भागाभवंतिच ॥ पापिनांगमनेपूर्वंसतुतेपरिकीर्तितः ॥ ४९ ॥ ॥ ॥ ॥

है, वहां पक्षपात नहीं है, झूठ नहीं है ॥ ४६ ॥ सब सभाके शास्त्रवेत्ता हैं, धर्मपरायण हैं, उस सभामें निरंतर वैवस्वतकी उपासना करते हैं ॥ ४७ ॥ हे गरुड़! महात्मा धर्मराजकी ऐसी सभा है. उसको दक्षिणपथसे जानेवाले पापी नहीं देखते हैं ॥ ४८ ॥ धर्मराजके पुरमें जानेको चार मार्ग हैं तिन्होंमें पापियोंके जानेका जो दक्षिणमार्ग है वो तुमको पूर्व कहा है ॥ ४९ ॥ ॥ ॥

पूर्वदिशाको आदि ले, तीन मार्गोंकरके, जो धर्मराजके पुरमें जाते हैं वही सुकृति पुण्यप्रभावसे उस सभामें जाते हैं. उन्होंको सुनो ॥५०॥ तहां एक पूर्वमार्ग है उसमें सर्व भोग हैं. कल्पवृक्षकी छायासे आच्छादित और रत्नोंसे मंडित है ॥ ५१ ॥ विमानोंके समूहसे व्याप्त हैं, हंसोंकी पंक्तियोंसे शोभित है, विद्रुमजातिके वृक्षोंसे युक्त ऐसे बगीचासे संयुक्त है, अमृतद्रव संयुक्त है, ॥ ५२ ॥ उस पूर्वमार्गसे ब्रह्मऋषि जाते

पूर्वादिभिस्त्रिभिर्मार्गैर्येगताधर्ममंदिरे ॥ तेहिसुकृतिनःपुण्यैस्तस्यांगच्छंतितान्शृणु ॥ ५० ॥ पूर्वमार्गस्तुतत्रैकःसर्वभोगसमन्वितः ॥ पारिजाततरुच्छायाच्छादितोरत्नमंडितः ॥ ५१ ॥ विमानगणसंकीर्णोहंसावलिविराजितः ॥ विद्रुमारामसंकीर्णपीयूषद्रवसंयुतः ॥ ५२ ॥ तेनब्रह्मर्षयोयांतिपुण्याराजर्षयोऽमलाः ॥ अप्सरोगणगंधर्वविद्याधरमहोरगाः ॥ ५३ ॥ देवताराधकाश्चान्येशिवभक्तिपरायणाः ॥ ग्रीष्मेप्रपादानरतामाघेकाष्ठप्रदायिनः ॥ ५४ ॥ विश्रामयंतिवर्षासुविरक्तान्दानमानतः ॥ दुःखितस्यामृतंब्रूतेददतेह्याश्रमंतुये ॥ ५५ ॥ ॥ ॥ ॥

हैं और पवित्र राजर्षि निर्मल स्वरूपवाले जाते हैं, अप्सरावोंके समूह, गंधर्व, विद्याधर, उरग ॥ ५३ ॥ और देवतोंका आराधन करनेवाले, शिवकी भक्तिमें परायण, ग्रीष्मऋतुमें प्रपादन देनेवाले, माघमें काष्ठदान करनेवाले ॥ ५४ ॥ और जो वर्षाऋतुमें विरक्तोंको दान और मानसे विश्राम देनेवाले और जो दुःखियोंको अमृतजैसा बोलते हैं और जो आश्रम देते हैं ॥ ५५ ॥ ॥ ॥

जो सत्यधर्ममें आसक्त हैं, क्रोधलोभसे रहित हैं, पितृ माताके जे भक्त हैं, गुरुकी शुश्रूषा करतेहैं, ॥ ५६ ॥ भूमिदान करनेवाले, गौदान देनेवाले, घरका दान देनेवाले, विद्यादानके देनेवाले, पुराणके वक्ता और श्रोता और वेदपुराणका पारायण करनेवाले वा सुननेवाले ॥ ५७ ॥ ए कहेभये और औरभी सुकृती पूर्वद्वारमें प्रवेश करते हैं. वे सुशील शुद्धबुद्धि धर्मसभामें जाते हैं ॥ ५८ ॥ दूसरा उत्तरमार्ग है, शैकड़ों महारथोंसे संयुक्त है, पालकियोंसे संयुक्त, मलयागिरि चंदनसे सुगंधित, ॥ ५९ ॥ हंस सारसोंसे संयुक्त, चक्रवाकोंसे शोभित, अमृतश्रावसें

सत्यधर्मतरायेचक्रोधलोभविवर्जिताः ॥ पितृमातृषुयेभक्तागुरुशुश्रूषणेरताः ॥ ५६ ॥ भूमिदागृहदागोदाविद्यादानप्रदायकाः ॥
पुराणवक्तृश्रोतारःपारायणपरायणाः ॥ ५७ ॥ एतेसुकृतिनश्चान्येपूर्वद्वारेविशंतिच ॥ यांतिधर्मसभायांतेसुशीलाःशुद्धबुद्धयः ॥५८॥
द्वितीयस्तूत्तरोमार्गोमहारथशतैर्वृतः ॥ नरयानसमायुक्तोहरिचंदनमंडितः ॥ ५९ ॥ हंससारससंकीर्णश्चक्रवाकोपशोभितः ॥ अ
मृतद्रवसंपूर्णस्तत्रभातिसरोवरः ॥ ६० ॥ अनेनवैदिकायांतितथाभ्यागतपूजकाः ॥ दुर्गाभान्वोश्चयेभक्तास्तीर्थस्नाताश्चपर्वसु
॥ ६१ ॥ येमृताधर्मसंग्रामेऽनशनेनमृताश्चये ॥ वाराणस्यांगोग्रहेचतीर्थतोयेमृताविधेः ॥ ६२ ॥ ॥ ॥

संयुक्त है, तहां सरोवर शोभायमान है ॥ ६० ॥ इस मार्गसे वैदिक जातेहैं. तैसे अभ्यागत पूजन करनेवाले, गरीबोंको देनेवाले, दुर्गा और सूर्यके जो भक्त हैं, पर्वमें तीर्थोंपर स्नान करनेवाले, ॥ ६१ ॥ जो धर्मसंग्राममें मरते हैं, जे अनशन करके, मरते हैं, काशीमें गौवोंके पकड़नेमें, तीर्थजलमें, इन्होंमें जो मरते हैं ॥ ६२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ब्राह्मणके वास्ते, स्वामिकार्यमें, तीर्थक्षेत्रमें जो मरते हैं, जो देवतोंके विध्वंसमें मरते हैं, जो योगाभ्याससे मरते हैं, ॥ ६३ ॥ जो नित्य सत्पात्रकी पूजा करते हैं, जो महादानमें आसक्त हैं वे उत्तर दरवाजासे प्रवेश करते हैं. और धर्मसभामें जाते हैं ॥ ६४ ॥ तीसरा पश्चिम मार्ग है, रत्नोंके मंदिरोंसें शोभित है, अमृतरससें सदा पूर्ण रहै ऐसी बावड़ीसे शोभायमान ॥६५॥ ऐरावतके कुलमें भये मतवाले हाथियोंसें व्याप्त, उच्चैःश्रवासे

ब्राह्मणार्थेस्वामिकार्येतीर्थक्षेत्रेषुयेमृताः ॥ येमृतादेवविध्वंसेयोगाभ्यासेनयेमृताः ॥ ६३ ॥ सत्पात्रपूजकानित्यंमहादानरताश्चये ॥ प्रविशंत्यु त्तरेद्वारेयांतिधर्मसभांचते ॥ ६४ ॥ तृतीयःपश्चिमोमार्गोरत्नमंदिरमंडितः ॥ सुधारससदापूर्णदीर्घिकाभिर्विराजितः ॥ ६५ ॥ ऐरावतकुलोद्भूतमत्तमातंगसंकुलः ॥ उच्चैःश्रवःसमुत्पन्नहयरत्नसमन्वितः ॥ ६६ ॥ एतेनात्मपरायांतिसच्छास्त्रपरिचिंतकाः ॥ अनन्यविष्णुभक्ताश्चगायत्रीमंत्रजापकाः ॥ ६७ ॥ परहिंसापरद्रव्यपरवादपराङ्मुखाः ॥ स्वदारनिरताःसंतःसाग्निकावेदपाठकाः ॥ ६८ ॥ ब्रह्मचर्यव्रतधरावानप्रस्थास्तपस्विनः ॥ श्रीपादसंन्यासपराःसमलोष्टाश्मकांचनाः ॥ ६९ ॥ ॥

हुये हयरत्नोंसे संयुक्त ॥ ६६ ॥ इसमार्गसे जो आत्मामें परायण हैं, सच्छास्त्रोंका चिंतवन करनेवाले, अनन्य विष्णुभक्त, गायत्रीमंत्रके जापक ए जाते हैं ॥ ६७ ॥ परहिंसा, परद्रव्य, परवाद, इन्होंको कभी नहीं करते हैं, स्वस्त्रीसे भोग करनेवाले, महात्मा, साग्निक, वेदपाठी, ॥ ६८ ॥ ब्रह्मचर्यव्रतधारी और वानप्रस्थ, तपस्वी, श्रीपाद, संन्यासमें परायण, जिन्होंके लोष्ट, पत्थर, सुवर्ण ए तुल्य हैं ॥ ६९ ॥ ॥

जो ज्ञानवैराग्यसे संयुक्त हैं, सर्वभूतोंको उपकार करनेवाले, शिवविष्णुके व्रत करनेवाले, कर्मोंको ब्रह्मके अर्पण करनेवाले ॥ ७० ॥ तीनों ऋणोंसे छूटे, सदा पंचयज्ञोंमें आसक्त, पितृश्वरोंके श्राद्धदाता, त्रिकाल संध्योपासन करनेवाले, ॥ ७१ ॥ नीचसंगसे रहित, सत्संगतिमें परायण ए कहेभये अप्सरोंके समूहोंसे संयुक्त, श्रेष्ठ विमानोंपर स्थित हुये, ॥ ७२ ॥ अमृत पान करते धर्मराजके मंदिरमें जाते हैं. पश्चिमद्वारसे प्र-

ज्ञानवैराग्यसंपन्नाःसर्वभूतहितेरताः ॥ शिवविष्णुव्रतकराःकर्मब्रह्मसमर्पकाः ॥ ७० ॥ ऋणैस्त्रिभिर्विनिर्मुक्ताःपंचयज्ञर
ताःसदा ॥ पितॄणांश्राद्धदातारःकालेसांध्यमुपासकाः ॥ ७१ ॥ नीचसंगविनिर्मुक्ताःसत्संगतिपरायणाः ॥ एतेप्सरो
गणैर्युक्ताविमानवरसंस्थिताः ॥ ७२ ॥ सुधापानंप्रकुर्वंतोयांतितेधर्ममंदिरं ॥ विशंतिपश्चिमद्वारेयांतिधर्मसभांतरे
॥ ७३ ॥ यमस्तानागतान्दृष्ट्वास्वागतंवदतेमुहुः ॥ समुत्थानंचकुरुतेतेषांगच्छतिसंमुखं ॥ ७४ ॥ तदाचतुर्भुजोभूत्वा
शंखचक्रगदासिभृत् ॥ पुण्यकर्मरतानांचस्नेहान्मित्रवदाचरेत् ॥ ७५ ॥ सिंहासनंचददतेनमस्कारंकरोतिच ॥ पदार्घं
कुरुतेपश्चात्पूजतेचंदनादिभिः ॥ ७६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वेश होय, धर्मराजकी सभामें जाते हैं ॥ ७३ ॥ यमराज उन आयेभयोंको देख, 'स्वागतं' ऐसे वारंवार कहते हैं. उठकर, उन्होंके सन्मुख जाते हैं ॥ ७४ ॥ तब चतुर्भुज होकर, शंख, चक्र, गदा, खड्गको धारणकर, पुण्यकर्म करनेवालेसे मित्रका जैसे स्नेह करते हैं ॥ ७५ ॥ उनको सिंहासन देते हैं, नमस्कार करते हैं, फेर पाद्य, अर्घ्यकरके चंदनादिकोंसे पूजते हैं ॥ ७६ ॥ ॥ ॥

वहां कल्पपर्यंत वास कर देवतोंके भोग भोगकर, पुण्यशेषसे पुण्यसें प्राप्त होनेमें आवै. ऐसा मनुष्यजन्म प्राप्त होता है ॥ ८४ ॥ उस मनुष्यजन्ममें महाधनी, सर्वज्ञाता, सर्वशास्त्रमें निपुण ऐसा होता है. फेर आत्मविचारकरके, परमगतिको प्राप्त होता है ॥ ८५ ॥ हे गरुड ! ए तुमको पूंछाहुवा सर्व यमका स्थान वर्णन किया है इसको भक्तिसे सुनताहुवा पुरुष धर्मराजकी सभामें जाता है ॥ ८६ ॥ इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे ज्ञानबोधिनीभाषाटीकायां धर्मराजनगरनिरूपणोनाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ अब गरुड़जी कहते हैं— धर्मात्मा स्वर्ग भोग-

उषित्वातत्रकल्पांतंभुक्त्वाभोगानमानुषान् ॥ प्राप्नोतिपुण्यशेषेणमानुष्यंपुण्यदर्शनम् ॥ ८४ ॥ महाधनीचसर्वज्ञःसर्वशास्त्रविशारदः ॥ पुनःस्वात्मविचारेणततोयातिपरांगतिम् ॥८५॥ एतत्तेकथितंसर्वंत्वयापृष्टंयमालयम् ॥ इदंशृण्वन्नरोभक्त्याधर्मराजसभांव्रजेत् ॥ ८६ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेधर्मराजनिरूपणोनामचतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥ ॥गरुडउवाच॥ ॥धर्मात्मास्वर्गतिंभुक्त्वाजायतेविमलेकुले ॥ अतस्तस्यसमुत्पत्तिंजननीजठरेवद ॥ १ ॥ यथाविचारंकुरुतेदेहेऽस्मिन्सुकृतीजनः ॥ तथाहंश्रोतुमिच्छामिवदमेकरुणानिधे॥२॥ ॥श्रीभगवानुवाच॥ ॥साधुपृष्टंत्वयाताक्ष्र्यपरंगोप्यंवदामिते॥यस्यविज्ञानमात्रेणसर्वज्ञत्वंप्रजायते ॥३॥

कर, निर्मल कुलमें जन्मता है. इससे उनकी उत्पत्ती माताके पेटमें कैसे होती है, सो कहो ॥ १ ॥ जैसे सुकृती पुरुष इस मनुष्यशरीरमें विचार करता है तैसे हम सुननेकी इच्छा करते हैं. हे करुणानिधे! हमारेको कहो ॥ २ ॥ अब भगवान कहते हैं— हे गरुड़ ! तुमने श्रेष्ठ बात पूंछी है. परमगुप्त तुमको, कहता हूं जिसके अनुभवज्ञानमात्रसे सर्वज्ञत्वपना प्रगट होता है ॥ ३ ॥ ॥ ॥

ऐसे कहते हैं कि– हे सभासदो! इस ज्ञानीको परमआदरसे नमस्कार करो. यह हमारा मंडल भेदन कर, ब्रह्मलोकमें जायगा ॥ ७७ ॥ अब आयेभये पुण्यवानोंको कहता है–हे बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ! तुम नरकके क्लेशसे डरके, पुण्यवान तुमने सुख देनेवाले देवत्वपना सिद्ध किया है ॥७८॥ जो दुर्लभ ए मनुष्यशरीर प्राप्त होकर, नित्य जो साधना नहीं करता है वो घोर नरकमें जाता है. उससे जड़ और कौन है ॥७९॥ अस्थिर शरीरसे, अस्थिर धनादिकोंसे, स्थिर धर्मको जो संचय करता है वो एक बुद्धिवान् पुरुष है ॥ ८० ॥ तिसीसे सर्वयत्नसे धनसंचय करना.

नमस्कुर्वंतिभोःसभ्याज्ञानिनंपरमादरात् ॥ एषमेमंडलंभित्त्वाब्रह्मलोकंप्रयास्यति ॥ ७७ ॥ भोभोबुद्धिमतांश्रेष्ठानरकक्लेशभीरवः ॥
भवद्भिःसाधितंपुण्यैर्देवत्वंसुखदायकम् ॥ ७८ ॥ मानुष्यंदुर्लभंप्राप्यनित्यंयस्तुनसाधयेत् ॥ सयातिनरकंघोरंकोऽन्यस्तस्मादचेतनः
॥ ७९ ॥ अस्थिरेणशरीरेणयोऽस्थिरैश्चधनादिभिः ॥ संचिनोतिस्थिरंधर्मंसएकोबुद्धिमान्नरः ॥ ८० ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकर्तव्यो
धर्मसंचयः ॥ गच्छध्वंपुण्यवत्स्थानंसर्वभोगसमन्वितम् ॥ ८१ ॥ इतिधर्मवचःश्रुत्वातंप्रणम्यसभांचताम् ॥ अमरैःपूज्यमानास्ते
स्तूयमानामुनीश्वरैः ॥ ८२ ॥ विमानगणसंकीर्णाःप्रयांतिपरमंपदम् ॥ केचिद्धर्मसभायांहितिष्ठंतिपरमादरात् ॥ ८३ ॥ ॥

उससे सर्वभोगसंयुक्त पुण्यवान स्थानमें जाना ॥ ८१ ॥ ऐसे धर्मराजका धार्मिक वचन सुनकर, उस धर्मराजको वा सभाको नमस्कार करके, देवतोंसे पूजाहुए, मुनीश्वरोंसे स्तुतिको प्राप्त भये ॥ ८२ ॥ विमानोंके समूहसे युक्त परमपदको जाते हैं. कितनेक धर्मसभामें परम आदरसे स्थित रहते हैं ॥ ८३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अब शरीरका पारमार्थिक स्वरूप कहता हूं कैसा स्वरूप है ब्रह्मांड॰ गुणोंसे संयुक्त योगिराजोंके धारणाका स्थान ॥ ४ ॥ जिस परमार्थिक स्वरूपमें जैसे योगिराज षट्चक्र चित... ...ते हैं. और ब्रह्मरंध्रमें चिदानंद रूपको ध्यान जैसे करते हैं सो सुनो ॥ ५ ॥ प... श्रीमंतोंके घरमें जसे सुकृती जन्मता है तैसे विधि और नियम उनके माता पिताके तुमको कहता हूं ॥ ६ ॥ स्त्रियोंके ऋतुकालमें चार दिन त्यागने

वक्ष्यामिचशरीरस्यस्वरूपंपारमार्थिकं ॥ ब्रह्मांडगुणसंपन्नंयोगिनांधारणास्पदम् ॥ ४ ॥ षट्चक्रचिंतनंयस्मिन्यथाकुर्वंतियोगिनः ॥ ब्रह्मरंध्रेचिदानंदरूपध्यानंतथाश्रृणु ॥ ५ ॥ शुचीनांश्रीमतांगेहेजायतेसुकृतीयथा ॥ तथाविधानंनियमंतत्पित्रोः कथयामिते ॥ ६ ॥ ऋतुकालेतुनारीणांत्यजेद्दिनचतुष्टयम् ॥ तावन्नालोकयेद्वक्त्रंपापंवपुषिसंभवेत् ॥ ७ ॥ स्नात्वासचैलं सानारीचतुर्थेऽहनिशुध्यति ॥ सप्ताहात्पितृदेवानांभवेद्योग्याव्रतार्चने ॥ ८ ॥ सप्ताहमध्येयोगर्भःसभवेन्मलिनाशयः ॥ प्रायशःसंभवंत्यत्रपुत्रास्त्वष्टाहमध्यतः ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वो चार दिनतक मुख नहीं देखना. कारण शरीरमें पाप रहता है ॥ ७ ॥ वह स्त्री वस्त्रोंसहित स्नान करके चौथे दिन शुद्ध होती है और पितर देवतोंके व्रत करनेमें पूजा करनेमें योग्य सात दिनसे होती है ॥ ८ ॥ सातदिवसके मध्य ज़ो गर्भ होता है वोह मलिनाशय होता है और आठ दिवसके अंदरही अवश्य पुत्रादिक होते हैं तथापि सुकृती आठदिनके अंदर नहीं होता है ॥ ९ ॥ ॥ ॥

कारण सातदिवसके अंदर जो गर्भ होता है वो मलिनाशय होता है. इसीसे युग्मतिथियोंमें पुत्र जन्मते हैं. और विषम तिथियोंमें कन्या होती है. तिसीसे प्रथमके सात दिवस त्यागकर, पीछे युग्मतिथियोंमें स्त्रीसंग करना ॥ १० ॥ स्त्रियोंके सोला रात्री सामान्यतासे ऋतुकी कही हैं. जो चौदहवीं रात्रि है तहां गर्भ रहता है वो गुणभाग्यको निधि धर्मात्मा पुत्र जन्मता है ॥ ११ ॥ वोह चौदहीं रात्रि प्राकृत जीवोंको कभी नहीं प्राप्त होती है उसमें दैवी जन्मता है ॥ १२ ॥ पांचवें दिन स्त्रियोंको मधुर भोजन करना, कटु, क्षार, तीक्ष्ण और गरम

युग्मासुपुत्राजायंतेस्त्रियोऽयुग्मासुरात्रिषु ॥ पूर्वसप्तकमुत्सृज्यतस्माद्युग्मासुसंविशेत् ॥ १० ॥ षोडशर्तुनिशाःस्त्रीणांसामान्याः समुदाहृताः ॥ यावैचतुर्दशीरात्रिर्गर्भस्तिष्ठतितत्रवै ॥ ११ ॥ गुणभाग्यनिधिःपुत्रस्तदाजायेतधार्मिकः ॥ सानिशाप्राकृतैर्जीवैर्न लभ्येतकदाचन ॥ १२ ॥ पंचमेहनिनारीणांकार्यंमधुरभोजनम् ॥ कटुक्षारंचतीक्ष्णंचत्याज्यमुष्णंचदूरतः ॥ १३ ॥ तत्क्षेत्रमोषधी पात्रंबीजंचाप्यमृतायितम् ॥ तस्मिन्नुप्त्वानरःस्वामीसम्यक्फलमवाप्नुयात् ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥

ए दूरसे त्यागने ॥ १३ ॥ वोह क्षेत्र तौ औषधको पात्र है. बीजभी अमृततुल्य है. जैसे खेतयवादि अन्नको उत्पन्न करता उसमें कांटा, गुल्म, वगैरै होंय उनको दूर करनेसे, जल सिंचनेसे श्रेष्ठ; अन्न होता है तैसे पुत्रोत्पत्तिको स्थान स्त्रियोंको गर्भरूप क्षेत्र उसमें कांटा गुल्मरूपी, कटुआदि भोजन त्यागकर, वीर्यसेचनकर, उसमें बोनेसे पिता श्रेष्ठ धर्मात्मा पुत्रको प्राप्त होता है ॥ १४ ॥ ॥ ॥

तांबूल, पुष्प, चंदन इनोंसे संयुक्त पुष्प श्रेष्ठवस्त्रको धारणकर, मनमें धर्मग्रहण कर, सुंदर शय्यापर प्राप्त होवै ॥ १५ ॥ संभोगसमयमेंजैसी मनुष्यकी चित्तकी विकल्पना हो वैसा स्वभावका प्रगटनेवाला जीव कुक्षिमें प्राप्त होताहै ॥ १६ ॥ बीजरूप चैतन्यता नित्य कुक्षिवीर्यमें रहतीहै जब काम चित्त वीर्य एकत्र हो ॥ १७ ॥ तब मनुष्य स्त्रीके गर्भाशयमें द्राव अर्थात् वीर्य सींचताहै उस वख्त शुक्र और रुधिरके

तांबूलपुष्पश्रीखंडैःसंयुक्तःशुचिवस्त्रभृत् ॥ धर्ममादायमनसिसुतल्पंसंविशेत्पुमान् ॥ १५ ॥ निषेकसमयेयादृङ्नरचित्तविकल्पना ॥ तादृक्स्वभावसंभूतिर्जंतुर्विशतिकुक्षिगः ॥ १६ ॥ चैतन्यंबीजभूतंहिनित्यंशुक्रेप्यवस्थितम् ॥ कामश्चित्तंचशुक्रंचयदाह्येकत्वमाप्नुयात् ॥ १७ ॥ तदाद्रावमवाप्नोतियोषिद्गर्भाशयेनरः ॥ शुक्रशोणितसंयोगात्पिंडोत्पत्तिःप्रजायते ॥ १८ ॥ परमानंददःपुत्रोभवेद्गर्भगतःकृती ॥ भवंतितस्यनिखिलाःक्रियाःपुंसवनादिकाः ॥ १९ ॥ जन्मप्राप्नोतिपुण्यात्माग्रहेषूच्चगतेषुच ॥ तज्जन्मसमयेविप्राःप्राप्नुवंतिधनंबहु ॥ २० ॥ विद्याविनयसंपन्नोवर्धतेपितृवेश्मनि ॥ सतांसंगेनसभवेत्सर्वागमविशारदः ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

संयोगसे पिंडोत्पत्ति होतीहै ॥ १८ ॥ सुकृती गर्भमें प्राप्त हुवा परम आनंदका देनेवाला होताहै. उसकी समग्र पुंसवनादिक क्रिया होतीहैं ॥ १९ ॥ पुण्यात्मा पुरुष उच्च राशिपर ग्रह हों तब जन्मताहै उस सुकृतीके जन्मनेके बखत ब्राह्मणोंको बहोत धन मिलताहै ॥ २० ॥ वोह विद्या नम्रतासे संयुक्त हुवा पिताके घरमें वृद्धिको प्राप्त होताहै. सत्पुरुषोंके संगसे सर्व वेदोंमें निपुण होताहै ॥ २१ ॥ ॥

तरुण अवस्थामें दिव्य स्त्रीआदि भोगोंको भोक्ता हो दानी और धनी हो, पूर्व कहाहुवा तप तीर्थ महापुण्य इन्होंके उदयसे ॥ २२ ॥
पीछे वृद्धा अवस्थामें नित्य आत्मा और अनात्माके विचारमें मनसे यत्न करताहै. अध्यारोप अर्थात् नहीं सर्पऐसी जेवड़ीमें सर्पको मानके
भ्रम करना वस्तुमें अवस्तुका आरोपण ए अध्यारोप अपवादजैसे अवस्तुमें वस्तुका भ्रम यथा असत्य नाशवान संसारको सत्य समझना ए
अध्यारोप और अपवादसे पदार्थको जानकर "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" "नेह नानास्ति किंचन" इत्यादि श्रुतियोंमें कहे विचारसे ब्रह्मचिंतन

दिव्यांगनादिभोक्तास्यात्तारुण्येदानवान्धनी ॥ पूर्वंकृततपस्तीर्थमहापुण्यफलोदयात् ॥ २२ ॥ ततश्चयततेनित्यमात्मानात्मवि
चारणे ॥ अध्यारोपापवादाभ्यांकुरुतेब्रह्मचिंतनम् ॥ २३ ॥ अस्यासंगावबोधायब्रह्मणोन्वयकारिणः ॥ क्षित्याद्यनात्मवर्गस्यगुणांस्ते
कथयाम्यहम् ॥ २४ ॥ क्षितिर्वारिहविर्भोक्तावायुराकाशएवच ॥ स्थूलभूताइमेप्रोक्ताःपिंडोऽयंपांचभौतिकः ॥ २५ ॥ त्वगस्थि
नाड्योरोमाणिमांसंचैवखगेश्वर ॥ एतेपंचगुणाभूमेर्मयातेपरिकीर्तिताः ॥ २६ ॥ ॥ ॥ ॥

करे ॥ २३ ॥ आत्मानामसे ईश्वर अनात्मानामसे देहआदि पदार्थ तहां अनात्मा पृथ्वीआदिमें ब्रह्मका अन्वय है और पीछे सबसे जुदा है
ऐसा आत्मारूप, ब्रह्मके ज्ञानके वास्ते पृथ्वीआदि अनात्म पदार्थोंका गुण मैं तुमको कहताहूं ॥ २४ ॥ अब अनात्म अर्थात् देहादिकका
विचार कहतेहैं. पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश ए पंच महाभूत हैं. इन पंचभूतोंसे उत्पन्न हुवा शरीर है ॥ २५ ॥ हे गरुड़! त्वचा, हाड़,
नसैं, रोम, मांस ए पांच पृथ्वीके गुण मैंने तुमको कहे ॥ २६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गं० ॥८

लाला, मूत्र, वीर्य, मज्जा पंचम रक्त ए पांच जलके गुण कहे. अब तेजकेभी सुनो ॥ २७ ॥ क्षुधा, प्यास, आलस्य, नींद, कांति हे गरुड़ ! ए पांच गुण तेजके सब जगह योगिराजोंने कहेहैं ॥ २८ ॥ अंगोंका संकोचन १, भ[illegible]ा २, लंघन ३, अंगोंका पसारना ४, चेष्टा करनी ५ ए पांच वायुके गुण कहेहैं ॥ २९ ॥ शब्द सुनना, चिंता, शून्यता, मोह, चित्तमें संदेह ए पांच आकाशके गुण हैं. सो यत्नसे जानने ॥ ३० ॥ मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त इन चारों संबंधी शुभाशुभ पूर्वकर्मोंकी वासनायुक्त अंतःकरण कहाहै ॥ ३१ ॥ श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिव्हा, नाशिका ए पंच ज्ञानइंद्रियां हैं. वाणी, हाथ, पैर, गुदा, लिंग ए पांच कर्मइंद्रियां हैं ॥ ३२ ॥ दिशा, वायु, सूर्य, प्रचेता, अश्विनीकुमार, अग्नि, इंद्र, उपेंद्र, मित्रावरुण दक्ष ए ज्ञान और कर्म इंद्रियोंके देवता कहेहैं ॥ ३३ ॥

लालामूत्रंतथाशुक्रंमज्जारक्तंचपंचमम् ॥ अपांपंचगुणाःप्रोक्तास्तेजसोऽपिनिशामय ॥ २७ ॥ क्षुधातृषातथालस्यंनिद्राकांतिस्तथैवच ॥ तेजःपंचगुणंतार्क्ष्यप्रोक्तंसर्वत्रयोगिभिः ॥ २८ ॥ आकुंचनंधावनंचलंघनंचप्रसारणं ॥ चेष्टितंचेतिपंचैवगुणा वायोःप्रकीर्तिताः ॥ २९ ॥ घोषश्चिंताचशून्यत्वंमोहश्चिंताचसंशयः ॥ आकाशस्यगुणाःपंचज्ञातव्यास्तेप्रयत्नतः ॥ ३० ॥ मनोबुद्धिरहंकारश्चित्तंचेतिचतुष्टयम् ॥ अंतःकरणमुद्दिष्टंपूर्वकर्माधिवासितम् ॥ ३१ ॥ श्रोत्रंत्वक्चक्षुषीजिह्वाघ्राणंज्ञानेंद्रियाणिच ॥ वाक्पाणिपादपायूपस्थानिकर्मेंद्रियाणिच ॥ ३२ ॥ दिग्वातार्कप्रचेतोश्विवह्नींद्रोपेंद्रमित्रकाः ॥ ज्ञानकर्मेंद्रियाणांचदेवताःपरिकीर्तिताः ॥ ३३ ॥

इडा, पिंगला, सुषुम्णा, गांधारी, गजजिव्हा, पूषा, यशस्विनी ॥ ३४ ॥ अलंबुषा, कुहू, शंखिनी ए शरीरमें स्थित मुख्य दश नाड़ियांहैं ॥ ३५ ॥ प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय ए दश शरीरमें प्राण हैं ॥ ३६ ॥ हृदयमें प्राण रहता है, गुदामें अपान रहताहै, नाभिमें समान रहताहै, उदान कंठमें रहताहै, व्यान सर्वशरीरमें रहताहै ॥ ३७ ॥ डकारमें नागनाम प्राण कह्या है, नेत्र

इडाचपिंगलाचैवसुषुम्णाख्यातृतीयका ॥ गांधारीगजजिह्वाचपूषाचैवयशस्विनी ॥ ३४ ॥ अलंबुषाकुहूश्चापिशंखिनीदशमीतथा ॥ पिंडमध्यस्थिताह्येताःप्रधानादशनाडिकाः ॥ ३५ ॥ प्राणोऽपानःसमानाख्यउदानोव्यानएवच ॥ नागःकूर्मश्चकृकलोदेवदत्तोधनंजयः ॥ ३६ ॥ हृदिप्राणोगुदेऽपानःसमानोनाभिमंडले॥उदानःकंठदेशेस्याद्व्यानःसर्वशरीरगः ॥ ३७ ॥ उद्गारेनागआख्यातःकूर्मउन्मीलनेस्मृतः ॥ कृकलःक्षुत्करोज्ञेयोदेवदत्तोविजृंभणे ॥ ३८ ॥ नजहातिमृतंवापिसर्वव्यापिधनंजयः ॥ कवलैर्भुक्तमन्नंहिपुष्टिदंसर्वदेहिनां ॥ ३९ ॥ नयतेव्यानकोवायुःसारांशंसर्वनाडिषु ॥ आहारोभुक्तमात्रोहिवायुनाक्रियतेद्विधा ॥ ४० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उघड़नेमें कूर्म प्राण कहा है, क्षुधाकरनेमें कृकल प्राण कहा है, जंभाईमें देवदत्त नाम प्राण कहा है, ॥ ३८ ॥ सर्व शरीरव्यापी धनंजय मरेहुयेकोभी नहीं त्यागैहै वोह ग्रासोंसें खायाहुवा अन्न सर्वशरीरको पुष्टिदेताहै ॥ ३९ ॥ व्यान नाम वायु सर्वनाड़ियोंमें अन्नके सारांशको लेजाताहै, खायेहुये आहारके वायुसे दो प्रकार किये जातेहैं ॥ ४० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

साढ़ेतीन करोड़ व्यावहारिक शरीरके रोवां हैं, सात लाख केश हैं. नख बीश कहे हैं ॥ ४७ ॥ बत्तीस दांत कहे हैं. हे गरुड़ ! ए सामान्य-तासे कहा है और हजार पल मांस कहा है सौपल लोही कहा है ॥ ४८ ॥ दश पल मेदा कही है, सत्तर पल त्वचा कही है, बारह पल मज्जा कही है, तीन पल महारक्त कहा है, ॥ ४९ ॥ दो कुड़व शुक्र कहा है एक कुड़व रक्त कहा है. तीनसौ साठ शरीरमें अस्थि कहे हैं

तिस्रःकोट्योऽर्धकोटीचरोमाणिव्यावहारिके ॥ सप्तलक्षाणिकेशाःस्युर्नखाःप्रोक्तास्तुविंशतिः ॥४७॥ द्वात्रिंशद्दशनाःप्रोक्ताः सामान्याद्विनतासुत ॥ मांसंपलसहस्रंतुरक्तंपलशतंस्मृतम् ॥ ४८ ॥ पलानिदशमेदस्तुत्वक्पलानिचसप्ततिः ॥ पलद्वादश कंमज्जामहार[illegible]लत्रयम् ॥ ४९ ॥ शुक्रंद्विकुडवंज्ञेयंकुडवंशोणितंस्मृतम् ॥ षष्ठ्युत्तरंचत्रिशतमस्थ्नांदेहेप्रकीर्तितम् ॥५०॥ [illegible]ःस्थूलाश्चसूक्ष्माश्चकोटिशःपरिकीर्तिताः ॥ पित्तंपलानिपंचाशत्तदर्धंश्लेष्मणस्तथा ॥ ५१ ॥ सततंजायमानंतुविण्मूत्रंचाप्रमाणतः ॥ एतद्गुणसमायुक्तंशरीरंव्यावहारिकं ॥ ५२ ॥ भुवनानिचसर्वाणिपर्वतद्वीपसागराः ॥ आदित्याद्याग्रहाः संतिशरीरेपारमार्थिके ॥ ५३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ५० ॥ स्थूल और सूक्ष्म ऐसी कोटिप्रमाण नाड़ी कही हैं. पचाश पल पित्त है. और पच्चीश पल कफ है ॥ ५१ ॥ रात दिवस होनेवा-ला मल मूत्र अप्रामाणिक है. इन कहेभये गुणोंसहित व्यावहारिक शरीर है ॥५२॥ दूसरे पारमार्थिक शरीरमें चौदा भुवन, पर्वत, द्वीप, समुद्र, सूर्यादि ग्रह ए परमार्थिक शरीरमें हैं ॥ ५३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गुदामें प्रवेश होकर, जलको जुदा और अन्नको जुदा करके, अग्निके ऊपर जल करके, जलके ऊपर अन्न करके, ॥ ४१ ॥ अग्निके नीचे आप प्राण स्थित होकर, शनैः शनैः अग्निको तेज करता है, वायुसे धमाया भया अग्नि मैल जुदा और रस जुदा करता है ॥ ४२ ॥ व्यान वायु चारोंतरफ रसको फैलाता है, बारह दरवाजोंसे जुदा हुवा मल बाहिर निकालता है ॥४३॥ कान, नेत्र नाशिका, जीभ, दांत, नाभि, नख,

संप्रविश्यगुदेसम्यक्पृथगन्नंपृथग्जलम् ॥ ऊर्ध्वमग्नेजलंकृत्वाकृत्वान्नंचजलोपरि ॥ ४१ ॥ अग्नेश्चाधःस्वयंप्राणःस्थित्वाग्निंधम
तेशनैः ॥ वायुनाध्मायमानोग्निःपृथक्किट्टंपृथग्रसम् ॥ ४२ ॥ कुरुतेव्यानकोवायुर्विष्वक्संप्रापयेद्रसम् ॥ द्वारैर्द्वादशभिर्भिन्नं
किट्टंदेहाद्ब[illegible]ग्रजेत् ॥ ४३ ॥ कर्णाक्षिनासिकाजिव्हादंतानाभिर्नखागुदम् ॥ गुह्यंशिरावपुर्लोममलस्थानानिचक्षते ॥४४॥
एवंसर्वेश्वर्वर्ततस्वस्वकर्मणिवायवः ॥ उपलभ्यात्मनःसत्तासूर्यालोकंयथाजनाः ॥ ४५ ॥ इदानींनरदेहस्यशृणुरूपद्वयंखग ॥
व्यावहारिकमेकंचद्वितीयंपारमार्थिकं ॥ ४६ ॥ ॥ ॥ ॥

गुदा, गुह्य, शिर, शरीर, रोम ए मलके स्थान कहे हैं ॥ ४४ ॥ ऐसे संपूर्ण वायु आत्मा नाम ईश्वरकी सत्ताको प्राप्त होकर, अपनें अपनें कामोंमें प्रवृत्त होरहे हैं. जैसे सूर्य कर्ममें मनुष्योंको प्रवृत्त कर, आप साक्षित्वसे स्थित रहते है. तैसे ईश्वर भी प्राणोंको अपनें अपनें कर्ममें प्रवृत्त करके, साक्षीरूपसे स्थित हैं ॥ ४५ ॥ हे गरुड़ ! अब मनुष्यदेहके दो रूप सुनो. एकतो व्यावहारिक दूसरा पारमार्थिक ॥ ४६ ॥ ॥

पारमार्थिक शरीरमें षट्चक्र हैं. जो ब्रह्मांडमें गुण कहे हैं वे इसीमें स्थित हैं ॥ ५४ ॥ उन्होंको मैं तुमको कहता हूं कैसे वे चक्र हैं. योगीजनोंके धारणका स्थान, जिन्होंकी भावनासे जीव विराटरूपको प्राप्त होता है ॥५५॥ पादके नीचे तौ तललोक है, पादके ऊपर वितल है, गोड़ोंमें सुतल लोक है, सक्थिदेशमें महातल है ॥५६॥ जांघोंमें तलातल है, गुदामें रसातल है, कटिमें पाताल है, ऐसे सप्तलोक कहे हैं ॥५७॥

पारमार्थिकदेहेहिषट्चक्राणिभवंतिच ॥ ब्रह्मांडेयेगुणाःप्रोक्तास्तेप्यस्मिन्नैवसंस्थिताः ॥ ५४ ॥ तानहंतेप्रवक्ष्यामियोगिनांधारणास्पदान् ॥ येषांभावनयाजंतुर्भवेद्वैराजरूपभाक् ॥ ५५ ॥ पादाधस्तात्तलंज्ञेयंपादोर्ध्वेवितलंतथा ॥ जानुनोःसुतलंविद्धिसक्थिदेशेमहातलम् ॥ ५६ ॥ तलातलंसक्थिमूलेगुह्यदेशेरसातलम् ॥ पातालंकटिसंस्थंचसप्तलोकाःप्रकीर्तिताः ॥ ५७ ॥ भूर्लोकंनाभिमध्येतुभुवर्लोकंतदूर्ध्वके ॥ स्वर्लोकंहृदयेविद्यात्कंठदेशेमहस्तथा ॥ ५८ ॥ जनलोकंवक्त्रदेशेतपोलोकंललाटके ॥ सत्यलोकंब्रह्मरंध्रेभुवनानिचतुर्दश ॥ ५९ ॥ त्रिकोणेसंस्थितोमेरुरधःकोणेचमंदरः ॥ दक्षकोणेचकैलासोवामकोणेहिमाचलः ॥ ६० ॥ ॥

नाभिके मध्यमें भूर्लोक है, नाभिके ऊपर भुवर्लोक है, हृदयमें स्वर्गलोक है, तैसेही कंठमें महर्लोक है, ॥५८॥ मुखारविंदमें जनलोक है, ललाटमें तपलोक है, ब्रह्मरंध्र अर्थात् तलुवामें सत्यलोक है ऐसे चतुर्दश भुवन हैं ॥ ५९ ॥ हृदय और पीठके कमलमें मेरुपर्वत स्थित है, नीचेके कोणमें मंदराचल है, दक्षिणकोणमें कैलास स्थित है, वामकोणमें हिमाचल है ॥ ६० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ऊर्द्धरेखामें निषध पर्वत है, दक्षिणरेखामें गंधमादन है, वाम रेखामें (रमण) है, ऐसे ए सप्त कुल पर्वत हैं ॥ ६१ ॥ अस्थिस्थानमें जंबुद्वीप स्थित है. शाकद्वीप मज्जा अर्थात् चर्बीमें स्थित है. मांसमें कुशद्वीप है, नाड़ियोंमें क्रौंचद्वीप है ॥ ६२ ॥ त्वचामें शाल्मलिद्वीप है. रोमसमूहमें गोमेदद्वीप स्थित है, नखोंमें पुष्करद्वीप है, उसके अगाड़ी समुद्र हैं ॥६३॥ और मूत्रमें क्षारोद समुद्र है, क्षीरमें क्षीरोद समुद्र रहता है, सुरोदधि कफमें स्थित है, चर्बीमें घृतसमुद्र स्थित है, ॥ ६४ ॥ रसोदधि रसमें स्थित है, रक्तमें दधिसमुद्र स्थित है, स्वादूदसमुद्र लंबिका अर्थात्

निषधश्चोर्ध्वरेखायांदक्षायांगंधमादनः ॥ रमणोवामरेखायांसप्तैतेकुलपर्वताः ॥ ६१ ॥ अस्थिस्थानेभवेज्जंबुःशाकोमज्जासुसंस्थितः ॥
कुशद्वीपस्थितोमांसेक्रौंचद्वीपःशिरासुच ॥ ६२ ॥ त्वचायांशाल्मलीद्वीपोगोमेदोरोमसंचये ॥ नखस्थंपुष्करंविद्यात्सागरास्तदनंतरम् ॥ ६३ ॥ क्षारोदोहिभवेन्मूत्रेक्षीरेक्षीरोदसागरः ॥ सुरोदधिःश्लेष्मसंस्थोमज्जायांघृतसागरः ॥ ६४ ॥ रसोदधिंरसेविद्याच्छोणितेदधिसागरः ॥ स्वादूदोलंबिकास्थानेजानीयाद्विनतासुत ॥ ६५ ॥ नादचक्रेस्थितःसूर्योबिंदुचक्रेचचन्द्रमाः ॥ लोचनस्थःकुजोज्ञेयोहृदयेज्ञःप्रकीर्तितः ॥ ६६ ॥ विष्णुस्थानेगुरुंविद्याच्छुक्रेशुक्रोव्यवस्थितः ॥ नाभिस्थानेस्थितोमंदोमुखेराहुःप्रकीर्तितः ॥ ६७ ॥

कंठके मध्यमें स्थित रहता है ॥ ६५ ॥ ऐसे हे गरुड़! सप्त महासमुद्रोंकी स्थिति जाननी. सूर्य नादचक्रमें स्थित हैं, चंद्रमा बिंदुचक्रमें स्थित है, नेत्रोंमें मंगल जानना, हृदयमें बुध जानना ॥ ६६ ॥ विष्णुस्थान अर्थात् नाभ्यांतर्गत मणिपूरकचक्रमें बृहस्पतिको जानना, शुक्रमें शुक्र स्थित हैं, नाभिस्थानमें शनैश्चर स्थित है, मुखमें राहु स्थित है ॥ ६७ ॥ ॥ ॥ ॥

हृदयमें कंठपर्यंत वायुस्थानमें केतु स्थित है ऐसे शरीरमें ग्रहमंडल स्थित हैं. ऐसे सब स्वरूपकरके, अपने शरीरको चिंतवन करना ॥ ६८ ॥ सदा प्रभातसमयमें पद्मासन बांधकर, स्थित हुवा षट्चक्रोंका चिंतवन यथोक्त अजपाके क्रमसे करना ॥ ६९ ॥ अजपा नाम गायत्री है. सो गायत्री मुनियोंको, मोक्षकी देनेवाली है. इसके संकल्पमात्रसे संपूर्ण पापोंसें छूटते हैं ॥ ७० ॥ हे गरुड़! सुनों

वायुस्थानेस्थितःकेतुःशरीरेग्रहमण्डलम् ॥ एवंसर्वस्वरूपेणचिंतयेदात्मनस्तनुम् ॥ ६८ ॥ सदाप्रभातसमयेबद्धपद्मासनःस्थितः ॥ षट्चक्रचिंतनंकुर्याद्यथोक्तमजपाक्रमम् ॥ ६९ ॥ अजपानामगायत्रीमुनीनांमोक्षदायिनी ॥ अस्याःसंकल्पमात्रेण सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ७० ॥ शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्येऽहमजपाक्रमसुत्तमम् ॥ यंकृत्वासर्वदाजीवोजीवभावंविमुंचति ॥ ७१ ॥ मूलाधारःस्वाधिष्ठानंमणिपूरकमेवच ॥ अनाहतंविशुद्धाख्यमाज्ञाषट्चक्रमुच्यते ॥ ७२ ॥ मूलाधारेलिंगदेशेनाभ्यांहृदिच कंठगे ॥ भ्रुवोर्मध्येब्रह्मरन्ध्रेक्रमाचक्राणिचिंतयेत् ॥ ७३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अजपाको उत्तम क्रम कहताहूं. जिस क्रमके सदा करनेसे जीव जीवभावको त्यागताहै ॥ ७१ ॥ मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा ए षट्चक्र कहेहैं ॥ ७२ ॥ मूलाधारमें, लिंगस्थानमें, नाभिमें, हृदयमें, कंठमें, भ्रुकुटीमें, ब्रह्मरंध्रमें इन्होंमें क्रमसे पूर्व कहे षट्चक्रोंको चिंतवन करना ॥ ७३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अत्र षट् मूलाधारादि चक्रोंके चिंतवनका स्वरूप कहतेहैं. आधारचक्रके चार दल हैं. (व शषस) और अग्निजैसा बर्ण है १ स्वाधिष्ठान चक्र सूर्यसमान है. (बभमयरल) ए षट् दल हैं २ तथा मणिपूरक चक्रका रक्त वर्ण है (डढणतथदधनपफ) ए दश दलहैं ३ और अनाहतचक्रका सुवर्णमयी स्वरूप है (कखगघङचछजझञटठ) ए बारा दल हैं ॥७४॥ तथा विशुद्धिचक्र चंद्रमाजैसा प्रकाशित है, षोडश स्वरदलोंसे सहित है तथा भृकुटीमें आज्ञाचक्र रक्तवर्णका है. हंस ए दो दल हैं. ऐसे षट्चक्र कहे. इन षट्चक्रोंके ऊपर प्रकाशमान सहस्रदलोंका कमल है.

आधारंतुचतुर्दलानलसमंवासांतवर्णाश्रयंस्वाधिष्ठानमपिप्रभाकरसमंबालांतषट्पत्रकम् ॥ रक्ताभंमणिपूरकंदशदलंडाद्यंफकारांतकं
पत्रैर्द्वादशभीरनाहतपुरंहैमंकठांतावृतम् ॥ ७४ ॥ पत्रैःसस्वरषोडशैःशशधरज्योतिर्विशुद्धांबुजंहंसेत्यक्षरयुग्मकंद्वयदलंरक्ताभमात्रां
बुजम् ॥ तस्मादूर्ध्वततंप्रभासितमिदंपद्मंसहस्रच्छदंसत्यानन्दमयंसदाशिवमयंज्योतिर्मयंशाश्वतम् ॥ ७५ ॥ गणेशंचविधिंविष्णुं
शिवंजीवंगुरुंततः ॥ व्यापकंचपरंब्रह्मक्रमाच्चक्रेषुचिंतयेत् ॥ ७६ ॥ एकविंशत्सहस्राणिषट्शतान्यधिकानिच ॥ अहोरात्रेणश्वास
स्यगतिःसूक्ष्मास्मृताबुधैः ॥ ७७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वोह कमल सत्यमयी, आनंदमयी, सदाशिवमयी, ज्योतिर्मयी अनादिकालका स्थित है. उस कमलमें ब्रह्मस्वरूपका चिंतवन करना ॥७५॥ इन षट्चक्रोंमें गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, जीव, गुरु इन्होंको क्रमसे चिंतवन करना ॥ ७६ ॥ तथा एकदिन रातसे २१००० और ६०० श्वास आवते हैं ए सूक्ष्मगति पंडितोंने कहीहै ॥ ७७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हं ऐसे वर्णसे बाहिर आताहै, सः ऐसे वर्णसे पीछे श्वास प्रवेश करताहै. ऐसे (हंसोहंस) इस मंत्रसे जीव यथार्थ जपताहै ॥ ७८ ॥ उस संख्या-
मेंसे ६०० गणेशजीको अर्पण करै ६००० ब्रह्माजीके अर्प० ६००० विष्णुको ६००० महादेवको १००० ॥ ७९ ॥ जीवात्माको १००० गुरुको
१००० चिदात्मा और अर्थात् चैतन्य आत्माके लिये ऐसे वा संख्या निवेदन करै ॥ ८० ॥ ए षट्चक्रोंमें स्थित ब्रह्मके अंशभूत गणेशादि
देवतोंको श्रेष्ठ संप्रदायके जाननेवाले अरुणादिक चिंतवन कर्तेहैं ॥ ८१ ॥ शुकदेवजीआदि मुनि शिष्योंको उपदेश करतेहैं इसीसे महज्ज-

हकारेणबहिर्यातिसकारेणविशेत्पुनः ॥ हंसोहंसेतिमंत्रेणजीवोजपतितत्त्वतः ॥ ७८ ॥ षट्शतंगणनाथायषट्सहस्रंतुवेधसे ॥
षट्सहस्रंचहरयेषट्सहस्रंहरायच ॥ ७९ ॥ जीवात्मनेसहस्रंचसहस्रंगुरवेतथा ॥ चिदात्मनेसहस्रंचजपसंख्यांनिवेदयेत् ॥ ८० ॥
एतांश्चक्रगतान्ब्रह्ममयूखान्मुनयोमरान् ॥ सत्संप्रदायवेत्तारश्चिंतयंत्यरुणादयः ॥ ८१ ॥ शुकादयोऽपिमुनयःशिष्यानुपदिशं
तिच ॥ अतःप्रवृत्तिंमहतांध्यात्वाध्यायेत्सदाबुधः ॥ ८२ ॥ कृत्वाचमानसींपूजांसर्वचक्रेष्वनन्यधीः ॥ ततोगुरूपदेशेनगायत्रीम
जपांजपेत् ॥ ८३ ॥ अधोमुखेततोरन्ध्रेसहस्रदलपंकजे ॥ हंसगंश्रीगुरुंध्यायेद्वराभयकरांबुजम् ॥ ८४ ॥ ॥

नोंकी प्रवृत्ति जान, सदा बुद्धिमान ध्यान करै ॥ ८२ ॥ पीछे सर्व चक्रोंमें मानसी पूजा करके, एकाग्र बुद्धिसे पीछे गुरूके उपदेशसे अजपा गाय-
त्रीका जप करना ॥ ८३ ॥ अब मानसीपूजा लिखते हैं. ब्रह्मरंध्रमें नीचे मुखवाले १००० दलोंका कमल है. उसपर हंसपर प्राप्त भये वर
और अभयदानके देनेवाले हस्तकमल जिनके ऐसे श्रीगुरुका ध्यान करना ॥ ८४ ॥ ॥ ॥ ॥

उस गुरुके चरणाम्रतकी धारासे स्नान कर, रही ऐसी अपनी देहको चिंतवन करना. पंचोपचारोंसे पूजकर, उसकी स्तुति करके, नमस्कार करना ॥ ८५ ॥ पीछे परात्पर ब्रह्मकुला कुंडलिनीको ध्यान करना. कैसी है आरोहमें, प्रकाशमान, अवरोहमें अमृत स्रवती जाती, मूलाधारादि षट्चक्रोंमें चढ़नेसे करा है संचार अर्थात् गमन, साढ़ेतीन फेरोंसे सोतेहुये सर्पके आकारसें स्थित ॥ ८६ ॥ पीछे ब्रह्मरंध्रसे वाहिर प्राप्त भई ऐसे सुषुम्णा नाम धामको ध्यान करना. तैसे तिस सुषुम्णाधामसे गयेहुये उस विष्णुके परमपदमें जाते हैं ॥ ८७ ॥ पीछे मेरो

क्षालितंचिंतयेदेहंतत्पादाम्रतधारया ॥ पंचोपचारैःसंपूज्यप्रगमेत्तत्स्तवेनच ॥ ८५ ॥ ततःकुंडलिनींध्यायेदारोहादवरोहतः ॥ षट्चक्रकृतसंचारांसार्धत्रिवलयांस्थिताम् ॥ ८६ ॥ ततोध्यायेत्सुषुम्णाख्यांधामरंध्राद्बहिर्गतम् ॥ तथातेनगतायांतितद्विष्णोःपरमंपदम् ॥ ८७ ॥ ततोमच्चिंतितंरूपंस्वयंज्योतिःसनातनम् ॥ सदानंदंसदाध्यायेन्मुहूर्तेब्राह्मसंज्ञके ॥ ८८ ॥ एवंगुरूपदेशेनमनोनिश्चलतांनयेत् ॥ नतुस्वेनप्रयत्नेनतद्विनापतनंभवेत् ॥ ८९ ॥ अंतर्यागंविधायैवंबहिर्यागंसमाचरेत् ॥ स्नानसंध्यादिकंकृत्वाकुर्याद्धरिहरार्चनम् ॥ ९० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

चिंतन कराभया स्वयंजोतिः सनातन सदा आनंदकारी स्वरूपको ब्राह्मसंज्ञक मूहूर्तमें ध्यान करना ॥ ८८ ॥ ऐसे गुरूके उपदेशसे मनको निश्चलतामें प्राप्त करना. केवल यत्नसे नहीं करना. कारण गुरूविना पतन होता है ॥ ८९ ॥ ऐसे अंतर्यज्ञविधान करके, पीछे बहिर्यज्ञ करना. स्नानसंध्यादि नित्यकर्म करके, हरि और महादेवको पूजना ॥ ९० ॥ ॥ ॥ ॥

देहाभिमानियोंके अंतर्मुखीवृत्ति नहीं होती है इसीसें उन्होंके हमारी भक्ति सुलभ्य है. और मोक्ष देनेवाली है ॥९१॥ तपयोगआदि ले, मोक्ष-मार्ग हैं तथापि इस संसारमें भ्रमरहे पुरुषोंको हमारा भक्तिमार्ग उत्तम है ॥ ९२ ॥ ब्रह्मादि सर्वज्ञोंने तीनबार वेदशास्त्रोंको विचारकर, ए निश्चय किया है ॥९३॥ यज्ञादि श्रेष्ठ धर्म चित्तको शुद्ध करनेवाले हैं. परंतु हे गरुड़ ! फल देनेवाली तौ हमारी भक्ति है. उसको प्राप्त भये पुरुष क्लेश

देहाभिमानिनामंतर्मुखीवृत्तिर्नजायते ॥ अतस्तेषांतुमद्भक्तिःसुकरामोक्षदायिनी ॥ ९१ ॥ तपोयोगादयोमोक्षमार्गाःसंति तथापिच ॥ समीचीनस्तुमद्भक्तिमार्गःसंसरतामिह ॥ ९२ ॥ ब्रह्मादिभिश्चसर्वज्ञैरयमेवविनिश्चितः ॥ त्रिवारंवेदशास्त्राणिवि चार्यचपुनःपुनः ॥ ९३ ॥ यज्ञादयोऽपिसद्धर्माश्चित्तशोधनकारकाः ॥ फलरूपाचमद्भक्तिस्तांलब्ध्वानावसीदति ॥ ९४ ॥ एवमाचरणंताक्ष्यकरोतिसुकृतीनरः ॥ संयोगेनचमद्भक्त्यामोक्षंयातिसनातनम् ॥ ९५ ॥ इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेसुकृ तिजनजन्माचरणनिरूपणोनामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ श्रुतामयादयासिंधोह्यज्ञानाज्जीवसंसृतिः ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामिमोक्षोपायंसनातनम् ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

नहीं पाते हैं ॥९४॥ हे गरुड़ ! सुकृतीपुरुष ऐसे आचरण करते हैं. और मेरी भक्तिके संयोगसें सनातन मोक्षको प्राप्त होते हैं ॥९५॥ इति श्रीगरुड-पुराणे सारोद्धारे ज्ञानबोधिनीभाषाटीकायां सुकृतिजनजन्माचरणनिरूपणो नाम पंचदशोऽध्यायः ॥१५॥ अब गरुड़जी पूंछते हैं—हे दयासिंधो ! मैं-नें जीवको अज्ञानसे संसृति अर्थात् जन्ममरण होता है यह सुना. अब सनातनी मोक्षके उपायको सुननेकी इच्छा करता हूं ॥ १ ॥ ॥

हे भगवन्! हे देवदेवेश! हे शरणागतवत्सल! असार सर्व दुःखोंसे मलीन ऐसें इस घोरसंसारमें ॥ २ ॥ नानाप्रकारके शरीरोंमें स्थित ऐसी अनंत जीवराशी हैं. वोह जीवसमुदाय जन्मता है और मरता है. उन्होंको पार विद्यमान नहीं है ॥ ३ ॥ सदा दुःखोंमें पीड़ित रहते हैं. उसमें कोई सुखी नहीं विद्यमान है. सो हे मोक्षनाथ! हे प्रभो! कौन उपायसे छूटै सो उपाय हमको कहो ॥ ४ ॥ श्रीभगवान कहते हैं— हे गरुड़! सुनो. जो तुम हमको पूंछते हो, सो कहता हूं—जिसके सुननेमात्रसेही संसारसे मनुष्य छूटता है ॥ ५ ॥ परब्रह्मस्वरूपी, निष्कल,

भगवन्देवदेवेशशरणागतवत्सल ॥ असारेघोरसंसारेसर्वदुःखमलीमसे ॥ २ ॥ नानाविधशरीरस्थाअनंताजीवराशयः ॥ जायंतेचम्रियंतेचतेषामंतोनविद्यते ॥ ३ ॥ सदादुःखातुराएवनसुखीविद्यतेक्वचित् ॥ केनोपायेनमोक्षेशमुच्यंतेवदमेप्रभो ॥४॥ ॥श्रीभगवानुवाच॥ ॥शृणुतार्क्ष्यप्रवक्ष्यामियन्मांत्वंपरिपृच्छसि ॥ यस्यश्रवणमात्रेणसंसारान्मुच्यतेनरः ॥५॥ अस्तिदेवःपरब्रह्मस्वरूपीनिष्कलःशिवः ॥ सर्वज्ञःसर्वकर्ताचसर्वेशोनिर्मलोऽद्वयः ॥ ६ ॥ स्वयंज्योतिरनाद्यंतोनिर्विकारःपरात्परः ॥ निर्गुणःसच्चिदानंदस्तदंशाज्जीवसंज्ञकः ॥ ७ ॥ अनाद्यविद्योपहताद्यथाग्नौविस्फुलिंगकाः ॥ देहाद्युपाधिसंभिन्नास्तेकर्मभिरनादिभिः ॥ ८ ॥

शिव, सर्वज्ञ, सर्वकर्ता, सर्वके नाथ, निर्मल, अद्वितीय ऐसा ईश्वर देव है ॥६॥ वो स्वयंज्योति अनाद्यंत निर्विकार ब्रह्मादिकोंसे परे, निर्गुण सच्चिदानंद स्वरूप है. उस परमात्माके अंशसे जीवसंज्ञक है ॥ ७ ॥ जैसे अग्निमेंसे चिनगाड़ी हों तैसे अनादि मायासे ताड़ित होनेसे देहादि उपाधिसे भेद प्राप्त भये अनादिकर्मोंसे वे जीव ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥

सुखदुःखदेनेवाले पुण्यपापरूपसें नियंत्रित हुये उसउस जातिमें प्रगटहुवा आयु भोगनेके लिये कर्मोंका स्थूल शरीर ॥ ९ ॥ उसको जन्म जन्मप्रति प्राप्त होता है. फेर उस स्थूल शरीरसे दूसरा सूक्ष्म लिंगशरीर है. हे गरुड़! जहांतक मोक्ष नहीं होता तहांतक अक्षर रहता है. अर्थात् नाश नहीं होता है ॥ १० ॥ स्थावर, कृमि, अज, पक्षी, पशु, मनुष्य, धर्मात्मा, देवता, मोक्ष जानेवाला ॥ ११ ॥ ए यथाक्रमसे कहेभये जीव स्वेदज, अंडज, उद्भिज्ज, जरायुज ए चार प्रकारके हजारों बेर धारण कर, छोड़के, फेर सुकृतसे मनुष्य होकर, जो ज्ञानी हो तो मोक्ष-

सुखदुःखप्रदैःपुण्यपापरूपैर्नियंत्रिताः ॥ तत्तज्जातियुतंदेहमायुर्भोगंचकर्मजम् ॥ ९ ॥ प्रतिजन्मप्रपद्यंतेतेषामपिपरंपुनः ॥ ससूक्ष्मलिंगशारीरमामोक्षादक्षरंखग ॥ १० ॥ स्थावराःकृमयश्चाजाःपक्षिणःपशवोनराः ॥ धार्मिकास्त्रिदशास्तद्वन्मोक्षिणश्चयथाक्रमम् ॥ ११ ॥ चतुर्विधशरीराणिधृत्वामुक्त्वासहस्रशः ॥ सुकृतान्मानवोभूत्वाज्ञानीचेन्मोक्षमाप्नुयात् ॥ १२ ॥ चतुराशीतिलक्षेषुशरीरेषु शरीरिणाम् ॥ नमानुषंविनान्यत्रतत्त्वज्ञानंतुलभ्यते ॥ १३ ॥ अत्रजन्मसहस्राणांसहस्रैरपिकोटिभिः ॥ कदाचिल्लभतेजंतुर्मानुष्यं पुण्यसंचयात् ॥ १४ ॥ सोपानभूतंमोक्षस्यमानुष्यंप्राप्यदुर्लभम् ॥ यस्तारयतिनात्मानंतस्मात्पापतरोऽत्रकः ॥ १५ ॥ ॥

को प्राप्त होता है ॥ १२ ॥ चौरासी लक्ष योनियोंमें देह धारण करनेवाले जीवोंको मनुष्यजन्मविना मोक्षका उपाय तत्वज्ञान और कहीं नहीं प्राप्त होता है ॥ १३ ॥ यहां हजारों कोट्यान वर्षों करके पुण्यके संचयसे जीव कभी मनुष्यजन्म प्राप्त होता है ॥ १४ ॥ सो मोक्षको साधनरूप दुर्लभ मनुष्यदेह प्राप्त होकर, जो आत्माको नहीं तिरावे तिससे अधिक पापी यहां कौन है? ॥ १५ ॥ ॥ ॥

मनुष्य उत्तमकुलमें जन्म पाकर, इंद्रियोंकी सुंदरता प्राप्त होकर, जो आत्माके हितको नहीं जानै है वो ब्रह्मघाती होता है ॥ १६ ॥ शरीर-विना किसीके पुरुषार्थ नहीं विद्यमान है. तिसीसे देह और धनकी रक्षा करना और पुण्यकर्म सिद्ध करना ॥ १७ ॥ सदा आत्मा अर्थात मनुष्यशरीरकी रक्षा करना. कारण मनुष्यशरीर सर्व पदार्थोंका कारण है. इसीसे देहरक्षामें यत्न करते रहना. कारण जीवताहुवा कल्याण देखता है ॥ १८ ॥ गयाभया ग्राम फेर आता है. तैसेही क्षेत्र, धन, घर, शुभकर्म, अशुभकर्म ए वारंवार होते हैं. परंतु मनुष्यशरीर वारं-

नरःप्राप्येतरंजन्मलब्ध्वाचेंद्रियसौष्ठवम् ॥ नवेत्त्यात्महितंयस्तुसभवेद्ब्रह्मघातकः ॥ १६ ॥ विनादेहेनकस्यापिपुरुषार्थोनविद्यते ॥ तस्माद्देहंधनंरक्षेत्पुण्यकर्माणिसाधयेत् ॥ १७ ॥ रक्षयेत्सर्वदात्मानमात्मासर्वस्यभाजनम् ॥ रक्षणेयत्नमातिष्ठेज्जीवन्भद्राणिपश्यति ॥ १८ ॥ पुनर्ग्रामःपुनःक्षेत्रंपुनर्वित्तंपुनर्गृहम् ॥ पुनःशुभाशुभंकर्मनशरीरंपुनःपुनः ॥ १९ ॥ शरीररक्षणोपायाः क्रियंतेसर्वदाबुधैः ॥ नेच्छंतिचपुनस्त्यागमपिकुष्ठादिरोगिणः ॥ २० ॥ तद्गोपितंस्याद्धर्मार्थंधर्मोज्ञानार्थमेवच ॥ ज्ञानंतुध्यानयोगार्थमचिरात्प्रविमुच्यते ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥

वार नहीं आता है ॥ १९ ॥ शरीररक्षाका उपाय सदाही बुद्धिवानोंको करना चाहिये. देखिये कुष्ठआदि महारोगीभी शरीरत्यागकी इच्छा नहीं करते हैं २० ॥ वो शरीररक्षा करेभये धर्मके वास्ते होता है, धर्मसे ज्ञानकी प्राप्ति होती है, ज्ञानसे ध्यानयोग प्राप्त होता है, ध्यानयोगसे जल्दीही जन्ममरणसे छूटता है ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

आत्मा नाम मन कदाचित् दुःसंगादि असत्कर्मोंसे अपनेको नहीं निवारण करै तौ फेर कौनसा अपनेसे हित-री दूसरा आत्माको तिरावेगा ॥ २२ ॥ जो पुरुष इस मनुष्यजन्ममें भी नरकरूपी रोगकी औषधि नहीं करैगा तो वो मनुष्य जिसमें औषधी -ीं ऐसे देशमें जाकर, क्या करैगा ?. अर्थात् मनुष्यजन्म पाकर, जो उत्तम कर्मोंसे कल्याण नहीं करताहै वोह विचारहीन मूर्ख है ॥ २३ ॥ सिंहिनी जैसे जराअवस्था डरातीहै, भिन्नघटसे जल जाय तैसे आयु जातीहै, शत्रुवोंके जैसे रोग नाशकरतेहैं, तिसीसे कल्याणका अभ्यास करना ॥२४॥ जहांतक दुःख

अ-लैवयदिनात्मानमहितेभ्योनिवारयेत् ॥ कोन्योहितकरस्तस्मादात्मानंतारयिष्यति ॥ २२ ॥ इहैवनरकव्याधेश्चिकित्सांन करोतियः ॥ गत्वानिरौषधंदेशंव्याधिस्थःकिंकरिष्यति ॥ २३ ॥ व्याघ्रीवास्तेजराचायुर्यातिभिन्नघटांबुवत् ॥ निघ्नंतिरिपु वद्रोगातस्माच्छ्रेयःसमभ्यसेत् ॥ २४ ॥ यावन्नाश्रयतेदुःखंयावन्नायांति-पदः ॥ यावन्नेंद्रियवैकल्यंतावच्छ्रेयःसमभ्यसेत् ॥ २५ ॥ यावत्तिष्ठतिदेहोऽयंतावत्तत्त्वंसमभ्यसेत् ॥ -ीप्तम्भोणभवनेकूपंखनतिदुर्मतिः ॥ २६ ॥ कालोनज्ञायतेनानाकार्यैः संसारसंभवैः ॥ सुखंदुःखंजनोहंतनवेत्तिहितमात्मनः ॥ २७ ॥ ॥ ॥ ॥

लगे नहीं, जहांतक आपदा नहीं प्राप्त होवैं, जहांतक इंद्रियां विकल नहीं हों वहांतक कल्याणका उपाय करना ॥ २५ ॥ जहांतक ए शरीर स्थित रहे वहांतक तत्वका अभ्यास करना. भवनको कोना जलने लगे बाद कूवा खोदताहै वह मूर्ख है ॥ २६ ॥ देखो संसारमें प्रगट हुये नानाकार्योंसे काल नहीं जाना जाताहै, अहो ! सुखदुःख देखकर, अपना हित नहीं जानताहै ॥ २७ ॥ ॥ ॥

जन्मे हुवोंको, दुःखीभयेहुवोंको, मरेहुवोंको, आपदामें डूबरहेहुवोंको, दुःखीजनोंको, देखकरके, भी संसार मोहरूपी मदिरा पीकर, कभी नहीं डरतेहैं ॥ २८ ॥ देखो संपदा स्वप्नमें हो जैसीहै. यौवन पुष्पके जैसा है. आयु बिजलीजैसी चपल है. इन्होंको जानताहुवा कौन बुद्धिवानके धीरज़ता हो ॥ २९ ॥ प्रथमतौ सौवर्षका जीवनाही बिलकुल थोड़ा है. उसमें आधा नींद और आलस्यमें जाताहै. अवशेष बाल्यपनामें, रोगोंमें, जरा अवस्थामें अल्प रह्याहुवा भी निष्फल जाताहै ॥ ३० ॥ प्रारब्ध करनेके योग्य मोक्षके उपायमें निरुद्योग, द्रव्यचिंतवनरूपी

जातानार्तान्मृतानापद्गस्तान्दृष्ट्वाचदुःखितान् ॥ लोकोमोहसुरांपीत्वानबिभेतिकदाचन ॥ २८ ॥ संपदःस्वप्नसंकाशायौवनंकुसुमोपमम् ॥ तडिच्चपलमायुष्यंकस्यस्याज्जानतोधृतिः ॥ २९ ॥ शतजीवितमत्यल्पंनिद्रालस्यैस्तदर्धकम् ॥ बाल्यरोगजरादुःखैरल्पंतदपिनिष्फलम् ॥ ३० ॥ प्रारब्धव्येनिरुद्योगोजागर्तव्येप्रसुप्तकः ॥ विश्वस्तव्योभयस्थानेहानरःकोनहन्यते ॥ ३१ ॥ तोयफेनसमेदेहेजीवेनाक्रम्यसंस्थिते ॥ अनित्यप्रियसंवासेकथंतिष्ठतिनिर्भयः ॥ ३२ ॥ अहितेहितसंज्ञःस्यादध्रुवेध्रुवसंज्ञकः ॥ अनर्थेचार्थविज्ञानःस्वमर्थंयोनवेत्तिसः ॥ ३३ ॥ ॥ ॥ ॥

जागनेमें सोताहुवा, भयके स्थानमें विश्वासकर्ता अहो! ऐसा कौन मनुष्य नहीं माराजायगा ॥ ३१ ॥ जलका फेनाजैसे देहमें जीवको वश करके, स्थित. नहीं नित्य रहनेवालेमें कैसे निर्भयसे स्थित रहता है ॥३२॥ अहो! परिणाममें विषतुल्य विषयमें हमारा इष्टलाभ हुवाहै ऐसी संज्ञा जिसकी नाशवान देहादिकोंमें ध्रुवसंज्ञा जिसकी अनर्थ अर्थात् दंभ अनृतादि पन्द्रह अनर्थोंके मूल धनमें अर्थज्ञानरह्या ऐसा मनुष्य मुक्ति

देनेवाला आत्मज्ञभरूपी अपना प्रयोजन नहीं जानताहै ॥ ३३ ॥ देखता हुवा भी गिरताहै, सुनता हुवा भी नहीं चेत करता है, पठनकरता हुवा भी नहीं जाने है. ... ! देवमायासे मोहित है ॥ ३४ ॥ यह जगत मृत्यु, रोग, जरा इन ग्रहोंसे गंभीर कालसमुद्रमें डूब रह्याहै. अहो! कोई नहीं जागताहै ॥३५॥ क्षणक्षण प्रति काल नष्ठ होता जाता है. परंतु लखनेंमें नहीं आताहै. जैसे कच्चा कलश जलमें स्थितहुवा भी पिलता हुवा लखनेमें नहीं आताहै॥ ३६ ॥ वायुको भी रोक सकताहै, आकाशको भी खंडन कर सकताहै, समुद्रकी तरंगोंको भी गूंथ सकताहै.

पश्यन्नपिप्रस्खलतिशृण्वन्नपिनबुध्यति ॥ पठन्नपिनजानातिदेवमायाविमोहितः ॥ ३४ ॥ तन्निमज्जजगदिदंगंभीरेकालसागरे ॥ मृत्युरोगजराग्राहैर्नकश्चिदपिबुध्यते ॥ ३५ ॥ प्रतिक्षणमयंकालःक्षीयमाणोनलक्ष्यते ॥ आमकुंभइवांभस्थोविशीर्णोनविभाव्यते ॥ ३६ ॥ युज्यतेवेष्टनंवायोराकाशस्यचखंडनम् ॥ ग्रथनंचतरंगाणामास्थानायुषियुज्यते ॥ ३७ ॥ पृथिवीदह्यतेयेनमेरुश्चापिविशीर्यते ॥ शुष्यतेसागरजलंशरीरस्यचकाकथा ॥ ३८ ॥ अपत्यंमेकलत्रंमेधनंमेबांधवाश्चमे ॥ जल्पंतमितिमर्त्याजंहंतिकालवृकोबलात् ॥ ३९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अहो! अघटित है. सोभी कर सकतेहैं. परंतु शरीर नहीं राख सकताहै ॥३७॥ जिसकालकरके समुद्रका जलभी सुखाया जाता है. पृथ्वी दग्ध होतीहै, मेरु पर्वतभी फूटताहै, तौ शरीरकी क्या कथा है ॥ ३८ ॥ ए पुत्र हमारा है, यह स्त्री हमारी है, यह धन हमारा है. येह बांधव हमारेहैं. इस प्रकार बोल रह्या ऐसा प्रमत्त मनुष्यरूपी बकरेका कालरूपी वृक अर्थात् भेड़िया बलसे खाताहै ॥ ३९ ॥ ॥ ॥

यह करा है और यह करनेकाहै और दुसरा नहीं करनेको है. ऐसे चेष्टायुक्त पुरुषको काल वशीभूत करताहै ॥ ४० ॥ इसीसे दूसरे दिवस करनेका पुण्यकर्म पहले दिनही करना. सायंकालमें करनेका प्रातःकाल करना. कारण मृत्यु ए इनने कियाहै ए नहीं कियाहै सो नहीं देखतीहै ॥ ४१ ॥ वृद्धा अवस्थासे दिखायाहै कालमार्ग, प्रचंड व्याधिरूपी जिसकी सेनाहै ऐसा मृत्युरूपी शत्रु खड़ा है. सो मनुष्य रक्षकको क्यों नहीं देखताहै ॥ ४२ ॥ तृष्णारूपी सुईसें भेदन किया, विषयरूपी घृतसे पक्व भया ऐसे मानवको मृत्यु भक्षण करती है ॥ ४३ ॥

इदंकृतमिदंकार्यमिदमन्यत्कृताकृतम् ॥ एकमीहासमायुक्तंकृतांतःकुरुतेवशम् ॥ ४० ॥ श्वःकार्यमद्यकुर्वीतपूर्वाह्णेचापराह्णिकम् ॥
नहिमृत्युःप्रतीक्षेतकृतंवाप्यथवाकृतम् ॥ ४१ ॥ जरादर्शितपंथानंप्रचंडव्याधिसैनिकम् ॥ मृत्युशत्रुमधिष्ठोऽसित्रातारंकिंनपश्यति
॥ ४२ ॥ तृष्णासूचीविनिर्भिन्नंसिक्तंविषयसर्पिषा ॥ रागद्वेषानलेपक्वंमृत्युरश्नातिमानवम् ॥ ४३ ॥ बालांश्चयौवनस्थांश्चवृद्धान्ग
र्भगतानपि ॥ सर्वानाविशतेमृत्युरेवंभूतमिदंजगत् ॥ ४४ ॥ स्वदेहमपिजीवोऽयमुत्क्वायातियमालयम् ॥ स्त्रीमातृपितृपुत्रादिसं
बंधःकेनहेतुना ॥ ४५ ॥ दुःखमूलंहिसंसारःसयस्यास्तिसदुःखितः ॥ तस्यत्यागःकृतोयेनससुखीनापरःक्वचित् ॥ ४६ ॥ ॥

बालकोंमें यौवनअवस्थावालोंमें, वृद्धोंमें, गर्भमें प्राप्तहुयेमें ए संपूर्णमें मृत्यु प्रवेश करतीहै. जगत ऐसा है ॥ ४४ ॥ ए जीव अपने शरीरको त्यागकर, यमके स्थानमें जाताहै तौ फेर स्त्री, माता, पिता, पुत्र इन्होंको संबंध कौनसे कारणसे रहताहै ॥ ४५ ॥ दुःखका मूल संसार है वो संसार जिसके है वो दुःखी है. उस संसारका त्याग जिसने कियाहै वोही सुखी है. और नहीं है ॥ ४६ ॥ ॥ ॥

संपूर्ण दुःखोंकी उत्पत्ति करनेवाला, संपूर्ण आपदोंका स्थान, संपूर्ण पापोंका आश्रय ऐसे संसारको क्षणमात्रमें त्यागना, ॥ ४७ ॥ लोहा और काष्ठकी पाशोंसे बांधाहुवा पुरुष छूटताहै. परंतु अहो! पुत्रदारमयी पाशसे कभी नहीं छूटताहै ॥ ४८ ॥ जितना जीव मनके प्रियसंबंध करताहै, उतनेही इसके हृदयमें शोकरूपी शंकु पड़तेहैं ॥ ४९ ॥ ठगा है सर्व धन जिसका ऐसा उन पुत्रदारादिकोंसे नित्य लोकनाश होताहै. अहो! विषय ग्रहणकरनेवाले देहमें स्थित इंद्रियरूपी चोरोंसे न[illegible]ताहै ॥ ५० ॥ जैसे मांसका लोभी मत्स्य लोहाका शंकु नहीं

प्रभवंसर्वदुःखानामालयंसकलापदाम् ॥ आश्रयंसर्वपापानांसंसारंवर्जयेत्क्षणात् ॥ ४७ ॥ लोहदारुमयैःपाशैःपुमान्बद्धोविमुच्यते ॥ पुत्रदारमयैःपाशैर्मुच्यतेनकदाचन ॥ ४८ ॥ यावंतःकुरुतेजंतुःसंबंधान्मनसःप्रियान् ॥ तावंतोऽस्यनिखन्यंतेहृदयेशोकशंकवः ॥ ४९ ॥ वंचिताशेषवित्तैस्तैर्नित्यंलोकोविनाशितः ॥ हाहंतविषयाहारैर्देहस्थेंद्रियतस्करैः ॥ ५० ॥ मांसलुब्धोयथामत्स्योलोहशंकुंनपश्यति ॥ सुखलुब्धस्तथादेहीयमबाधांनपश्यति ॥ ५१ ॥ हिताहितंनजानंतोनित्यमुन्मार्गगामिनः ॥ कुक्षिपूरणनिष्ठायेते नरानारकाःखग ॥ ५२ ॥ निद्रादिमैथुनाहाराःसर्वेषांप्राणिनांसमाः ॥ ज्ञानवान्मानवःप्रोक्तोज्ञानहीनःपशुःस्मृतः ॥ ५३ ॥ ॥

देखताहै तैसे सुखका लोभी देहधारी यमकी बाधा नहीं देखताहै ॥ ५१ ॥ हे गरुड़! हित और अहित नहीं जानतेहैं. नित्य उन्मार्गमें चलतेहैं, जो उदरपूरणमें नेष्टावालेहैं वे मनुष्य नरकमें जातेहैं ॥ ५२ ॥ निद्रा, भय, विषय, आहार ए सर्व प्राणीमात्रके तुल्य हैं इसीसे जो ज्ञानवान हैं, वोही मनुष्य है और ज्ञानहीन पशु कहा है ॥ ५३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

प्रभातमें मलमूत्रोंसे, मध्याह्नमें क्षुधा तृषासे, रात्रिमें कामदेव और निद्रासे मूढ़ मनुष्य बाधाको प्राप्त होतेहैं ॥ ५४ ॥ अपनी देह, धन, स्त्री-आदिकनमें आसक्त सर्वजीव जन्मतेहैं. अहो! अज्ञानसे मोहितहुये मरतेहैं ॥ ५५ ॥ तिसीसे सदाही संग त्यागना. जो संग त्यागनेको समर्थ नहीं हो तौ महत्पुरुषोंको संग करना. महात्माको संग संसाररूपी रोगको औषध है॥ ५६ ॥ सत्संग और ज्ञान ए दो निर्मल नेत्र हैं. जिसके ए दोनों नहींहै वोह मनुष्य अंधा है. सो कुमार्ग कैसे नहीं चलैगा ॥ ५७ ॥ अपने अपने वर्णआश्रमोंके आचारसे आसक्त सर्व मनुष्य परम-

प्रभातेमलमूत्राभ्यांक्षुत्तृड्भ्यांमध्यगेरवौ ॥ रात्रौमदननिद्राभ्यांबाध्यंतेमूढमानवाः ॥ ५४ ॥ स्वदेहधनदारादिनिरताःसर्वजंतवः ॥ जायंतेचम्रियंतेचहाहंताज्ञानमोहिताः ॥ ५५ ॥ तस्मात्संगःसदात्याज्यःसर्वस्त्यक्तुंनशक्यते ॥ महद्भिःसहकर्तव्यःसंतःसंगस्यभेषजम् ॥ ५६ ॥ सत्संगश्चविवेकश्चनिर्मलंनयनद्वयम् ॥ यस्यनास्तिनरःसोंऽधःकथंनस्यादमार्गगः ॥ ५७ ॥ स्वस्ववर्णाश्रमाचारनिरताःसर्वमानवाः ॥ नजानंतिपरंधर्मंवृथानश्यंतिदांभिकाः ॥ ५८ ॥ क्रियायासपराःकेचिद्व्रतचर्यादिसंयुताः ॥ अज्ञानसंवृतात्मानःसंचरंतिप्रचारकाः ॥ ५९ ॥ नाममात्रेणसंतुष्टाःकर्मकांडरतानराः ॥ मंत्रोच्चारणहोमाद्यैर्भ्रामिताःक्रतुविस्तरैः ॥ ६० ॥ ॥

धर्म मोक्षधर्म नहीं जानतेहैं इसीसे मिथ्या आचारवाले वे नष्ट होतेहैं ॥ ५८ ॥ कोई हम कर्मकांडी हैं ऐसे परिश्रममें परायण है, कोई व्रतादिकोंसे क्षुधातृषायुक्त हैं ऐसे अज्ञानसे आच्छादित हैं आत्मा. सो वंचकजैसे फिरतेहैं ॥ ५९ ॥ स्वर्गादि सुखके नाममात्रसे प्रसन्न ऐसे मनुष्य कर्मकांडमें परायणहुये मंत्रको उच्चारण होमादिकोंसे यज्ञविस्तारके स्वर्गसुखकी इच्छा करतेहैं ॥ ६० ॥

॥

एकबार भोजन उपवास करनेको आदिले, शरीरशोषक नियमोंसे मेरी मायासे मोहितहुये मूढ स्वर्गसुखकी इच्छा करतेहैं ॥ ६१ ॥ देहको दंडदेनेमात्रसे क्या अज्ञानीकी मुक्ति होतीहै ? क्या बिलके ताडनसे सर्प मरताहै ॥ ६२ ॥ जटाको भार और मृगचर्मसे युक्त, कपटके वेष धरनेवाले संसारमें ज्ञानीके जैसे भ्रमतेहैं और मनुष्योंको भ्रमातेहैं ॥ ६३ ॥ संसारके सुखोंमें आसक्त हम ब्रह्मनेष्ठीहैं इसीसे हमको विषयसुखकी आसक्तिको दोष नहींहै. ऐसे जो बोलता हैं वो कर्म और ब्रह्म दोनोंसे भ्रष्ट है. उसको जैसा चांडालको त्यागै तैसा त्यागना

एकभुक्तोपवासाद्यैर्नियमैःकायशोषणैः ॥ मूढाःपरोक्षमिच्छंतिममायाविमोहिताः ॥ ६१ ॥ देहदंडनमात्रेणकामुक्तिरविवेकिनाम् ॥ वल्मीकताडनादेवमृतःकुत्रमहोरगः ॥ ६२ ॥ जटाभाराजिनैर्युक्तादांभिकावेषधारिणः ॥ भ्रमंतिज्ञानिवल्लोकेभ्रामयंतिजनानपि ॥ ६३ ॥ संसारजसुखासक्तंब्रह्मज्ञोऽस्मीतिवादिनम् ॥ कर्मब्रह्मोभयभ्रष्टंतंत्यजेदंत्यजंयथा ॥ ६४ ॥ गृहारण्यसमालोकेगतव्रीडादिगंबराः ॥ चरंतिगर्दभाद्याश्चविरक्तास्तेभवंतिकिम् ॥ ६५ ॥ मृद्भस्मोद्धूलनादेवमुक्ताःस्युर्यदिमानवाः ॥ मृद्भस्मवासीनित्यंश्वासकिंमुक्तोभविष्यति ॥ ६६ ॥ तृणपर्णोदकाहाराःसततंवनवासिनः ॥ जंबूकाखुमृगाद्याश्चतापसास्तेभवंतिकिम् ॥ ६७ ॥ ॥

॥ ६४ ॥ जिन्होंके घर और बन तुल्य हैं और संसारमें लज्जारहितहैं, नंगे रहतेहैं ऐसे गर्दभादि पशु बिचरतेहैं वे क्या विरक्त होतेहैं ॥ ६५ ॥ मृत्तिका और भस्म लगानेसे जो कदाचित् मनुष्य मुक्त हो जाय तब तौ मृत्तिका और भस्ममें वास करनेवाला श्वान क्या मुक्त होजाताहै. अर्थात् ज्ञानविना मुक्ति नहींहै ॥ ६६ ॥ तृण, पान, जल इन्होंको आहार करनेवाले, सदा वनमें रहनेवाले जंबुक, मूषा, मृग इत्यादिक क्या तपस्वी होतेहैं ६७

जन्मसे मर्याद लेकर, मरनेतक गंगादिकोंको तटसेवन करनेवाले मेंढुक मत्स्यआदि क्या योगी होतेहैं ॥ ६८ ॥ पारावत शिला आहार करते हैं, पपीहा कभी पृथ्वीका जल नहीं पीताहै, वे क्या व्रतधारण करनेवाले होतेहैं ॥ ६९ ॥ तिसीसे ए कहेभये कर्म केवल लोकरंजन करनेहारे हैं. हे गरुड़ ! मोक्षका कारण साक्षात् तत्वज्ञान है ॥ ७० ॥ हे गरुड़ ! षट्शास्त्ररूपी मलकूपमें पड़े ऐसे आत्मज्ञानको नहीं जाननेवाला पशु दो पगोंका ब्रह्मके स्वरूपको नहीं जानताहै. पशुके जैसे अतिकठिन अर्थके विचाररूपी पाशसे बँधेभये रहते ॥ ७१ ॥ वेदशास्त्ररूपी

आजन्ममरणांतंचगंगादितटिनीस्थिताः ॥ मंडूकमत्स्यप्रमुखायोगिनस्तेभवंतिकिम् ॥ ६८ ॥ पारावताःशिलाहाराःकदाचिद पिचातकाः ॥ नपिबंतिमहीतोयंव्रतिनस्तेभवंतिकिम् ॥ ६९ ॥ तस्मादित्यादिकंकर्मलोकरंजनकारकम् ॥ मोक्षस्यकारणंसाक्षा त्तत्त्वज्ञानंखगेश्वर ॥ ७० ॥ षड्दर्शनमहाकूपेपतिताःपशवःखग ॥ परमार्थंनजानंतिपशुपाशनियंत्रिताः ॥ ७१ ॥ वेदशास्त्रार्ण वेघोरेऊह्यमानाइतस्ततः ॥ षडूर्मिनिग्रहग्रस्तास्तिष्ठंतिहिकुतार्किकाः ॥ ७२ ॥ वेदागमपुराणज्ञःपरमार्थंनवेत्तियः ॥ विडंबकस्य तस्यैवतत्सर्वंकाकभाषितम् ॥ ७३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

घोर समुद्रमें इधर उधरे एक ग्रंथसे दूसरे ग्रंथका अध्ययनादिकोंमें व्याकुल हुये शोकको आदिले, सब तरंगके रोकनेमें अग्रहुये (अद्वैत) ब्रह्मस्वरूपको नहीं जानतेहैं. तथा कुत्सित तरकोंसे अद्वैत ज्ञानपरायण हुये स्थित रहतेहैं ॥ ७२ ॥ वेद, शास्त्र, पुराणको ज्ञाता होकर, जो फेर परमार्थ नहीं जानताहै विडंबनारूपी उसका वोह सर्वज्ञतापना और वक्तापना काकवाणीजैसे व्यर्थ है ॥ ७३ ॥ ॥ ॥

यह पढ़लिया हैं यह फेर पढ़ेंगे ऐसे चिंतासे व्याकुल रातदिवस शास्त्र पढ़ते हैं. परमतत्व प्राप्तही नहीं होता है ॥ ७४ ॥ वाक्य और छन्दोंके निबंध करके, काव्यअलंकारसे शोभित हुये तथापि चिंतासे दुःखी मूढ़ व्याकुलहुये स्थित रहते हैं. कारण जितेंद्रियादि गुणोंसे लभ्य ज्ञान लाभ नहीं होनेसे कभी परमसुखी नहीं होते हैं ॥ ७५ ॥ परमतत्व तौ अन्यथा प्राप्त होता है और मनुष्य अन्यथाही क्लेश करते हैं शास्त्रका श्रेष्ठभाव औरही प्रकारका है व्याख्या औरही प्रकारकी करते हैं॥७६॥ कोई धूर्त उपदेशादिकोंमें उत्कृष्ट भाव कहते हैं. आप उस उपदेश-

इदंज्ञातमिदंज्ञेयमितिचिंतासमाकुलाः ॥ पठंत्यहर्नि[illegible]उपरा[illegible]मुखाः ॥ ७४ ॥ वाक्यच्छन्दोनिबन्धेनकाव्यालंकारशोभिता[illegible]चिंतयादुःखितामूढास्तिष्ठंतिव्याकुलेंद्रिय[illegible] ॥ ७५ ॥ अन्यथापरमंतत्त्वंजनाःक्लिश्यंतिचान्यथा ॥ अन्यथाशास्त्रसद्भावोव्या[illegible]कुर्वंतिचान्यथा ॥ ७६ ॥ कथयंत्युन्मनीभावंस्वयंनानुभवंतिच ॥ अहंकाररताःकेचिदुपदेशादिवर्जिताः ॥ ७७ ॥ पठंतिवेदशास्त्राणिबोधयंतिपरस्परम् ॥ नजानंतिपरंतत्त्वंदर्वीपाकरसंयथा ॥ ७८ ॥ शिरोवहतिपुष्पाणि ॥ ॥
गंधंजानातिनासिका ॥ पठंतिवेदशास्त्राणिदुर्लभोभावबोधकः ॥७९॥

को नहीं ग्रहण करते हैं. कोईक अहंकारमें आसक्तहुये उपदेशादि करतेही नहीं हैं ॥ ७७ ॥ वेदशास्त्रोंको पढ़ते हैं. परस्पर ज्ञानीके जैसे वार्ता करते हैं परंतु परमतत्वको जानते नहीं हैं. जैसे करछुली पाकमें रहती है तथापि उसके रसको नहीं जानती है तैसे ॥ ७८ ॥ देखिये पुष्पोंको शिरमें धारण करता है परंतु सुगंधिको नासिका जानती है तैसे वेदशास्त्र पढ़ते हैं परंतु भाव जानना दुर्लभ है ॥ ७९ ॥ ॥

मूर्ख
हृदयमें स्थित तत्वज्ञानको मूर्ख गुरुद्वारसे नहीं जानकर, शास्त्रोंमें मोहको प्राप्त है. जैसे कोई गोप बकरीके बालकको काखमें दाबकर, अंधेरा
कूपमें देखता है ॥ ८० ॥ संसारको मोह निवृत्त करनेके लिये शब्दज्ञान नहीं समर्थ है. कारण दीवा देखे बिना दीपककी वार्तासे ल-
कभी निवर्त होता नहीं ॥ ८१ ॥ बुद्धिहीनका पढ़ना कैसा है? जैसा अंधाको काच दिखाना है; इसीसे बुद्धिवानोंके शास्त्र तत्वज्ञानका प्राप्त
क्षण है ॥ ८२ ॥ वह तो जाना है और इसको जाननेका है ऐसे पुरुष जो देवतोंके हजार वर्षकी आयुसेभी शास्त्रोंके अंतको नहीं

संसारमोहनाशायशब्दबोधोनहिक्षमः ॥
तत्त्वमात्मस्थमज्ञात्वामूढःशास्त्रेषुमुह्यति ॥ गोपःकुक्षिगतेछागेकूपेपश्यतिदुर्मतिः ॥८०॥ अतःप्रज्ञावतांशास्त्रंतत्त्वज्ञानस्यलक्षणम्
ननिवर्तेततिमिरंकदाचिद्दीपवार्तया ॥ ८१ ॥ प्रज्ञाहीनस्यपठनंयथांधस्यचदर्पणम् ॥ अनेकानिचशास्त्राणिस्वल्पायु
॥ ८२ ॥ इदंज्ञानमिदंज्ञेयंसर्वंतुश्रोतुमिच्छति ॥ दिव्यवर्षसहस्रायुःशास्त्रांतंनैवगच्छति ॥ ८३ ॥ पललमिवधान्या
र्विघ्नकोटयः ॥ तस्मात्सारंविजानीयात्क्षीरंहंसइवांभसि ॥ ८४ ॥ अभ्यस्यवेदशास्त्राणितत्त्वंज्ञात्वाथबुद्धिमान् ॥ ॥
र्थीसर्वशास्त्राणिसंत्यजेत् ॥ ८५ ॥ यथामृतेनतृप्तस्यनाहारेणप्रयोजनम् ॥ तत्त्वज्ञस्यतथाताक्ष्यंनशास्त्रेणप्रयोजनम् ॥ ८६ ॥

जैसे जलमेंसे हंस दूध
होते हैं ॥ ८३ ॥ शास्त्र अनेक प्रकारके हैं, आयु बहोत कमती है, करोड़ों विघ्न होते हैं, तिसीसे सारग्रहण करना. तैसे सार-
ग्रहण करलेता है ॥८४॥ वेद शास्त्रोंको अभ्यास करके, बुद्धिवान तत्व जानकर, पीछे ध्यानकी इच्छावाला जैसे तुष त्यागता है
ग्रहण करके, शास्त्र त्यागदेना॥८५॥ जैसे अमृतसे तृप्त हुयेके दूसरे आहारमें प्रयोजन नहीं तैसे हे गरुड़! तत्वज्ञानीको शास्त्रसे प्रयोजन नहीं है॥८६॥

||९७||

पीछे घरसे गयाहुवा धीर [illegible]

कार) ([illegible] मतवाले शैव अपने मतसे (अद्वैत) प्रतिपादन करते हैं. दूसरे माध्व वैभवाभिमानी (द्वैत) प्रतिपादन करते हैं. परंतु [illegible] और अद्वैत इन मतोंके दुराग्रहसे वर्जित अपने अनुभवसे प्राप्त होनेमें आवै ऐसा "समंतत्वं" अर्थात् सर्व मतानुस्यूत ब्रह्मको नहीं जानते हैं ॥ ९२॥ न मम नम ए दो पद बंध और मोक्षके वास्ते हैं. मम इस पदसे जीव बंधता है. न मम इस पदसे जन्ममरणसे छूटता है ॥९३॥ अर्थात् पुत्र कलत्रादिकोंको अपने माननेसे जन्ममरण पाता है पुत्र कलत्रादिकोंको अपना नहीं मान, मिथ्या संसार माननेमें जन्ममरणसे छूटता है.

अद्वैतंकेचिदिच्छंतिद्वैतमिच्छंतिचापरे ॥ समंतत्वंन [illegible] द्वैतविवर्जितं ॥ [illegible] द्वेबंधमोक्षायनममेतिममेति च ॥ ममेतिबध्यतेजंतुर्नममेतिप्रमुच्यते ॥ ९३ ॥ [illegible] मयन्नबंधायसाविद्यायाविमुक्तये [illegible] आयासायापरंकर्मविद्यान्या शिल्पनैपुणम् ॥ ९४ ॥ यावत्कर्माणिदीयंतेयावत्संसारवासना ॥ यावदिंद्रियचापल्यंतावत्तत्त्वकथाकुतः ॥ ९५ ॥ यावद्देहाभिमानश्चममतायावदेवहि ॥ यावत्प्रयत्नवेगोऽस्तियावत्संकल्पकल्पना ॥ ९६ ॥

उसका नाम कर्म है जिस कर्मसे बंधन नहीं होता है. उसका नाम विद्या है; जिस विद्यासे मुक्ति होती है. जो बंधन कर[illegible] कर्म है सो तुषोंके कूटनेके जैसे परिश्रम करनेवाले हैं. और अध्यात्मविद्यासे दूजी विद्या है सो जैसे मकान बनानेकी चतुरता है [illegible] ॥ ९४ ॥ जहांतक फलकी इच्छासे कर्म करता है; तहांतक संसारकी वासना रहती है. जहांतक इंद्रियोंकी चपलता रहती है वहांतक [illegible]त्वज्ञानकी वार्ता कहां है ॥ ९५ ॥ जहांतक देहाभिमान रहता है, जहांतक ममता रहती है, जहांतक प्रलयका उद्योग रहता है, जहांतक संकल्पकल्पना रहती [illegible]

||९८

हे गरुड़! वेद पढ़नेसे केवल मुक्ति नहीं प्राप्त होती है और शास्त्रसे नहीं होती है. मोक्षतौ ज्ञानसे होती है और प्रकार नहीं शास्त्रत- मर्त
मुक्तिको कारण कोई आश्रम नहीं है और मूर्तियोंके दर्शनभी नहीं कारण हैं. तैसे सर्व कर्म कारण नहीं हैं अर्थात् ज्ञानही कल्याणको
कारण है ॥ ८८ ॥ एक गुरूकी वाणी मुक्ति देदेती है और सर्व विद्या विडंबना हैं कारण हजारों काष्ठके भारोंमें संजीविनी एक होती
है ॥ ८९ ॥ अद्वैत कल्याणरूप ब्रह्म कहा है वोह अपनी क्रियाके परिश्रमसे नहीं प्राप्त होता है. गुरूके मुखसे प्राप्त होता है. आपसे प-

नवेदाध्ययनान्मुक्तिर्नशास्त्रपठनादपि ॥ ज्ञानादेवहिकैवल्यंनान्यथाविनतात्मज ॥ ८७ ॥ नाश्रमःकारणंमुक्तेर्दर्शनानि
नकारणम् ॥ तथैवसर्वकर्माणिज्ञानमेवहिकारणम् ॥ ८८ ॥ मुक्तिदागुरुवागेकाविद्यासर्वाविडंबकाः ॥ काष्ठभारसहस्रेषुह्ये
कंसंजीवनंपरम् ॥ ८९ ॥ अद्वैतंहिशिवंप्रोक्तंक्रियायासविवर्जितम् ॥ गुरुवक्त्रेणलभ्येतनाधीतागमकोटिभिः ॥ ९० ॥ आ
गमोक्तंविवेकोत्थंद्विधाज्ञानंप्रचक्षते ॥ शब्दब्रह्मागममयंपरब्रह्मविवेकजम् ॥ ९१ ॥ ॥ ॥

ढ़ीहुई शास्त्रोंकी कोटिसे नहीं प्राप्त होता है ॥ ९० ॥ आगम अर्थात् शास्त्रके अध्ययनसे प्रगट १, विवेकोत्थ अर्थात् वस्तुज्ञानसे स्वतःही
हुवा ऐसे २ दो प्रकारका ज्ञान कह्या है. जो शास्त्रसे प्रगट है उसकी शब्दब्रह्म संज्ञा है और जैसे जनकादिकोंको सिद्ध गीताश्रवणमा-
ग्रहण करे ज्ञानसे प्रगटहुवा साक्षात् परब्रह्मसंज्ञक है ॥ ९१ ॥ ॥ ॥ ॥
ग्रहण करके, शास्त्र त्यागदे...

पीछे घरसे गयाहुवा धीर पवित्र तीर्थोंमें स्नान करके, पवित्र एकांतमें विधिसे कल्पित किय आसनमें बैठकर, ॥ ४ ॥ मनसे शुद्धवर्णसे (अ-
कार) (उकार) (मकारात्मक) उत्कृष्ट ब्रह्माक्षरको अभ्यास करना. श्वास जीतकर, मनसे उकारको नहीं भूलताहुवा ॥ ५ ॥ मनसे बुद्धिको
सारथी करके, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधादिकोंसे इंद्रियोंको जीतना. कर्मोंसे आक्षिप्त मनको बुद्धिसे भगवानरूपमें धारण करना ॥ ६ ॥ जो
ब्रह्म मैं हूं वो ब्रह्मही है और जो ब्रह्म है वो मैंहीं हूं ऐसे भावनासे जीवको शोकादिनिवृत्ति और मैं ब्रह्महूं इस भावनासे ब्रह्मकी पारोक्ष्यनिवृ-

गृहात्प्रव्रजितोधीरःपुण्यतीर्थजलाप्लुतः ॥ शुचौविविक्तआसीनोविधिवत्कल्पितासने ॥ ४ ॥ अभ्यसेन्मनसाशुद्धंत्रिवृद्ब्र
ह्माक्षरंपरम् ॥ मनोयच्छेज्जितश्वासोब्रह्मबीजमविस्मरन् ॥ ५ ॥ नियच्छेद्विषयेभ्योक्षान्मनसाबुद्धिसारथिः ॥ मनःकर्मभि
राक्षिप्तंशुभार्थेधारयेद्धिया ॥ ६ ॥ अहंब्रह्मापरंधामब्रह्माहंपरमंपदम् ॥ एवंसमीक्ष्यचात्मानमात्मन्याध्यायनिष्कले ॥ ७ ॥
ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन् ॥ यःप्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिम् ॥ ८ ॥ नयत्रदांभिकायांतिज्ञानवैराग्य
वर्जिताः ॥ सुधियस्तांगतिंयांतितानहंकथयामिते ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥

त्ति करके, पीछे निरुपाधि आत्मामें मनको स्थिर करके ॥ ७ ॥ ॐ ऐसा एक ब्रह्माक्षरको उच्चारण करता हमारा स्मरण करता शरीरत्याग
कर, जो जाताहै वोह परमगतिको प्राप्त होताहै ॥ ८ ॥ जहां ज्ञानवैराग्यसे रहित कपटी पुरुष नहीं जातेहैं. उस गतिको सुबुद्धि पुरुष जाते
हैं उन्होंको तुमको मैं कहताहूं ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जहांतक मनकी स्थिरता नहींहैं. जहांतक शास्त्रका चिंतवन नहींहै, जहांतक गुरूकी कृपा नहीं होतीहै तहांतक तत्त्वज्ञानकी वार्ताभी नहींहै ॥ ९७ ॥ जहांतक तप, व्रत, तीर्थ, जप, होम, पूजाआदिक वेदशास्त्रकी कथाहै तहांतक तत्त्वज्ञान नहीं जानताहै ॥ ९८ ॥ तिसीसें सर्वयत्नसे सब अवस्थामें सदाही हे गरुड़! तत्त्वनिष्ठावान होताहै. जो अपने मोक्षकी इच्छा करताहै ॥ ९९ ॥ धर्म और ज्ञान जिसके पुष्प हैं स्वर्ग और मोक्ष जिसके फल हैं. ऐसा मोक्षतरुकी छायाको तापत्रयसे तपायमान आश्रित होवै ॥ १०० ॥ तिसीसे ज्ञानकरके आत्मतत्वको

यावन्नोमनसःस्थैर्यंनयावच्छास्त्रचिंतनम् ॥ यावन्नगुरुकारुण्यंतावत्तत्त्वकथाकुतः ॥ ९७ ॥ तावत्तपोव्रतंतीर्थंजपहोमार्चनादिकम् ॥ वेदशास्त्रागमकथायावत्तत्त्वंनविंदति ॥ ९८ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनसर्वावस्थासुसर्वदा ॥ तत्त्वनिष्ठोभवेत्तार्क्ष्ययदीच्छेन्मोक्षमात्मनः ॥ ९९ ॥ धर्मज्ञानप्रसूनस्यस्वर्गमोक्षफलस्यच ॥ तापत्रयादिसंतप्तश्छायांमोक्षतरोःश्रयेत् ॥ १०० ॥ तस्माज्ज्ञानेनात्मतत्त्वंविज्ञेयं श्रीगुरोर्मुखात् ॥ सुखेनमुच्यतेजंतुर्घोरसंसारबंधनात् ॥ १ ॥ तत्त्वज्ञस्यांतिमंकृत्यंश्रृणुवक्ष्यामितेऽधुना ॥ येनमोक्षमवाप्नोतिब्रह्म निर्वाणसंज्ञकम् ॥ २ ॥ अंतकालेतुपुरुषआगतेगतसाध्वसः ॥ छिंद्यादसंगशस्त्रेणस्पृहांदेहेनुयेचतम् ॥ ३ ॥ ॥

श्रीगुरुमुखसे जानना. उस तत्वजाननेसे जीव सुखसे घोर संसारबंधनसे छूटता है ॥ १ ॥ हे गरुड़! तत्वज्ञाताको अंत्यकी कृत्य कहताहूं सो सुनो जिससे ब्रह्मनिर्वाणसंज्ञक मोक्षको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ अंतकाल आयाहुवा पुरुष मृत्युभयसे रहितहुवा असंगरूपी शस्त्रसे देहमें वांछा काटना और शरीरके संबंधी पुत्रकलत्रादिकोंमें वांछा काटना ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जिन्होंको मान और मोह नहींहै, जीताहै, पुत्रकलत्रादिकोंमें आसक्तिको दोष जिन्होंने, जो अध्यात्मज्ञानमें निष्ठावान हैं. निवृत्त करी हैं अभिलाषा जिन्होने और जो सुखदुःखरूपी द्वंद्वसे छूटे हुयेहैं ऐसे पंडित उस अविनाशी पदको जातेहैं ॥११०॥ ज्ञानरूपी सरोवर, सत्यरूपी जल, राग और द्वेषरूपी मैलको नाशक ऐसे मानसतीर्थमें जो स्नान करताहै वोह निश्चय मोक्षको प्राप्त होताहै और हे गरुड़! बुद्धिको प्राप्तहुवा ॥ ११ ॥ वैराग्यको प्राप्त होकर, जो मनुष्य अनन्यतासे मेरेको भजताहै. कैसा पुरुष पूर्णदृष्टि इसीसे प्रसन्न जिसको मन वोह पुरुष मोक्षको प्राप्त होताहै

निर्मानमोहाजितसंगदोषाअध्यात्मनित्याविनिवृत्तकामाः ॥ द्वंद्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढाःपदमव्ययंतत् ॥ ११० ॥ ज्ञानह्रदेसत्यजलेरागद्वेषमलापहे ॥ यःस्नातिमानसेतीर्थेसवैमोक्षमवाप्नुयात् ॥ ११ ॥ प्रौढवैराग्यमास्थायभजतेमामनन्यभाक् ॥ पूर्णदृष्टिःप्रसन्नात्मासवैमोक्षमवाप्नुयात् ॥ १२ ॥ त्यक्त्वागृहंचयस्तीर्थेनिवसेन्मरणोत्सुकः ॥ म्रियतेमुक्तिक्षेत्रेषुसवैमोक्षमवाप्नुयात् ॥ १३ ॥ अयोध्यामथुरामायाकाशीकांचीअवंतिका ॥ पुरीद्वारावतीज्ञेयासप्तैतामोक्षदायिकाः ॥ १४ ॥ इतितेकथितंतार्क्ष्यमोक्षधर्मसनातनम् ॥ ज्ञानवैराग्यसहितंश्रुत्वामोक्षमवाप्नुयात् ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ १२ ॥ घरका त्यागकर, मरनेकी इच्छासे जो [illegible]थमें वास करताहै और मुक्तिक्षेत्रोंमें मरताहै वोह मोक्षको प्राप्त होताहै ॥ १३ ॥ अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका, द्वारका ए सातं पुरी मोक्षको प्राप्त करतीहैं ॥ १४ ॥ इस[illegible]कार हे गरुड़! तुम्हारेको सनातन मोक्षधर्म हमने कहा है. ज्ञान और वैराग्यसहित इसको स[illegible] मोक्षको प्राप्त होताहै ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥

तत्त्वज्ञाता मोक्षको प्राप्त होतेहैं, धर्मात्मा स्वर्गको प्राप्त होतेहैं, पापी दुर्गतिको जातेहैं, पशुपक्षी कीटादिक जन्ममरणको वारंवार प्राप्त होतेहैं ॥ १६ ॥ ऐसे मैने हे गरुड़! षोड़श अध्यायोंसे तुमको संपूर्ण शास्त्रोंको सारोद्धार कहा. अब फेर क्या सुननेकी इच्छा करते है? ॥ १७ ॥ अब सूतजी कहतेहैं—ऐसे हे राजन्! गरुड़जी भगवानके मुखारविंदसें वचन सुनकर, हाथ जोड़कर, वारंवार नमस्कार करके, ए वचन बोलते भये ॥ १८ ॥ कि—हे भगवन्! हे देव! देवतावोंके नाथ! आपने मेरेको वचनरूपी अमृत सुनाकर, हे प्रभो! संसारसमुद्रसे

मोक्षंगच्छंतितत्त्वज्ञाधार्मिकाःस्वर्गतिंनराः ॥ पापिनोदुर्गतिंयांतिसंसरंतिखगादयः ॥ १६ ॥ इत्येवंसर्वशास्त्राणांसारोद्धारोनिरूपितः ॥ मयातेषोडशाध्यायैःकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ १७ ॥ सूतउवाच ॥ एवंश्रुत्वावचोराजन्गरुडोभगवन्मुखात् ॥ कृतांजलिरुवाचेदंतंप्रणम्यमुहुर्मुहुः ॥ १८ ॥ भगवन्देवदेवेशश्रावयित्वावचोमृतम् ॥ तारितोहंत्वयानाथभवसागरतःप्रभो ॥ १९ ॥ स्थितोस्मिगतसंदेहःकृतार्थोस्मिनसंशयः ॥ इत्युक्त्वागरुडस्तूर्णींस्थित्वाध्यानपरोऽभवत् ॥ १२० ॥ स्मरणादुर्गतिहर्तापूजनयज्ञेनसद्गतेर्दाता ॥ यःपरयानिजभक्त्याददातिमुक्तिंसमांहरिःपातु ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥

तिरायाहै ॥ १९ ॥ अब मैं गयाहै संदेह जिसका ऐसा स्थितहूं और कृतार्थहूं इसमें संशय नहींहै. ऐसे कहकर, गरुड़जी चुप होकर, ध्यानमें पर होतेभये ॥ १२० ॥ स्मरण करनेसे जो दुर्गति हरतेहैं, पूजन और यज्ञसे जो सद्गतिको देतेहै, जो उत्कृष्ट अपनी मुक्ति देतेहैं वोह हमारी रक्षा करें ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति श्रीगरुड़पुराणे सारोद्धारे कौशिकगोत्रोत्पन्नपंडितरामचंद्रशर्मविरचितायां ज्ञानबोधिनीभाषाटीकायां मोक्षधर्मनिरूपणो नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ यह ग्रंथ समाप्त हुवा ॥ इसके उपरांत सुननेको फल है ॥ श्रीभगवान कहते हैं-हे गरुड़! ऐसे सब और्ध्वदेहिक क्रिया मैंने तुमको कही हैं. इसको दश दिनके भीतर सुननेंसे संपूर्ण पापोंसे छूटता है ॥ १ ॥ ए इस लोकका कर्म पितृश्वरोंके मुक्ति देनेवाला है और पु-

इतिश्रीगरुडपुराणेसारोद्धारेभगवद्गरुडसंवादेमोक्षधर्मनिरूपणोनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ समाप्तोयं ग्रंथः ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ अथाग्रेफलश्रुतिः ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ इत्याख्यातं मयाताक्ष्यर्सर्वमेवौर्ध्वदेहिकम् ॥ दशाहाभ्यंतरेश्रुत्वासर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ १ ॥ इदंचामुष्मिकंकर्मपितृमुक्तिप्रदायकम् ॥ पुत्रवांछितदंचैवपरत्रेहसुखप्रदम् ॥२॥ इदंकर्मनकुर्वंतिनास्तिकायेनराधमाः ॥ तेषांजलमपेयंस्यात्सुरातुल्यंनसंशयः ॥ ३ ॥ देवताःपितरश्चैवनैवपश्यंतितद्गृहम् ॥ भवंतितेषांकोपेनपुत्राःपौत्राश्चदुर्गताः ॥ ४ ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चै[illegible] पिच ॥ तेचांडालसमाज्ञेयाःसर्वप्रेतक्रियांविना ॥ ५ ॥ ॥ ॥

त्रको वांछित देनेवाला है परलोकमें और इस लोकमें सुख देनेवाला है ॥ २ ॥ इस कर्मको जो नास्तिक नीच नहीं कर[illegible] पीना वो जल मदिराके तुल्य है इसमें संदेह नहीं ॥ ३ ॥ देवता और पितर उन्होंके घर नहीं देखते. उन देवता पितृश्[illegible] पुत्र पोता दुराचारी होते हैं ॥ ४ ॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र औरभी मनुष्य वे चांडालतुल्य कहे हैं जो प्रेतक्रिया नहीं [illegible]

जो पवित्र प्रेतकल्पको सुनाते हैं और सुनते हैं वे दोनों पोदैं...पछूटकर, दुर्गतिको नहीं प्राप्त होते हैं ॥ ६ ॥ मातापि ो वारंवार प्राप्त होते-
गरुड़पुराण सुनता है उसके मातापिता मुक्तिको प्राप्त होते हैं. पुत्र संतानवान् होता है. जिस पुत्रने गरुड़पुराण सुन की इच्छा करते है?
नहीं किया, वृषोत्सर्गभी नहीं किया, मासिक श्राद्ध और वार्षिक श्राद्ध नहीं किया ॥ ८ ॥ वोह कैसा पुत्र कहा है? ार नमस्कार करके, ए
छूटता है? और माता पिताको कैसा तिरानेको समर्थ है? ॥ ९ ॥ तिसीसे सर्व प्रयत्नसे निश्चय गरुड़पुराण सुनना हे प्रभो! संसारसमुद्रसे

प्रेतकल्पमिदंपुण्यंभृणोतिश्रावयेच्चयः ॥ उभौतौपापनिर्मुक्तौदुर्गतिंनैवगच्छतः ॥ ६ ॥ मातापित्रोश्चमरणेसौपर्णभृ... ...ंसारोद्धारोनिरूपि ...ांजलि
पितरौमुक्तिमापन्नौसुतःसंततिमान्भवेत् ॥ ७ ॥ नश्रुतंगारुडंयेनगयाश्राद्धंचनोकृतम् ॥ वृषोत्सर्गःकृतोनैवनचमासिकवार्षि
के ॥ ८ ॥ सकथंकथ्यतेपुत्रःकथंमुच्येदृणत्रयात् ॥ मातरंपितरंचैवकथंतारयितुंक्षमः ॥९॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनश्रोतव्यंगारुडंकिल ॥
धर्मार्थकाममोक्षाणांदायकंदुःखनाशनम् ॥ १० ॥ पुराणंगारुडंपुण्यंपवित्रंपापनाशनम् ॥ शृण्वतांकामनापूरंश्रोतव्यंसर्वदैवहि
॥ ११ ॥ ब्राह्मणोलभतेविद्यांक्षत्रियःपृथिवींलभेत् ॥ वैश्योधनिकतामेतिशूद्रःशुध्यतिपातकात् ॥ १२ ॥ ॥

राण धर्म, अर्थ, काम, मोक्षका देनेवाला है, दुःखोंका नाश करनेवाला है, ॥ १० ॥ गरुड़पुराण पवित्र है, पुण्यकारी है, पापोंका नाश
करनेवाला है, सुननेवालेकी कामना पूर्ण करनेवाला है, सो सदाही सुनना ॥ ११ ॥ ब्राह्मण सुननेसे विद्याको प्राप्त होता है, क्षत्रिय पृ-
थ्वीको प्राप्त होता है, वैश्य धनवान् होता है, शूद्र पापसे शुद्ध होता है ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥

॥९८॥